राज भारती

कहर आँखों का

3 'चक्रव्यूह' सीरीज का नया उपन्यास

:ड न बोलो। तुमने यह नहीं बताया था कि तुम्हारी औरत सूंघने असाधारण शक्ति रखती है। मुझे लगता है कि तुममें भी साधारण विशेषता है जिसे तुम अब तक मुझसे छिपाये हुए हो।"

काश! मेरे में भी ऐसी कोई विशेषता होती।" कमल ने गहरा सांस लिया, "तब तुम हमें चूहों की तरह बेबस करके न रख सकते।" फिर तुममें ऐसा क्या है जो सोनिया जैसी औरत तुम्हें इतना टूट कर चाहती है?"

तुम्हें क्या कमी नजर आ रही है मुझमें। गोरा-चिट्टा गबरू जवान हूं। सोनिया एक औरत है और एक औरत को एक पूरे मर्द के अलावा और क्या चाहिए। तुम्हारा यह कद्दावर पहलवान अंग्रेज मातहत भी मुझसे पंजा नहीं लड़ा सकेगा।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मैं ताकतवर भी हूं।" कमल ने अपने हाथ फैला 'डोले' दिखाए।

डॉक्टर का वह देवकाय अंग्रेज बॉडीगार्ड कमल को घूरने लगा। उसने अपनी मुट्ठियां यूं भींची जैसे कमल से पंजा लड़ाने को बेताब हो रहा हो।

"तुम मेरे इस बॉडीगार्ड को चैलेंज न करो। हम इसे जगलर कहते हैं। तुमने वोल्डमैन जैसे गैंडे को देखा है। वह गैंडा भी इस जगलर से टकरा कर हार मान जाता है। तुम इससे पंजा लड़ाओगे तो तुम्हारी उंगलियों का कचूमर निकल जाएगा।"

❑❑
❑

कहर आंखों का

मौत की आगोश में जिन्दगी की भयावह तस्वीर

राजभारती

की नवीनतम पेशकश

अनोखे चोर कमलकान्त की नई सनसनी

मनोज पब्लिकेशन्स

में

राजभारती

के

कमलकान्त सीरीज के

उपलब्ध उपन्यास

- ❑ जोरावर
- ❑ खूनी आंखें कातिल हाथ
- ❑ कहर आंखों का (नया प्रकाशित उपन्यास)

के

बाद

चमत्कारी कमलकान्त का आगामी

नवीनतम कारनामा

हाईकमाण्ड

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

'कमलकान्त' का वह 'चक्रव्यूह' जिसमें से निकलना आपके लिए आसान नहीं।

from NC

कहर आंखों का

राजभारती

मौत के अट्टहासों व लाशों के अम्बार के बीच जन्म लेने वाली एक तेज रफ्तार सनसनीखेज दास्तान...

© सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

प्रकाशक	मनोज पब्लिकेशन्स 761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084 दूरभाष : 7258349, 7248869, 7258546
टाइपसेटिंग	कंप्यूटरा कम्युनिकेशन 9, मेन रोड गोपालपुर, दिल्ली-110009 दूरभाष : 7652321
मुद्रक	जयमाया ऑफसैट प्रिंटर्स नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

कहर आंखों का : उपन्यास : राजभारती

मूल्य : पच्चीस रुपये

इस उपन्यास के पात्र, स्थान तथा घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

from NC

अपने पाठकों से

'मनोज पब्लिकेशन्स' द्वारा—**'खूनी आंखें कातिल हाथ'** के बाद मेरी नवीनतम पेशकश **'कहर आंखों का'** आपके हाथों में है।

'कहर आंखों का'—आपके अपने चमत्कारी कमलकान्त का एक ऐसा कारनामा है, जिसे मौत की आगोश में जिन्दगी की भयावह तस्वीर कहा जा सकता है। जी हां, मौत के अट्टहासों व लाशों के अम्बार के बीच जन्म लेने वाली एक तेज रफ्तार सनसनीखेज दास्तान है यह। **'कहर आंखों का'**—'मास्टर-ब्रेन' मास्टरों के कैदी बने कमलकान्त की जिन्दगी के वह हालात हैं जिसने उसे अपने किस्म का एक अनोखा कैदी बना दिया था। आपका कमल अपनी याददाश्त खो चुका था और क्रिमिनल मास्टर उसके खाली दिमाग में बस एक ही भावना रोप रहे थे कि कमल इस संगठन का और उसके 'सुपर मास्टर' का एक जांनिसार गुलाम है। 'सुपर मास्टर' की वफादारी ही उसका फर्ज है और धर्म भी। लेकिन क्या कभी 'सच' को भी कैदी बनाया जा सकता है? मानवता का पुजारी क्या शैतान का परस्तार बन सकता है। शायद नहीं! और कुछ ऐसा ही घटा कमलकान्त के साथ भी, दूसरों के लिए 'चक्रव्यूह' रचने वाला कमल दुश्मनों के रचे जिस 'चक्रव्यूह' में आ फंसा था—उसमें उसके साथ सोनिया भी थी। जंगली बिल्ली सोनिया।

'कहर आंखों का' में कमल की विवशताओं की निगरान सोनिया ने कैसे-कैसे गुल खिलाए और इन हंगामों में वे कहां-कहां उड़ते रहे—यही इस उपन्यास का रोमांच है। 'कहर आंखों का' में आप कमल को एक बिल्कुल ही नये रूप में पाएंगे और उसका यह रूप—उस अनूठे घटनाक्रम के कारण ही है जिसमें हालात ने उसे ला फंसाया था। हालात का ऐसा अनूठा भंवर...जिसमें सब कुछ नया है। नया व अनूठा। तेज रफ्तार घटनाक्रम में अनूठे किरदारों की रेल-पेल भी अनूठी है।

'कहर आंखों का' के बाद ही मनोज पब्लिकेशन्स से प्रकाशित होने वाले कमलकान्त के नवीनतम कारनामे का नाम है 'हाईकमाण्ड'! 'हाईकमाण्ड' जापान की धरती पर खेले जाने वाला वह रोमांचक नाटक है जिसे आप बरसों नहीं भुला सकेंगे।

आशा है 'कहर आंखों का' के बारे में भी अपनी निष्पक्ष राय से अवगत कराएंगे।

शेष फिर...

आप ही का
राजभारती
B-198, वेस्ट पटेल नगर
नई दिल्ली-110008

from NC

कहर आंखों का

हौले हौले किसी ने उसके गाल थपथपाये।

वो कसमसाया। सोते में ही उसके होंठों पर मुस्कान रेंग गई। मानो मीठी नींद की आगोश में वो कोई मीठा सा ही सपना देख रहा हो। और अपने गालों पर यह कोमल सी हरारत भरी थपक उसे ख्वाब का ही अहसास करा गई थी। लेकिन यह ख्वाब नहीं था।

कोई था—जो उसके गालों को थपथपा रहा था...उसके बालों से खेल रहा था।

बड़ा ही मुलायम रेशमी स्पर्श था।

"उठो...उठो...उठना नहीं है क्या?" मदमस्त कर देने वाला मीठा सुरीला स्वर उसके कानों में चांदी की घण्टियों सी मधुर झंकार गुंजाता चला गया।

उसने आंखें खोलीं।

आंखें खोलते ही उसे अपने चेहरे पर गर्म-गर्म सांसों का एहसास हुआ था। वह सांवला-सलौना महकता चेहरा उसके चेहरे पर झुका हुआ था।

"कमल...डार्लिंग।" उसे आंखें खोलते देख उस पर झुका परी चेहरा खिल सा गया।

कमल ने बेअख्तयार ही अपने होंठों पर जिव्हा फिराई।

वह अमीना थी।

अमीना—जिसके रेशमी निर्वस्त्र यौवन के मदमाते ख्यालों के साथ ही कमल बिस्तर के हवाले हुआ था और फिर सपनों की दुनिया में भी वह जाने क्या-क्या करता रहा था इस शोला बदन भरपूर यौवन के साथ।

सपनों से पहले हकीकत में भी तो कमल वही सब कुछ कर चुका था। फिर यही मदमाता यौवन उसके ख्वाब को भी महकाता रहा था और अब जब ख्वाब टूटा...नींद की मस्तियों से जाग कर वह ख्वाब से हकीकत में लौटा तो अमीना अब फिर उसकी आंखों के

सामने थी।

"जाग गए?" अमीना के होंठों पर मुस्कान कौंधी–मानो कली चटखी।

"तुमने जगाया है...।" कमल उसकी आंखों में झांकते बोला, "बड़ी निर्दयी हो। कितना मीठा-कैसा मदमाता ख्वाब देख रहा था मैं...।"

अमीना खुल कर मुस्कराई, "मदमाता ख्वाब?" वह बोली, "कैसा ख्वाब?"

कमलकान्त ने उसका हाथ थाम लिया, उसे तनिक अपनी तरफ खींचा, बोला, "ख्वाब में भी मैं अपनी अमीना के साथ था...इस तरह...।"

उसने अपने होंठ अमीना के होंठों पर रख दिए। ख्वाब को हकीकत में बदलने की कोशिश की। प्रगाढ़ चुम्बन की तपिश अमीना को गुलनार कर गई थी। उसके अधरों से एक आह निकली थी।

अमीना ने खुद को सम्भाला, "बस...बहुत हो लिया...।" वो बड़ी मुश्किल से कह पाई थी, "अब उठ जाओ।"

"ना।" कमलकान्त ने कोमलता से ही उसे फिर अपने ऊपर खींच लिया, "तुम भी लेट जाओ।"

"ओह, नो!" अमीना ने कमजोर सा प्रतिरोध किया, "अभी तुम्हें जाना है। उठो—तैयार हो जाओ।"

"तैयार भी हो जाऊंगा।" कमल पर ख्वाब की तपिश का असर था। वह असहाय सा नजर आ रहा था। उसने अमीना के लिए अपने पहलू में जगह बनाई और अब यह सुलगता यौवन एक बार फिर उसकी बांहों में था। "पर पहले..." उसने शरारत से अमीना की आंखों में झांका।

अमीना के...एक भरपूर यौवन के सामीप्य की लज्जतों से कमलकान्त अब वाकिफ था और यह जाने कब की प्यास थी कि अमीना को देखते ही भड़क-भड़क जाती थी।

अमीना यौवन के उस पड़ाव पर थी कि उसके सामीप्य में दिल पर काबू रहता था ना दिमाग पर। और कमलकान्त को अपनी जिन्दगी के इस अनोखे पड़ाव पर वह कमलकान्त को हासिल थी। अमीना ने जैसे उसे औरत-मर्द के अन्तर से परिचित कराया था। कमलकान्त को उस परम-आनन्द से दो-चार कराया था जो मर्द-औरत के सामीप्य की देन था—सुलगती ख्वाहिशों की देन था।

अमीना की ख्वाहिशें तपने लगी तो वह कुछ घबरा सी गई। ये लम्हे ऐसे खेल के लिए नहीं थे। वह कमलकान्त को उठाने आई

थी कि उसका बुलावा आया था। उसे अपने साथ ले जाने को 'सुपर मास्टर' के भेजे दो गार्ड बाहर मौजूद थे और उन्हें ज्यादा इन्तजार नहीं कराया जा सकता था।

"प्लीज, कमल...।" बेचैन सी अमीना बोली, "मैं कहीं भागी नहीं जा रही हूं। और अभी थोड़ी देर पहले ही तो...।" उसने दो-तीन गहरी सांस ली, "प्लीज, छोड़ो मुझे और तैयार हो जाओ। तुम्हें लेने 'सुपर मास्टर' के गार्ड आए हैं।"

कमल के मुंह से सुपर मास्टर के लिए एक भद्दी सी गाली निकली उसने अमीना को अपनी बांहों में भींच लिया। अमीना के मुंह से आनन्दपूर्ण सिसकारी निकली।

"सुपर मास्टर को गाली मत दो।" अमीना उसकी नाक को अपनी उंगली से हिलाती बोली, "यह 'सुपर मास्टर' की ही इनायत है कि मैं तुम्हें और तुम मुझे हासिल हो।"

"सुपर मास्टर की नहीं यह तुम्हारी इनायत है अमीना।" कमलकान्त भी अब उलझन का शिकार नजर आने लगा था, "और मैं इसके लिए किसी सुपर मास्टर का नहीं तुम्हारा आभारी हूं।" 'सुपर मास्टर' की चर्चा पर कमल हमेशा परेशान हो उठता था।

"ओहो!" अमीना ने उसे उलझते देख उसके बाहुपाश से निकलने की असफल सी कोशिश की, "फिर वही बहस! ओ.के. हम दोनों ही सुपर मास्टर के आभारी हैं—जिसके करम से हम ये खुशियां व तृप्तियां बटोर रहे हैं। कम से कम मैं तो यह कभी नहीं भूल सकती कि उसने मुझे अपने सबसे ज्यादा विश्वसनीय, वफादार और जांनिसार गुलाम की खिदमत का मौका दिया और मैं वह सब पा सकी जिसके सपने देखती रही हूं।"

"मास्टर...गुलाम...!" कमलकान्त की शोखी जाती रही थी, "तुम्हारी यह बातें मेरी समझ में क्यों नहीं आती? तुम्हारा अन्दाज भी मुझे उलझा देता है। मैं जब भी पूछता हूं तुम यही कहती हो कि मैं उस सुपर मास्टर का गुलाम हूं जो इस टापू का हुक्मरान है...हमारा अन्नदाता है...और हम उसके एक इशारे पर अपनी जान देने के लिए तैयार हो जाते हैं और उसके गुलामों में मैं उसका सबसे प्रिय गुलाम हूं—शायद इसलिए कि मैं उसके कितने ही खतरनाक दुश्मनों को मौत के घाट उतार चुका हूं।"

"हां।" अमीना ने उसे बेचैन होते देख उसे बहलाने को ही उसके गाल पर अपने गाल रगड़े...उसके होंठों पर तपती सी मोहर लगाई।

पर कमल अब फिर उन्हीं जहनी बवन्डरों की लपेट में था जो कई माह से उसे बेचैन किए हुए थी। अमीना किसी सुपर मास्टर का

जिक्र छेड़ती तो उसके खाली जहन में आंधियां सी चलने लगती थीं। वह लाख कोशिश करता पर उसे याद नहीं आता था कि कौन है यह सुपर मास्टर जो उसका स्वामी है और वो उसका वफादार जांनिसार गुलाम? और आखिर क्यों वो अपने इस मालिक के दुश्मनों को मौत के घाट उतारता रहा है। हद तो यह थी कमल प्रायः अपने ही बारे में सोचता रहता था कि वो कौन है? कहां से आया है? पर उसे कुछ याद नहीं आता था। अमीना ही नहीं—दूसरे भी तो थे जो उसे सिखाने-पढ़ाने आते थे...कमल उनसे भी प्रायः यही सवाल पूछता रहता था—पर उसे हमेशा यही जवाब मिलता था—"तुम अपने जहन पर जोर ना डालो...धीरे-धीरे सब जान लोगे। तुम बस अपने आसपास की एक-एक चीज को और दूसरे इंसानों को एक इंसान की हैसियत से पहचानो। फिर तुम खुद को भी पहचान लोगे।"

कमलकान्त को हतोत्साहित करती अमीना अब खुद ख्वाहिशें जगाती छेड़छाड़ पर उतर आई थी। पर कमल की ख्वाहिशों पर तो जैसे ओस पड़ गई थी। वह अब फिर अपने व रहस्यमय सुपर मास्टर के बारे में सोचने लगा था।

कमल की बेकली शब्द बन उसके होंठों पर उतर आई। उसने अमीना से पूछा—"अगर यह सब सच है और अगर इन बातों का ताल्लुक मेरी जात से है तो यह सब बातें मुझे याद क्यों नहीं आतीं?"

यह वह सवाल था जो जाने कमल कितनी बार अमीना से पूछ चुका था—कइयों से पूछ चुका था। और अपने इस सवाल का जवाब उसे हमेशा एक ही मिलता था। अमीना से भी और दूसरों से भी। इस क्षण भी अमीना ने यही जवाब दिया—

"इसलिए कि तुम एक हादसे में अपनी याददाश्त खो चुके हो। और इस हादसे के बारे में मैं तुम्हें कई बार बता चुकी हूं कि यह हादसा ऐसे हुआ था कि तुम फुल स्पीड पर कार ड्राइव कर रहे थे। शायद तुम्हारा हाथ स्टेयरिंग पर बहक गया था या न जाने क्या हुआ था कि तुम्हारी कार एक पेड़ से टकरा गई। तुम बुरी तरह जख्मी होने के बाद बेबस हो चुके थे—और ऐसे में दुश्मन तुम्हारे सिर पर आ पहुंचे थे। तब हमारे सुपर मास्टर ने उनका मुकाबला किया और उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया। फिर 'मास्टर' तुम्हें इस टापू पर ले आए। तुम इसी से अंदाजा लगा सकते हो कि 'मास्टर' तुम्हें कितना चाहता है। उसने तुम्हारे लिए अपनी जान की परवाह नहीं की थी। क्योंकि तुम भी उसके लिए मौत और खतरों से खेलते रहे हो।"

कमलकान्त ने हमेशा की तरह इस क्षण भी एक गहरी सांस ली

थी, फिर असहाय सा ही हो बोला था, "न। जाने मेरे दिमाग को क्या हो गया है। कब लौटेगी मेरी याददाश्त और कब मुझे मेरी पिछली जिन्दगी याद आएगी। अपने अतीत को भुला मैं खुद अपने लिए अजनबी बन गया हूं। यहां इस टापू पर इतने लोगों के बीच भी मैं खुद को तन्हा महसूस करता हूं।"

कुछ क्षण पहले ना-ना कर रही अमीना ने उसे अपने सीने से लगा लिया—अपनत्वपूर्ण लहजे में ही बोली—"मेरे होते तन्हा क्यों महसूस करते हो। मैं हूं ना। मेरी बांहों में अपने इन अहसासों को भुला दो। निराश होकर तुम खुद को कभी नहीं पहचान सकोगे। तुम्हारा तो जहन एक खाली स्लेट बन कर रह गया था। तुम तो बोलना भी नहीं जानते थे...किसी प्राणी, किसी चीज को उसके नाम से नहीं पहचानते थे। और अब...अब बोलने भी लगे हो और पहचानने भी लगे हो। ऐसे ही एक दिन तुम अपने आप को भी पहचान लोगे। फिर तुम्हें सब याद आ जाएगा...अपना अतीत भी।"

अमीना की अपनत्वपूर्ण बातें...हमदर्दी के बोल व फिर उसकी ख्वाहिशें भड़काती हरकतें अपना रंग लाने लगी।

कमलकान्त को यहां से रवाना करने से पहले उसे सामान्य बनाना जरूरी था। और इसके लिए अमीना ने वही रास्ता अपनाना था—जो तनावग्रस्त जहनों के लिए रामबाण ही साबित होता है।

अमीना की बेकली हकीकत में बदल गई तो वह कमल को भी बेकल कर गई। कमल सब कुछ भूल अब फिर पहले वाले मूड में आ गया था।

अमीना अब उस पर बिछी हुई थी और कमल उसकी गोदाज हरारत भरी पीठ पर हाथ फेर रहा था। अमीना के उभारों का गुदाज कमल के सीने से टकराते दबे जा रहे थे—पिसे जा रहे थे और इस रगड़ से प्रज्वलित होने वाली महाज्वाला कमल के बदन में हरारतें भर रही थीं।

कमल के होंठ अमीना के होंठों को अपनी कैद में ले यूं हरकत करने लगे—मानो होंठों के बीच आ गई किसी सन्तरे की मीठी-मीठी फांक का रसपान कर रहा हो वह।

अमीना की आंखें मुंद गईं।

कमल के सामीप्य से अमीना भी संयम खो बैठी थी। रगों में शरारे भर गए तो उसका पूरा वजूद ही जैसे बेकाबू हो हरकतों पर उतर आया। भीतर की आग से हाथ-पांव व्यग्र से हो मचलने लगे थे।

कमल के हाथों की आवारगी भी देखते बनती थी। अमीना की

पीठ पर उसके हाथ फिसलते-फिसलते आगे को सरक आए थे। और अब कटि-प्रदेश को संभाल रहे थे।

और फिर प्याज से उतरने वाले छिलकों की तरह लिबास कब उनके शरीरों से जुदा हुए इन सुलगते शरीरों को अहसास तक नहीं हुआ। अमीना का उफनता यौवन अब टाटें मारते सागर की तरह कमल की बांहों में था और कमल पर जैसे जुनून तारी हो गया था।

अमीना के उभार एक खास आकर्षण रखते थे और अब उन्मादी हो चले इन उभारों की सरकशी तो देखने लायक थी। मदमाते यौवन शिखर...मक्खन के तोदे ही थे जिन पर अब कमल मुंह मार रहा था।

अमीना कसमसा रही थी। लम्बी-लम्बी सांसें ले रही थी।

कमल की निपुण-माहिर उंगलियां अपना जादू जगा रही थी। भावनांओं में उबाल पैदा कर देने वाला मधुर संगीत पैदा कर रही थी।

अमीना की प्यास बढ़ती जा रही थी। उसका पूरा बदन कामाग्नि से तपने लगा था। चेहरें से लपटें सी उठने लगीं और सांसों के गर्म भभके छूटने लगे थे। कमल था कि अब सांप सा उसके बदन पर बल खा रहा था। कमल के होंठों के स्पर्श के साथ ही अमीना का वजूद भी तो नागिन की तरह बलखाता-इठलाता कमल की बांहों में तड़प रहा था।

मुंह से कुछ नहीं बोल रही थी अमीना! कमल उसे उस मुकाम पर ले आया था—जहां कुछ बोल पाना सम्भव ही नहीं रहता। यह तो उसके होंठों से उभरती सिसकारियां थीं जो मानो कराह-कराह कर कह रही थीं—"प्रियतम...मेरे प्रियतम! मुझे रौंद डालो...मेरा तन-मन सब कुछ लूट लो।"

इन्हीं सिसकारियों के साथ—उन्माद की अवस्था में ही अमीना ने पोजीशन बदली और अब उसके दोनों हाथ कमल के शरीर के अगल-बगल में—हौले से कमल पर झुकी और अब वह कमल पर बिछी हुई थी।

दो सुलगते बदन एक होने को आतुर हो उठे थे।

कमल की सांसें गर्म हो उठी थीं। अमीना की सांसें भी भभके छोड़ने लगी थी। अवरल सिसकारियां फूट-फूट जा रही थीं।

अचानक—एकदम अचानक खुद को विशिष्ट स्थिति में लाती अमीना ने जांघों को हरकत दी और एक लम्बी 'आह' के साथ कमल को भींच लिया। उसने वह पा लिया था जो वह पाना चाहती थी। आनन्द की तपिश भीतर तक महसूस कर उसने उठना चाहा। पर

तब तक कमल ने उसकी कमर को सख्ती से भींच लिया था।

कुछ क्षण यूं ही गति शून्यता में बीते और फिर एक साथ ही दोनों एक्शन में आए—मामला हद से ज्यादा बढ़ चुका था। कामाग्नि की भयंकर लपटों में घिरे दो जिस्म भस्म होने को बेचैन हो उठे थे। मानो भस्म हुए बिना उनकी गति नहीं होने वाली थी।

मसहरी पर यूं महाजंग सी छिड़ी हुई थी—जैसे दो बिफरे-भूखे शेर एक दूसरे को खा जाने पर उतारू हों।

और जब यह जंग अपने अंजाम को पहुंची। उफनते जज्बात का वेग टूटा तो अब बिस्तर पर थे—सिर्फ पसीने से लथपथ अपने अन्दर तृप्ति का अहसास समेटे दो जिस्म और कमरे में व्याप्त था—हिंसक पशुओं की गुर्राहट की मानिन्द सांसों का धधकता शोर। और फिर अंततः यह शोर भी मन्द पड़ दम तोड़ बैठा।

कुछ देर दोनों यूं ही अगल-बगल पड़े रहे।

फिर अमीना ही जैसे उसे याद दिलाते बोली—"अलसाने का वक्त नहीं है। मेरी तो पसलियां जवाब दे गई हैं। किस निर्दयता से रौंदा है मुझे। मैं कुछ देर आराम करूंगी। तुम जाओ।"

"जाना ही पड़ेगा।" कमल उठा और मसहरी से उतर आया, "देखते हैं तुम्हारे सुपर मास्टर को। ओ.के.।"

"अपने सुपर मास्टर को।" अमीना शोखी से बोली और अपनी तरफ बढ़े कमलकान्त के चेहरे पर प्यार की कोमल सी मोहर लगा दी। फिर अपने बेलिबास बदन पर चादर खींच ली।

कमलकान्त अपने कपड़े समेट कर बाथरूम की तरफ बढ़ गया था।

थोड़ी देर बाद जब वह आया तो पूरी तरह फ्रेश व तरोताजा था।

वो उन दो गार्डों के साथ हो लिया—जो 'सुपर मास्टर' के हुक्म पर उसे लेने आए थे। तब कमल कहां जानता था कि वह एक लम्बी जंग के लिए निकल रहा है और आज के बाद आरम्भ होने वाले हंगामें उसे कहीं से कहीं ले जाएंगे।

कमलकान्त सशस्त्र गार्डों के साथ उस विशाल इमारत में दाखिल हुआ था।

कमलकान्त कोवाई टापू पर उस अंतराष्ट्रीय क्रिमिनल सिण्डीकेट का कैदी था जिसके 'बड़े' मास्टर कहलाते थे और जिसकी क्रिमिनल गतिविधियां दुनिया के अधिकांश छोटे-बड़े देशों में बहुत ही आर्गेनाइज्ड तरीके से जारी थीं और जो अपने आप में हकूमतें पलटने तक की कुव्वत रखती थीं।

इस सिण्डीकेट का काम ही विभिन्न हकूमतों को ब्लैक-मेल करना था। एक देश की आर्थिक व सामरिक नीतियों को उसके दुश्मन देश को भारी कीमतों पर पहुंचाता था।

कमलकान्त इस सिण्डीकेट का कैदी था, एक अनोखा व अनूठा कैदी।

और अब कमलकान्त को जिस विशाल व अनूठी इमारत में पहुंचाया गया था, वह एक गुम्बदनुमा भव्य इमारत थी।

यह वही इमारत थी—जिसकी भूल-भलैया में गुम होकर—कमलकान्त ने अपना अतीत गुम कर दिया था। और इस सिण्डीकेट की इन्तकामी कार्रवाई का शिकार होकर सिण्डीकेट का एक कैदी बनकर रह गया था—और उसे खुद इस बात का अहसास तक नहीं था।

इस अनूठी इमारत में दाखिल होने के बाद कमलकान्त इमारत की विभिन्न राहदारियों में से गुजरने लगा। कभी दाएं और कभी बाएं होने लगा तो उस वक्त उसके जहन से कोई याद छुप-छुप कर कहने लगी कि वह पहले भी ऐसी जगहों से गुजर चुका है।

कमलकान्त की इस उलझन पर उसे उसकी मौजूदा उलझन ने समझाया—"हां, यह हो सकता है। बल्कि मैं यकीनन इस इमारत और इन राहदारियों में पहले भी आता रहा होऊंगा, क्योंकि मैं अपने 'मास्टर' का सबसे ज्यादा विश्वसनीय और करीबी गुलाम हूं।"

हैरत यह भी थी कि अपनी फितरत के क़तई विपरीत खुद को किसी के गुलाम की हैसियत से सोचते हुए—उसे अपने अपमान और जिल्लत का अहसास नहीं हो रहा था। होता भी कैसे। उसका ब्रेनवाश कर दिया गया था। उसके जहन से उसके अतीत के साथ-साथ वो सोचें लुप्त थीं—जो इन्सान की फित्रत को एक आकार, एक दृष्टिकोण देती हैं। उसके नये व पूर्णतया खाली दिमाग में तो यह सब कुछ कूट-कूट कर भर दिया गया था कि 'वो' सब गुलामी के लिए पैदा हुए हैं। 'मास्टर' का आज्ञाकारी रहने ही में उनकी इज्जत है। इस टापू के बाहर जो दुनिया है वहां लोग एक खुदा, एक गॉड, एक भगवान को पूजते हैं। मगर यहां ऐसा कोई मजहब नहीं है कि यहां तो 'वो' 'मास्टर' की मर्जी से पैदा होते हैं..."मास्टर' के रहमो-करम पर जिन्दा रहते हैं और 'मास्टर' के आदेश पर ही जान दे देते हैं।

जाहिर है किसी नवजात शीशु की तरह एक अबोध, खाली दिमाग को जब ऐसा ही पाठ पढ़ाया जाए—तो वह इसी पाठ को पढ़ेगा और याद रखेगा। कमलकान्त की मौजूदा स्थिति भी यही तो थी।

उसके दिमाग में चाबी भर दी गई थी और कमलकान्त उसी के मुताबिक हरकतें कर रहा था।

कमलकान्त को इस गुम्बदनुमा इमारत में वो दो सशस्त्र गार्ड लेकर आए थे—वो उसे विभिन्न राहदारियों में चलाते हुए अंततः एक बन्द दरवाजे के सामने पहुंच कर रुक गए।

एक गार्ड ने दीवार पर लगे हुए बटन को दबाया।

कमलकान्त दरवाजे पर लगे इन बटनों के महत्व को जानता था। यह बात उसे रमना नाम की उस खूबसूरत और जवान युवती ने समझाई थी—जिसने उसे औरत और मर्द के 'आनन्दप्रद' रिश्तों से आगाह किया था। रमना ने यही बताया था कि इमारत के पेचदार रास्तों को याद रखने के लिए दरवाजों को कन्ट्रोल करने वाले इन बटनों के अन्तर और इनकी जुदा-जुदा बनावट को याद रखना जरूरी है।

कमलकान्त ने ध्यान से देखा था कि इस वक्त गार्ड जिस बटन को दबा रहा था—वह बटन दायरे की शक्ल का था।

बटन दबाते ही दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुलते ही अन्दर एक बड़ा सा हॉल नजर आया। कमल ने उस हॉल में कदम रखा तो वह दरवाजा उसके पीछे खुद-ब-खुद बन्द हो गया।

हॉल में कुछ नौजवान निशानेबाजी का अभ्यास कर रहे थे। उनके सामने थोड़े फासले पर 'टारगेट' के रूप में छः इन्सानी पुतले खड़े हुए थे। हर निशानेबाज के पीछे एक शख्स खड़ा हुआ उनके स्कोर को नोट कर रहा था।

एक बूढ़ा शख्स कमल को देखते ही उसकी तरफ आया और फिर उससे हाथ मिलाते हुए बोला, "हैलो! मिस्टर कमलकान्त! आप बड़े दिनों बाद शूटिंग की प्रैक्टिस के लिए आए हैं। आइए अपने 'टारगेट' के सामने आइए...।"

कमल ने अपने दिमाग पर जोर दिया, फिर उससे पूछा, "क्या मैं यहां पहले भी आ चुका हूं? आता रहा हूं?"

"बारहा! शूटिंग आपका प्रिय शगल था। मुझे अफसोस है कि आप अपनी याददाश्त खो बैठे हैं। हमारा ख्याल है कि आप निशानेबाजी के आर्ट को भी भूल गए होंगे। आइए...हम अभी आजमाए लेते हैं।"

अपने आप में उलझा, कमल उसके साथ एक 'स्कोरिंग बोर्ड' के पास पहुंचा। वहां एक छोटी सी मेज पर निशानेबाजी के अभ्यास के लिए विभिन्न आकार व बनावट के छः रिवॉल्वर और कारतूस

रखे हुए थे और सामने ही करीब दस गज के फासले पर एक इंसानी पुतला खड़ा हुआ था। इस पुतले के माथे पर और दिल की जगह छोटा सा सुर्ख निशान बना हुआ था।

बूढ़ा बोला, "आप इन दो निशानों को देखें और इन पर ही गोली चलाएं। माथे व दिल पर गोली लगने से ही शिकार तुरन्त मर जाता है—वर्ना वह बच भी सकता है। सही निशानेबाजी यही है कि इन दो घातक जगहों को ही लक्ष्य बनाया जाए।"

कमल एक रिवॉल्वर उठा कर देखने लगा।

बूढ़ा उसे बताने लगा कि रिवॉल्वर किस तरह लोड किया जाता है। कमल ने रिवॉल्वर लोड किया और पुतले के माथे को निशाना बना फायर कर दिया।

गोली माथे के नीचे आंखों के बीच जा कर लगी। दूसरी गोली ठीक दिल के निशान पर लगने की बजाए उसके एक इंच ऊपर जाकर पेवस्त हो गई।

बूढ़े की आंखों में चमक उभरी, वह प्रशंसा भरे लहजे में बोला, "तुम्हारा निशाना बुरा नहीं है। यह अंदाजा हो चुका है कि तुम्हारा हाथ अनाड़ियों की तरह नहीं बहकता। अभी अभ्यास करो—तुम बहुत जल्द अपनी भूली हुई महारत को पा सकोगे।"

और हकीकत में ही कमल का यह पहला प्रयास—उसके अचैतन्य में इस सिलसिले की महारत के सदके ही काफी हद तक सटीक रहा था।

यह कमलकान्त के लिए एक अच्छा शगल था। उसे रिवॉल्वर से खेलते हुए बड़ी दिलचस्पी महसूस हुई। "ऐसा शायद इसीलिए है कि मेरे अतीत में यह निशानेबाजी मेरा शगल...मेरी ड्यूटी रही होगी।" उसने सोचा था।

निशानेबाजी के अभ्यास का यह खेल कई दिनों तक चला।

कमल को हर रोज हॉल में एक घंटे के लिए पहुंचाया जाने लगा। उसे छः गोलियां दी जाती थीं और जब पूरी छः गोलियां अपने 'टारगेट' पर पड़ने लगी तो फिर यहां से उसकी जगह बदल दी गई।

इसके बाद कमल को एक ऐसे हॉल में पहुंचाया गया जहां फ्री-स्टाइल कुश्तियां लड़ी जा रही थीं।

यहां भी एक अधेड़ उम्र व्यक्ति ने उसका स्वागत किया था। वह कमल से हाथ मिलाते हुए बोला—

"वेलकम मिस्टर कमलकान्त...वेलकम! बहुत दिनों बाद आए हो। यहां बैठो। और ये तमाशे देखकर सोचो कि क्या तुम भी लड़ने के इस आर्ट से वाकिफ हो।"

कमल 'रिंग' के बाहर एक कुर्सी पर बैठ गया।

'रिंग' के अंदर, दो कद्दावर पहाड़ जैसे जवान बड़े भयानक अंदाज में लड़ रहे थे। लड़ने का कोई उसूल नहीं था। लात-घूंसे, देसी दांव-पेच और जूडो-कराटे...फाइटिंग के हर तरह के फन का प्रदर्शन हो रहा था।

कमल यह सब बड़े गौर व तन्मयता के साथ देखता रहा। फिर सहसा ही उसका दिमाग छिपी-छिपी सी सरगोशियां करने लगा कि यह तमाम दांव-पेच उसके लिए नए नहीं हैं। मार्शल-आर्ट में वह पारंगत रहा था। शायद यही वजह थी कि उसके सामने जब एक लड़ने वाला, दूसरे के दांव में आ जाता था—तो यह बात फौरन कमल की समझ में आ जाती थी कि अब इस बचाव करने वाले जवान को, किस दांव का इस्तेमाल करके अपने प्रतिद्वन्द्वी की गिरफ्त से किस तरह निकलना चाहिए और उस पर हावी होने को क्या पोजीशन लेनी चाहिए?

कमल के करीब बैठा अधेड़ उम्र शख्स यहां इन्स्ट्रेक्टर था और इन सबका उस्ताद था—वह इन लड़ने वालों को कभी-कभी रोक दिया करता था और सब सिर झुका कर उसके निर्देश को मान लेते थे।

कमल अपनी उत्तेजना दबाए नहीं रख पाया, वह बोला, "मुझे याद आ रहा है कि मैं लड़ने की इन कलाओं से परिचित हूं। मार्शल-आर्ट्स मेरे लिए नई चीज नहीं है।"

"वैरी गुड।" उसने कमल का कंधा थपथपाया, "तो फिर आ जाओ मैदान में।"

थोड़ी देर बाद ही कमल लिबास बदल रिंग में था।

उस्ताद ने अपने तमाम पट्ठों को संबोधित करते हुए कहा, "इसे देखो...यह कमलकान्त है। कुछ अर्से पहले यह नाकाबिले-शिकस्त और अजय समझा जाता था। पर एक हादसे में शायद अपने लड़ने के फन को भूल चुका है। यह खुद को आजमाने के लिए मैदान में आया है। तुममें से कौन पहले इसके मुकाबले पर आएगा।"

इसके जवाब में कितने ही कड़ियल और कद्दावर जवानों ने अपने हाथ उठा दिए। सिर्फ एक जवान खामोश-बेहरकत बैठा रहा।

उस्ताद ने उससे पूछा, "क्यों शोजप...तुम एक ब्लैक-बेल्ट होते हुए भी—कमलकान्त से मुकाबला नहीं करोगे?"

शोजप ने अपने चेहरे के सामने अपना हाथ यूं झटक कर हिलाया—जैसे कमल को मक्खी समझ कर उड़ा रहा हो। फिर बेपरवाह लहजे में बोला—

"माना कि आपके कथनानुसार यह कभी नाकाबिले-शिकस्त था, मार्शल-आर्ट्स में एक बहुत ऊंची चीज था। मगर यह अब अपने आप को भूल चुका है—जाहिर है कि सारे दांव-पेच व फुर्ती भी भूल चुका होगा। मुझे ऐसे नौसिखिये से न भिड़ाया जाए तो बेहतर है।"

इस हेक्कड का यह जवाब सुन कमल के बदन में तनाव पैदा हो गया। शोजप की इस लफ्फाजी से जाहिर था कि वो वाकई कमल को मक्खी समझ कर उड़ा रहा है। पर इस क्षण कमल अपने गुस्से को पी गया। उसने भी पहले खुद को तोलना जरूरी समझा था। उस्ताद ने एक अन्य नौजवान को रिंग में कमल के मुकाबले में आने को कहा और खुद शोजप के पास बैठकर तमाशा देखने लगा।

कमल के मुकाबले पर आने वाला कमल के ही कद का लेकिन शारीरिक तौर पर उससे भारी व बलिष्ट था। वह कमल को दांव पर लाने के लिए पैंतरे बदलने लगा। पहले उसने अपना दायां हाथ बढ़ाया—कमल ने बाएं हाथ का पंजा मिला लिया। कमल ने एक झटके से ही उसकी उंगलियां मरोड़ देनी चाही—पर इससे पहले ही वो सहसा उछला और फिर कमल के संभलने से पहले ही उसकी दोनों टांगें कमल की कमर से आकर लिपट गईं।

कमल जमीन पर चारों खाने चित्त गिरा।

उसका प्रतिद्वन्द्वी उस पर बदस्तूर सवार रहा। उसने अपनी दोनों टांगों से सचमुच ही बड़ा खतरनाक दांव इस्तेमाल किया था। उसकी दोनों टांगे दो अजगरों की तरह कमल की कमर से लिपटी हुई थीं और क्षण-प्रतिक्षण उनकी गिरफ्त सख्त होती जा रही थी।

उस्ताद फौरन ही उठ कर कमल के पास पहुंचा और झुककर कहने लगा—

"यह तुम्हारे मुकाबिल का सबसे खतरनाक दांव है। 'डेथ-लॉक' कहते हैं इसे। और जिस तरह इसने तुम्हें अपनी टांगों से 'लॉक' किया है। इस 'लॉक' से तुम कभी नहीं निकल सकोगे। तुम हार मान कर इसे प्वॉइंट दे दो।"

कमल ने पीड़ा की शिद्दत से कराहते व चीखते हुए कहा, "नहीं...नहीं।"

कमल अपनी याददाश्त भूला हुआ था। पर अचैतन्य में उसकी जाती फितरत काम कर रही थी। उसकी पुरानी जिद उभर आई थी कि उसे टूट जाना चाहिए मगर हार मान कर एक प्वॉइंट नहीं देना चाहिए। हार मानना उसकी फितरत में कहां था।

कमल के दोनों हाथों की उंगलियां उसके दोनों हाथों की उंगलियों

से उलझी हुई थीं। उसका प्रतिद्वन्द्वी उसके हाथों को भी आजाद नहीं कर रहा था—वर्ना कमल घूंसे या कराटे का कोई हाथ मार कर उसे कदरे कमजोर कर सकता था।

कमल एक तरफ उसकी उंगलियां मरोड़ने की कोशिश कर रहा था—दूसरी तरफ उसकी टांगों की गिरफ्त असहनीय बनती जा रही थी। कमल को यही लग रहा था जैसे वह दोनों टांगें उसे कमर से तोड़ कर उसके जिस्म को दो हिस्सों में बांट देंगी। कि उसकी कमर की हड्डी किसी भी लम्हे टूटने वाली थी।

उस्ताद ने एक बार फिर समझाया, "कमलकान्त, मान जाओ... ।"

उसकी बात खत्म होते ही एक जोरदार कड़कड़ाहट की आवाज उभरी, यह हड्डी टूटने या चटखने की आवाज थी। इसके साथ ही कमल का प्रतिद्वन्द्वी चीखें मारते हुए दूसरी तरफ फर्श पर उलट गया।

और फिर वो फर्श पर से दोबारा नहीं उठ सका। वह अपना बायां हाथ थामकर किसी जानवर की तरह डकारने लगा था।

उस्ताद कमल को भूल, लपक कर उसके पास गया।

उसने देखा कि उसके पट्ठे के बाएं हाथ की चार उंगलियां टूट गई थीं—सिर्फ अंगूठा सलामत रहा था। यानी कि अब वह कमल को दूर से अंगूठा तो दिखा सकता था—लेकिन कमल के पास आने की जुर्रत नहीं कर सकता था।

हकीकतन कमल खुद भी नहीं समझ पा रहा था कि यह सब क्या हो गया है। जाने उसकी किस जिद ने या कौन-सी सुप्त शक्ति ने या किस भूले हुए दांव ने अचानक अपना काम कर दिखाया था। उसके प्रतिद्वन्द्वी की चारों उंगलियां अपने जोड़ से उखड़ गई थीं।

कमल का यह प्रतिद्वन्द्वी कमजोर नहीं था। कद-काठ से ही पहलवान दिखते इस नौजवान के शरीर में पत्थर जैसी सख्ती थी—इसलिए उस्ताद ही नहीं शोजप व उसके दूसरे सभी साथी कमल को आश्चर्य व अविश्वास भरी नजरों से देख रहे थे कि कमल ने यूं 'डेथ-लॉक' जैसे घातक और खतरनाक दांव में फंसने के बावजूद किस तरह इस पत्थर को तोड़ कर रख दिया था।

शोजप उसे तिरस्कारपूर्ण और ललकारने वाली नजरों से देख रहा था।

इस वक्त कमल की हालत भी अजीब सी थी।

उसकी कमर की हड्डी ऐसे दुख रही थी जैसे अब भी कोई अदृश्य अजगर बल खाकर और लपेट कर उसे तोड़ने की कोशिश कर रहा हो।

कमल एक हाथ से अपनी कमर को सहलाते हुए, दूसरा हाथ जमीन पर टेक कर उठ बैठा। वह अपनी कमजोरी जाहिर नहीं करना चाहता था। मगर उस्ताद समझ गया था कि उस पर क्या बीत रही है उसने अपने दो पट्ठों को इशारा किया—"इसे सहारा देकर दूसरे कमरे में ले जाओ और डॉक्टर को इत्तला दो।"

उन दोनों ने सहारा देकर कमल को उठाया। कमल उन दोनों के कन्धों पर हाथ रख कर धीरे-धीरे चलता हुआ दूसरे कमरे में पहुंच गया। फिर वहां एक बिस्तर पर औंधे मुंह लेट गया। एक डॉक्टर ने तत्काल आकर उसका निरीक्षण किया, फिर मुतमईन लहजे में बोला—"डोंट वरी! तुम्हारी कमर की हड्डी दबाव से प्रभावित हुई है। दो-चार दिन तक मालिश होती रही तो बिल्कुल ठीक हो जाओगे।"

यूं डॉक्टर के निर्देश पर सुबह-शाम दो पहलवान कमल की मालिश करने लगे और ऐसे हालात में कमल यही सोचता रहता था कि वह कहां आकर फंस गया है। यहां उसका कोई नहीं था—मगर सभी अपनत्व दर्शाते थे और कमल को इस अपनत्व में स्पष्टतः खोखलापन नजर आता था।

तीन दिन में कमल बिल्कुल ठीक हो गया।

अब उससे सुबह शाम सख्त वर्जिश कराई जाती थी कि उसमें पहले जैसी चुस्ती और फुर्ती आ जाए।

और फिर...।

दो सप्ताह बाद उसे फिर 'रैसलिंग रिंग' में लाया गया।

इस बार शोजप ने उठ कर जैसे घोषणा की, "मैं इससे मुकाबला करूंगा...।"

उस्ताद ने हाथ उठा कर इंकार करते हुए कहा, "नहीं, मास्टर की इजाजत नहीं है।"

शोजप उत्तेजित सा बोला, "मैं सुपर मास्टर से इजाजत मांगूंगा। इसने मेरे भाई की उंगलियां तोड़ी हैं—मैं इसकी गर्दन तोड़ कर रख दूंगा।"

"तुम सुपर मास्टर की इजाजत के बिना कमलकान्त को हाथ भी नहीं लगा सकते। देखो, शोजप! सुपर मास्टर तुम्हें भी कमलकान्त की तरह अजीज रखता है। तुम दोनों के टकराव से किसी को भी नुकसान पहुंचेगा तो यह सुपर मास्टर का ही नुकसान होगा। जाओ—अपनी जगह जाकर बैठ जाओ।"

शोजप कमल को घूरता हुआ एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

जिस वक्त कमल हॉल में पहुंचा था—उस वक्त दो पहलवान

आपस में लड़ रहे थे। जब उनकी कुश्ती खत्म हो गई तो उस्ताद अपने तमाम पट्ठों से संबोधित होते बोला—"अब तुम सब यहां से बाहर चले जाओ। आज कमलकान्त यहां तन्हाई में किसी से मुकाबला करेगा...।"

उस्ताद के आदेश पर वो सब एक-एक करके वहां से बाहर चले गए।

कमल शोजप के दिल की हसरत पूरी करना चाहता था—क्योंकि शोजप हॉल से बाहर जाते वक्त भी कमल को ललकारती हुई नजरों से घूरता गया था। शोजप, सुपर मास्टर के हुक्म से बंधा था। कमल को भी सब्र करना पड़ा।

□□

कमल को अब अपने उस प्रतिद्वन्द्वी का इंतजार था—जिससे आज उसे अकेले में मुकाबला करना था। कमल की निगाहें हॉल के दूसरे दरवाजे पर टिकी हुई थीं, दरवाजे के साथ ही एक बड़ी सी शीशे की दीवार थी। इस शीशे की दीवार के दूसरी तरफ जो अंधकार था—वह अचानक ही छट गया। और वहां रोशनी होते ही कमल ने देखा कि एक बूढ़ा शख्स छत से लटकती जंजीरों से बंधा हुआ था और उसके पास एक सांवली-आकर्षक युवती खड़ी हुई थी।

उस्ताद आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ—दरवाजा खोल कर शीशे की दीवार के दूसरी तरफ चला गया। और फिर वह युवती सिर झुकाए धीरे-धीरे चलती हुई, हॉल में, कमल के सामने आकर खड़ी हो गई। उसके पीछे दरवाजा बंद हो गया।

यह सांवली युवती कमल को बड़ी आशापूर्ण निगाहों से देख रही थी। वह शायद कमल से कुछ कहना चाहती थी। एक बार उसके होंठ खुले मगर फिर उसने पलट कर शीशे के पार बंधे हुए बूढ़े को देखा तो कुछ बोल पाने से पहले ही उसके होंठ कंपकंपा कर रह गए।

वह बहुत मजबूर नजर आ रही थी।

कमल ने उससे पूछा, "तुम कौन हो और मेरे पास क्यों आई हो?"

यह सुनते ही युवती की उदास आंखों से आंसू छलक पड़े और वह व्यथित सी बोली—"कमल...क्या तुम अपनी सोनिया को नहीं पहचानोगे...?"

"कौन सोनिया...?" कमल ने उसे गहरी नजरों से देखते पूछा, "क्या तुम मुझे जानती हो?"

और इससे पहले कि सोनिया कोई जवाब देती—हॉल के एक स्पीकर से आवाज गूंजी—"सुनो कमल...मैं तुम्हारा आका, सुपर मास्टर बोल रहा हूं, मगर तुम मेरी आवाज नहीं पहचानोगे। क्योंकि अब तो तुम खुद को ही नहीं पहचान रहे हो। यह लड़की जो तुम्हारे सामने खड़ी है—यह हम दोनों की सबसे बड़ी दुश्मन है, इसकी मक्कारियों की वजह से दुश्मन तुम्हारे पीछे पड़ गए थे और नतीजतन तुम एक हादसे का शिकार होकर अपनी पिछली जिन्दगी भूल गए हो...।"

कमल ने स्पीकर की तरफ देखते हुए कहा, "सुपर मास्टर...मुझे बताया गया है कि तुम इस टापू पर मौजूद नहीं हो—और जब आओगे तो मुझसे मुलाकात करोगे, मगर तुम्हारी आवाज का मतलब है कि तुम मौजूद हो। फिर मेरे पास क्यों नहीं आते या मुझे अपने पास क्यों नहीं बुलाते?"

"तुम मुझ से सवाल न करो। गुलामों को सवाल करने का हक नहीं होता, चूंकि मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूं—इसलिए सिर्फ इतना कह देता हूं कि जब मैं मुनासिब समझूंगा—उस वक्त तुम्हें अपने सामने हाजिरी का हुक्म दूंगा। फिलहाल, काम की बातें सुनो। शैतान की खाला यह सोनिया गद्दार है, इसने तुम्हें मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, मैं इसे फौरन ही मौत की सजा सुना सकता था। मगर तुम्हारी यह आदत है कि तुम अपने दुश्मनों से खुद ही इन्तकाम लेते हो। इसलिए मैंने इसे तुम्हारे इंतजार में जिंदा रखा है, मैं चाहता हूं कि तुम इसे अपने हाथों से कत्ल कर दो।"

कमल सोनिया की आंसू भरी आंखें देखने लगा तो, उसी आवाज ने आगे कहा—"औरत के आंसू मर्द को हमेशा बेवकूफ बनाते हैं। तुम एक बार पहले भी इसके आंसुओं के फरेब में आ चुके हो। तुम्हें याद नहीं है—मैं याद दिलाता हूं। यह आंसुओं से अपनी मजबूरी जाहिर कर रही है—जबकि हकीकत में यह बहुत खतरनाक फाइटर है।"

कमल बोला, "यह मुझे ऐसी तो नजर आती नहीं। बहरहाल, जैसी भी हो—जब तक मेरे सामने कमजोर बनी रहेगी मैं इस पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मेरे किसी ऐसे दुश्मन को भेजो जो मर्द हो।" उसने जैसे अपना फैसला सुनाया था।

"यह छोकरी जब मुकाबले पर आती है तो अकेली कई मर्दों पर भारी पड़ती है, सोनिया मैं तुम्हें हुक्म देता हूं—कमलकान्त पर हमला करो।"

वह इंकार में सिर हिलाती हुई एक कदम पीछे हट गई। उसी

वक्त बूढ़े के चीखने की आवाज आई। शीशे के पार एक शख्स कैदी बूढ़े को चाबुक मार रहा था। सोनिया दौड़ती हुई शीशे की दीवार के पास गई और उस पर हाथ मार-मार कर चीखने लगी—

"न मारो...मेरे डैडी को न मारो...। मेरे बूढ़े बाप ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

स्पीकर से आवाज आई, "तुमने हमारा बहुत कुछ बिगाड़ा है, सोनिया! अगर बूढ़े बाप की खैर चाहती हो तो कमलकान्त पर हमला करो।"

वह अपने बूढ़े बाप को यातना सहते और चीखते नहीं देख सकी। वह एक दम पलटी व कमल को खूंखार नजरों से देखने लगी। उसकी आंखें कहर बरसाने लगी थीं। और वह अब नपे-तुले कदमों से कमल की तरफ बढ़ रही थी।

और फिर...।

"शप्प...शप्प।"

उसके हाथों की उंगलियां एक-एक कर के सीधी हो रही थीं और उसके फौलादी नाखून 'शप्प-शप्प' की आवाज के साथ बाहर निकलते जा रहे थे।

कमल ने पीछे हटने में फुर्ती दिखाई और सोचने लगा कि यह सोनिया तो सचमुच ही बहुत खतरनाक छोकरी है। कमल के जहन में धुंधले से अक्स भी उभरे—जो यह आभास दे रहे थे कि यह दरिन्दा-सैफ छोकरी इससे पहले भी इसी तरह उसके मुकाबले में आ चुकी हैं। यह खूंखार जंगली बिल्ली अब अपनी असलियत दिखा रही थी।

स्पीकर से आवाज आई, "कमलकान्त! मैंने इसके बूढ़े बाप पर जुल्म करके इसे महज इसलिए तुम पर हमला करने के लिए मजबूर किया है ताकि इसकी असलियत देख लो। क्या तुम कभी सोच भी सकते थे कि यह जाहिरा मासूम नजर आने वाली छोकरी तुम पर हमला करने के लिए घातक फौलादी पंजे छिपा कर रखती होगी।"

कमल को इस दरिन्दा सैफ छोकरी के मक्कार होने का यकीन हो चला, वह बोला, "सुपर मास्टर! मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं कि तुमने ऐन वक्त पर मुझे खतरे से आगाह कर दिया है। अब यह मक्कार जंगली बिल्ली यहां से जिन्दा वापिस नहीं जाएगी।"

और कमल सोनिया के फौलादी नाखूनों से बचते हुए उस पर हमला करने के लिए संभल-संभल कर पैंतरे बदलने लगा।

सोनिया असहाय सी व झुंझला कर बोली, "होश में आओ, कमल! यह सुपर मास्टर नहीं सुपर शैतान है। इसने तुम्हारा ब्रेनवाश

कर रखा है और इस वक्त तुम गफलत की जिंदगी गुजार रहे हो, मैं तुम्हें कैसे समझाऊं कि मैं कैसी मजबूरी के दोराहे पर खड़ी हुई हूं। मैं अपने बाप को तड़प-तड़प कर मरते नहीं देख सकती और तुम जो मेरे महबूब हो—तुम पर भी दुश्मन बन कर हमला नहीं कर सकती।"

सोनिया कहते हुए वाकई रो दी थी...रो रही थी।

कमल ने उछल कर उसके मुंह पर एक लात रसीद कर दी।

सोनिया लड़खड़ाती हुई दूर फर्श पर जा गिरी।

उसने खुद को संभाला व उठती हुई बोली, "जिस मुंह को तुम चूमते थे उसे ही ठोकर मार रहे हो तुम कमल।"

कमल उसे उठने का मौका नहीं देना चाहता था। वह दौड़ता हुआ उसकी तरफ गया। मगर सोनिया ने फुर्ती से उठ कर 'जूडो' का हाथ दिखाया और कमल को उछाल कर दूसरी तरफ फेंक दिया।

"तुम मुझे सीने से लगा कर प्यार करते थे...मैं कान लगा कर तुम्हारे दिल की धड़कने सुनती थी। इस दिल को इन फौलादी नाखूनों से नोंच कर कैसे निकालूं। मुझे तो तुम्हारा जुल्म प्यारा लगता है...मैं तुम पर कैसे जुल्म करूं?" वह फफक उठी।

कमल फर्श पर से उठ कर उसके फौलादी नाखूनों को देखने लगा। कमल को उलझन का शिकार देख, सोनिया अपने दोनों हाथों को आगे बढ़ाते हुए बदस्तूर भर्राए गले से बोली—

"इन फौलादी पंजों को देखो और सोचो। अभी तुम मेरे दांव में आ गए थे। मैं अगर चाहती तो ये नाखून तुम्हारी बोटियां नोंच लेते। तुम्हारे चेहरे की धज्जियां उड़ा देते। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती। इसलिए नहीं कर सकती कि तुम मेरे जिस्म-ओ-जान के मालिक हो। तुम्हें कोई नुकसान पहुंचाने से पहले मैं मर जाना पसंद करूंगी।"

सोनिया की बात खत्म होते ही सुपर मास्टर की आवाज गूंजी। उसने शीशे के उस पार वाले को आदेश दिया था—"बूढ़े बनजैमन को चाबुक मारो।"

कमल की निगाहें घूमीं—उसने शीशे के उस पार देखा।

"शांय...शांय।" सोनिया के बाप पर चाबुक बरस रहे थे।

बूढ़ा पीड़ा की शिद्दत से बिलबिला उठा।

कमल सहसा चीखा—"सुपर मौस्टर! इस चाबुक वाले से कहो कि वो अपना हाथ रोक ले।"

सुपर मास्टर ने हुक्म दिया। चाबुक मारने वाला रुक गया।

फिर सुपर मास्टर कमल से संबोधित हुआ, "क्या बात है

कमलकान्त! इस बूढ़े से यह हमदर्दी क्यों?"

"इसलिए कि जैसा तुमने बताया—मेरी दुश्मन सोनिया है। उसके बाप को सजा नहीं मिलनी चाहिए।"

"इसका बाप भी गद्दार है। तुम इन बातों को भूल चुके हो। अगर तुम्हें याद होता तो तुम खुद अभी अपने हाथों से इस बूढ़े को भी कत्ल कर देते।"

"सुपर मास्टर। मेरे मुझसे विछड़े हुए अतीत ने मुझे उलझनों में फंसा रखा है। मुझे तुम भी सच्चे नजर आते हो और सोनिया भी सच्ची नजर आती है। सिर्फ मेरी जिंदगी एक झूठ बन कर रह गई है। मुझे बताओ सुपर मास्टर कि मेरी याददाश्त कब वापिस आएगी।"

"बहुत जल्द, कमलकान्त। तुम इत्मीनान रखो—तुम्हें बहुत जल्द ही सब कुछ याद आ जाएगा।"

और इस पर कमल ने सोचपूर्ण लहजे में कहा, "अगर मेरी याददाश्त जल्द ही वापिस आने वाली है तो उस वक्त तक सोनिया और उसके बाप को जिन्दा रखो ताकि मैं अपने अतीत के उजालों में इनके जुर्म को समझने के बाद इन्हें सजा दे सकूं।"

"नहीं कमलकान्त! मैं उस वक्त तक गद्दार मुजरिमों की परवरिश नहीं कर सकता। डॉक्टर तुम्हारे बारे में यकीन दिलाते हैं कि तुम जल्दी ही अपनी पिछली जिन्दगी को याद कर लोगे। मगर वो यह भी कहते हैं कि अगर उनका इलाज नाकाम रहा तो तुम सारी जिंदगी अपने अतीत को याद नहीं कर सकोगे। इन हालात में तुम्हें एक वफादार मुलाजिम की तरह मुझ पर भरोसा करना चाहिए और मेरे हुक्म पर चलना चाहिए।"

"नहीं—सुपर मास्टर! हालांकि मैं इस जंगली बिल्ली सोनिया को पहचान नहीं रहा हूं—मगर इसके आंसू मेरे दिल को छू रहे हैं। इसकी बातों से सच्चाई झलक रही है। वाकई यह अगर चाहती तो अभी थोड़ी देर पहले अपने नाखूनों से मेरी बोटियां नोच लेती—क्योंकि मैं बहुत बुरी तरह इसके दांव में आ गया था। इसलिए मेरा तुमसे अनुरोध है कि मुझे सोचने-समझने का मौका दो।"

"ठीक है। थोड़ा ठहरो मैं अभी जवाब देता हूं।"

और फिर हॉल में कुछ देर के लिए खामोशी छा गई। सोनिया लपक कर कमल के पास पहुंची और जल्दी-जल्दी बोली—"कमल, तुम याददाश्त खो देने के बावजूद जहीन हो। तुमने अपनी बातों से सुपर मास्टर को उलझा दिया है। मेरी इल्तजा है कि जब तक तुम्हें सारी बातें याद न आ जाएं—उस वक्त तक तुम मुझ पर या

सुपर शैतान पर या किसी पर भी भरोसा न करो।"

तत्काल ही स्पीकर से सुपर मास्टर की गुर्राहट सुनाई दी, "सुअर की बच्ची, तू कमलकान्त को बहका रही है। पीछे हट जा।"

सोनिया पीछे हटते हुए बोली, "अगर तुम सच्चे हो तो डरते क्यों हो। मुझे कमल से खुलकर बातें करने की इजाजत दो।"

सुपर मास्टर ने अपने आदमियों को आर्डर दिया—"इस कुतिया को घसीट कर आपरेशन रूम में ले जाओ। मैं हमेशा के लिए इसकी जुबान बन्द कर दूंगा।"

उसका हुक्म होते ही हॉल का दरवाजा खुला। दो स्टेनगनधारी गार्ड हॉल में दाखिल हुए और सोनिया की तरफ बढ़ने लगे।

कमल अपनी जगह से हिला और सोनिया के सामने आ उसकी ढाल बनते हुए बोला, "रुक जाओ। पहले मुझे सुपर मास्टर से बात कर लेने दो।"

जवाब सुपर मास्टर ने दिया, स्पीकर से आवाज आई, "कमलकान्त—तुम मेरे लिए परेशानियों की वजह बन रहे हो। अगर तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो तो सोनिया के आगे से हट जाओ। हमारी बातें बाद में भी हो सकती हैं।"

"नहीं।" कमल के लहजे में सख्ती भर आई—"बातें सोनिया की मौजूदगी में ही होंगी। अगर यह लड़की तुम्हारी मुजरिम और मेरी दुश्मन है तो मुझ पर भरोसा करो—मैं इसे सजा दूंगा। मगर इस लड़की के सच और झूठ को समझने के बाद।"

"ठीक है।" सुपर मास्टर गहरी सांस लेता सुनाई दिया, "तुम्हारे सोचने-समझने तक यह लड़की कैद में रहेगी।"

सोनिया ने जल्दी से कमल का बाजू थामा व कांपती आवाज में बोली, "नहीं कमल। मुझे अपनी नजरों से दूर न होने दो। तुम्हें मेरे पक्ष में बोलते देख, सुपर मास्टर को खतरा पैदा हो गया है। अगर ये मुझे अभी यहां से ले गए तो मैं तुम्हें दोबारा नजर नहीं आऊंगी, यह मुझे मार डालने के लिए ले जा रहे हैं। मैंने तुमसे वफादारी करते हुए इतनी यातनाएं बर्दाश्त की हैं कि मेरी जगह कोई कमजोर दिल की औरत होती तो वह अब तक मर चुकी होती, मुझे बचा लो कमल! अगर इस वक्त तुमने मुझे खो दिया तो अपनी याददाश्त लौट आने के बाद मुझे याद करके बहुत पछताओगे।"

स्पीकर से कहकहा सुनाई दिया।

"कमलकान्त! यह अपनी तरह तुम्हें भी गद्दार बनाना चाहती है। जरा सोचो, इसके बहकावे में आ कर अगर तुम भी गद्दार बन गए तो फिर तुम इसे किस तरह बचा पाओगे। यहां चारों तरफ

हथियारबन्द गार्ड मौजूद हैं, इस बिल्डिंग का बाहरी दरवाजा मेरी मर्जी से खुलता और बन्द होता है। तुम इसे बचाने के लिए यहां से बाहर नहीं निकल सकोगे, तुम इस जंगली बिल्ली की चालाकी को नहीं समझ रहे हो। यह चाहती है कि गद्दारी के अंदेशे से मैं अपने तुम्हारे जैसे जांबाज और वफादार आदमी को मार डालूं। यानी यह खुद मरते-मरते भी तुम्हारी मौत का तमाशा देखना चाहती है। क्या तुम जो मेरे वफादार हो—एक गद्दार की मौत मरना पसन्द करोगे?"

कमल उलझ गया। उसे सोचना पड़ा। वह वाकई वहां से निकलने का रास्ता नहीं जानता था। चारों तरफ स्टेनगनधारी गार्ड मौजूद थे। उसे सोच में डूबा देख, सोनिया उसे झंझोड़ते हुए बोली—"कमल! मेरे महबूब! याद करो—तुम कहते थे कि जब सारे सहारे टूट जाते हैं तो एक भगवान का सहारा हर हाल में बाकी रहता है। याद करो—तुम्हारा अपने रब पर अडिग भरोसा है। तुमने एक बार मुझसे कहा था कि तुम अपनी जहानत, अपने सामर्थ्य और अपने बाहुबल के बावजूद—सिर्फ अपने रब पर भरोसा करके हमेशा खतरों में कूद पड़ते हो, आज भी अपने रब पर भरोसा करो।"

कमल सोनिया की शक्ल देखने लगा। सोनिया कैसी बातें कर रही थी—यह रब क्या हुआ? यह रब कौन है और इस पर सबसे ज्यादा भरोसा कैसा? खाली दिमाग जहन, ऐसी किसी हस्ती...ऐसे किसी विश्वास से अनजान था। वह तो सिर्फ एक शैतान को पहचान रहा था।

और उस शैतान ने कहा, "यह सोनिया अब तुम्हें किसी 'रब' किसी भगवान का विश्वास दिला रही है। जबकि तुम जानते हो कि मैं ही तुम सबका अन्नदाता हूं। तुम सब मेरी मर्जी से पैदा होते हो और मेरे ही हुक्म से मार डाले जाते हो। तुम सबकी जिंदगी और मौत मेरे हाथों में...।"

सुपर मास्टर अपनी बात पूरी नहीं कर सका—उससे पहले ही दूर कहीं एक जबरदस्त धमाका हुआ। ऐसा धमाका था कि इस विशाल सुदृढ़ इमारत के दरो-दीवार हिल गए। और इसके साथ ही तमाम रोशनियां बुझ गईं।

□□

पूरी बिल्डिंग में गहरा सन्नाटा और अंधेरा छा गया था।

कुछ क्षण बीते—और इस अंधेरे में दूसरी बार धमाका हुआ। पैरों तले जमीन कांप रही थी। यही लगता था जैसे तेज जलजला आ गया हो। कितनी ही देर तक किसी की समझ में नहीं आया

कि क्या हो रहा है।

भयावह खामोशी...हौलनाक अंधेरा।

और फिर इस गहन अंधेरे में अपने सामने खड़े हथियारबन्द गार्ड की चीख कमल ने सुनी। इसके फौरन बाद दूसरे गार्ड की चीख सुनाई दी। कमल थोड़ा पीछे हट गया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह हंगामा कैसा है।

तभी सोनिया की आवाज सुनाई दी—"कमल—तुम कहां हो? अपना हाथ आगे बढ़ाओ और इस स्टेनगन को थाम लो। मैंने दोनों गार्ड्स को बेकार कर दिया है।"

कमल अंधेरे में हाथ बढ़ा कर इधर-उधर टटोलने लगा। जल्दी ही एक स्टेनगन उसके हाथ में आ गई। स्टेनगन लेते हुए उसका एक हाथ सोनिया के फौलादी नाखूनों पर गया—और उसके नाखूनों से कुछ गीला लेसदार मवाद कमल के हाथ में लग गया। वह समझ गया कि वह स्टेनगनधारी गार्डों का खून है। सोनिया ने अपने फौलादी पंजों से दोनों का भुर्ता बना दिया था।

तभी सोनिया उसके बिल्कुल करीब आ कर बोली, "अपने रब पर भरोसा रखो, कमल! उसके बाद मेरी वफा का यकीन करो। अगर तुमने मेरा साथ दिया तो हम इस शैतान के पंजे से निकल जाएंगे।"

कमल ने अंधेरे में टटोल कर अपना एक हाथ सोनिया के कंधे पर रखा, फिर बोला, "तुमने यह साबित कर दिया है कि तुम मेरी दोस्त हो—अगर दुश्मन होती तो स्टेनगन मेरे हाथों में देने की बजाय इससे मेरा खात्मा कर चुकी होती, मैं तुम्हारा साथ दूंगा...।"

"मौका अच्छा है।" सोनिया बोली, "लगता है धमाकों के कारण बिजली फेल हो गई है। अब वह शैतान न तो हमें स्क्रीन पर देख सकेगा न ही हमारी आवाज सुन सकेगा, तुम इनमें से एक गार्ड का लिबास पहन लो, इस तरह अंधेरे में कोई जल्दी तुम्हें पहचान नहीं सकेगा, इतनी देर में मैं अपने डैडी को लेकर आती हूं।"

कमल फौरन ही फर्श पर झुक कर एक गार्ड की लाश तक पहुंचा और उसका लिबास उतारने लगा। सोनिया की आवाज दूर से आई—

"बिजली नहीं है—इसलिए यह दरवाजा बटन से नहीं खुल रहा है, इसका मतलब यह है कि हमारी तरह सब लोग अपने-अपने कमरों में कैद हो गए हैं। यहां से दरवाजा तोड़ कर ही बाहर निकलना होगा। अभी मैं शीशे की दीवार तोड़कर डैडी के पास जा रही हूं।"

इसके साथ ही शीशे की दीवार टूटने की आवाज सुनाई दी। सोनिया ने यह कारनामा शायद स्टेनगन के 'बट' से सरअंजाम दिया था, कमल लिबास पहन कर तैयार हुआ तो शीशे की दीवार के उस

पार से दो जनों के लड़ने की आवाज सुनाई दी।

"खबरदार—अब अगर दिलेरी दिखाओगे तो इस फौलादी पंजे से मैं तुम्हारा कलेजा बाहर निकाल लूंगी। चलो—जंजीरें खोलो।"

जंजीरें खुलने की आवाजें सुनाई देने लगी, कुछ ही देर बाद किसी शख्स की घुटी-घुटी चीख गूंज कर रह गई।

कमल ने अंधेरे में आगे बढ़ते हुए पूछा—"क्या बात है सोनिया?"

"कोई बात नहीं।" सोनिया ने गहरी सांस लेते जवाब दिया, "मैंने अपने डैडी को चाबुक मारने वाले को खत्म कर दिया है। मैं डैडी को लेकर आ रही हूं।"

कमल अंधेरे में आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा। गहरे अंधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा था। तभी सोनिया की आवाज आई—"हमें अंधेरे में कुछ न कुछ बोलते रहना चाहिए। यूं आवाज के जरिए हम एक दूसरे के करीब आ सकते हैं। अगर आइन्दा हम बिछुड़ गए तो हम इस तरह सीटी बजा कर एक दूसरे को सिगनल देंगे।" उसने दो टुकड़ों में सीटी बजा कर कमल से पूछा, "क्या तुम दो उंगलियों के जरिए जीभ की नोक को जरा मोड़ कर इस तरह सीटी बजा सकते हो?"

कमल ने दो उंगलियां मुंह में डाल, जुबान को जरा सा मोड़ कर सीटी बजाई तो पता चला कि वह ऐसा कर सकता है।

उन्होंने सीटी का यह सिगनल तय कर लिया।

"मैं अंधेरे में तुम्हारी 'बू' सूंघ कर तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगी।" सोनिया ने आगे कहा तो कमल को हैरत हुई।

कमल हैरान था कि यह सोनिया ऐसा कैसे कर सकती होगी।

तभी सोनिया हसरत भरे लहजे में बोली, "कमल—तुम्हारे पास 'टेलीपैथी' का कैसा अनूठा सामर्थ्य था। तुम हजार पाबंदियों के बावजूद सोच के जरिए मुझसे संबंध स्थापित कर लेते थे। उस वक्त ऐसे सिगनल इत्यादि की जरूरत नहीं पड़ती थी।"

यह रहस्योद्घाटन भी कमल के लिए चौंकाने वाला था। उसने पूछा, "मैं सोच के जरिए किस तरह संबंध स्थापित करता था?"

सोनिया सर्द आह भरते बोली, "मैं इस वक्त तुम्हें समझाऊंगी तो तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आएगा। फिर कभी सही। इस वक्त हमें यहां से निकलने की फिक्र करनी चाहिए। सुपर मास्टर इस वक्त बौखला गया होगा। अब वह एक जगह बैठकर अपने हजारों मातहतों को कंट्रोल नहीं कर सकेगा।"

बूढ़ा बनजेमन कमजोर सी हंसी हंसा, बोला, "शैतान को इसी

तरह जलील होना पड़ता है। अब उसे अपनी कमजोरी का पता चल रहा होगा। कमलकान्त—क्या तुम्हें याद नहीं है कि तुमने मेरे मशवरे पर ही एक दिन रमना के साथ मंसूबा बनाया था कि हम किस तरह इस शैतान को खत्म कर सकते हैं। रमना का दोस्त—ऐराज यहां का सबसे बड़ा इंजीनियर है। शायद रमना को ऐराज से मिलने का मौका मिल गया है—और तुम्हारा पैगाम ऐराज तक पहुंचा दिया गया है। तभी उसने इस टापू के मेन जनरेटर को डायनामाइट से उड़ा दिया है।"

बूढ़ा बनजेमन, किस रमना और ऐराज की बातें कर रहा था—कमल कुछ समझ नहीं पाया, लेकिन अब हालात से उसे यह अंदाज़ा हो रहा था कि जिस तरह यह अजूबा युवती सोनिया अभी साथ दे रही है—उसी तरह कुछ और भी लोग हैं जो पहले भी उसकी दोस्ती का दम भरते थे और अब भी दूर रहते हुए भी उससे दोस्ती का सबूत पेश कर रहे हैं।

"शायद यह रमना और ऐराज भी ऐसे ही वफादार दोस्तों में से हैं।" कमल ने सोचा। वैसे यह हालात कमल को जहनी तौर पर उलझाए हुए थे।

पर कमल ने इन बातों को जहन से निकाल फेंका और मौजूदा हालात के बारे में सोचने लगा।

हॉल की जो खिड़कियां थीं उनमें अंधे शीशे लगे हुए थे—जिनके आरपार कुछ नजर नहीं आता था। मगर इस वक्त शीशों के उस पार कभी-कभी रोशनियां नजर आने लगती थीं। फिर दौड़ते भागते कदमों की आवाजें भी सुनाई देने लगीं। खामोशी के इस लंबे अंतराल के बाद यह अंदाजा हो रहा था कि सुपर मास्टर के आदेश अपने मातहतों तक देर से पहुंचे हैं।

अब तक सब अपनी-अपनी जगह साकत व निश्चल खड़े थे, पर अब हॉल से बाहर शोर सुनाई दे रहा था। टार्च की रोशनियां इधर से उधर सरसरा रही थीं और बैटरी के जरिए लाउड-स्पीकर से कहा जा रहा था—

"कमलकान्त! बिजली के ऑटोमेटिक दरवाजे बंद हो चुके हैं। तुम परेशान न होना। वो तुम्हें सुरक्षित निकाल कर बाहर ले जाएंगे। और सोनिया! तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि तुम अपने दोनों हाथ उठाए खड़ी रहो। दिलेरी या चालाकी दिखाओगी तो स्टेनगन की गोलियां तुम्हें भून कर रख देंगी।"

यह सुनते ही सोनिया अपने बाप को लेकर उस दीवार की तरफ चली गई—जहां की खिड़कियां तोड़ी जाने वाली थी। उसने बनजेमन

को इस दीवार के एक कोने में खड़ा कर दिया और फिर ऱ. । कर कमल के पास आ कर बोली—"स्टेनगन संभाल लो। जो भी खिड़की के रास्ते से आए उसे भून कर रख दो। मैं दूसरी खिड़की की तरफ जा रही हूं।"

यह कह कर वह अंधेरे में गुम हो गई।

खिड़की के शीशे तोड़े जा रहे थे। टूटने वाली खिड़की से बाहर का मंजर दिखाई दे रहा था—क्योंकि वहां किसी ने टॉर्च जला रखी थी।

खिड़की का रास्ता साफ होते ही दो सशस्त्र गार्ड अंदर आने के लिए खिड़की पर चढ़ने लगे।

कमल की निगाहें उन्हीं पर थीं। उसने स्टेनगन से फायर खोल दिया। कई चीखें बुलन्द हुई। दोनों गार्ड भीतर आ कर गिरे। बाहर खड़े लोग भी गोलियों की बौछार में आ गए थे। बाकी जो बचे थे वो जवाबी कार्रवाई के लिए दूसरी तरफ जा कर दुबक गए थे।

उधर दूसरी तरफ की खिड़की में भी सोनिया यही खूनी ड्रामा खेल कर खामोश हो गई।

कुछ देर तक सन्नाटा व्याप्त रहा।

फिर लाउड-स्पीकर से आवाज आई, "कमलकान्त! क्या तुम सोनिया का साथ दे रहे हो? यह हिमाकत न करो। तुम्हें अब भी माफी मिल सकती है। हथियार फेंक कर खिड़की के रास्ते बाहर आ जाओ।"

सोनिया अंधेरे में चलती हुई कमल के पास आ गई थी। वो कमल के हाथ में एक छोटा सा थैला पकड़ाते हुए बोली—

"इसमें ग्रेनेड हैं। देखो, इस हथगोले की यह छोटी सी 'पिन' दांतों से खींच कर दुश्मनों की तरफ फेंक देना, अगर फेंकने में देर हो गई तो यह तुम्हारे हाथों में ही फट जाएगा। बहुत होशियारी की जरूरत है। क्या तुम ऐसा कर सकोगे?"

"हां—यह हथियार मेरे लिए नए नहीं हैं। मगर यह चीजें तुम्हें कहां से मिल गई?"

"जो गार्ड मेरे निशाने पर आकर अंदर गिरे थे—ये चीजें मैंने उन्हीं से हासिल की हैं। ऐसा ही एक थैला मेरे पास भी है। अब मैं दूसरी तरफ जा रही हूं।"

सोनिया चली गई।

लाउड-स्पीकर पर जो शख्स कमल को हथियार फेंकने के लिए कह रहा था वो कमल के जवाब का प्रतीक्षक था। कमल कुछ नहीं बोला तो लाउड-स्पीकर पर फिर कहा गया—

"कमलकान्त! हम पांच तक गिनेंगे—अगर तुम बाहर नहीं आए तो फिर "टीअर-गैस' के गोले फेंके जाएंगे। एक...दो...तीन... चार...।"

"ठहरो—मैं आ रहा हूं।" कमल बोल उठा।

कमल का जवाब सुनते ही गिनती बंद हो गई। कमल तेजी से चलता हुआ खिड़की के पास आया। उसने एक ग्रेनेड की पिन दांतों से खींची फिर खिड़की के बाहर झुक कर उसे जल्दी से दूर कारीडोर के बाहर उछाल दिया।

अगले ही क्षण कयामत का धमाका हुआ।

कमल पलट कर हॉल में आ गया था। लेकिन धमाके ने ऐसा जलजला पैदा किया कि वो अपना संतुलन बनाए नहीं रख सका और फर्श पर औंधे मुंह जा पड़ा।

सोनिया ने भी शायद कुछ ऐसा ही किया था—क्योंकि कुछ सेकेण्ड के बाद फिर एक धमाका सुनाई दिया। चीखो-पुकार की आवाजें पूरी इमारत में गूंज रही थीं।

कमल ने उठकर देखा।

दूर कहीं शोले भड़क रहे थे और इससे इमारत का भीतरी हिस्सा प्रकाशमान हो रहा था। भागने वाले अब खिड़की की तरफ आने की जुर्रत नहीं दिखा रहे थे। कमल ने बूढ़े बनजेमन को अपने कंधे पर लाद लिया। फिर सोनिया से कहा कि पहले वह खिड़की से बाहर निकल कर उसे व अपने बाप को 'कवर' करे।

"बाहर निकलते ही," कमल उसे हिदायत देते बोला, "स्टेनगन का एक ब्रस्ट मारना—ताकि कोई पीछा करने की हिम्मत न कर सके।"

सोनिया ने उसकी हिदायत अनुसार पहले खिड़की से झांककर बाहर देखा। फिर खिड़की से कूद कर दूसरी तरफ पहुंचते ही तड़ातड़ गोलियां चलाने लगी।

कमल बनजेमन को कंधे पर लादे उसके पीछे हॉल से बाहर आ गया। सोनिया उनके लिए ढाल बन कर आगे बढ़ने लगी।

बाएं तरफ के कॉरीडोर में शोले भड़क रहे थे।

सोनिया ने आगे बढ़ कर दाईं तरफ के कारीडोर में मुड़ते ही फायर खोल दिया। फिर फौरन ही पलट कर दीवार से लग गई—क्योंकि दूसरी तरफ से जवाबी फायरिंग हो रही थी।

कमल ने बूढ़े बनजेमन को कंधे से उतार कर सोनिया से कहा, "तुम मौका देख कर फिर एक बार फायरिंग करो। इस बीच मैं दूसरी तरफ पहुंच जाऊंगा।"

सोनिया नें ऐसा ही किया। मौका मिलते ही फायरिंग शुरू कर दी।

कमल फौरन ही फर्श पर लेट कर तेजी से लुढ़कता हुआ दूसरी तरफ चला गया। और फिर फुर्ती से उठ कर पोजीशन संभाल ली। अब स्थिति यह थी कि कारीडोर के एक तरफ सोनिया थी व दूसरी तरफ वह खुद। दोनों ने बारी-बारी से फायरिंग की तो कारीडोर का रास्ता तुरंत ही साफ हो गया।

बनजेमन ने एक दरवाजे की तरफ देखते हुए कहा, "मिस्टर कमलकान्त! इस दरवाजे पर लगे बटन की बनावट बता रही है कि कारीडोर के आखिरी सिरे में बाहर निकलने का पांचवां दरवाजा है। वह अब बिजली के जरिए नहीं खुल सकेगा उसे ग्रेनेड से उड़ा दो।"

कमल ने थैले से एक हथगोला निकाल कर उसकी 'पिन' दांतों से खींची व उसे कारीडोर के अंतिम छोर पर दरवाजे की तरफ उछाल दिया।

अगले ही क्षण एक जबरदस्त धमाका हुआ और उस दरवाजे के चीथड़े उड़ गए। सोनिया अपने बाप का हाथ पकड़ उसे खींचती हुई दरवाजे की तरफ दौड़ने लगी।

कमल उनके आगे-आगे था।

कमल ने दरवाजे के सामने कारीडोर में मोड़ पर पहुंचते ही दोनों तरफ फायरिंग की फिर छलांग लगा कर दरवाजे से बाहर निकल गया। सोनिया भी अपने बाप के साथ उसके पीछे-पीछे चली आई थी।

बाहर डूबती शाम के मलगजे उजाले फैले हुए थे जिसमें टापू के नजारे दूर तक साफ नजर आ रहे थे। सड़क के दूसरी तरफ एक कार खड़ी हुई थी। वो सीधे कार तक नहीं पहुंच सकते थे। क्योंकि उनके पीछे टूटे दरवाजे से सशस्त्र गार्ड भी बाहर पहुंचने ही वाले थे।

कमल और सोनिया दरवाजे के दोनों तरफ दीवार से लग कर खड़े हो गए।

कुछ देर तक ध्वंस हो चुके दरवाजे के पीछे खामोशी रही, शायद गार्ड भी कोई अंधा कदम उठाने को तैयार नहीं थे और वो पहले कमल व सोनिया की पोजीशन का यकीन कर लेना चाहते थे। यही मालूम करने को उन्होंने एक ग्रेनेड बाहर फेंका। पर कमल और सोनिया उसके धमाके से पहले ही थोड़ा दूर सरक गए थे। और फिर उन्होंने भी दरवाजे को लक्ष्य कर फायरिंग शुरू कर दी ताकि

गार्ड बाहर न आ सकें।

तभी कमल ने एक और हथगोला निकाला और पिन खींच उसे दरवाजे के अंदर की तरफ फेंक मारा। फिर जैसे ही अंदर धमाका हुआ वे दौड़ते हुए कार तक पहुंच गए।

उनके कार में समाते ही इस इमारत का तीसरा दरवाजा धमाके से उड़ गया। गार्ड उस तीसरे दरवाजे से निकल कर उन्हें घेरना चाहते थे पर अब वे कार में थे और कार उनकी रेंज से बाहर थी।

इसके बावजूद उन्होंने गोलियां बरसाईं।

कमल ने कार की रफ्तार और बढ़ा दी थी।

गार्डों की पहुंच से दूर पहुंच कमल ने रफ्तार तनिक कम की व पूछा, "अब हम जाएंगे कहां?"

जवाब बनजेमन ने दिया, "हमें पहले रमना के बंगले पर जाना चाहिए। हो सकता है कि वहीं ऐराज वगैरह से भी मुलाकात हो जाए। मैं तुम्हें रास्ता बताता हूं—तुम उसी तरफ चलते रहो।"

कमल उसके बताए रास्तों पर कार दौड़ाता रहा।

❑❑

पूरे टापू में अफरा-तफरी मची हुई थी। जो सशस्त्र गार्ड इमारत के बाहर थे—वह सब पावर हाउस की तरफ चले गए थे। इतने बड़े जनरेटर की तबाही कोई मामूली बात नहीं थी। ऐसे में सबका ध्यान उधर ही होना स्वाभाविक था। फिर बिजली न होने की वजह से सुपर मास्टर के आदेश या निर्देश भी अपने आदमियों तक नहीं पहुंच सके थे।

पर अब धमाकों के साथ इमारत के दरवाज़ों के उड़ जाने की खबर छिपी नहीं रहनी थी। और उनकी बगावत की खबर किसी भी क्षण पूरे टापू में फैल सकती थी।

कमल ने कार रमना के बंगले के बाहर रोकी थी।

बंगले के बाहर कई सशस्त्र गार्ड तैनात थे।

बनजेमन चिंतित नजर आने लगा। उसने सोनिया से अपनी जुबान में कुछ कहा और कार से नीचे उतर गया और गेट पर खड़े गार्डों से बोला—

"मैं रमना से मिलने आया हूं। क्या वह फिर कैद कर दी गई है?"

तभी रमना और ऐराज बंगले से बाहर निकलते नजर आए। रमना भाग कर ही बनजेमन के पास पहुंची थी।

"अब हम कैदी नहीं हैं। यह तमाम हथियारबंद गार्ड हमारे साथी हैं।" उसने बताया, "अंकल बनजेमन तुम्हारे साथ कार में और

कौन है?"

ऐराज बोल उठा, "हमें सुपर मास्टर का एक निजी गार्ड कार में नजर आ रहा है।"

ऐसा उसने कमल को लाल रंग की यूनीफार्म में देख कर कहा था। वह वर्दी सुपर मास्टर के निजी कंट्रोल वाले गार्डों की जो थी।

"वह गार्ड नहीं।" बनजेमन ने बताया, "गार्ड की यूनीफार्म में मिस्टर कमलकान्त हैं। उसके साथ मेरी बेटी सोनिया है।"

कमल व सोनिया भी कार से बाहर निकल आए थे। रमना कमल को देखते ही खुशी से खिल गई। वह अपने मंगेतर ऐराज का बाजू थामते हुए बोली—"ऐराज! यही कमलकान्त है। मैंने इनके बारे में तुम्हें बहुत कुछ बताया है।"

ऐराज तेजी से चलता हुआ कमल के पास आया और फिर उससे बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए बोला—"आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई, मिस्टर कमलकान्त! पर यह जान कर अफ़सोस भी हो रहा है कि सुपर मास्टर ने तुम्हारा ब्रेन वाश कर तुम्हारी याददाश्त खत्म कर तुमसे तुम्हारी टेलीपैथी की ताकत छीन ली है। आप एक बहुत बड़ी ताकत के मालिक थे।"

बूढ़ा बनजेमन बोल उठा, "हमें मायूस नहीं होना चाहिए, कमलकान्त जल्द ही अपने अतीत को याद कर लेगा—फिर इनका टेलीपैथी का सामर्थ्य भी लौट आएगा, फिलहाल हमें मौजूदा हालात से निपटना है।"

वे यूं ही बातें करते हुए बंगले के बरामदे में आ गए।

रमना बोली, "ऐराज इस टापू से फरार होने के लिए मोटर-लांच का इंतजाम कर आया है। वहां भी हमारे आदमी हमारी इंतजार कर रहे होंगे। हमें यहां से फौरन चलना चाहिए।"

सभी रमना से सहमत थे, पर सोनिया ने इंकार करते हुए कहा—"सिर्फ जान बचाना ही बड़ी बात नहीं है। मान-सम्मान बचाना भी जरूरी है। सुपर शैतान ने अपने कमलकान्त के खिलाफ ऐसे घिनौने व खतरनाक सबूत जुटा रखे हैं—जिनके दम पर वह आगे चल कर भी कमल को ब्लैकमेल कर सकता है। उसने कमल की नंगी-घिनौनी फिल्में बना रखी हैं—जिनके रहते अपने लोगों व अपने समाज में कमल की इज्जत हमेशा दांव पर रहेगी। कमल को जहनी झटके दे—उसका ब्रेनवाश कर दिया गया है—पर मैंने इनसे वायदा किया था कि मैं इनके खिलाफ सारे क्रिमिनल रिकार्ड्स को और इनकी ब्लू-फिल्मों को मौका मिलते ही नष्ट कर दूंगी। मैं अपना यह वायदा पूरा किए बिना इस टापू से बाहर नहीं जाऊंगी।"

कमल उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।

यह बातें, यह जानकारियां उसके लिए नई थीं। वह नहीं जानता था कि उसे बदनाम करने के लिए उसकी ब्लू-फिल्में कैसे बनाई गई हैं। और वो क्रिमिनल रिकार्ड या सबूत कैसे हैं, जिसकी बिना पर सुपर मास्टर उसे ब्लैकमेल कर सकता है। पिछली बातों से उसका जहन बिल्कुल साफ था।

ऐराज बोला, "सुपर मास्टर के पास हम जैसे कितने ही लोगों की कमजोरियों का रिकार्ड मौजूद है। हम इस वक्त अगर इन रिकार्ड्स की फिक्र करेंगे तो फिर चारों तरफ से घेर लिए जाएंगे। यहां से जान बचा कर निकलना मुश्किल हो जाएगा।"

सोनिया बोली, "मुश्किल जरूर होगा—लेकिन नामुमकिन नहीं है। जरा सोचो, यहां से बच कर निकल जाने का फायदा क्या होगा। हम किसी भी मुल्क में सकून की जिन्दगी नहीं गुजार सकेंगे। वह शैतान हम तक जरूर पहुंचेगा और ब्लैकमेलिंग के जरिए फिर हमें अपना गुलाम बना लेगा या इंतकाम लेने को हमें कानून के हवाले कर देगा।"

कमल सोनिया को देखे जा रहा था। सोनिया अपनी बातों व हरकतों से अब तक यही साबित करती आ रही थी कि यह अजूबा युवती उसे दिलो-जान से चाहती है और कदम-कदम पर उसके लिए अपनी जान की बाजी लगा रही है।

वह कुछ सोच, ऐराज से बोला, "सोनिया ठीक कह रही है, अगर हमारे पीछे यहां हमारी कमजोरियां रह जाएंगी तो मिलने वाली आजादी का कोई फायदा हासिल न होगा। अक्लमन्दी इसी में है कि हम अपनी तमाम कमजोरियों को यहां से मिटा कर ही जाएं।"

रमना ने ऐराज का बाजू थामते, झिझकते हुए कहा, "ऐराज! माई लव! मैंने तुमसे कुछ नहीं छिपाया है। तुम जानते हो कि मेरी भी कई फिल्में तैयार हो चुकी हैं। मैं इस टापू से निकल कर इज्जत की जिंदगी गुजारना चाहती हूं। आओ—हम इज्जत की खातिर जान की बाजी लगा दें।"

ऐराज ने उसे अपने बाजू में ले लिया, बोला, "मैं यह सब तुम्हारे लिए ही कर रहा हूं। ओ.के. अब हम सागर तट पर जाने की बजाए इस शैतान के हैडक्वार्टर के रिकार्ड रूम तक पहुंचने की कोशिश करेंगे।"

ऐराज ने अपने एक साथी को सागर तट की तरफ भेज दिया—ताकि लांच में इंतजार करने वाले साथियों तक यह खबर पहुंच जाए कि वो वहां बाद में पहुंचेंगे।

"उनसे कहना।" ऐराज उसे समझाते हुए बोला था, "अगर वो कोई खतरा महसूस करें तो वो लांच को छोड़ कर गुम्बदनुमा इमारत की तरफ चले आएं। वहां हम उनसे मिल सकते हैं।"

और अब वे सब बंगले के पिछवाड़े पहुंचे।

वहां दो वैगन खड़ी हुई थीं। वे सब गिनती में पच्चीस थे—वे इन दो वैगनों में समा गए।

ऐराज ने अपने साथियों को समझा दिया कि गुम्बदनुमा इमारत के सामने पहुंचते ही उन्हें किस तरह चारों तरफ फैल जाना है। यह भी तय हो गया था कि कमल और सोनिया चार हथियारबन्द जवानों के साथ उस भूल-भलैया जैसी गुम्बदनुमा इमारत के अंदर जाएंगे और बाकी ऐराज के नेतृत्व में इमारत के बाहर रह कर सुपर मास्टर के वफादारों को इमारत के निकट आने से रोकते रहेंगे।

यूं इस प्लानिंग के साथ वो सब वैगनों में सुपर मास्टर के हैड क्वार्टर की तरफ रवाना हो गए।

इस वक्त तक पूरे टापू पर सुपर मास्टर के खिलाफ इन लोगों की बगावत की खबर फैल चुकी थी। जब वे आवासीय बंगलों से दूर निकल आए तो उन्होंने सुपर मास्टर के सुर्ख वर्दीधारी गार्डों को दूसरी सड़क से रमना के बंगले की तरफ जाते देखा, अगर इन्हें थोड़ी भी देर और हो गई तो सुपर मास्टर के इन वफादारों से टकराव जरूरी था।

मगर इमारत के सामने पहुंच कर उन्हें इमारत के सुरक्षा कर्मियों से मुकाबला करना पड़ा।

इस वक्त तक चारों तरफ अंधेरा फैल चुका था।

गाड़ियों की हैड-लाइट्स की रोशनियों में ही उन्हें इमारत के पहरेदार नजर आ गए थे। उनमें से किसी एक ने 'हाल्ट' कह कर इन्हें रुकने को कहा।

वे सब तैयार थे। गाड़ियों के दरवाजे खोल धड़ाधड़ बाहर निकलते ही इन्होंने फायरिंग शुरू कर दी थी। ये लोग अंधेरे में थे और इमारत के निगरान हैड-लाइट्स की रोशनी में छुप नहीं सकते थे, इसलिए कुछेक मिनट में ही इस टकराव का फैसला हो गया। इमारत के बाहर तैनात निगरान एक-एक करके खत्म हो गए। अंदर से भी कुछ गार्ड बाहर आए तो वे भी गोलियों का निशाना बन गए।

और अब इमारत इन लोगों के घेरे में थी।

गाड़ियों का रुख मोड़ कर अब सड़क की तरफ कर दिया गया था—ताकि उनकी रोशनी में दूर से आने वाले नजर आ जाएं।

अब इन्होंने टूटे हुए दरवाजों से भीतर जाने के बारे में मंत्रणा

की।

ऐराज ने कहा—"इस टापू पर सुपर मास्टर के गार्डों की तादाद सिर्फ एक सौ है, जिनमें से कुछ इस इमारत के अंदर रहते हैं और कुछ टापू के विभिन्न हिस्सों में गश्त करते रहते हैं। बाकी अपनी ड्यूटी-शिफ्ट से वापिस आ कर रेस्ट करते हैं। मगर इस इमरजेंसी में सभी सतर्क व चौकस होंगे।"

कमल बोला, "मैंने और सोनिया ने इस इमारत में करीब बीस गार्डों को ठिकाने लगा दिया होगा। करीब दस गार्ड यहां बाहर मुर्दा पड़े हैं, बाकी पावर हाउस की तरफ होंगे या हमें तलाश कर रहे होंगे। इस हिसाब से इमारत के अंदर अब चंद गार्ड ही बाकी रह गए होंगे।"

"अभी पता चल जाता है।" ऐराज कुछ सोचते हुए बोला, "पहले हमारा एक आदमी अंदर जाएगा।"

उसने अपने एक आदमी को इशारा किया। वह अपनी स्टेनगंन संभालता, सहमे हुए से अंदाज में दरवाजे के करीब पहुंचा और फिर फायरिंग करता ही तूफान की तरह अंदर घुसता चला गया।

फायरिंग के जवाब में फायरिंग और चीखें सुनाई दी, इनमें ऐराज के साथी की चीख भी शामिल थी, वह बेचारा अपने साथियों के लिए जान दे चुका था।

कमल ने गहरी सांस लेते कहा, "यह गलत है। मैं अपने मकसद के लिए यहां आया हूं। इसके लिए मैं दूसरों की कुर्बानी गवारा नहीं करूंगा, हमारा अन्दर जाना तय हुआ था। अब मैं अंदर जाऊंगा।"

कमल आगे बढ़ा तो सोनिया भी उसके साथ हो ली। सोनिया कहीं भी उससे पीछे नहीं रहना चाहती थी।

कमल बोला, "सोनिया तुम मेरे पीछे रहो। पहले मैं अंदर जाऊंगा।"

"नहीं। हम दोनों एक साथ अंदर दाखिल होंगे।" सोनिया जैसे निर्णायक लहजे में बोली थी, "तुम दाईं तरफ फायरिंग करोगे और मैं बाईं तरफ गोलियां बरसाती हुई उस सामने वाली राहदारी में पहुंच जाऊंगी। हमारे इस साथी को इसीलिए मरना पड़ा कि वो सिर्फ एक ही तरफ फायरिंग करता हुआ अंदर गया था।"

सोनिया बड़ी उचित बातें कह रही थी।

तभी रमना बोल उठी, "कमल! क्या तुम्हें याद है कि मैंने तुम्हें बताया था कि इस इमारत की भूल-भलैया राहदारियों में दरवाजों पर लगे किस रंग और बनावट के बटन किस दरवाजे की तरफ रहनुमायी करते हैं। पर तुम यह सब भूल चुके होगे। सो, फिलहाल

तुम और सोनिया इतना याद रखो कि सुर्ख रंग का बटन जहां नजर आएगा—उसके बाईं तरफ की राहदारी वाला हिस्सा बहुत खास और अहम है। सुपर मास्टर—उसी तरफ के ही किसी कमरे में पाया जा सकता है। बहुत सावधान होकर जाओ।"

यह जानकारी भी बड़ी अहम थी। हालांकि कमल को याद नहीं आ रहा था कि इस दिलफरेब रमना ने उसे इस बाबत कब और क्यों बताया था? बहरहाल, उसने सोनिया के साथ दरवाजे का रुख किया।

और फिर।

प्लानिंग के मुताबिक वो फायरिंग करते हुए अंदर घुसते चले गए, सामने वाली राहदारी में पहुंच कर पता चला कि जवाबी फायरिंग करने वाला कोई है ही नहीं। वहां कितने ही गार्डों की लाशें पड़ी हुई थीं।

सोनिया टार्च निकाल कर दूर तक रोशनी फेंकने लगी।

चारों तरफ गहरी खामोशी थी।

सोनिया ने कमल को टार्च देते हुए कहा—"तुम इस तरफ जाओ। मैं उस राहदारी में जाती हूं।"

"तुम अंधेरे में कैसे जाओगी?"

"मैं अंधेरे में इंसानों की बू सूंघ लेती हूं। जब तुम्हारे पास पहुंचना होगा तो मैं तुम्हारी भी बू सूंघ कर चली आऊंगी। तुम मेरी फिक्र न करो। सुर्ख बटन नजर आए तो उसी खास अंदाज में सीटी बजा देना। ओ.के. विश यू गुड लक।"

सोनिया जवाब सुने बिना ही आगे बढ़ती हुई अंधेरे में गुम हो गई।

और कमल कुछ देर तक हैरानी से सोचता रहा कि आखिर यह युवती किस तरह इंसानों की बू सूंघ लेती है। सोनिया ने कमल को उसकी टेलीपैथी और दूसरों के जहन में झांक सकने की अविश्वसनीय शक्ति के बारे में भी बताया था—जो वह अपनी याददाश्त के साथ खो चुका था।

अपने बारे में सोचते हुए कमल को बड़ा अजीब सा लगता था। बड़ी अजीब जिंदगी थी। वह अपनी जिंदगी की अहम यादों के बिना जी रहा था। उसके चारों तरफ जैसे धुंध छाई हुई थी। और हकीकतन वह अपनी पिछली जिंदगी अपने खुद के अतीत को पा लेने की उम्मीद के सहारे इस धुंध से गुजरता जा रहा था।

और इस वक्त उसके चारों तरफ गहन अंधकार छाया हुआ था। यही सब सोचते हुए वह दीवार से लग कर आहिस्ता-आहिस्ता आगे

बढ़ रहा था। किसी भी कदम पर कोई भी अचानक ही टकरा सकता था। अंधेरे में दोस्त और दुश्मन सब ही अंधे बन जाते हैं। छिपे दुश्मन के अंदेशे से—टार्च को भी बड़ी अहतियात से इस्तेमाल की जरूरत थी। बिना सोचे समझे रोशनी करने से कहीं भी छिपा दुश्मन रोशनी को लक्ष्य कर फायरिंग कर सकता था।

वैसे अब कमल की आंखें इन अंधेरों की आदी हो चुकी थीं। वह संभल-संभल कर कदम बढ़ाता हुआ एक राहदारी से दूसरी राहदारी में गुजरने लगा।

उसने सोनिया के बारे में सोचा।

उसकी तरह सोनिया भी इमारत के किसी हिस्से में भटक रही थी। वह तो फिर भी अपनी सूंघने की शक्ति के जरिए अंधेरे में अपनी तरफ अपने करीब आने वालों को महसूस कर लेती। आंखों की बजाए 'नाक' से देख लेती, मगर कमल तो इन अंधेरों में बिल्कुल बेकार सा हो गया था। हर क्षण यही धड़का लगा हुआ था कि कोई आगे-पीछे से या दाएं-बाएं से अचानक ही हमला न कर दे।

लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं था।

किसी कमबख्त से टकराव नहीं हुआ था। वह अंधेरे में ही घूमता रहा। और फिर करीब आधे घंटे बाद सोनिया की आवाज सुनाई दी।

"कमल! तुम जहां हो—वहीं ठहर जाओ। मैं आ रही हूं।"

सोनिया ने वाकई अंधेरे में कमल की बू पा ली थी। वो रास्ता खोजती हुई कमल के पास आ गई और धीरे से बोली—"पूरी इमारत वीरान पड़ी है, मुझसे तो एक भी जिंदा पहरेदार नहीं टकराया।"

"यही हाल मेरा है। मैं खामखां ही इन अंधेरों में भटक रहा हूं। अब हमें टार्च जला कर उस सुर्ख बटन को तलाश करना चाहिए।" कमल ने कहा और टार्च रोशन कर दी।

सामने ही एक कमरा था। बम के धमाके से इसकी दीवारें गिर चुकी थीं, वहां टार्च की रोशनी में उन्हें दो शिकारी कुत्तों के सिर और धड़ नजर आए। वे टूटी दीवारों तले मुर्दा पड़े हुए थे। सोनिया कमल से टार्च झपटते तेजी से बोली—

"मेरे डैडी इन कुत्तों की तरह एक और लड़की को इस कमरे में सूंघने की ट्रेनिंग दे रहे थे।" यह कहते हुए वो तेजी से आगे बढ़ कर उस कमरे में गई। वहां बड़े-बड़े पत्थरों के नीचे एक भरपूर जवान लड़की की गोरी-गोरी टांगे नजर आईं। सोनिया भर्राई आवाज में बोली, "अफसोस हम इसकी जान नहीं बचा सके।"

"यह कौन थी?"

"रमना की बहन थी। इसका नाम सैली था। डैडी इसे भी बचपन ही से मेरी तरह बना रहे थे।"

कमल सोनिया की कमर में हाथ डाल कर उसे राहदारी में ले आया। और फिर उसके हाथ से टार्च लेकर आगे बढ़ गया और दरवाजों के बटनों पर रोशनी फेंक कर देखता गया, सोनिया भी उसके साथ-साथ चल रही थी।

सहसा गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी।

उनके पैरों तले की जमीन कांपने लगी। वो दोनों एक दूसरे का सहारा लेकर अपने कदम मजबूती से फर्श पर जमाये रखने की कोशिश करने लगे, कुछ देर बाद ही अहसास हो गया कि जमीन तले कहीं कोई बहुत शक्तिशाली मशीन चल रही है।

कमल बोला, "लगता है इस बिल्डिंग के तहखाने में कोई बड़ी सी मशीन है। हमें इस आवाज की दिशा में चल कर तहखाने का रास्ता मालूम करना चाहिए।"

एक लम्बे सन्नाटे के बाद अब इस मशीन की शोर मचाती हुई आवाज चारों तरफ गूंजती हुई सी लग रही थी, उसकी आवाज की सही दिशा मालूम कर सकना मुश्किल था। अभी वो कान लगाए कोई अनुमान लगा पाने की कोशिश ही कर रहे थे कि अचानक इस विशाल इमारत का एक हिस्सा रोशन हो गया।

वो दोनों तत्काल ही उछल कर एक दीवार के पीछे चले गए।

कमल व सोनिया दोनों की निगाहें अब इमारत के उस प्रकाशमान हिस्से की तरफ उठी हुई थीं। वहां राहदारी के तमाम बल्ब रोशन हो गए थे। रास्ता दूर तक दिखाई दे रहा था।

सोनिया एक दरवाजे की तरफ इशारा करते बोली, "वह देखो, वहां सुर्ख बटन नजर आ रहा है।"

कमल को वह सुर्ख बटन दिखाई दे गया, "यह प्रकाशमान हिस्सा जरूर महत्वपूर्ण होगा। सुपर मास्टर भी इसी तरफ के किसी कमरे में मौजूद होगा। लगता है उसने हालात पर काबू पा लेने के बाद दूसरा जनरेटर स्टार्ट कर लिया लगता है।"

"हां।" सोनिया ने कहा, "यह दूसरा जनरेटर कम हार्स-पावर का है। इसीलिए इससे एक सीमित व खास हिस्सा रोशन किया गया है।"

"यह कैसे मुमकिन है।" कमल ने हैरानी से पूछा।

"यहां कुछ भी नामुमकिन नहीं है।" सोनिया ने बताया, "सुपर मास्टर ने अपने मातहतों पर नजर रखने के लिए इस इमारत में हर जगह उन्हें टेलीकास्ट करने के संयत्र लगा रखे हैं। वो शैतान

इस वक्त टी.वी. स्क्रीन पर हमें देख भी रहा होगा और हमारी बातें भी सुन रहा होगा।"

कमलकान्त छत की तरफ इधर-उधर देखने लगा कि टेलीकास्ट करने वाले संयत्र कहीं नजर आ जाएं।

तभी एक करीबी राहदारी से कुछ अजीब किस्म की आवाज सुनाई दी। कोई भारी भरकम चीज कॉरीडोर के चिकने फर्श पर घिसट रही थी या फिर उस चीज को कोई उठाकर फर्श पर रख रहा था। यकीनन कोई फौलादी सी चीज थी, फर्श से टकराते ही एक झनझनाहट सी सुनाई देती थी।

फिर उन्हें इस चीज का साया दिखाई दिया।

और यूं तो वह एक इंसानी साया था लेकिन डीलडौल में बहुत लम्बा-चौड़ा व चट्टान सा भद्दा नजर आ रहा था।

कमल व सोनिया—फौरन ही दो विभिन्न राहदारियों की तरफ चले गए और दीवार से लग कर इस आने वाले का इंतजार करने लगे।

बहुत ज्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा।

उन्होंने जरा आगे झुक कर उस राहदारी की तरफ देखा, जहां साया नजर आ रहा था। अब साया वहां नहीं था...वो खुद खड़ा हुआ था।

उसे देखते ही सोनिया के हलक से चीख निकल गई।

उनकी निगाहों के सामने एक फौलादी इंसान खड़ा हुआ था। इस इंसान के लिए शब्द फौलादी कोई उपमा नहीं है। वह सिर से पांव तक सचमुच फौलाद का बना हुआ था। वह लगभग सात फुट ऊंचा था। इसी के अनुपात में वह चौड़ा और भारी भरकम भी था। यह शायद रोबोट था। और अगर उस जैसे दो अदद रोबोट कंधे से कंधा मिला कर खड़े हो जाते तो कॉरीडोर से गुजरने को जगह नहीं रहती।

उसके भारी-फौलादी चेहरे पर आंखों की जगह दो पीले रंग के शीशे नजर आ रहे थे और उसके सामने का सारा दृश्य इन शीशों में दिखाई दे रहा था। जाहिर था—उसकी आंखें टी.वी. सिस्टम से बनाई गई थीं। वो इन्हीं आंखों से सामने की तरफ देख रहा था मगर कमल और सोनिया उसे नजर नहीं आ रहे थे। अचानक उसके अंदर से कड़कड़ाहट की आवाज सुनाई दी। फिर उसके फौलादी जिस्म के अंदर एक स्पीकर ऑन हुआ। वह बोल रहा था।

"हैलो, कमलकान्त! तुम मुझसे छिप नहीं सकोगे, देखो—मैं तुम्हारा सुपर मास्टर हूं। मेरे सामने आओ और एक गुलाम की तरह

अदब से मेरे सामने घुटने टेक दो।"

क़मल ने सोनिया की तरफ देखा। सोनिया आगे बढ़ कर इस फौलादी इंसान के सामने चली गई। दोनों के बीच लगभग दस गज का फासला था। वो अपनी स्टेनगन संभालते हुए बोली—

"तुम्हारे जैसा सुपर मास्टर एक जनरेटर का मोहताज होता है। बिजली की मेहरबानी के बिना न तुम हमें देख सकते हो और न ही उसके बिना हम पर काबू पाने की कोशिश कर सकते हो। मैं अभी तुम्हारी देखने की ताकत तुमसे छीन लेती हूं।"

यह कहने के साथ ही उसने गोलियों की बौछार कर दी।

लेकिन इससे पहले ही उस फौलादी इंसान की दोनों हथेलियां अपनी आंखों के सामने आ गईं। स्टेनगन से निकली हुई गोलियां उसकी फौलादी उंगलियों से जा कर टकराई और फिर ठनाठन बजती हुई इधर-उधर बिखर गईं। उसकी हथेलियों का कुछ नहीं बिगड़ा।

सोनिया ने उसकी आंखों को निशाना बना कर उसे अंधा बना देना चाहा था। मगर यह रोबोट अपनी आंखों की हिफाजत करना जानता था। वह हथेलियों की आड़ से देखता हुआ बोला—"ये स्टेनगन जैसे खिलौने फेंक दो—मुझ पर कोई असर नहीं होगा। सोनिया—अपनी इस जुर्रत के बाद तुम जिंदा नहीं बचोगी। मैं कमलकांत की वजह से तुम्हें छूट दिए हुए था—पर अब पहले मैं तुमसे निपट लेता हूं।"

रोबोट या फौलादी इंसान कहकहे उगलता हुआ आगे बढ़ा। मगर उसका अपने जिस्म का वजन बहुत ज्यादा था। वह अपना संतुलन संभाल कर पहले अपना एक कदम आगे बढ़ाता था, फिर उसे जमीन पर रखकर—दूसरा कदम उठाते वक्त फिर अपने संतुलन का ख्याल रखता था। यूं उसे एक कदम आगे बढ़ने के लिए कम से कम बीस-पच्चीस सेकेण्ड लग जाते थे।

मगर अपनी इस सुस्त रफ्तारी के बावजूद वो बड़ा ही भयानक लग रहा था। उसने कहकहों के बीच कहा—"वो हिन्दुस्तानी हीरो कहां छिपा है...उसे भी अपने पहलू में बुला लो।"

और कमल भी सामने आ कर सोनिया के कंधे से कंधा मिला कर खड़ा हो गया। उन दोनों के हाथों में स्टेनगनें थीं—पर वो जानते थे कि ये हथियार इस रोबोट के मुकाबले में बेकार हैं। रोबोट जैसे उनकी स्टेनगन पर हंसा था।

"तुम्हें मेरी ताकत का अंदाजा नहीं है, देखो।" यह कहते हुए उस फौलादी इंसान ने अपना दाहिना हाथ दाईं तरफ की दीवार पर दे मारा।

दीवार हिल सी गई। उसका वह हाथ कोहनी तक दीवार में घुस गया था। उस हिस्से की इंटें इधर-उधर गिरीं। फिर वह हाथ बाहर आ गया।

"यूं तो यह हमारा कचूमर निकाल देगा।" कमल ने मन ही मन में कहा, "यह अगर हम दोनों को मिला कर अपनी हथेलियों में दबोच ले तो हम दोनों का तो यूं भुर्ता बन जाएगा कि मर्द और औरत की पहचान ही खत्म हो जाएगी।"

रोबोट की एक हथेली बदस्तूर अपनी आंखों पर साया किए हुए थी। और कमल या सोनिया को गोली चलाने का मौका नहीं मिल रहा था।

रोबोट ने कहकहा लगाया व कहर भरे लहजे में बोला, "मैं तुम दोनों की टांगें चीर कर चार हिस्सों में बांट दूंगा।"

वो फिर आगे बढ़ने लगा।

कमल और सोनिया उसकी रफ्तार का अंदाजा करते हुए पीछे हटने लगे। रोबोट उन्हें पकड़ नहीं सकता था और फिर वे भी तो जान बचा कर भागने नहीं आए थे। उन्हें किसी न किसी तरह रिकार्ड रूम तक पहुंचना था।

वो दोनों पीछे हटते हुए दूसरी राहदारी की तरफ मुड़ गए। यहां भी बल्ब रोशन थे। कमल के तेजी से काम करते जहन में एक तरकीब कौंधी। उसने सोनिया के कंधे पर हाथ रखते कहा—"फिलहाल इससे बचने का एक ही तरीका है। हम यह बल्ब बुझा देते हैं।"

यह कहते हुए कमल ने दूर दूर तक प्रकाशमान बल्बों पर फायरिंग शुरू कर दी। सोनिया ने पलट कर दूसरी तरफ के बल्बों पर गोलियों की बौछार कर दी।

वह रोबोट जब इस राहदारी की तरफ मुड़ने को पहुंचा तो वहां अंधेरा हो चुका था। उसकी गुर्राहट उभरी और फिर उसने सख्त कर्कश लहजे में कहा—"कमलकान्त! तुम बहुत ज्यादा चालाक बनने की कोशिश न करो। तुम अंधेरा करने के बाद भी अपने सुपर मास्टर तक नहीं पहुंच सकोगे।"

कमल पंजों पर चलता हुआ निःशब्द उसके पास पहुंच गया—फिर दीवार से लग कर आहिस्ता आहिस्ता सरकता हुआ इस फौलादी इंसान के पीछे चला गया।

रोबोट कह रहा था, "सुपर मास्टर नादान नहीं है। मैं समझता था कि तुम इसी तरह अंधेरा फैला कर मुझे मजबूर और बेबस बनाने की कोशिश करोगे। लेकिन मेरे पास टार्च है। यह देखो।"

अंधेरे में घिर्र-घिर्र की आवाज उभरने लगी। फौलादी इंसान की

खोपड़ी से कोई चीज घूमती हुई उभर रही थी और सर्च-लाइट की तरह प्रकाशमान होकर चारों तरफ रोशनी फेंक रही थी।

लेकिन इस रोबोट की आंखें सिर्फ सामने ही देख सकती थीं। रोशनी होते ही उसे सिर्फ सोनिया नजर आई। उसने गुर्रा कर पूछा—

"कमलकान्त कहां है?"

"मैं यहां हूं।" यह कहते हुए कमल ने उछल कर पूरी ताकत से उसकी कमर पर एक लात मारी।

रोबोट जरा लड़खड़ा गया। अगर वो कोई हाड़-मांस का इंसान होता तो उसने कमल की लात खाने के बाद, जमीन चाटते नजर आना था। मगर वह एक हिलौरा सा लेने के बाद फौरन ही संभल गया और अब गुर्राते हुए कमल की तरफ पलट रहा था।

उसे कमल की तरफ मुड़ने में भी काफी वक्त लग रहा था। उसने पूरी तरह घूम कर कमल की तरफ देखा तो उसी वक्त सोनिया ने पीछे से उछल कर उसकी कमर पर जोर से लात मारी।

"अगर तुम ही सुपर मास्टर हो तो यह शर्म से डूब मरने की बात है कि हमसे लातें खा रहे हो।"

इस बार वह रोबोट सोनिया की तरफ पलटने की बजाए कमल की तरफ बढ़ने लगा। कमल ने उसके सिर पर घूमने वाली सर्च-लाइट पर फायरिंग की। मगर फौलादी इंसान की एक हथेली आंखों की हिफाजत कर रही थी और दूसरी हथेली से वो टार्च की हिफाजत कर रहा था। कमल की कोशिश विफल रही।

मगर सोनिया ने उसकी पीठ की तरफ से फायरिंग की थी। और जितनी देर में वो अपनी हथेली पीछे की तरफ ले जाता—उतनी देर में घूमती हुई टार्च गोलियों की जद में आ चुकी थी।

एक बार फिर अंधेरा छा गया।

वो फौलादी बुत कमल की ही तरफ बढ़ता आ रहा था। उसके भारी भरकम कदमों से साफ पता चल जाता था कि उसका रुख किस तरफ है।

कमल ने चांस लिया। उसने अंदाजे से एक बार फिर उसकी आंखों की तरफ फायरिंग की। इस बार उसकी आंखों के शीशे चकनाचूर हो गए। उनके अंदर बिजली का कोई तार जलने लगा। आग के नन्हे शोले कमल को दूर ही से दिखाई दे रहे थे।

और फिर उस फौलादी इंसान के अंदर से पटाखों जैसी आवाजें आने लगीं।

उसके अंदर शायद तोड़-फोड़ शुरू हो गई थी।

सोनिया उसके पीछे से हट कर बहुत दूर चली गई। कमल भी

उसके सामने से हट गया था।

फौलादी इंसान के अंदर से अब किसी किस्म की गैस निकलने लगी थी।

जैसे स्टीम इंजन से भाप निकलने की आवाज आती है—बस वैसी ही आवाज आ रही थी। जैसे-जैसे गैस निकलती जा रही थी वह विशाल फौलादी बुत धीरे-धीरे जमीन की तरफ झुकता जा रहा था।

और फिर—वो एक दम से फर्श पर औंधा हो गया।

❑❑

अब हौलनाक खामोशी व्याप्त थी।

वो कुछ देर तक इंतजार करते रहे। फिर कमल आहिस्ता-आहिस्ता कदम बढ़ाता हुआ उसके करीब पहुंचा। उसका एक फौलादी हाथ कमल की तरफ फैला हुआ था। कमल ने स्टेनगन को आगे बढ़ा कर उसके हाथ को जरा सा सरकाया तो वह खामोशी से दूसरी तरफ सरक गया।

अब कमल ने आगे बढ़कर उसके सिर पर ठोकर मारी।

वह फौलादी इंसान वाकई मुर्दा व निष्क्रिय हो चुका था।

सोनिया उस पर चढ़ कर उसे रौंदती हुई कमल के पास आ गई। उसने कमल का हाथ थामते हुए कहा—"पता नहीं वह शैतान और कैसे-कैसे तमाशे दिखाएगा। हमें बहुत संभल कर आगे बढ़ना चाहिए।"

"तुम्हारी ये बातें भी वो शैतान सुन रहा होगा। उल्लू का पट्ठा कहता था कि इस टापू पर लोग उसकी मर्जी से पैदा होते हैं और उसके हुक्म से मर जाते हैं। अब यह मानना पड़ेगा कि कोई बहुत बड़ी और अदृश्य-ताकत है जो हमें इस शैतान से बचा रही है।"

"हां कमलकांत...!" सोनिया संजीदगी से बोली, "और इस अदृश्य ताकत का नाम ही खुदा है। लेकिन अफसोस कि तुम अपने रब को भूल चुके हो।"

"मैं क्या करूं।" कमल असहाय सा बोला, "मैं अपनी याददाश्त खो चुका हूं। लेकिन इसके बावजूद...मैं...मैं अपने रब को स्वीकार कर रहा हूं। धीरे-धीरे मैं उसकी महानता को भी समझ लूंगा।"

वो दोनों फिर उस रोबोट पर चढ़ कर उस पर से गुजरते हुए इमारत के प्रकाशमान हिस्से की तरफ बढ़ने लगे थे। दूर किसी राहदारी से आने वाली रोशनी उनका मार्गदर्शन कर रही थी।

वो बाईं तरफ मुड़ते हुए उसी दिशा में बढ़ने लगे। कुछ दूर जा कर कमल ठिठक गया। सोनिया की तरफ झुकते उसने उसके कान

में कहा—"वो कमबख्त हमारी बातें सुन लेता है, हम रोशनियों को बुझा सकते हैं लेकिन अपनी आवाज को उस तक पहुंचने से नहीं रोक सकते।"

सोनिया ने मुंह फेर कर कमल के कान के करीब आ कर सरगोशी की, "चलो, यह भी अच्छा है। सरगोशी के बहाने तुम मेरे करीब तो आए।"

ऐसे वक्त...अंधेरे हों तो कल्पना की आंखें खुल जाती हैं। औरत रोशनी से घबराती है—इसके बावजूद बदन की उज्ज्वलता को नहीं छिपा पाती। सोनिया के ये लफ्ज...उसका अंदाज—कमल को अपने गिर्द कितने ही रंग बिखर गए नजर आने लगे।

हंगामों के दौरान कमल ने ख्याल नहीं किया था। मगर अब ख्याल आया कि सोनिया नारंगी रंग के लिबास में थी। और यह रंग जज्बात के रंग से कितना मिलता है, दूर से ही शोलों की तरह लपकता है—करीब आओ जला कर रख कर देता है।

इकीकतन—सोनिया जैसी साहसी नवयौवना पहलू में हो तो सुपर मास्टर जैसे शैतानों से टकराना भी कितना आसान हो जाता है। इस हंगामाई दौर में—सोनिया की दीदा-दिलेरी देखने लायक थी और एक बहुत बड़ा सहारा थी।

कमल जब बहकने लगा तो सोनिया तुरंत ही उससे अलग हो गई। और फिर मुंह दूसरी तरफ फेरते बोली—"बस, मैंने तुम्हें पा लिया। इस जीत की खुशी में अब मैं आंधी तूफान की तरह आगे बढ़ूंगी और उस शैतान का सिर कुचल कर रख दूंगी। मेरी 'मुहब्बत' को टेढ़ी नजरों से देखने वाला जिंदा नहीं रहेगा।"

कमल ने बड़े अपनत्व से ही उसके कंधे पर हाथ रखा व जज्बाती होते बोला, "वह जज्बा मेरे अंदर भी है, मेरी जान। वो शैतान मेरे हाथों तुम्हें मार डालना चाहता था। अब वो इन हाथों से मरेगा।"

कमल की बात खत्म होते ही चारों तरफ से कहकहे सुनाई दिए और फिर कहीं छिपे हुए स्पीकर से सुपर मास्टर की आवाज आई—"कमलकान्त प्यारे! सिर्फ तुम्हारा दिमाग ही था जो मुझ तक पहुंच सकता था। और तुम्हारे दिमाग को मैंने बेकार कर दिया है। अब तुम्हारा दिमाग इतना भी नहीं सोच सकता कि इस वक्त मैं कहां हूं और अपनी हिफाजत किस तरह कर रहा हूं।"

सोनिया सिर उठा कर ऊंची आवाज में बोली—"शैतान की औलाद! सोचने के लिए मेरे पास तो अक्ल है। मैं साबित कर सकती हूं कि तू इसी इमारत में कहीं छिपा हुआ है।"

"वो कैसे?"

"यह तो सामने की बात है कि बिजली फेल हो जाने से तू भी फेल हो गया था—और तेरी आवाज भी मर गई थी। अब इसी बिल्डिंग में किसी दूसरे जनरेटर को चालू करने के बाद तू फिर बकवास कर रहा है। हमें यह फरेब देना चाहता है कि प्रत्यक्ष में तू यहां मौजूद नहीं है। हम तुझे तेरी सूरत शक्ल से नहीं पहचानते। मगर याद रख यहां जो भी जिन्दा नजर आएगा हम उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगे।"

"सुना तुमने।" कमल बोल उठा, "यूं यहां मरने वालों की लिस्ट में तू भी शामिल हो जाएगा।"

कमल सोनिया के साथ आगे बढ़ गया।

जब वो प्रकाशमान राहदारी के पास पहुंचे तो उसने सोनिया के कान में सरगोशी की—"जहां भी रोशनी नजर आएगी—हम वहां बल्बों पर फायरिंग करते जाएंगे—ताकि वो हमें किसी टी.वी. स्क्रीन पर न देख सके।"

सोनिया का सिर सहमति में हिला। कमल ने दीवार में लग कर सरकते हुए—रोशनी में नहाये कारीडोर की तरफ झांक कर देखा। यहां भी वीरानी थी। उसने थोड़ा और आगे बढ़ कर देखा। उसी क्षण स्पीकर से आवाज आई—"बुजदिलों की तरह झांक कर क्या देख रहे हो—सामने चले आओ।"

कमल उछल कर सामने आया और उसने दूर तक दिखते रोशन बल्बों पर फायरिंग शुरू कर दी।

सोनिया की स्टेनगन से भी गोलियां बरस रही थीं। देखते ही देखते चारों तरफ़ अंधकार फैल गया। इस अंधेरे में उसकी गर्जती हुई आवाज सुनाई दी—"यू नानसेंस...अहमकों के सरताज। क्या तुम अंधेरे में मरना चाहते हो?"

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया व चुपचाप आगे बढ़ते चले गए।

आगे एक दरवाजा था जो अंधेरे में इसलिए नजर आ गया कि उसके साथ वाली खिड़की के अंधे शीशे रोशन थे। कमरे के अंदर रोशनी थी यानी वहां यकीनन कुछ लोग हो सकते थे। कमल और सोनिया इस दरवाजे के दोनों तरफ दीवार से लग कर खड़े हो गए। सोनिया ने दीवार पर लगे हुए बटन को दबाया तो वह दरवाजा खुलता चला गया।

और इसी घड़ी बिल्डिंग के बाहर फायरिंग की आवाज सुनाई दी।

शायद रमना और ऐराज—दुश्मनों का सामना कर रहे थे। और उन्हें बिल्डिंग में घुसने से रोक रहे थे। गोलियां रुक-रुक कर चल रही थीं।

स्पीकर से गुर्राहट सुनाई दी, "अच्छा—तो तुम लोगों ने बाकायदा अपनी फौज बना ली है। बिल्डिंग के बाहर मेरे आदमियों का रास्ता रोका जा रहा है। इस टापू पर तुम्हारे कितने ही मददगार हों—मेरे गार्ड उनका खात्मा कर देंगे।"

वे खामोशी से उसकी बातें सुनते रहे। और कोई जवाब न दिया। उनकी इस खामोशी पर सुपर मास्टर ने झुंझला कर कहा—

"कहां मर गए, बोलते क्यों नहीं? मैं जानता हूं तुम दोनों बाहर दरवाजे के पास मौजूद हो और दरवाजा खुल चुका है। क्या तुम अंदर जाने की जुर्रत करोगे?"

और अब कमल ने ऊंची आवाज में कहा, "सुपर मास्टर! अपनी पोजीशन समझो। मैं तुमसे और तुम्हारे आदमियों से कहता हूं कि अपने हथियार फेंक कर बाहर आ जाओ। अगर हमें अंदर आना पड़ा तो इस हॉल में कदम रखने से पहले हथगोले फेकूंगा। और तुम लोगों को फरार होने का रास्ता नहीं मिलेगा।"

थोड़ी देर खामोशी छाई रही। और फिर सुपर मास्टर की आवाज सुनाई दी—"ग्रेनेड फेंकने की हिमाकत न करना। तुम पहले ही इस इमारत को और बहुत सी कार आमद मशीनों को नुकसान पहुंचा चुके हो।"

"तो फिर मैं हुक्म देता हूं कि अपने हथियार फेंक—अपने हाथ सिर पर रख कर बाहर आ जाओ।"

"कंमलकान्त! तुम्हारी शामत आ गई है। देखो—बाहर फायरिंग बंद हो चुकी है। इसका मतलब है कि तुम्हारे मुट्ठी भर साथी मारे जा चुके हैं।"

"यह भी तो हो सकता है, सुपर मास्टर कि तुम्हारे आदमी ज़ान बचा कर भाग गए हों।"

तभी इमारत के अन्दरुनी हिस्से में कहीं दौड़ते कदमों की चाप सुनाई दी।

स्पीकर ने गर्ज कर कहा, "रुको। तुम कौन हो और किससे मिलना चाहते हो?"

जवाब में दूर से रमना की आवाज सुनाई दी—"कमल... सोनिया! तुम दोनों कहां हो? मुझे आवाज दो। मैं इस तरफ आ रही हूं।"

कमल व सोनिया के बीच जो दरवाजा खुला हुआ था—वह थोड़ी देर बाद ही बंद हो चुका था, क्योंकि बटन दबाने से खुलने वाले ये दरवाजे खुद ही खुलते थे और खुद ही बन्द भी हो जाते थे। सोनिया दरवाजे से गुजर कर कमल के करीब आते हुए धीमी आवाज

में बोली—"टार्च मुझे दो, मैं रमना को यहां ले कर आती हूं।"

कमल ने उसे टार्च दे दी और वह अंधेरे में कब उससे दूर हो गई—यह पता नहीं चला। कमल दीवार से लगा खामोश खड़ा रहा। एक लम्बी खामोशी के बाद स्पीकर से फिर आवाज आई—"खामोश क्यों हो गए, कमलकांत! तुम्हारी रमना तुम्हें पुकार रही है। उसे जवाब तो दो।"

कमल हंस दिया, बोला, "जवाब देने की क्या जरूरत है। क्या तुम नहीं जानते कि सोनिया रमना को सूंघते हुए खुद जवाब बन कर उसके पास पहुंच जाएगी, तुम अपने सामने की अंधेरे में डूबी स्क्रीन पर घूरते रहो। तुम्हें कुछ नजर नहीं आएगा।"

"हूं।" जवाब में कहा गया, "स्क्रीन पर कभी-कभी टार्च की रोशनी इधर से उधर लहराती है—मगर समझ में नहीं आता कि वो किस राहदारी से गुजर रही है। मगर तुम्हारी यह होशियारियां तुम्हें मेरे करीब नहीं बल्कि अपनी मौत की तरफ ले कर आने वालियां हैं।"

कमल जोर से हंसा और व्यंगपूर्ण लहजे में बोला, "रस्सी जल गई पर बल नहीं गए। क्या तुम्हें अब भी यकीन नहीं आया कि तुम्हारी इस भूल-भलैया के बाहर तुम्हारे आदमियों को शिकस्त नसीब हो रही है। अगर हमें नाकामी हुई होती तो रमना घबराई हुई हमें तलाश करती। मगर उसकी आवाज और उसका लहजा बता रहा है कि वह संतुष्ट व निश्चिंत है।"

कमल का अंदाजा सही निकला था।

उसी वक्त सोनिया, रमना और उसके दो साथियों के साथ, कमल के पास पहुंच गई थी।

रमना ने कमल का बाजू टटोल कर उससे कहा, "बहुत देर से तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली थी—इसलिए मैं अपने दो साथियों के साथ तुम्हें यहां तलाश करने आ गई।"

"बाहर की पोजीशन बताओ।" कमल ने पूछा।

"बाहर पोजीशन हमारे हक में है। टापू के गार्ड पीछे हट गए हैं। कितने ही दुश्मनों की लाशें पड़ी हुई हैं। हमारे साथी कैसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं। तुम बताओ, सुपर मास्टर का कुछ पता चला।"

कमल से पहले स्पीकर बोला था, सुपर मास्टर की तीखी आवाज उभरी, "रमना तुम भी आस्तीन का सांप ही निकली। मुझे पहले से ही शक था कि तुम इस हिंदुस्तानी का साथ दोगी। अच्छी बात है, जरा सब्र करो। मैं तुम्हें नंगा करके शिकारी कुत्तों से नुचवाऊंगा।"

और फिर सुपर मास्टर ऊंची आवाज में इमारत के बाहर तैनात अपने सशस्त्र गार्डों को संबोधित करने लगा। इस मकसद के लिए उसने छत पर लाउड-स्पीकर लगा रखे थे। वह कह रहा था—

"मेरे वफादार सिपाहियो! मैं तुम्हारा सुपर मास्टर बोल रहा हूं। तुम हिम्मत न हारो। तुम्हारा सुपर मास्टर मोम का बना हुआ नहीं है। मैंने कमलकान्त और सोनिया को गिरफ्तार कर लिया है। अभी रमना इमारत के अंदर आई है—वो भी घेर ली गई है। यही मौका है—फौरन आगे बढ़ो और अपने मुकाबले पर आए मुट्ठी भर गद्दारों को खाक में मिला दो।"

सुपर मास्टर ने यह झूठ बोल कर जबरदस्त चाल चली थी।

उसके हौसला दिलाते ही अचानक फायरिंग शुरू हो गई।

रमना अपने एक साथी से बोली, "फौरन भाग कर जाओ और अपने साथियों तक यह खबर पहुंचा दो कि सुपर मास्टर फरेब से काम ले रहा है और झूठ बोल रहा है। कि हम सब उसकी कैद में नहीं हैं, बल्कि अब उससे टकराने ही वाले हैं।"

उसका साथी टार्च लेकर दौड़ लिया था।

सुपर मास्टर की इस चाल पर कमल ने बिफरे अंदाज में कहा, "सुपर मास्टर! मैं पांच तक गिन रहा हूं। अगर तुम अपने साथियों के साथ निहत्थे बाहर नहीं आए तो मैं दस्ती बम के धमाके करूंगा। एक...दो...तीन।"

सोनिया ने बटन दबा कर उस दरवाजे को फिर खोल दिया था।

सुपर मास्टर की आवाज आई, "ठहरो। मैं नहीं चाहता कि तुम यहां की मशीनें तबाह करो। हम बाहर आ रहे हैं।"

उसकी बातों से मक्कारी झलक रही थी। कमल इन हालात में यह यकीन नहीं कर सकता था कि यह रहस्यमय सुपर मास्टर इतनी आसानी से पराजय स्वीकार करके उनके सामने चला आएगा। मगर कमल खामोश रहा।

एक मिनट बाद ही उस हॉल में से तीन व्यक्ति...एक के बाद एक...बाहर आए। उन्होंने अपने हाथ उठा कर अपने-अपने सिरों पर रख लिए थे।

सोनिया बाहर आने वाले पहले शख्स की तरफ इशारा करते बोली, "कमल—तुम भूल चुके हो, इसलिए मैं तुम्हें बता रही हूं...यह मास्टर सायमन है।"

हॉल के अंदर से आने वाली रोशनी में वो तीनों नजर आ रहे थे।

रमना दूसरे शख्स की तरफ इशारा करते हुए बोली, "यह एक

बहुत बड़ा वैज्ञानिक है। यहां की खतरनाक मशीनों को यही आपरेट करता है।"

सोनिया भी सहमति में बोल उठी थी, "हां—मैं इस शैतान को कभी नहीं भूल सकती। इसी ने तुम्हें ज़हनी झटके पहुंचाए थे। तुम्हारा ब्रेनवाश कर दिया था और तुम्हारी याददाश्त से मुझे भी मिटा दिया था।"

मगर तीसरा शख्स कौन था?

❑❑

वो सब उसकी तरफ देखने लगे। इस शख्स का आधा चेहरा दाढ़ी-मूंछों से छिपा हुआ था। आंखों पर काले शीशे की ऐनक थी और सिर पर रखी फेल्ट-हैट माथे पर झुकी हुई थी।

सोनिया बोली, "कमल! यह हुलिये से सुपर मास्टर लगता है। मैंने मास्टरों की महत्वपूर्ण मीटिंगों में इसे प्रायः देखा है। यह इन मीटिंगों में बोलने की जरूरत आने पर भी जुबान से कुछ नहीं बोलता था, बल्कि अपना फैसला कागज पर लिख कर देता था। मैंने इसे कभी बोलते नहीं सुना। तुम इससे पूछो कि यह आज भी बोलेगा या नहीं?"

रमना का एक साथी उन तीनों की तलाशी ले रहा था। वह संतुष्ट हो कर एक तरफ हट गया तो कमल ने इस तीसरे शख्स से पूछा—

"क्या सबूत है कि तुम सुपर मास्टर हो?"

और वह गूंगे की तरह मुंह से आवाजें निकाल कर—हाथ के इशारे से बताने लगा कि वह बोलने से लाचार है। कमल ने तैश में आ कर उसके मुंह पर स्टेनगन के हत्थे से चोट लगाई।

"शैतान के बच्चे! अगर तुम गूंगे हो तो स्पीकर के जरिए क्या तुम्हारा बाप बोल रहा था।"

चोट पड़ते ही उसके मुंह से खून उबल पड़ा। दोनों हाथों से मुंह को दबाते उसने फर्श पर बैठने का उपक्रम किया। सोनिया उसे ठोकर रसीद करते फुफकारी—"यहां तुम में से किसी को बैठने या मुंह फेरने या एक दूसरे से बातें करने की इजाजत नहीं है। चुपचाप खड़े रहो।"

सायमन असहाय सा बोला, "सोनिया! तुम अभी कह चुकी हो कि तुमने सुपर मास्टर को कभी बोलते नहीं देखा। तुम लोगों को यकीन कर लेना चाहिए कि वो वाकई गूंगा है। स्पीकर से मास्टर राबर्ट बोल रहे थे।" सायमन ने वैज्ञानिक राबर्ट की तरफ इशारा किया।

राबर्ट भी बोला कि इतनी देर से वही बकवास कर रहा था।

जब कोई महत्वपूर्ण बात कहनी होती थी तो गूंगा सुपर मास्टर कागज पर लिख कर देता था और वो इसके लिखे को माइक पर दोहरा देता था।

रमना बोली, "अभी इस बात की तस्दीक भी हो जाएगी। हम अभी अंदर जा कर देखेंगे। क्योंकि यहां से भागने का रास्ता नहीं है। सुपर मास्टर ने किसी चोर दरवाजे से निकल भागने की कोशिश की होगी तो बाहर हमारे साथी उसे घेर लेंगे।"

कमल कुछ सोचते हुए बोला, "ठीक है, मैं अंदर जाता हूं।"

"नहीं...पहले मैं जाऊंगी।"

पर उन दोनों के फैसला करने से पहले ही रमना दौड़ती हुई अंदर चली गई। अंदर पहुंचते ही उसने चारों तरफ घूम कर देखा, फिर कहा—"यहां कोई नहीं है। मगर ठहरो—मुझे मशीनों के पीछे झांक कर देख लेने दो।"

रमना के पीछे उसका एक साथी भी अंदर चला गया।

रमना ने उसे डपट दिया, बोली, "तुम वापिस जाओ।"

"नहीं, रमना! अगर ऐराज को पता चल गया कि हमारी मौजूदगी में तुम अकेली खतरों का सामना कर रही थीं तो वह मेरी गर्दन उड़ा देगा। मुझे अफसोस है कि इस वक्त मैं तुम्हारा यह हुक्म नहीं मान सकता। तुम पीछे हट जाओ या फिर मैं तुम्हारे साथ-साथ रहूंगा।"

कमल और सोनिया उनकी बातें सुनते रहे—मगर अंदर नहीं जा सके। क्योंकि वहां खड़े इन तीनों की निगरानी भी जरूरी थी। रमना को झुकना पड़ा था।

अब हॉल के अंदर वो दोनों मशीनों के पीछे झांक कर देख रहे थे कि अचानक ही एक मशीन के पीछे से कोई निकल कर दूसरे दरवाजे की तरफ भागा। रमना के साथी ने उस पर छलांग लगाई—मगर मुंह के बल जमीन पर गिरा। भागने वाला बहुत फुर्तीला था। वह जैसे ही दूसरे दरवाजे की तरफ पहुंचा—रमना ने फायर करते हुए धमकी दी—"रुक जाओ। तुम रिवॉल्वर की जद में हो।"

उसे रुकना पड़ा।

उसने दोनों हाथ उठा कर रमना की तरफ पलट कर देखा तो कमल और सोनिया ने भी उसे पहचान लिया। वो जूडो-कराटे का खतरनाक फाइटर शोजप था।

कमल और सोनिया का ध्यान सिर्फ कुछेक क्षणों के लिए शोजप की तरफ भटक गया था—उनकी इस क्षणिक गफलत से फायदा उठा कर वो तीनों इन पर पिल पड़े।

स्टेनगन कमल व सोनिया के हाथों से निकल गई।

दाढ़ी वाले सुपर मास्टर ने कमल पर हमला किया था। मास्टर सायमन सोनिया से उलझ गया था। वैज्ञानिक राबर्ट एक बेज़रूर सा आदमी था, इसलिए वो बदहवास सा होकर यह तमाशा देख रहा था कि उसके मास्टरों की यह कैसी धुलाई हो रही थी। एक ही मिनट में मास्टर सायमन और वह नकली सुपर मास्टर, कमल व सोनिया के हाथों धराशायी और बेहोश होकर जमीन पर पड़े थे।

तभी शोजप की आग-बबूला दहाड़ सुनाई दी, "तुम दोनों अपने हाथ ऊपर उठा लो वर्ना रमना मारी जाएगी।"

कमल व सोनिया, दोनों ने एकदम पलट कर देखा। शोजप ने अपने एक बाजू में रमना की गर्दन दबोच रखी थी। रमना के हाथ में अब रिवॉल्वर नहीं था। रमना न जाने किस तरह उसके काबू में आ गई थी। शोजप उसकी गर्दन पर अपनी गिरफ्त कसता हुआ बोला—

"चुपचाप अंदर आ जाओ। अगर तुम दोनों में से किसी ने जरा भी चालाकी दिखाने की कोशिश की तो मेरे बाजू के एक झटके से रमना की गर्दन टूट जाएगी।"

कमल ने बेबसी से रमना की तरफ देखा। फिर उसकी नजरें फर्श-पर गई। उनसे दो कदम के फासले पर रमना का रिवॉल्वर पड़ा हुआ था। शोजप कनखियों से उस रिवॉल्वर की तरफ देख रहा था। कमल एक ही छलांग में शोजप तक पहुंच सकता था। पर इस बीच यह खतरनाक फाइटर रमना की ज़ान ले सकता था। उसके एक ही झटके ने रमना की गर्दन तोड़ देनी थी।

"कमलकान्त! हिन्दुस्तानी हीरो। अब मैं तुम्हें हकीकत बताऊं। मैं सुपर मास्टर के एक जांनिसार और वफादार गुलाम की हैसियत से इस इमारत में रहता हूं और यही गुलाम सब का सुपर मास्टर है।"

वो सभी चौंक कर उसका मुंह देखने लगे।

उसने कहकहा उगला व आगे कहा, "वह दाढ़ी वाला सुपर मास्टर मेरा डम्मी है। मैं उसे सुपर मास्टर बना कर अपने खास मातहतों के सामने पेश करता हूं और खुद उसका गुलाम बन कर उसके साथ रहता हूं।"

सोनिया ने उसे गहरी नजरों से देखते हुए पूछा, "इसका क्या सबूत है कि तुम्हीं सुपर मास्टर हो?"

"मुझे यह साबित करने की जरूरत ही क्या है। मैं अपनी जहानत और सूझबूझ से जब चाहता हूं—कभी गुलाम बन जाता हूं तो कभी

आका बन कर हुक्म चलाता हूं।"

कमल ने रिवॉल्वर तक पहुंचने के लिए उसे बातों में उलझाए रखा, "तुम खुद को बेनकाब करने के बाद क्या यहां से बच कर निकल जाओगे?"

"हां, निकल जाऊंगा। बड़ी आसानी से निकल जाऊंगा। अगर तुम लोग मेरे रास्ते में आओगे तो जानते हो मैं क्या करूंगा...यह करूंगा।" यह कहते हुए उसने एक झटके से रमना को एक तरफ फेंका और रिवॉल्वर पर छलांग लगा दी।

कमल गाफिल नहीं था। उसने भी उसी वक्त रिवॉल्वर पर छलांग लगाई थी और तो और सोनिया भी फुर्तीली साबित हुई।

परिणाम स्वरूप वे तीनों ही रिवॉल्वर के पास आ कर आपस में टकरा गए। रिवॉल्वर उनके नीचे दब गया था। कमल ने हाथ बढ़ा कर रिवॉल्वर तक पहुंचने की कोशिश की तो शोजप ने उसे 'आर्म-लॉक' के दांव में फंसा लिया। बड़ा खतरनाक दांव था। पीड़ा की शिद्दत से कमल को यूं महसूस हो रहा था जैसे उसका बाजू कंधे से उखड़ कर अलग हो जाएगा। मगर उसी क्षण शोजप की चीख सुनाई दी।

हुआ यह था कि सोनिया उसकी गर्दन का गोश्त नोंच कर ले गई थी।

शोजप तकलीफ की शिद्दत से कराहता हुआ दूसरी तरफ फर्श पर उलट गया।

कमल रिवॉल्वर उठा कर अपना बाजू सहलाने लगा। शोजप ने उसके बाजू की हड्डी चटखाने की बड़ी खतरनाक कोशिश की थी। तभी सोनिया ने अपने फौलादी पंजों के साथ शोजप पर दोबारा हमला किया—मगर इस बार वह उसे जख्मी समझ कर धोखा खा गई। शोजप के दांव में आ कर वह खुद को छुड़ाने की कोशिश करने लगी।

कमल रिवॉल्वर की नाल शोजप की कनपटी पर रखते हुए फुफकारा, "बस बहुत हुआ मास्टर! इस वक्त हम लड़ने में वक्त जाया नहीं करना चाहते।"

शोजप मजबूरन सोनिया को छोड़ कर फर्श पर से उठ गया।

कमल आगे बोला, "मेरी उंगली ट्रेगर पर है। तुम जरा सी भी हरकत करोगे तो भेजा उड़ा दूंगा।"

रमना इस बीच माइक तक पहुंच गई थी—और इमारत से बाहर मौजूद अपने साथियों से कह रही थी, "हैलो ऐराज! हम सब यहां सकुशल हैं। यहां की स्थिति हमारे काबू में आ रही है। तुम हमारी

फिक्र न करना। अभी थोड़ी देर बाद हम सुपर मास्टर को मजबूर कर देंगे कि वो अपने आदमियों को हथियार फेंकने का हुक्म दे। तब तक तुम लोग अपने मोर्चों पर जमे रहना।"

कमल कुछ और ही सोच रहा था। उसने शोजप को संबोधित करते कहा, "अगर तुम ही सुपर मास्टर हो तो वाकई कमाल के आदमी हो। इतने समय तक खुद गुलाम बन कर दूसरों को गुलाम बनाते रहे। बहरहाल अब बिसात पलट चुकी है। अपना खेल खत्म हुआ समझो। और सबसे पहले इस बात का जवाब दो कि रिकार्ड-रूम कहां है?"

पर कोई जवाब देने की बजाय शोजप ने अचानक ही कमल पर हमला कर दिया था।

उसने कमल को सिर की टक्कर मारनी चाही थी, पर कमल सचेत था। वह अविश्वसनीय फुर्ती के साथ एक तरफ हट गया था और नतीजा यह सामने आया कि हमला करने की झोंक में शोजप सामने वाली मशीन से जा टकराया था।

मशीन से टकराते ही वो चीखता हुआ फर्श पर गिर पड़ा। उसका चेहरा लहुलुहान हो गया था और वह जख्मी दरिन्दे की तरह गुर्रा रहा था।

"अगर तुम सुपर मास्टर हो तो शराफत से काबू में नहीं आओगे।" कमल बोला, "मेरी तरफ से एक गोली का तोहफा कबूल करो।"

कमल ने घोड़ा दबा दिया।

शोजप के हलक से एक भयानक चीख निकली और वह अपनी बाईं पिंडली को थाम कर पीड़ा की शिद्दत से बिलबिलाने लगा।

कमल की आंखों से कहर टपक रहा था। वह बदस्तूर कहर भरे स्वर में बोला, "मैं तुम्हें पहले ही वार्निंग दे चुका था कि जरा सी भी हरकत करोगे तो जहन्नुम में पहुंच जाओगे। अब तुम वहां से उठने के काबिल नहीं हो। सीधी तरह बता दो कि रिकार्ड रूम कहां है?"

उसने पहले कराहते हुए दीवार घड़ी की तरफ देखा, फिर बोला, "रमना के दाईं तरफ जो छोटी सी मशीन है उसके ऊपर लिखे हुए 'ओ' का बटन दबाने से सामने वाली दीवार खुद ब खुद हट जाएगी। इसी दरवाजे के पीछे रिकार्ड-रूम है।"

उस वक्त कमल ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि वो रिकार्ड-रूम का पता बताने से पहले घड़ी की तरफ क्यों देख रहा था पर इसके बावजूद रमना सावधान होते बोली—"कमल! तुम और

सोनिया स्टेनगन के साथ तैयार रहो। मैं इस मशीन का बटन दबाती हूं। अगर कोई खतरा पेश आया तो फौरन गोलियां चला देना।"

सोनिया बाहर पड़ी दोनों स्टेनगनें उठा लाई। कमल ने रिवॉल्वर जेब में रख कर एक स्टेनगन उससे ले ली। उनके तैयार होते ही रमना ने उस खास बटन को दबा दिया।

बटन दबते ही सामने वाली दीवार में गड़गड़ाहट पैदा हुई। फिर दीवार का एक हिस्सा दरवाजे की तरफ को सरक गया। खुले हुए हिस्से से रिकार्ड-रूम का मंजर दिखाई दिया। अंदर दीवारों से लगी बड़ी-बड़ी लोहे की अलमारियां नजर आ रही थी।

कमल ने पलट कर शोजप से पूछा, "इन अलमारियों की चाबियां कहां हैं?"

"ये अलमारियां खास नंबरों से खुलती हैं। वह सामने अलमारी के पास एक रजिस्टर रखा है—उसी में तमाम नंबर दर्ज हैं।"

सोनिया रिकार्ड-रूम की तरफ बढ़ती हुई बोली, "तुम यहीं ठहरो, कमल, पहले मैं इस रजिस्टर को चैक करती हूं।"

और वो कमल का जवाब सुने बगैर रिकार्ड रूम में चली गई। कमरे में पहुंच कर उसने चारों तरफ घूम कर देखा। फिर वह रजिस्टर के पास गई और उसे खोल कर विशेष नंबरों की मदद से एक अलमारी को खोलने लगी।

नंबरों का क्रम बिल्कुल सही था।

अलमारी फौरन ही खुल गई। उसने पलट कर कमल को पुकारा, "कमल! यहां आ जाओ, इस अलमारी में वाकई बहुत कुछ है।"

कमल रिकार्ड-रूम में पहुंचा। तभी फायरिंग की आवाज आई। इसके साथ ही रमना की चीख सुनाई दी। कमल सोनिया के निकट पहुंच चुका था, वो दोनों ही रमना की चीख सुन कर दरवाजे की तरफ वापिस भागे। मगर वहां तक पहुंचने से पहले ही दरवाजा एक झटके से बंद हो गया।

दीवार बराबर हो गई।

कमल और सोनिया बंद दरवाजे पर आ रुके थे।

दोनों ने बदहवास नजरों से एक दूसरे की तरफ देखा। और फिर वो दोनों ही दीवार पर हाथ मार कर चीखने लगे—

"रमना...! रमना...! तुम्हें क्या हो गया है...आवाज दो... दरवाजा खोलो।"

वो बार-बार उसे आवाज देते रहे—लेकिन उसकी तरफ से कोई जवाब नहीं मिला।

स्पीकर से एक बार फिर कहकहा सुनाई दिया।

"कमलकांत! हीरो हिन्दुस्तानी! तुम चूहेदान में फंस गए हो। अब रमना तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकेगी। वो मेरी गोली का निशाना बन चुकी है।"

कमल चीखा, "शैतान के पिल्ले! दरवाजा खोलो—फिर मैं तुमसे निपट लूंगा।"

जवाब में फिर कहकहा सुनाई दिया।

"अब तक तुम कितने ही सुपर मास्टरों से निपट चुके हो। पहले दाढ़ी वाला सुपर मास्टर तुम्हारे सामने आया। फिर शोजप ने सुपर मास्टर बन कर तुम्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश की। तुम्हारे रास्ते में इसी तरह न जाने कितने सुपर मास्टर आते ही रहेंगे। मगर अफसोस कि तुम मौत के रास्ते पर लग गये हो। इस रिकार्ड-रूम में तुम्हारे लिए एक टाइम बम रखा गया है। और इस वक्त मेरी घड़ी के हिसाब से इस बम को फटने के लिए सिर्फ चालीस सेकेण्ड रह गए हैं। सचमुच ही तुमसे पंगा लेना हमें बहुत भारी रहा है। बहरहाल, गुड बाय हीरो हिंदुस्तानी।"

कमल और सोनिया एकदम से घबरा कर दरवाजे के पास से हट गए और चारों तरफ तेजी से नजरें दौड़ाने लगे।

उन्हें टाइम बम की तलाश थी। मगर बदहवासी में वह कहीं भी नजर नहीं आ रहा था। उन दोनों ने उछल-उछल कर अलमारियों के ऊपर भी देखा पर टाइम बम किसी अलमारी के ऊपर भी नजर नहीं आया। एक अलमारी के ऊपर छोटा सा रोशनदान नजर आया—मगर वह इतना छोटा था कि उसमें से सिर निकल सकता था—मगर धड़ नहीं निकल सकता था। वहां से निकल कर भागना नामुमकिन था। इस कमरे में कोई दूसरी खिड़की नहीं थी, चारों तरफ ठोस पत्थरों की दीवारें और लोहे की अलमारियां नजर आ रही थीं।

सोनिया फिर दीवार पर हाथ मार कर चीखने लगी, "रमना...ऐराज...हैल्प-हैल्प।"

वह मदद के लिए पुकार रही थी लेकिन रमना हमेशा की नींद सो चुकी थी। ऐराज अपने साथियों के साथ इमारत के बाहर था। इस कमरे में माइक नहीं था कि वो अपनी आवाज उस तक पहुंचा सकते।

"टिक...टिक...टिक...टिक।" उनके दिल की धड़कनें टाइम बम की तरह टिक-टिक कर रही थीं। कमल ने अपनी रिस्टवाच देखी। सेकेण्ड का कांटा बता रहा था कि मौत का धमाका होने में अभी पच्चीस सेकेण्ड रह गए थे।

टिक-टिक-टिक।

अब सिर्फ पंद्रह सेकेण्ड रह गए थे।

और यह पंद्रह सेकेण्ड भी पलक झपकते ही गुजरने वाले थे। वक्त के पांव मौत की वादी की तरफ बढ़ते जा रहे थे। मौत टिक-टिक की तान पर नाच रही थी। टिक टिक...टिक टिक।

❑❑

मौत सरकती हुई उनकी तरफ आ रही थी।

वो तो कुछ समझ ही नहीं पा रहे थे।

सोनिया थूक निगलते—जिव्हा से अपने होंठ तर करते बोली, "कमरे में कितनी गहरी खामोशी है।"

मौत का खौफ किसे नहीं होता। उन्हें बेमौत मरने का अफसोस हो रहा था। कमल ने उसे जवाब दिया, "सुपर मास्टर नादान नहीं है। उसने टाइम बम जरूर किसी चीज में इस तरह छिपाया होगा कि टिक टिक की आवाज नहीं उभर रही है।"

वह टिक टिक की आवाज तो उनकी धड़कनों से उभर रही थी। उनके दहशतजदा दिमागों में गूंज रही थी। और उन्हें मौत से पहले ही नीम-मुर्दा बना रही थी। कमल के दिमाग में सांय-सांय आंधियां चलने लगी थी। उसने सोनिया की तरफ देखा—उसने कुछ कहना चाहा। मगर सोनिया अचानक ही उछल कर कमरे के मध्य में पहुंची। उसने फर्श पर अपने दोनों हाथ और दोनों घुटने टेक दिए।

और अब वह एक कुतिया की तरह सिर उठा कर हवा में बू सूंघ रही थी।

"फू-फू।" वो तेजी से सांस छोड़ने और खींचने लगी।

फिर किसी खास बू को सूंघती हुई घुटनों के बल रेंगती हुई वो अलमारियों के बीच पहुंच कर—और उनके बीच की रिक्तताओं में मुंह डाल कर सूंघने लगी। अगले ही क्षण वह उछल कर खड़ी हो गई। वो एक अलमारी पर हाथ मारते चीखी—"कमल—इसे जल्दी से हटाओ।"

कमल एकदम हरकत में आया। उसने बड़ी फुर्ती दिखाई। और फिर उन दोनों ने मिल कर पूरी ताकत लगा उस अलमारी को जरा सा सरका दिया।

सोनिया फौरन अलमारी के पीछे गई।

फिर फर्श पर झुक कर मोटे दोहरे कपड़े में लिपटी हुई कोई चीज उठा कर कमल के पास ले आई। दोनों ने उसे कान से लगा कर सुना तो उस मोटे कपड़े के भीतर से टिक-टिक की धीमी-धीमी सी आवाज उभर रही थी।

कमल फौरन उछल कर उस अलमारी के ऊपर पहुंच गया—जिसके पीछे दीवार में छोटा सा रोशनदान बना हुआ था, सोनिया ने कपड़े में लिपटे हुए बम को उसकी तरफ बढ़ाया। कमल ने उसे लेकर—रोशनदान से बाहर हाथ निकाल कर—उसे पूरी ताकत से जितनी दूर फेंक सकता था फेंक दिया।

फिर अलमारी से कूद कर सोनिया के पास पहुंच गया।

उन दोनों ने फर्श पर लेटने में भी देर नहीं लगाई थी। एक सेकेण्ड बाद ही बड़ा जबरदस्त धमाका सुनाई दिया। दीवारें कांप गई और स्टील की वो अलमारियां एक दूसरे से टकरा कर बजने लगी। लेकिन खैरियत यह हुई कि वो सिर्फ बज कर रह गई थीं।

रिकार्ड रूम के बाहर रोशनदान के दूसरी तरफ पता नहीं कैसी तबाही मची हुई थी। सिर्फ इतना अंदाजा हो रहा था कि दूसरी तरफ की दीवारें शायद गिर रही थीं। क्योंकि रोशनदान की दीवार भी कहीं-कहीं से तड़क गई थी। एक तरफ बड़ा सा छेद भी पैदा हो गया था।

उन्होंने फर्श पर लेटे ही लेटे देखा—इस छेद के दूसरी तरफ गर्द-गुब्बार के सिवा कुछ नजर नहीं आ रहा था। पर बहरहाल उन्हें इतना यकीन हो गया था कि वो मौत के क्रूर पंजों से साफ बच गए हैं।

दोबारा जिंदगी का दमकता चेहरा देख कर सोनिया की आंखों से आंसू निकल पड़े। वह मारे खुशी के कांपती हुई कमल से लिपट गई। कमल भी उसे सीने से लगा कर उसके दिल की धड़कनों से जिंदगी की धड़कनों का यकीन करने लगा। और यह यकीन बड़ा ही आनन्दप्रद था।

यह अलबेली व दुस्साहसी महबूबा मौत से पंजे लड़ा कर मुहब्बत की एक नई रवायत स्थापित कर रही थी। अपनी सोनिया को आगोश में समेट कर कमल उस पर जितना भी फख्र करता कम था। इस कामयाबी का सेहरा उसी के सिर था। उसने टाइम-बम को तलाश करके कमल की जान बचाई थी।

"मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगी। अपनी आखिरी सांसों तक तुम्हारे लिए मौत से लड़ती रहूंगी। मेरे प्यार! मेरी जान तुम इसी तरह प्यार करते रहो। मैं गोलियां बरसाती रहूंगी। कोई मां का लाल मेरे कमलकान्त के सामने दुश्मन बन कर नहीं ठहर सकेगा।"

"हां, प्रिय! मुझे विश्वास हो गया है कि तुम्हारे एक हाथ में स्टेनगन हो और तुम्हारे दूसरे बाजू पर मेरा सिर हो तो मैं दुश्मनों से बेसुध हो कर आराम से सो सकूंगा।"

कमल वाकई इस वक्त जैसे सारी दुनिया से ही बेसुध हो गया था। सोनिया ने अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिये थे और ऐसी तपिश थी इस चुम्बन में कि कमल ने जज्बाती हो कर उसे अपने साथ भींच लिया। चुम्बनों की इस लेन-देन ने ही जैसे उनकी सारी उद्विग्नता हर ली थी। जोर मारती चाहतें उन्हें सामान्य कर गई तो कमल ने उससे पूछा—"तुमने बम की बू कैसे पा ली थी?"

सोनिया ने बताया, "जिस कपड़े में टाइम-बम लिपटा हुआ था—वह मास्टर सायमन के बदन का उतरा हुआ लिबास था। मैं मास्टर सायमन की बू पहचानती हूं। वही बू उसके लिबास से आ रही थी। मुझे बहुत पहले ही सूंघ लेना चाहिए था। मगर बदहवासी की वजह से दिमाग को यह सूझा ही नहीं था।"

सोनिया को अपनी बांहों में समेटे कमल फर्श पर बैठ गया। उसने सामने के छेद की तरफ इशारा करते हुए कहा—"हमें इस रास्ते से बाहर निकलना चाहिए। सुपर मास्टर अभी जिन्दा है। वो शैतान फिर हमें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा।"

वो दोनों वहां से उठ कर दीवार के पास आए। सोनिया ने एक स्टेनगन उठा कर कमल के हाथ में दे दी। दीवार में जहां छेद बन गया था—वह हिस्सा कद्रे कमजोर हो गया था। कमल ने एक जोर की लात मारी। छेद के आसपास के पत्थर टूट कर गिरने लगे।

यूं वह छेद और भी चौड़ा हो गया।

उन्होंने झांक कर दीवार की दूसरी तरफ देखा तो एक खुला कमरा नजर आया। इस कमरे के आखिरी सिरे पर एक जीना था जो ऊपर छत की तरफ गया था।

सोनिया बोली, "हमें ऊपर जा कर देखना चाहिए।"

"नहीं। हम पहले रमना के पास जाएंगे। पता नहीं वो मर चुकी है या जख्मी पड़ी है।"

वो दबी जुबान में बातें कर रहे थे और उस सुराख से बाहर आना ही चाहते थे कि उनके कदम रुक गए। मास्टर सायमन और बूढ़ा वैज्ञानिक राबर्ट एक बड़ा सा सूटकेस उठाए जीने की तरफ जा रहे थे।

कमल के खून में उबाल उठा। उन्हें देखते ही उसने उनकी टांगों पर फ़ायरिंग की, वो दोनों जीने पर चढ़ रहे थे...चीखते हुए गिरे और लुढ़कते हुए फर्श पर आ रहे। कमल और सोनिया दौड़ कर उनके पास पहुंचे। वो अपनी-अपनी टांगों को पकड़े मारे पीड़ा के बिलबिला रहे थे।

कमल ने मास्टर सायमन से पूछा, "क्या रमना को किसी ने मार

डाला है?"

"हां।" वह कराहते हुए बोला, "सुपर मास्टर ने उस पर गोली चलाई थी।"

"और तुम लोग छत की तरफ क्यों जा रहे थे।" कमल ने उसे बदस्तूर घूरते हुए पूछा, "क्या सुपर मास्टर वहां है?"

तभी छत पर से इंजन की गड़गड़ाहट सुनाई दी।

कमल व सोनिया ने चौंक कर छत की तरफ देखा। सीढ़ियों के आखिरी सिरे पर जहां एक दरवाजा खुला हुआ था—वहां से तेज हवा के झोंके आ रहे थे। अंदाजा लगाना मुश्किल न था कि ऊपर हैलीकॉप्टर है—जिसका पंखा तेजी से गर्दिश में आ गया है।

कमल व सोनिया स्टेनगनें संभाले तेजी से सीढ़ियां चढ़ते चले गए।

पर उन्होंने अपने शिकार तक पहुंचने में देर कर दी थी। जब वह ऊपर पहुंचे तो हैलीकॉप्टर हवा में ऊंचा उठ कर दूर निकल गया था। फिर भी उन्होंने उस पर फायरिंग की। लेकिन व्यर्थ। कॉप्टर शूटिंग रेंज से बाहर निकल चुका था।

वो नाकाम ही वापिस लौटे। सीढ़ियां उतरते हुए वह कमरे में पहुंचे। बूढ़ा वैज्ञानिक जख्मों की ताव न लाकर मर चुका था। मास्टर सायमन ने उन्हें देखते ही कहा—"मुझे फौरन फर्स्ट-एड चाहिए। मैं मर रहा हूं।"

कमल बोला, "मैं तुम्हें बचा लूंगा। लेकिन सच-सच बताओ इस हैलीकॉप्टर में कौन गया है?"

"सिर्फ सुपर मास्टर! हम भी उसके साथ जा रहे थे। खुदा के लिए मुझे बचाओ।" वो बिलबिलाया।

"इस सूटकेस में क्या है।"

"इसमें तुम्हारे खिलाफ अपराधिक रिकार्ड और ब्लू फिल्में हैं। तुम बहुत लक्की हो हीरो। वो तुम्हारे खिलाफ कोई सबूत यहां से नहीं ले जा सका है। आह! मुझसे तकलीफ बर्दाश्त नहीं हो रही है। प्लीज—मुझे बचा लो। यह बातें तो बाद में भी हो सकती हैं।"

"पहले मेरी बातों का जवाब दो।" कमल की आंखों में कहर भर आया था, "सुपर मास्टर यहां से बिल्कुल ही खाली हाथ नहीं गया होगा।"

"हां—वह एक ब्रीफकेस ले कर गया है। उस ब्रीफकेस में कितने ही देशों को ब्लैकमेल करने के लिए बहुत संवेदनशील व महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। आह...आह...उफ...तुम्हारे पास से हासिल की हुई माइक्रोफिल्म भी उसी ब्रीफकेस में है।"

कमल ने सोनिया की तरफ पलट कर पूछा, "क्या मेरे पास कोई माइक्रोफिल्म थी?"

सोनिया ने इकरार में सिर हिलाते कहा, "हां। उस माइक्रोफिल्म को तुम्हारे मुल्क के ही एक गैंगस्टर शैलाखां ने हासिल किया था। वह फिल्म तुमने उससे छीन ली थी। मगर यहां पहुंचने के बाद वह फिल्म फिर तुमसे छीन ली गई। कमल! तुम्हें याद नहीं है—मगर तुम्हें यह समझ लेना चाहिए कि तुम्हें अपने देश से बड़ा प्रेम है। तुम वह माइक्रोफिल्म हासिल करने के लिए जान की बाजी लगाते हुए यहां पहुंचे थे।"

"हां!" कमल सोचपूर्ण लहजे में बोला, "तुम समझा रही हो तो मैं समझ रहा हूं। अब मैं इस माइक्रोफिल्म को हासिल करने के लिए धरती के आखिरी सिरे तक सुपर मास्टर का पीछा करूंगा।"

सोनिया उसकी आंखों का कहर देख सहम गई।

वो धीमे से बोली, "मेरा ख्याल है वो फिर यहां वापिस आएगा। उसे एक बहुत बड़े देश की सरपरस्ती हासिल है। वो इसी बलबूते पर यहां आएगा। हमें फिलहाल उससे नहीं उलझना चाहिए। बेहतर यही है कि हम जल्द से जल्द टापू से निकल जाएं।"

"नहीं, सोनिया!" कमल निर्णायक लहजे में बोला, "मैं वह माइक्रोफिल्म उससे लेकर ही वापिस जाऊंगा।"

"मैं कब मना करती हूं।" सोनिया बोली, "लेकिन उसे हासिल करने के लिए हमें कोई दूसरा रास्ता अपनाना होगा। अगर हम यहां रहेंगे तो दोबारा उसके जाल में बुरी तरह फंस जाएंगे। तुम वक्त की नजाकत को समझो, कमल! मेरी बात मान लो। हम यहां से किसी सुरक्षित जगह जाएंगे और फिर अच्छी सी प्लानिंग के साथ सुपर मास्टर से आ टकराएंगे।"

सोनिया बड़ा माकूल मशविरा दे रही थी।

बातों के दौरान उन्होंने मास्टर सायमन को नजरअंदाज कर दिया था। उसके कराहने की आवाजें आती रही थी। फिर वह आवाजें मर गई। उन्होंने उसकी तरफ देखा। वह सर्द पड़ चुका था।

कमल ने उसकी जेबें टटोल कर सूटकेस की चाबी तलाश की। मगर उसके पास चाबी नहीं थी। उसे सूटकेस के लॉक को तोड़ना पड़ा, सूटकेस फाइलों व ब्लू-फिल्मों के कैसेट्स से भरा हुआ था। चमड़े की वह डायरी भी थी जिसमें कमलकांत की नई जिंदगी की दिनचर्या व उसमें होने वाले परिवर्तनों का ब्यौरा लिखा था।

कमल वह डायरी सोनिया की तरफ बढ़ाता हुआ बोला, "इस डायरी में मेरे बारे में बहुत कुछ लिखा जा रहा था। इसे संभाल

कर रखो—मैं कभी फुर्सत के वक्त पढ़ूंगा।"

सोनिया ने डायरी उससे ले ली।

अब वे फिल्मों पर सरसरी सी नजरें डालने लगे। एक फाइल में कमल के उन सभी जुर्मों का विवरण था जो उसने किए ही नहीं थे। बातों के दौरान सोनिया ने ही बताया कि कमल के बाजू पर कोई इंजेक्शन लगा कर उसके दिमाग को निष्क्रिय कर दिया गया था और फिर उससे—उसके हाथों से—कत्ल जैसी वारदातों की आत्म-स्वीकृति व विवरण लिखवाया गया था। इस संदर्भ में कमल की आवाज भी टेप की गई थी। सूटकेस में वीडियो कैसेट्स के अलावा आडियो कैसेट्स भी थी। इनमें कमल के जरायम से संबंधित टेप-स्पूल भी थे, लेकिन इनके पास उन्हें सुनने के लिए रिकार्ड-प्लेयर नहीं था।

सोनिया ने सुझाव दिया, "इन तमाम बेहूदा व बेकार की चीजों को फौरन नष्ट कर देना चाहिए।"

यह कहते हुए वो सामने पड़ी दोनों लाशों की जेबें टटोलने लगी। बूढ़े राबर्ट के जेब से उसे लाइटर मिल गया। उन्होंने फर्श पर फाइलों का ढेर लगा कर उन्हें लाइटर की आग दिखा दी। आग जलने लगी तो वो एक-एक कैसेट को खोल कर उनकी टेप निकाल इस आग के हवाले करते चले गए। करीब आधे घंटे में ही यह तमाम बेकार लेकिन खतरनाक चीजें जल कर राख हो गईं।

फिर वो दोनों वहां से निकल कर एक राहदारी से गुजरते हुए उस कमरे में आए जहां उन्होंने रमना की लाश को छोड़ा था।

वह बेचारी मर चुकी थी।

कमल चंद लम्हें खामोश खड़ा उसका बेजान चेहरा देखता रहा। इस अपनत्व भरी युवती ने उसका बहुत साथ दिया था मगर अफसोस कि कमल उसे बचा नहीं सका था। कमल सोच में गुम था कि सोनिया की आवाज ने उसे चौंकाया।

"कमल! यह शोजप जिंदा है—मगर बेहोश है। इसे मार डालना ही बेहतर है।" कहते हुए उसने फर्श पर पड़ा रिवॉल्वर उठा लिया।

सोनिया की आंखों से नफरत की चिंगारियां निकल रही थीं। उसने शोजप को एक ठोकर मारी। शोजप के मुंह से एक हल्की सी कराह निकली जो सोनिया के रिवॉल्वर से निकलने वाली गोली के धमाके में हमेशा के लिए गुम हो गई।

सोनिया ने रिवॉल्वर उसके मुर्दा जिस्म पर फेंक दिया।

चारों तरफ सन्नाटा व्याप्त था। एक तूफान था जो आ कर गुजर गया था।

कमल बोझिल कदमों से 'माइक' के पास आया और उसके द्वारा ऐराज को संबोधित करने लगा।

"हैलो ऐराज! मैं बेहद दुख व संताप के साथ यह खबर सुना रहा हूं कि तुम्हारी रमना अब इस दुनिया में नहीं है। शायद कुदरत को यही मंजूर था। अगर मैं उसके पास होता तो उसे बचाने की हर मुमकिन कोशिश करता। मगर अफसोस कि मैं और सोनिया उससे दूर एक बंद कमरे में खुद अपनी जिंदगी के लिए लड़ रहे थे। अगर तुम वह मोर्चा छोड़ कर इमारत के अंदर आ सकते हो तो आ जाओ। अब यहां कोई खतरा नहीं है। यहां तक पहुंचने के लिए सोनिया तुम्हारा मार्ग-दर्शन करेगी।"

❑❑

इस विशाल इमारत की भूल-भलैया में सही मुकाम तक पहुंचना बहुत मुश्किल था। सोनिया भी यहां के रास्तों को नहीं समझ सकती थी—लेकिन वो ऐराज की बू सूंघती हुई इमारत के बाहरी दरवाजे तक पहुंच गई। वापसी में वे पेचीदा रास्ते फिर उसे उलझा सकते थे—मगर वह कमल की बू सूंघती हुई ऐराज को लेकर उसके पास आ गई।

सोनिया इस अजीब खूबी की मालिक थी।

ऐराज हॉल में दाखिल होते ही दौड़ता हुआ रमना के पास पहुंचा। उस पर झुक कर उसके चेहरे को निहारने लगा फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसके मुलायम और सर्द चेहरे पर उंगलियां फेरने लगा। अब रमना उसकी उंगलियों के स्पर्श को महसूस करके लजा नहीं सकती थी। मुस्करा कर उसे कनखियों से नहीं देख सकती थी।

ऐराज ने गुस्से से दांत पीसते कमल की तरफ देखा फिर अपनी मुट्ठियां भींचते हुए पूछा—"मेरी महबूबा मर गई—तुम्हारी महबूबा कैसे जिंदा है?"

अजीब बेतुका सा सवाल था। कमल ने एक नजर सोनिया को देखा, फिर जवाब दिया—"ऐराज! सोनिया मेरे साथ रिकार्ड रूम में थी। रमना दरवाजे पर निगरानी के लिए खड़ी हो गई थी।"

ऐराज चीख उठा—"तुमने उसे यहां अकेले पहरा देने के लिए क्यों छोड़ दिया था। तुम यहां सोनिया को भी तो छोड़ सकते थे। रमना को अपनी हिफाजत में अपने साथ ले जा सकते थे।"

"ऐराज! प्लीज!" कमल असहाय सा बोला, "तुम्हें सिचुएशन का पता नहीं है। अगर सोनिया मेरे साथ रिकार्ड रूम में न होती तो हम सब तबाह हो जाते। इसने अपनी सूंघने की ताकत के जरिये वहां से एक टाइम बम बरामद किया था। अगर हम उस बम की

जद में आ जाते तो सुपर मास्टर तुम सब से भी निपट लेता। मगर हमारी इस कामयाबी ने उसे फरार होने पर मजबूर कर दिया।"

"यह कामयाबी है।" उसने झुंझला कर, चीखते हुए रमना की लाश की तरफ इशारा किया, "मेरी दुनिया लुट गई और तुम कामयाबी का किस्सा सुना कर मुझे तसल्ली देना चाहते हो।"

और अब सोनिया ने एक कदम बढ़ कर कहा—"ऐराज! मुहब्बत और जंग दो अलग-अलग चीजें हैं। जंग में कभी-कभी असहनीय नुकसान भी उठाना पड़ता है। अगर तुम्हें इस बात का गुस्सा है कि इस जंग में रमना क्यों काम आ गई और मैं क्यों जिंदा नजर आ रही हूं। तो लो—मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं—मुझे मार डालो।"

ऐराज उसकी बात सुन कर अपनी स्टेनगन पर हाथ फेरने लगा। उसने एक बार अपनी मुर्दा महबूबा की तरफ देखा और दूसरी बार सोनिया की तरफ नजर उठाई।

कमल को एकदम से खतरे का अहसास हुआ।

ऐराज के चेहरे पर तूफान लहरा रहा था। कमल पैंतरा बदल कर खड़ा हो गया। कमल के पैंतरा बदलते ही ऐराज ने कनखियों से उसकी तरफ देखा—फिर नजरें झुका कर परेशान सा कुछ सोचने लगा। उसने स्टेनगन करीबी मेज पर पटकी और झुंझलाए अंदाज में बोला—"सॉरी कमलकान्त! रमना की जुदाई ने मुझे पागल बना दिया था। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं? कहां से अपनी रमना को वापिस लाऊं।"

कमल ने करीब जाकर उसके कंधे को थपथपाते हुए तसल्ली दी, "सब्र करो, दोस्त! पता नहीं आजादी की इस जंग में और कौन-कौन मरेगा। तुम्हें तो यह इत्मीनान होना चाहिए कि तुम्हारी रमना आत्म-सम्मान और आजादी के लिए लड़ती रही और फिर इज्जत की मौत मर गई। हमने तमाम रिकार्ड और ब्लू-फिल्में जला दी हैं।"

ऐराज ने एक गहरी सांस ली। फिर फीकी हंसी हंसते हुए बोला, "मैंने अभी गुस्से में जो कुछ भी कहा है उसे भूल जाओ। अब हमें बाहर चलना चाहिए।"

कमल ने पूछा, "बाहर की क्या पोजीशन है?"

"बाहर भी हमारा पाला भारी है। जो लोग हमारा मुकाबला कर रहे थे—वो अचानक ही दोनों तरफ से घिर गए थे। हमारे जो साथी लांच में हमारा इंतजार कर रहे थे। उन्होंने पीछे से आ कर उन पर हल्ला बोल दिया था। सुपर मास्टर के कुत्ते दोतरफा हमले से बौखला गए। कुछ वहां से भाग गए...कुछ मारे गए...और बाकियों

ने हथियार डाल दिए। अब पूरे टापू पर हमारा कब्जा है।"

"फिर माइक द्वारा अपने आदमियों को हिदायत दे दो कि इन मास्टरों के जो लोग आत्मसमपर्ण कर रहे हैं उन पर जुल्म न किया जाए। जो अभी तक हथियार फेंकने के लिए तैयार नहीं हैं—पहले उनका खात्मा किया जाए।"

ऐराज माइक के पास जा कर अपने साथियों को संबोधित करने लगा—"साथियो! मैं ऐराज बोल रहा हूं। तुम में से कुछ लोग वापिस सागर तट पर जा कर लांच और बोट की हिफाजत करें। बाकी निकल भागे दुश्मनों की तलाश और पीछा करें। इस छोटे से टापू पर वो लोग खुद को नहीं छिपा सकेंगे। फरार होने के लिए सिर्फ बंदरगाह की तरफ ही जाएंगे। इसलिए बंदरगाह पर हमारा कब्जा होना चाहिए। जाओ—जल्दी जाओ।"

ऐराज निर्देश देता रहा। उसने दस हथियारबंद जवानों को इमारत के बाहर पहरा देने के लिए कहा। पांच जवानों को इमारत के अंदर बुलाया—जो रमना की लाश उठा कर बाहर ले गए।

कमल और सोनिया भी ऐराज के साथ बाहर आ गए।

ऐराज के हुक्म पर रमना के लिए एक ताबूत तैयार किया गया। चंद औरतें एक कमरे में रमना की लाश को नया लिबास पहना रही थीं। उसके लिए ढेर सारे सुर्ख फूल मंगवाए गए थे। जब उसका ताबूत बाहर लाया गया तो सबने उसका आखिरी दीदार किया। रमना ताबूत के अंदर सुर्ख फूलों में छिप सी गई थी। इस वक्त वो खुद भी एक फूल नजर आ रही थी।

कमल के दिल में कसक का अहसास हुआ।

वह एक तरफ सिर झुका कर खड़ा हो गया। रमना के ताबूत को बंद करके कब्र में उतारा जाने लगा तो दस जवानों ने हवाई फायर करते हुए सलामी दी।

कमल बदस्तूर सिर झुकाए खड़ा था। ठांय...ठांय की गूंज में सोनिया ने उससे कहा—"कमल! जरा ऐराज को देखो। वो मुझे कैसी खा जाने वाली नजरों से देख रहा है।"

कमल ने फौरन नजरें उठा कर देखा। ऐराज सोनिया को ऐसी ही नजरों से देख रहा था जैसे कच्चा ही चबा जाएगा। सोनिया बोली—"यह ऐराज, खामखां ही मेरा दुश्मन क्यों बन गया है? क्या इसकी शामत आ गई है?"

"नहीं सोनिया! तुम अभी उसके खिलाफ कुछ न बोलो, हम तूफान में घिरे हुए हैं। यह एक छोटा सा टापू है। अभी खबर आई है कि बंदरगाह पर ऐराज के आदमियों का कब्जा हो गया है। ऐसे

में ऐराज से दुश्मनी मोल लेना मुसीबतों को दावत देना होगा।"

सोनिया ने सिर झुकाते दबी जुबान में कहा, "तुम कह रहे हो तो मैं यथासम्भव उससे दोस्ती निभाने की कोशिश करूंगी।"

□□

कमल ने उसकी गलतफहमियां दूर करने के लिए और दोस्ती का सबूत देने के लिए हमेशा उसके कंधे से कंधा मिला कर रहने की कोशिश की। सोनिया को भी समझा दिया कि वो थोड़ी देर के लिए उससे दूर रहे ताकि ऐराज की नजरों में न आती रहे।

सोनिया अपने बूढ़े बाप के साथ बंदरगाह की तरफ़ चली गई।

ऐराज ने अपने तीन सशस्त्र जवानों को सोनिया के साथ कर दिया था और कमल ने यह भी साफ तौर पर नोट किया कि ऐराज ने किसी फौजी जनरल की तरह अपने इन तीन जवानों को सोनिया के साथ रहने का हुक्म दिया था।

कमल जानबूझ कर खामोश रहा। मौजूदा विजय ने ऐराज का दिमाग खराब कर रखा था। इस छोटे से टापू पर कब्जा करने के बाद—ऐराज अब खुद को एक 'सम्राट' समझने लगा था। प्रायः ऐसा होता है कि सत्ता पा लेने के बाद लोगों का मिजाज बदल जाता है।

सुबह तक व्यस्तता बनी रही।

जो दुश्मन लांच या नावों द्वारा फरार होना चाहते थे उन्हें बंदरगाह के करीब घेर लिया गया था। उन्होंने मुकाबले की कोशिश की पर एक एक करके मारे गए।

और फिर अगले दिन ऐराज ने अपने तौर पर टापू पर मार्शल-ला लागू कर दिया। उसने तमाम लोगों को अपने-अपने घरों तक सीमित रहने का हुक्म दे दिया था।

कमल अपने निवास स्थान पर पहुंचा। उसके वहां पहुंचते ही पांच स्टेनगन धारियों ने उसे अपने घेरे में ले लिया और गनें उस पर तान दीं। ऐराज थोड़ी ही दूर खड़ा हुआ था।

कमल ने उसकी तरफ देखते गुस्से से पूछा, "यह क्या हरकत है।"

उसने बड़ी लापरवाही से जवाब दिया, "तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। बात सिर्फ इतनी सी है कि ऐसे संगीन हालत में मैं किसी विदेशी पर भरोसा नहीं कर सकता। तुम हिंदुस्तानी हो। तुम्हें सकुशल यहां से तुम्हारे मुल्क भेज दिया जाएगा।"

कमल ने खुद को संभाला, संयत लहजे में बोला, "चलो यही सही, मैं बहरहाल तुम्हारा दोस्त बन कर रहना चाहता हूं। फिर मैंने यहां रह कर करना भी क्या है। तुम्हारे इत्मीनान के लिए मैं यहां

से चला जाऊंगा। तुम सोनिया को मेरे साथ भेज दो।" यह अनुरोध कमल ने कुछ सोच कर ही किया था।

"नहीं, कमलकान्त! सोनिया का ख्याल दिल से निकाल दो। उसका संबंध यहां के करीबी टापुओं से है। वो यहीं रहेगी।"

"लेकिन ऐराज! अगर वो अपनी मर्जी से मेरे साथ जाना चाहेगी—तो क्या तुम उसे जबरन रोकोगे?"

"हां, ऐसा ही होगा।"

"देखो, ऐराज!" कमल समझाने वाले अंदाज में बोला, "इस जंग में मैंने और सोनिया ने अकेले उस इमारत पर कब्जा किया है। मास्टरों और उनके हिमायतियों को मौत की नींद सुलाया है। सिर्फ सुपर मास्टर ही था जो निकल जाने में कामयाब हो गया। इस जंग में हमारे योगदान का सिला तो हमें मिलना ही चाहिए। मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता। सिर्फ सोनिया को मेरे हवाले कर दो। हम यहां से चुपचाप चले जाएंगे।"

"मेरी बात पत्थर की लकीर होती है। मैं एक बार कह चुका हूं कि सोनिया तुम्हारे साथ नहीं जाएगी।"

"क्यों नहीं जाएगी।" कमल तैश खा गया।

और अब एक जवान ने स्टेनगन से कमल के हाथ पर चोट लगाई। कमल के हाथ से स्टेनगन छूट कर दूर जा गिरी। कमल ने फौरन ही आगे बढ़ कर झुकते हुए उसे उठाना चाहा। इससे पहले उसके मुंह पर एक जबरदस्त चोट पड़ी। वह उलट कर दूसरी तरफ फर्श पर जा गिरा। दो जवानों ने उसके सीने से अपनी गनों की नालें सटा दीं।

उनमें से एक ने वार्निंग दी, "अगर अब तुम कोई हरकत करोगे तो छलनी कर दिए जाओगे। उठो और चुपचाप उस कमरे में चले जाओ।"

कमल फर्श पर से उठते हुए बोला, "पहले सोनिया को यहां बुला लो। उसके बिना मैं इस कमरे में भी नहीं जाऊंगा।"

लेकिन इसके बाद कमल दोबारा सोनिया की मांग नहीं कर सका। अचानक ही उसके सिर के पिछले हिस्से पर कयामत टूट पड़ी थी। जाने वो कैसी फौलादी चोट थी—कमल की आंखों के सामने एकदम से अंधेरा छा गया था।

और फिर।

जब कमल की चेतना लौटी (उसका दिमाग अहसासों की तरफ वापिस आने लगा तो सबसे पहले उसके कानों ने घड़ी की टिक-टिक सुनी। उसने मुश्किल से ही करवट बदलने की कोशिश की तो सिर

के पिछले हिस्से से असहनीय टीसें उठने लगीं।

उसने पीड़ा की शिद्दत से कराहते हुए आंखें खोल दीं।

उसे अपने चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा नजर आया। फिर शनैः शनैः हल्की जर्द सी रोशनी दिखाई देने लगी।

इस रोशनी में उसने खुद को एक कमरे के फर्श पर पड़ा पाया।

वह बड़ी मुश्किल से कराहते हुए जैसे तैसे उठ कर फर्श पर बैठ गया। थोड़ी देर तक उसका सिर चकराता रहा।

कमल समझ नहीं पा रहा था कि वो किस तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा और अपनी सोनिया तक पहुंच सकेगा। वह कितनी ही देर तक यूं ही फर्श पर बैठा सिर से उठने वाली टीसें बर्दाश्त करता रहा। खोपड़ी के अंदर जैसे बर्फ जम गई थी। आंखों के सामने धुंधली सी जर्द रोशनी फैली हुई थी।

फिर कमल की नजरें मेंटल-पीस पर गईं। वहां एक स्टैंड में चार मोमबत्तियां रोशन थीं। मोमबत्तियां काफी देर से जल रही थीं और अब थोड़ी देर बाद वो बुझने वाली थीं।

तभी सहसा...कमल ने महसूस किया कि उसकी नजरें एक मोमबत्ती पर जम कर रह गई हैं। उसे यूं लगा जैसे इस सुलगती हुई लौ से उसका कोई पुराना रिश्ता हो। जैसे वो पहले भी इस 'लौ' को अपलक-निरन्तर तकता रहा हो। सिर्फ इतनी ही बात होती तो शायद कमल वहां से अपनी नजरें हटा लेता—लेकिन दिमाग के बुनियादी रिश्ते से फौरन ही नाता नहीं तोड़ा जा सकता।

इन उत्तेजनापूर्ण क्षणों में भी कमल को याद नहीं आया था कि शुरू-शुरू में उसने टेलीपैथी सीखने के लिए मोमबत्ती की लौ से अपनी आंखों का रिश्ता कायम किया था। अब यह सुलंगती हुई 'लौ' उसी रिश्ते की डोर थाम कर उसके दिमाग में जम कर बैठ गई थी।

अब जबकि कमल सब कुछ भूल चुका था—ऐसी हालत में मेंटल-पीस पर जलने वाली मोमबत्ती की 'लौ' उसे अपनी तरफ खींच रही थी। वह उससे नजरें हटाना चाहता था—मगर उसके दिमाग ने उसे जकड़ लिया था—और उसका अचैतन्य जैसे उसे चुपके-चुपके समझा रहा था।

"कमल! भूले भटके राही! यह मोमबत्ती की लौ ही तेरे सफर का पहला मील का पत्थर है। पीछे छूट जाने वाले इस मील के पत्थर को याद कर। यह एक नन्ही सी 'लौ' तेरे तमाम अतीत को रोशन कर देगी।"

हां—कमल कुछ ऐसा ही महसूस कर रहा था। एक अनजानी

सी धुंधलकी सी दुनिया उसके सुप्त जहन में झलक रही थी। उसे स्पष्ट उजागर तौर पर देखने के लिए मोमबत्ती की 'लौ' को देखते रहना जरूरी हो गया था।

और इस वक्त कमल को जो फौरी फायदा पहुंचा वह यह था कि एक ही लौ पर निगाहों और दिमाग को केन्द्रित कर देने के बाद सिर की असहनीय पीड़ा बिल्कुल ही खत्म हो गई थी। कमल का अचैतन्य, जहां उसका यह ज्ञान व टेलीपैथी का सामर्थ्य जा कर छिप गया था...यही अचैतन्य अब एक उपचार बन कर जाग रहा था। कमल को उजाले दिखा रहा था। कमल को खुद से परिचित करा रहा था।

कमल ने खुद को हालात के धारे पर छोड़ दिया।

सारी दुनिया को छोड़ कर वो सिर्फ मोमबत्ती की इस नन्ही सी 'लौ' को तकने लगा और मन ही मन में कहने लगा—

"मैं बत्ती की इस 'लौ' को देखता रहूंगा। यही मेरे दर्द का इलाज है। मेरे सिर की पीड़ा बिल्कुल खत्म हो जाएगी। मैं भली-भांति सोचने समझने और चलने फिरने लायक हो जाऊंगा। ऐ शमा! मैं तेरी इस क्षीण सी लौ को देखते देखते अब अपने अतीत को पुकार रहा हूं। मैं सोच रहा हूं कि मैं कौन हूं और मेरी शुरुआत क्या है? मेरे जहन को शक्ति दे और मुझे मेरे आरंभ तक पहुंचा दे कि मेरे अतीत का तुझी से नाता है। एक अटूट नाता। मुझे...।"

अचानक ही घोर अंधेरा छा गया। वह मोमबत्ती अपनी जिंदगी की आखिरी सतह तक पहुंच कर बुझ गई।

कमल बेचैन सा हो उठा वह परेशान होकर चारों तरफ देखने लगा। अभी कुछ ही क्षण पूर्व वह महसूस कर रहा था कि उसे बहुत कुछ याद आने वाला है। अचैतन्य की पर्तों तले सो चुकी यादें करवटें ले जागने को हैं कि उसके अचैतन्य से रोशनी की किरण फूटने वाली है।

मगर मोमबत्ती अचानक ही बुझ गई। चारों तरफ अंधकार छा गया। सबसे बड़ा सितम यह हुआ कि कमल के दिमाग में भी पहले जैसा अंधेरा छा गया। और इस अंधेरे में ही उसका अतीत एक बार जैसे फिर दफन हो गया।

कमल उठ कर खड़ा हो गया।

फिर उस अंधेरे में आहिस्ता-आहिस्ता कदम उठाता हुआ मेंटल पीस की तरफ बढ़ा। तमाम मोमबत्तियां पिघल चुकी थीं। कमल हाथ आगे बढ़ा कर एक अंधे की तरह उस मेंटलपीस पर दूसरी मोमबत्ती तलाश करने लगा।

मोमबत्ती की यह 'लौ' बुझते-बुझते कमल को समझा गई थी कि उसकी लौ से उसके दिमाग का गहरा रिश्ता है और वह फिर वो रिश्ता स्थापित कर सकता है कि वो एक बार फिर अपने अतीत को रोशन करने की कोशिश कर सकता है।

लेकिन इस वक्त कमल को दूसरी मोमबत्ती नहीं मिली।

वो अंधेरे में रास्ता ढूंढता हुआ दरवाजे को तलाश करने लगा। उसने सोच लिया था कि जब भी उसे कोई मोमबत्ती मिलेगी तो वह पहली फुर्सत में उसकी 'लौ' से रिश्ता जोड़ेगा।

वह दीवार के सहारे चलते-चलते खिड़की के पास पहुंच गया—फिर उसे खोल कर देखा, चांदनी छिटकी हुई थी। बाहर का मंजर देख कर पता चला कि वो अपने बंगले पर ही है।

चांदनी खिड़की के रास्ते कमरे में बिखर रही थी और कमल अब दूर एक दरवाजा देख रहा था। उसके सिर की पीड़ा बिल्कुल ही जाती रही थी। जाने पीड़ा के इस अहसास को उस बत्ती की लौ ने उसके दिमाग से किस तरह मिटा दिया था।

कमल तेजी से चलता हुआ दरवाजे के पास पहुंच गया। दरवाजा खोलने को जब उसने उसके हैंडल पर हाथ रखा तो वहां एक तह किया हुआ कागज एक धागे से बंधा नजर आया। कमल ने धागे को तोड़ने के बाद उस कागज को खोल कर देखा। यहां रोशनी अपर्याप्त थीं। वह खिड़की के पास वापिस आ गया और इस कागज पर लिखी तहरीर को खुली चांदनी में पढ़ने लगा।

इसमें लिखा था।

हीरो हिंदुस्तानी। मैं तुम्हारी सेवाओं के बदले तुम्हें जिंदा छोड़ कर जा रहा हूं। मैं जानता हूं कि सुपर मास्टर, एक बड़े देश से सैनिक सहायता ले कर यहां वापिस आएगा। बंदरगाह पर तुम्हारे लिए एक छोटी लांच छोड़ कर जा रहा हूं। होश में आने के बाद तुम इस लांच में कहीं भी जा सकते हो। रमना की कमी पूरी करने के लिए मैं तुम्हारी सोनिया को अपने साथ ले जा रहा हूं।

तुम्हारा हितैषी—ऐराज!

कमल मारे गुस्से के इस कागज को मुट्ठी में भींचने लगा।

वह जलील अहसानफरामोश उसकी सोनिया को उससे छीन कर ले गया था और खुद को उसका हितैषी कह रहा था।

कमल ने पलंग के सिरहाने वाली मेज के निकट आ कर घड़ी को करीब से देखा। घड़ी के कांटे बता रहे थे कि थोड़ी ही देर में सुबह होने वाली है।

यानी कि कमल करीब बारह घंटे तक बेहोश पड़ा रहा था।

जो मोमबत्तियां वो रोशन कर गए थे वो ज्यादा-से-ज्यादा चार घंटों तक जलती रह सकती थीं। इस हिसाब से ऐराज चार-पांच घंटे पहले ही यह टापू छोड़ कर गया होगा? वो सोनिया को साथ ले गया था।

मगर वो कहां गए होंगे?

इस कमरे में बैठे सोचते रहने से यह कभी मालूम नहीं हो सकता था कि वो कहां गए होंगे। कमल ने बंदरगाह की तरफ जाने का इरादा किया—जहां ऐराज उसके लिए एक लांच छोड़ गया था।

अब उसका रुख बंदरगाह की तरफ था, पौ फट चुकी थी। सुबह के उजाले में उसने कई जगह सुपर मास्टर के निजी रक्षकों की लाशें देखीं। कितनी ही लाशें ऐसी थी जिनके पास स्टेनगनें और कारतूस के भण्डार पड़े हुए थे।

कमल ने कुछ सोच एक लाश के पास कार रोकी और उसके पास से स्टेनगन और कारतूसों की पेटी उठा ली। एक लाश के होलस्टर से उसे भरा हुआ रिवॉल्वर भी मिल गया। वो यह सामान समेट कर कार के पास आया तो दूर मकानों की खिड़कियां खुली हुई नजर आईं। औरतें और बच्चे उसे सहमी हुई नजरों से देख रहे थे।

यह टापू बुरी तरह तबाह हो चुका था। टापू के वासियों को उनकी तकदीर के रहमो-करम पर छोड़ दिया गया था। तबाही मचाने वाले अपनी जानें बचा कर वहां से निकल गए थे।

कमल कार में सड़कों से गुजरता इधर-उधर बिखरी लाशों को देख रहा था। जो कुछेक लोग सड़क किनारे नजर आए वो कमल को चलते-फिरते मुर्दे ही लगे थे।

कमल बंदरगाह की एक बर्थ पर पहुंचा। यहां लंगर डाले खड़ी लांच उसने दूर ही से देख ली थी। लांच के डेक पर एक नौजवान स्टेनगन लिए खड़ा था। दूसरा नौजवान उसे बर्थ पर नजर आया। कमल की कार रुकते ही वो तेजी से चलता हुआ करीब आ कर बोला, "चलो, आओ। हम बहुत देर से तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।"

कमल कार का दरवाजा खोल कर बाहर निकलने के लिए स्टेनगन उठाने लगा तो उसने फौरन ही अपनी स्टेनगन का रुख कमल की तरफ कर दिया।

"खबरदार! तुम अपने पास कोई हथियार नहीं रखोगे।"

"आखिर क्यों?" कमल ने पलट कर पूछा।

"हम नहीं जानते। यह ऐराज का हुक्म है।"

"ऐराज कहां है?"

"वह दो घंटे पहले यहां से एक समुद्री जहाज में बैठ कर जा चुका है।"

"क्या वह सोनिया को साथ ले गया है?"

"हां। वो नहीं जाना चाहती थी—लेकिन स्टेनगन के निशाने पर ऐसे चली गई—जैसे अब तुम चलोगे।"

कमल ने कुछ सोचा व फिर खाली हाथ कार से निकलते हुए पूछा, "तुम मुझे इस लांच में कहां ले जाकर छोड़ोगे?"

"ऐराज का हुक्म है कि तुम्हें बैंकाक ले जा कर छोड़ दिया जाए।"

कमल ने नजरें उठा कर लांच पर खड़े स्टेनगनधारी की तरफ देखा। अब उसका दिमाग बड़ी तेजी से सोच रहा था। इन स्टेनगनधारियों से ठण्डे ठण्डे ही निपटने में अक्लमन्दी थी। वह वक्त जाया करने को बोला, "सोनिया का बाप बनजेमन कहां है?"

"ऐराज गोश्त खाता है और हड्डियां फेंक जाता है। इसलिए वह सोनिया को साथ ले गया और उस बूढ़े को तुम्हारे लिए छोड़ गया है। बनजेमन इसी लांच के केबिन में मौजूद है। तुम बेहूदा बातों में वक्त जाया कर रहे हो। क्या है तुम्हारे दिमाग में? ध्यान रहे, तुम्हारी कोई भी होशियारी नहीं चलने वाली। अपनी चोंच बंद रखो और आगे बढ़ो।"

कमल उसके आदेश पर दो कदम आगे बढ़ा। फिर रुक कर बोला, "मैं अपने साथ खाने का कुछ सामान लाया हूं। उसे तो साथ लेने दो।"

"कोई जरूरत नहीं। लांच में जरूरत से ज्यादा खाने का सामान है। हमें तुमसे ज्यादा फिक्र है खाने की। जल्दी चलो।"

उसने स्टेनगन की नाल से कमल की पीठ पर ठोहका दिया। कमल को मजबूरन आगे बढ़ना पड़ा। लांच के डेक पर स्टेनगन ताने खड़े जवान की मौजूदगी में कमल इस नौजवान से भिड़ जाने का खतरा मोल नहीं ले सकता था।

कमल खामोशी से सीढ़ियां चढ़ता हुआ लांच पर आ गया।

"सीढ़ी ऊपर खींच लो।" ऊपर पहुंचने के बाद उसने कमल को हुक्म दिया।

कमल सीढ़ी को लांच के तख्ते पर खींचने लगा।

"गुड! अब इस सीढ़ी को उठा कर उधर एक तरफ रख दो।"

कमल ने सीढ़ी उठाई और फिर उसे एक किनारे रखने के बजाए उस स्टेनगनधारी पर ही फेंक मारी। यह नौजवान इस अप्रत्याशित हमले से अपना संतुलन बनाए नहीं रख सका और फर्श के तख्ते

पर गिर पड़ा। सीढ़ी उसके ऊपर आ गई थी।

कमल ने फौरन छलांग लगाई और उसे सीढ़ी के ऊपर से दबाता चला गया।

दूसरा नौजवान लांच के ऊपरी डेक पर था, वो वहां से देख नहीं सकता था कि निचले हिस्से में क्या हो रहा है। लेकिन भारी भरकम सीढ़ी गिरने की आवाज ने उसे चौंका दिया।

उसने अपने साथी को आवाज दे उसकी खैरियत पूछी।

इतनी देर में कमल अपने प्रतिद्वन्द्वी से स्टेनगन छीन चुका था। दूसरी बार उस दूसरे ने ऊपर से आवाज नहीं दी। कमल को उसके दौड़ते हुए कदमों की आवाज सुनाई दी, कमल लपक कर उस जीने की तरफ आ गया जो ऊपर डेक की तरफ जाता था। फिर जैसे ही वो दूसरे वाला ऊपरी सिरे पर नजर आया कमल ने फायर खोल दिया।

गोलियों ने उसे छलनी कर दिया। उसके हलक से घुटी-घुटी चीखें निकली। फिर वो औंधे मुंह जीने पर गिरा और लुढ़कता हुआ नीचे आने लगा।

कमल ने सीढ़ी तले दबे हुए जवान की तरफ ध्यान दिया।

वो फटी-फटी आंखों से कमल ही की तरफ देख रहा था। कमल ने स्टेनगन उस पर तान दी व इत्मीनान से पूछा—"क्यों क्या सीढ़ी तले दबे रहने का ही इरादा है। चलो, उठो।"

उसने कराहते हुए जैसे-तैसे अपने ऊपर से सीढ़ी हटाई और उठ कर बैठ गया।

"जिंदगी चाहते हो या मौत?" कमल ने पूछा।

स्टेनगन का रुख अपनी तरफ देख वो गिड़गिड़ाने लगा, "मुझे माफ कर दो। मुझे जिंदा रहने दो। मैं तुम्हारा वफादार नौकर बन कर रहूंगा।"

"ओह! पर अभी कुछ देर पहले तुम मेरी जान के दुश्मन थे। मैं तुम पर कैसे भरोसा कर सकता हूं?"

"मैं...मैं...अपनी वफादारी का सबूत दे सकता हूं।"

"अच्छा...तो दो।"

वो कहने लगा, "ऐराज ने मुझे हुक्म दिया था कि इस समुद्री सफर के दौरान मैं तुम्हारे खाने में एक ऐसी दवा की थोड़ी-थोड़ी सी मात्रा मिला कर देता रहूं—जिससे दिमाग धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है—और इंसान को कई किस्म की बीमारियां घेर लेती हैं।"

"मैं कैसे यकीन करूं कि तुम सच कह रहे हो।" कमल ने उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा, "ऐराज अगर चाहता तो मुझे मेरे बंगले

पर ही कत्ल कर सकता था। वो यह इतना लम्बा खेल क्यों खेलेगा कि यहां से फरार होने के लिए मेरी खातिर एक लांच छोड़ दे.. .फिर सफर के दौरान तुम्हारे हाथों मुझे जहरीला खाना खिलाता रहे? मैं नहीं मानता। वो अहसानफरामोश जरूर है। लेकिन मेरी जान का दुश्मन नहीं है।"

"मैंने कब कहा कि वो तुम्हारी जान का दुश्मन है। वो तुम्हारे गुणों के कारण तुम्हें जिंदा रखना चाहता है। लेकिन जिंदा रख कर तुम्हें मुर्दों से बदतर बना देना चाहता था। उसे अंदेशा है कि तुम बैंकाक पहुंच कर भी सोनिया की खातिर उसके पीछे लगे रहोगे और इस तरह ऐराज की जान के दुश्मन बन जाओगे। मगर दिमागी और शारीरिक तौर पर कमजोर हो कर तुम उसका पीछा नहीं कर सकोगे।"

उसकी बात कमल की समझ में आ गई। वो अहसानफरामोश वाकई ऐसा कर सकता था। कमल बोला, "अच्छा, उठो! मुझे वह दवा दिखाओ।"

वो उठकर कमल के आगे-आगे चलता हुआ किचन में आया। उसने कपबोर्ड के एक खाने से एक छोटी सी बोतल निकाल कर कमल की तरफ बढ़ा दी। कमल ने उसका लेबल पढ़ा तो पता चला कि वाकई वह एक घातक दवा है। कमल ने शीशी कपबोर्ड के उसी खाने में रख दी और उससे सवाल किया—"अब यह भी सच-सच बता दो कि ऐराज सोनिया को लेकर कहां गया है?"

"वह बर्मा की तरफ गया है। अगर वहां की हकूमत से जहाज को लंगर डालने की इजाजत नहीं मिलेगी तो वो हांगकांग की तरफ चला जाएगा।"

कमल उसके साथ किचन से निकल कर डैक के केबिन की तरफ बढ़ते हुए बोला, "बनजेमन को किस केबिन में बंद किया गया है? और चाबी किसके पास है?"

चाबी उसी के पास थी।

वो जीना चढ़ कर डेक पर पहुंचे। उसने केबिन का दरवाजा खोल दिया। बनजेमन सामने पलंग पर परेशान बैठा हुआ था। कमल को देखते ही उसके चेहरे पर ताजगी आ गई। वह लपक कर कमल के निकट पहुंचा।

उसने पूछा, "मेरी बेटी कहां है?"

कमल ने उसे बताया, "ऐराज बदनीयत साबित हुआ है। उसके साथियों ने मुझे बुरी तरह जख्मी करने के बाद मुझे मेरे बंगले में बेहोशी की हालत में छोड़ दिया था। अगर मैं होश में होता तो उसे

सोनिया को जबरन अपने साथ ले जाने का मौका नहीं देता।"

बूढ़े बनजेमन के चेहरे पर सख्ती के भाव उपजे—वो अजीब से लहजे में बोला, "अगर ऐसी बात है तो वह सोनिया को नहीं अपनी मौत को अपने साथ ले गया है। मेरी बेटी को मुझसे ज्यादा कोई नहीं जानता। वो न तो बेबसी से जिंदा रहना चाहेगी और ना ही मायूस होकर अकेले मरना पसंद करेगी। अगर मरने का वक्त आया तो वो ऐराज को भी साथ ले मरेगी।"

कमल ने बेअख्तयार ही मन ही मन दुआ मांगी कि रब न करे कि सोनिया पर मजबूरन मरने का वक्त आए। सोनिया के लिए अपने इन जज्बातों को कमल खुद भी नहीं समझ पा रहा था। वैसे उसे इस बात का यकीन था कि वह फौलादी हसीना—ऐराज के बस की नहीं है।

❑❑

कमल, बूढ़े बनजेमन को आराम करने को कह उस नौजवान के साथ केबिन से बाहर आ गया।

वो लांच के पिछले हिस्से में पहुंचे। कमल ने कुछ सोचते हुए उस जख्मी नौजवान से कहा—"तुमने अपनी वफादारी का सबूत दिया है। इसलिए मैं तुम पर भरोसा करते हुए कहता हूं कि लांच से उतर कर 'बर्थ' पर जाओ और उस कार में से स्टेनगन, कारतूस की पेटी और रिवॉल्वर निकाल कर ले आओ। हमारे पास ज्यादा से ज्यादा असला होना चाहिये।"

नौजवान लांच पर से छलांग लगा कर बर्थ पर पहुंच गया। उसने सीढ़ी लगाने की जरूरत भी नहीं समझी। कमल समझ गया कि वो मौका पा कर भगाना चाहता है। कमल का शक ठीक निकला। वो नौजवान कार तक पहुंचा। हथियार निकालने को दरवाजा खोला। पर फिर बड़ी फुर्ती से कार में घुस स्टेयरिंग संभाल इंजन स्टार्ट करने लगा।

कमल ने स्टेनगन उठा फायरिंग की। कार के दो पहिये धमाके से ब्रस्ट हो गए, नौजवान स्टेनगन ले कर दूसरे दरवाजे से कार की आड़ में चला गया।

कमल ने चीख कर कहा, "बेटे, मुझे अहमक न समझो, मैं खुद ही तुमसे पीछा छुड़ाना चाहता था।"

जवाब में नौजवान का रिवॉल्वर वाला हाथ उठा। वो रिवॉल्वर से फायरिंग करना चाहता था, कमल की स्टेनगन ने गोलियां उगली। नौजवान का हाथ छलनी हो गया—रिवॉल्वर छूट कर दूर जा गिरा। उसकी चीख की आवाज दूर तक सरसराती हुई चली गई।

नौजवान कार की ओट से निकल कर बंदरगाह की एक इमारत की तरफ भागने लगा। तभी ऊपर डेक पर से गोलियां चलने की आवाज सुनाई दी। नौजवान एकबारगी उछला व जमीन पर गिरा। फिर कुछ देर तड़पने के बाद सर्द पड़ गया।

फिर डैक से बनजेमन की आवाज सुनाई दी—"कम ऑन माई सन! मैंने उसे खत्म कर दिया है।"

कमल लपक कर ऊपर पहुंचा। बनजेमन के हाथ में स्टेनगन देख कर उसने पूछा—

"तुम्हें यह स्टेनगन कहां से मिल गई?"

उसने दूसरे केबिन की तरफ इशारा करते बताया, "इस केबिन में हथियारों से भरी पेटियां रखी हुई हैं। डिब्बाबंद खाने का सामान भी है। अब हमें फौरन बर्मा की तरफ रवाना हो जाना चाहिए। मैं नीचे इंजनरूम में जाता हूं। समुद्र में पहुंचने तक तुम यहीं डैक पर खड़े रहो।"

"ठीक है।" कमल ने जैसे अनुमति दी।

बनजेमन पलट कर जाने को हुआ पर फिर ठिठक कर दूर समुद्र की तरफ देखने लगा। कमल की नजरें भी उस तरफ उठ गईं; एक छोटा सा समुद्री जहाज इसी तरफ बढ़ा आ रहा था। दोनों ने एक दूसरे की तरफ सवालिया नजरों से देखा। उन दोनों के दिमाग में एक ही सवाल था—"यह किस का जहाज है और इस बंदरगाह की तरफ किस मकसद से आ रहा है?"

कमल ने अंदेशा जाहिर किया, "क्या सुपर मास्टर सैनिक सहायता लेकर लौट आया है?"

बूढ़े बनजेमन ने इंकार में मुंडी हिलाते कहा, "ओह, नो। इतना छोटा सा जहाज फौजी नहीं हो सकता। फिर सुपर मास्टर बुरी तरह शिकस्त खा कर गया है। वह जब भी आएगा—पूरे जंगी बेड़े के साथ आएगा।"

"फिर ये कौन हो सकते हैं। हमें सुरक्षा प्रबंध तो कर ही लेने चाहिए।" कमल बोला। और वो दौड़ कर केबिन में आ गए। स्टेनगन उनके पास थी ही—उन्होंने रिवॉल्वर भी लोड कर के जेबों में रख लिए, दो थैलों में हथगोले भर लिए। बनजेमन एक थैला ले कर नीचे चला गया।

कमल लांच के डेक पर आ खड़ा हुआ।

वह जहाज तेजी से करीब आ रहा था, और जब जहाज करीब दो सौ गज के फासले पर पहुंच गया तो कमल को उस पर इस टापू के सशस्त्र जवान नजर आए। कमल ने उन्हें फौरन पहचान

लिया। वो ऐराज के साथी थे।

हैरानी की ही बात थी कि वे वापिस क्यों आ गए हैं। क्या उनके साथ सोनिया भी होगी? जहन में इस सवाल के उभरते ही कमल का दिल धड़कने लगा। वह केबिन की आड़ में खड़ा हो उन्हें क्षण प्रतिक्षण निकट आते देखता रहा।

करीब पचास गज के फासले पर आ कर उन्होंने अपने साथियों को आवाज दी और जब उन्हें इस लांच की तरफ से कोई जवाब नहीं मिला तो वे एक सफेद कपड़े को 'सुलह की झंडी' के तौर पर लहराते हुए नाम लेकर पुकारने लगे।

"हीरो हिंदुस्तानी! अगर तुम लांच पर मौजूद हो तो सामने आओ।" किसी ने ऊंची आवाज में पुकारा, "ऐराज तुमसे सुलह करने और तुम्हारी सोनिया को वापिस करने आया है।"

सोनिया के नाम से ही कमल के दिल की धड़कने बेतरतीब हो चलीं। सोनिया के नाम, सोनिया के जिक्र के साथ ही उसका मन-मस्तिष्क भी खिल उठा था। इन्हीं उफनती भावनाओं के साथ वो केबिन की आड़ से निकल कर सामने आने को ही था कि तभी लांच के निचले हिस्से से बनजेमन ने चीख कर कहा—"कमलकान्त! इनके फरेब में न आना। मैं बूढ़ा हूं। मुझे अपनी जिंदगी को दांव पर लगाने दो। मैं तुम्हारा प्रतिनिधि बन कर उस जहाज पर जाऊंगा और ऐराज से बात करूंगा।"

अब वो लोग अपने उस छोटे से जहाज को 'बर्थ' के साथ लगा रहे थे और लंगर डाल रहे थे। ऐराज के एक साथी ने जवाब दिया—"मिस्टर बनजेमन! हमें मंजूर है। तुम यहां आ कर ऐराज से बात करो और अपनी बेटी को वापिस ले जाओ।"

फिर कमल को नीचे से ऐसी आवाजें सुनाई दीं—जैसे बनजेमन 'बर्थ' तक पहुंचने के लिए सीढ़ी लगा रहा हो। बनजेमन के समझाने से बात समझ में आ गई थी—वर्ना कमल तो सोनिया की वापसी के ख्याल से ही दीवाना हो गया था। कमल अब संजीदगी से सोच रहा था कि ऐराज आखिर क्यों सुलह करने के लिए वापिस आया है। और अगर आ ही गया है तो फिर खुद सामने क्यों नहीं आ रहा है।

ऐराज सोनिया को लेकर दूर समुद्र में चला गया था। बर्मा या हांगकांग जाने का फैसला कर चुका था। उसके यूं वापसी की कोई माकूल वजह समझ में नहीं आ रही थी। जबकि वापसी में खतरा भी था। सुपर मास्टर यहां किसी वक्त भी इंतकाम लेने के लिए पहुंच सकता था।

यह चक्कर कमल को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

कमल ने बनजेमन को देखा। वो उस जहाज की सीढ़ियां चढ़ने के बाद केबिन की तरफ जा रहा था। जहाज के हथियारबंद जवान—जैसे उसके स्वागतार्थ अलर्ट खड़े हुए थे। उस जहाज में कई केबिन थे। एक स्टेनगनधारी ने बनजेमन को एक केबिन के सामने पहुंचा दिया।

कमल अपनी लांच में जहां खड़ा हुआ था—वहां से वह दरवाजा नजर आ रहा था। बनजेमन बंद दरवाजे के सामने खड़ा रहा था और दरवाजा नहीं खोल रहा था। थोड़ी देर बाद ही कमल की समझ में आया कि बनजेमन बंद दरवाजे के पीछे किसी से बात कर रहा है। इतनी दूर से उसके होंठ हिलते हुए नजर नहीं आ रहें थे। लेकिन कभी इंकार में और इकरार में हिलता हुआ सिर नजर आ रहा था।

फिर बनजेमन ने ऐराज के खास आदमियों को आवाज देकर वहां बुलाया। ऐराज के चार विश्वसनीय साथी दरवाजे के सामने आकर खड़े हो गए।

अब वे बंद दरवाजे के पीछे से कही जाने वाली बातें सुन रहे थे। उनके अंदाज से ही जाहिर था कि वो अपने बॉस के आदेश सुन रहे हैं।

फिर वो चारों जहाज में इधर-उधर बिखर कर अपने साथियों को आदेश देने लगे।

"साथियो! अपने हथियार इस जहाज पर छोड़ कर किनारे 'बर्थ' पर चले जाओ। यह हमारे बॉस का देश है।"

यह आदेश सुनते ही वे सब परेशान हो गए। कुछेक हथियार फेंक कर 'बर्थ' की तरफ जाने लगे और कुछ यह आदेश मानने को तत्पर दिखाई नहीं दिए। पर थोड़ी देर की बहस के बाद उन्हें भी जाना ही पड़ा। ऐराज के वो चारों विश्वासपात्र साथी भी जहाज छोड़ गए। जहाज खाली हो गया।

इसके बाद बनजेमन ने जहाज में घूम-फिर केबिनों और फिर निचले हिस्से की अच्छी तरह तलाशी ली। और जब उसे यकीन हो गया कि जहाज पर ऐराज का कोई आदमी नहीं है तो उसने कमल को आवाज दी—

"मिस्टर कमलकान्त! अब तुम यहां आ सकते हो...कोई खतरा नहीं है।"

कमल ने किनारे की तरफ देखा। ऐराज के तमाम निहत्थे साथी 'वर्थ' से दूर जा कर सैनिकों की तरह पंक्तिबद्ध खड़े हो गए थे।

कमल ने स्टेनगन संभाली—ग्रेनेड का थैला संभाला और फिर

लांच से उतर कर बर्थ पर आ गया। गार्ड उससे लगभग बीस गज के फासले पर खड़े हुए थे। कमल सावधानी से चलता हुआ जहाज के जीने तक पहुंचा।

बनजेमन उसका प्रतीक्षक था। वह उसे देखते ही बोला, "मैं जहाज के जीने की निगरानी कर रहा हूं। उन लोगों ने अगर जीने की तरफ आने की कोशिश की तो मैं फायरिंग शुरू कर दूंगा। तुम केबिन नंबर एक के दरवाजे पर जा कर सोनिया से कहो कि अब वो बाहर आ जाए।"

कमल ने केबिन नंबर एक के दरवाजे पर दस्तक दी।

"मेरी जान! बाहर आ जाओ।"

कमल की आवाज सुनते ही सोनिया एक झटके से दरवाजा खोल कर बाहर आई और दीवानावार कमल से लिपट गई। कमल खुद भी जज्बाती हो रहा था। आलिंगनबद्ध सोनिया को चूमने के दौरान कमल ने खुले हुए दरवाजे से केबिन के अंदर देखा।

केबिन के फर्श पर ऐराज घायलावस्था में पड़ा हुआ था।

कमल सोनिया के साथ केबिन के भीतर आया, उसने सोनिया से पूछा, "यह खुद को महान विजेता समझता था। अब यह चारों खाने चित कैसे हो गया?"

सोनिया ने उसे एक ठोकर रसीद की फिर फुंफकारते हुए बोली, "इसने मुझे इस केबिन में बंद कर दिया था। बंद करने से पहले मुझसे मेरे हथियार छीन लिए थे। इसके साथियों ने इसके आदेश पर ही मेरे लिबास के अंदर तलाशी नहीं ली थी। इसने अपने साथियों को इसलिए मना कर दिया था कि यह खुद गुलफाम बन कर मेरे लिबास तक पहुंचना चाहता था।"

"ओह! फिर?"

"जहाज जब बंदरगाह छोड़ समुद्र में पहुंच गया तो यह शराब के नशे में लड़खड़ाता हुआ मेरे पास आया। फिर दरवाजा बंद करते हुए बोला—'तुम्हारा कमलकान्त मेरी रमना से खेल चुका है। मैं चाहता तो उसे कत्ल कर देता—लेकिन मैं उसे तड़पा-तड़पा कर मारना चाहता हूं। मेरे साथी उसे खाने में ऐसी दवा मिला कर देंगे—जो उसे हमेशा के लिए बीमार और कमजोर बना देंगे। मैं तुम्हारी जवानी से खेलता रहूंगा...वहां वो तुम्हारे लिए तड़प-तड़प कर मरता रहेगा।' यह कह वह मुझे तर निवाला समझ कर मेरी तरफ बढ़ने लगा। मैं उसकी गैरमौजूदगी में फौलादी नाखून पहन चुकी थी। जब मैंने इस पर हमला किया तो इसके होश उड़ गए। सारा नशा हिरन हो गया। यह मुझसे बच कर दरवाजे की तरफ

वापिस भागने लगा। मैंने एक ही पंजा मार कर इसकी गर्दन से गोश्त नोंच लिया। यह लड़खड़ा कर फर्श पर गिरा और मैं इस पर सवार हो गई। अंदर हंगामें की आवाज सुन कर—बाहर इसके साथी दरवाजा पीटने लगे। मैंने फौलादी पंजे इसके चेहरे पर रखते हुए कहा—"अपने आदमियों से कहो कि वो दरवाजा न तोड़े—वर्ना तुम जिंदगी से हाथ धो बैठोगे।"

"मेरे फौलादी नाखून उसके चेहरे पर इस तरह जमे हुए थे—जैसे अब-तब में पेवश्त हो कर उसके चेहरे की धज्जियां उड़ा देंगे। उसने घबरा कर अपने आदमियों को आवाज दी।

"ठहर जाओ—दरवाजा न तोड़ो। मेरी जिंदगी खतरे में है।"

उसकी बातें सुन कर बाहर का शोर एकदम से बन्द हो गया। मैंने उससे कहा—

"अपने साथियों से कहो कि इस जहाज को वापिस टापू की बंदरगाह की तरफ ले जाओ।"

यह हिचकिचाने लगा। मैंने उसके चेहरे पर नाखून का दबाव डाला तो उसने कांपती आवाज में अपने साथियों को हुक्म दिया—"मेरे जांनिसार साथियो! अगर तुम मुझे जिन्दा देखना चाहते हो तो जहाज को वापिस बंदरगाह की तरफ मोड़ लो।"

इस पर बाहर से इसके साथी की आवाज आई। वो बाहर से धमकी दे रहा था, "सोनिया! अगर तुम जिंदगी चाहती हो तो चुपचाप दरवाजा खोल दो। वर्ना हम तुम्हें तड़पा-तड़पा कर मारेंगे।"

मैंने जवाब दिया, "मुझे तो हर हाल में मरना है, तुम्हारा लीडर मेरी इज्जत लूट कर मारना चाहता था। पर अब इस कामी दरिन्दे की गर्दन मेरे शिकंजे में है। मुझे अपनी जिंदगी से कोई दिलचस्पी नहीं है। तुम अपने लीडर को जिन्दा रखने की बात करो।"

"और कमल, माई डियर! वो सभी ऐराज की जिंदगी चाहते थे। यह कुत्ता उन्हें बड़ा प्यारा था। और जब उनकी धमकियों ने मुझ पर असर नहीं किया तो वे मजबूरन जहाज को वापिस ले आए। वापसी में इन्होंने मुझे यह भी धमकी दी कि अगर मैंने ऐराज को नहीं छोड़ा तो वे तुम्हें और मेरे डैडी को कत्ल कर देंगे।"

तो मैंने इनसे कहा, "मैं जान गई हूं कि कमलकान्त को किस तरह बीमार और कमजोर बना कर उसे मुर्दों से बदतर बनाने की कोशिश की जाएगी। जब हम सबके मुकद्दर में मौत ही लिखी है तो मैं वापिस टापू पर पहुंच कर कमल और डैडी के साथ ही मरूंगी और ऐराज को भी जिंदा नहीं छोड़ूंगी।"

तब इन्होंने वायदा किया कि ये तुम्हें और डैडी को हाथ नहीं

लगाएंगे। और ये सिर्फ इस शर्त पर मेरी हर बात मानेंगे कि ऐराज को जिंदा लौटा दिया जाए। उन्होंने अपना वायदा पूरा किया है। अब तुम अपना फैसला सुनाओ, क्या ऐराज को लौटा दिया जाए।"

कमल ने सोच पूर्ण लहजे में कहा, "तुम भी अपना वायदा पूरा करो। हम ऐराज को उनके हवाले कर देंगे। लेकिन इससे पहले हमें खुद अपने बारे में अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि अब हम क्या करें और कहां जाएंगे।"

"हम इसी जहाज से समुद्र में जाएंगे—उसके बाद ही कहीं जाने का फैसला करेंगे। इस अहसानफरामोश के साथ अपनी मंजिल तय करना मुनासिब नहीं होगा।" उसने ऐराज को एक और ठोकर मारी, "चलो, उठो। हमारे साथ बाहर चलो।"

ऐराज कराहते हुए और कांपते हुए उठने लगा।

कमल ने देखा—उसकी गर्दन से जरा नीचे लगभग आध पाव गोश्त उधड़ा हुआ था। वहां से निकलने वाला खून उसके बदन और फ़र्श पर फैला हुआ था। चेहरे पर भी जगह-जगह खराशें पड़ी हुई थीं। वहां से भी लहू रिसने के बाद जम गया था।

ऐराज फर्श पर से उठकर उनके आगे-आगे डगमगाता हुआ चलने लगा।

डेक पर पहुंच कर कमल ने उसे एक जगह बैठने के लिए कहा और फिर वो और सोनिया उससे थोड़ी दूर हटकर बनजेमन के पास आ कर मंत्रणा करने लगे।

"हमारा समुद्री सफर न जाने कितना लंबा होगा। इस काम के लिए हमें एक अच्छे 'अस्केपर' की जरूरत है। इसके अलावा दूसरे कामों के लिए भी साथियों की जरूरत है। मैं इस टापू में पिछले पांच साल से रहता आया हूं। यहां मेरे बहुत से विश्वसनीय दोस्त हैं। मैं जाकर उन्हें लेकर आता हूं।"

"पर डैडी क्या वो लोग हमारा साथ देने को तैयार हो जाएंगे?"

"क्यों नहीं। इस टापू पर जो लोग रह गए हैं—वो यकीनन यहां से जान बचा कर निकल जाना चाहते होंगे। मुझे उम्मीद है कि मैं अपने साथियों को अपने साथ चलने को राजी कर लूंगा।"

बनजेमन उनसे विदा लेकर चला गया, जाते-जाते वो यह भी कह गया कि उसे लौटने में देर हो सकती है—इसलिए फिक्र न की जाए।

उसके जाने के बाद—सोनिया डेक की रैलिंग के पास एक कुर्सी ले आई। इस कुर्सी पर ऐराज को बैठा दिया गया ताकि 'बर्थ' पर खड़े उसके साथी उसे जीवित व सकुशल देख कर संतुष्ट हो जाएं।

फिर सोनिया फर्स्ट-एड बाक्स ला कर उसकी मरहम पट्टी करने लगी। किनारे 'बर्थ' पर खड़े उसके तमाम साथी यह सब देख रहे थे।

मरहम पट्टी के बाद ऐराज बोला, "मुझे यहां क्यों रोका गया है? अब मुझे भी अपने साथियों के पास जाने दो।"

सोनिया बोली, "चले जाना। ऐसी भी क्या जल्दी है। अब हमारे साथी आने वाले हैं। उनके आने के बाद तुम्हें 'डिस्चार्ज' कर दिया जाएगा।"

ऐराज ने कमल की तरफ देखते हुए पूछा, "क्या तुम हमें छोड़ कर यह जहाज अकेले ले जाओगे?"

"अकेले क्यों? सुना नहीं—सोनिया ने बताया है ना कि हमारे साथी आ रहे हैं।"

"फिर भी मिस्टर कमलकान्त! मेरा यह अनुरोध है कि तुम इतना बड़ा जहाज न ले जाओ। मैं और मेरे साथी उस छोटी सी लांच में नहीं जा सकेंगे। सुपर मास्टर हमें बीच समुद्र में ही कहीं घेर लेगा।"

"तुमने मेरे लिए वह लांच छोड़ते वक्त नहीं सोचा था कि सुपर मास्टर मुझे भी घेर सकता है।" कमल ने आंखें दिखाई।

"मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई थी। मुझे माफ कर दो।"

"हमने माफ कर दिया है। इसीलिए तुम्हें जिंदा छोड़ कर जा रहे हैं।"

"लेकिन...लेकिन यह तो सोचो...तुमने हम सब को निहत्था कर दिया है।"

"तुमने भी मुझे यहां निहत्था छोड़ दिया था।"

"मैं अपनी पिछली तमाम गलतियों की माफी मांग रहा हूं। मैं अहसान फरामोश हूं—लेकिन तुम तो फ्राखदिल हो। खुदा के लिए हमारे हथियार हमें वापिस कर दो।"

"ठीक है। जब तुम नीचे 'बर्थ' पर पहुंच जाओगे तो तुम्हारी जरूरत के हिसाब से तुम्हें हथियार मिल जाएंगे।"

सोनिया हैरान हुई। वो तेजी से बोली थी, "कमल, तुम ऐसा वायदा न करो, जिसमें हमें नुकसान पहुंच सकता हो। हथियार मिलते ही वे हम पर हमला कर देंगे। हमें किनारे से दूर जाने का भी मौका नहीं देंगे।"

कमल मुस्करा दिया, बोला, "तुम फिक्र न करो। ये हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।"

बनजेमन की वापसी करीब दो घंटे बाद हुई। किनारे पर 'बर्थ' के निकट बहुत सी गाड़ियां आ कर रुकीं। और उनमें से निकल

कर कितने ही मर्द, बच्चे और औरतें—बनजेमन के पीछे-पीछे जहाज की सीढ़ियां चढ़ने लगीं। वे सभी अपने बिस्तर व जरूरी सामान के साथ लदे-फदे आए थे।

किनारे पर से ऐराज के एक साथी ने चीख कर पूछा, "सोनिया, यह सब क्या हो रहा है? क्या तुम हमारे बॉस को आजाद नहीं करोगी।"

सोनिया ने उसे हाथ के इशारे से अपने पास बुलाया।

"तुम यहां आ कर अपने इस चूहे को ले जाओ।"

वो भी सीढ़ियों की तरफ लपका। बूढ़ा बनजेमन बड़ी फुर्ती दिखा रहा था। उसने शायद पहले से अपने साथ आने वालों को समझा दिया था कि उन्हें जहाज पर क्या-क्या ड्यूटी देनी है। इसलिए जो लोग मैकेनिक थे वो अस्केपर के साथ इंजन रूम में चले गए थे। बाकी लोग स्टेनगन संभाले—कमल व सोनिया के दोनों तरफ—रैलिंग के करीब आ कर खड़े हो गए थे। उन सभी की गनों का रुख बर्थ पर खड़े हुए ऐराज के 'पालतुओं' की तरफ था।

ऐराज का साथी डेक पर आ गया था।

"उठाओ इस गंदगी के ढेर को और ले जाओ।" सोनिया ऐराज की तरफ इशारा करते फुफकारी।

वो ऐराज को सहारा देकर जीने की तरफ ले जाने लगा।

कमल ने ऐराज को तसल्ली दी, "तुम नीचे 'बर्थ' पर जाओ। मेरे वायदे के मुताबिक हथियार मिल जाएंगे। मगर याद रखो 'बर्थ' पर पहुंचने के बाद सामने ही खड़े रहना। अगर जरा भी इधर-उधर जाने की कोशिश करोगे तो अपने साथ अपने साथियों को भी ले मरोगे।"

ऐराज कुछ नहीं बोला और आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ियां उतरता हुआ 'बर्थ' पर पहुंच गया। जब जहाज की सीढ़ी हटा ली गई तो कमल ने ऐराज से कहा—"अपने साथियों से कह दो कि वो जहाज का लंगर उठा दें।"

"लेकिन वो हथियार...।"

"मैं अपना वायदा पूरा करूंगा। पहले मेरे हुक्म की तामील करो।"

'बर्थ' से लंगर की फौलादी जंजीरे खोल दी गईं। जहाज का इंजन स्टार्ट हो चुका था। जहाज बर्थ से जैसे ही अलग होने लगा, कमल ने ऊंची आवाज में ऐराज को संबोधित किया—"ऐराज, मैं अपना वायदा पूरा कर रहा हूं। तुम अपने साथियों के साथ टापू में जाओ। वहां चारों तरफ बेशुमार लाशें बिखरी पड़ी हैं। उन लाशों के पास

स्टेनगनों और कारतूसों के भण्डार मिल जाएंगे।"

ऐराज गुस्से से तिलमिलाता मुट्ठियां भींचने लगा।

कमल के होंठों पर मुस्कान नाच गई। जहाज की रफ्तार धीरे-धीरे तेज होती जा रही थी और वह किनारे से दूर होता जा रहा था।

जब लांच से जहाज की दूरी बीस एक गज की हो गई तो कमल ने थैले से ग्रेनेड निकाल कर हाथ में ले लिया। उसने अपने साथियों से भी कहा कि वो भी लांच पर हथगोले फेंके। आरम्भ कमल ने किया और उसके बाद लांच पर हथगोलों की बरसात हो गई।

हथगोलों की मार से धमाके हुए और लांच से शोले उठने लगे।

ऐराज और उसके साथी किनारे से दूर भाग गए थे। अब उनके लिए इस टापू से फरार होने का कोई जरिया नहीं रहा था। वो वहीं पैदा हुए थे और वहीं सुपर मास्टर के हाथों मरने वाले थे।

कमल ने रुख पलटा और सोनिया की तरफ देखा।

सोनिया के होंठों पर भी मुस्कान नाच रही थी।

□□

जहाज शीघ्र ही समुद्र में काफी अंदर पहुंच गया।

जहाज में हंगामा बरपा था। आजादी व नवजीवन का जोश बच्चों, औरतों व मर्दों सब में देखा जा सकता था। बच्चे इधर-उधर खेल रहे थे, औरतें जहाज की झाड़ू-सफाई में लग गई थीं और मर्दों ने अपने-अपने काम संभाल लिए थे।

बूढ़ा बनजेमन, कमल और सोनिया को एक स्टोर रूम में लेकर आया।

स्टोररूम का एक दरवाजा समुद्र की तरफ खुलता था। दरवाजे के निकट एक मोटरबोट रखी हुई थी। कमल और सोनिया को जिस लांच में कैदी बना कर 'कोब्राई टापू' में लाया गया था—उसमें भी ऐसी ही एक मोटरबोट मौजूद थी और उस लांच में आग लग जाने के बाद वो दोनों उस मोटरबोट में ही टापू तक सकुशल पहुंच सके थे।

मोटरबोट देख सोनिया की आंखों में चमक भर आई, वह बोली, "बिल्कुल वैसा ही इंतजाम है। हम खतरे के वक्त यहां से फरार हो सकते हैं।"

"खतरे का ऐसा कोई वक्त शायद ही आए।" बनजेमन इत्मीनान से बोला, "मैंने सोचा है कि हम इन बच्चों व औरतों को थाईलैण्ड के सागर तट तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे।"

कमल चौंका, उसने पूछा, "यानी हम बैंकाक की तरफ जा रहे हैं?"

"हां।" बनजेमन बोला, "ऐराज हम दोनों को बैंकाक पहुंचाना चाहता था। जब वह सुपर मास्टर का कैदी बन जाएगा तो वह तुम्हारे बारे में उसके सामने यही जवाब देगा कि तुम्हें छोटी सी लांच में थाईलैंड पहुंचाया जा रहा था और वो खुद इस जहाज से हांगकांग जाना चाहता था। चूंकि हांगकांग की बंदरगाह में लंगरअंदाज होने को काफी छूट व सुविधाएं हैं, इसलिए सुपर मास्टर पहले उसी तरफ दौड़ेगा। मैं नहीं समझता कि वो तुम्हें निकल गया देख सकून से बैठा रह सकेगा।"

कमल ने बहस नहीं की, बोला, "ठीक है। तुम जहां ठीक समझते हो जहाज को ले चलो। मैं समुद्री रास्तों से वाकिफ नहीं हूं।"

अब उन्होंने डेक पर आ कर केबिनों का जायजा लिया।

केबिन नंबर छः ऐराज के लिए सुरक्षित था। क्योंकि उसका सामान वहां अब भी रखा हुआ था। ट्रेज पर फलों की ट्रे और शराब की बोतलें रखी हुई थी। केबिन साइज में बहुत बड़ा भी था व आरामदायक भी।

कमल गद्देदार कोच पर लेटकर गहरी-गहरी सांसें लेने लगा, फिर बोला, "मैं बहुत थक गया हूं आराम करूंगा। मिस्टर बनजेमन! तुम भी एक केबिन अपने लिए पसंद कर लो। जहाज तुम्हारे कंट्रोल में है। बाकी लोगों की सुख-सुविधा का इंतजाम भी तुम्हें देखना होगा।"

"ठीक है।" बनजेमन ने कहा और केबिन से निकल गया।

बनजेमन के चले जाने के बाद सोनिया दरवाजे को भीतर से बंद करने के बाद कमल के पास ही कोच पर आ बैठी। कमल लेटा हुआ था। वो कमल पर झुक कर उसके बालों में उंगलियां फेरने लगी।

उसके होंठों से मिठास की फुहार निकली, "तुम बहुत थक गए हो। चलो, मैं सुला देती हूं।"

सांवली-सलोनी सोनिया की जवां महक कमल के मन-मस्तिष्क को महका गई।

जहाज बहुत हौले-हौले डोल रहा था और जिस कोच पर वो लेटे हुए थे वह भी मंद-मंद हिलौरे ले रहा था। ऐसी ही हिलौरे लेती ख्वाहिशें कमल के जहन में उभरी।

महकती ख्वाहिशों के इन लम्हों में जिंदगी कितनी खूबसूरत नजर आ रही थी। ना कोई हंगामा, न कोई शोर, न खून-खराबा। एक सकून था। ऐसा सकून जिसमें कमल को अब सिर्फ सोनिया की महक का अहसास ही महकाए दे रहा था। उसकी सोनिया उसके पास थी। समर्पित...पूर्णतया...सिर से पांव तक एक हाहाकारी यौवन।

सोनिया ही सोनिया थी। यहां से वहां तक थी। उसे बहुत दूर तक छूने व देखने के बाद यूं लगा कि इस 'बगिया' को वो पहले भी देख चुका है। सारी क्यारियां...सारे मोड़ जाने पहचाने थे। सोनिया उसके बाहुपाश में थी और जज्बात भड़का रही थी।

धधकते लम्हें अपना रंग दिखाने लगे। सोनिया कमल को बाहुपाश में ले बेचैन सी मचलने लगी थी। उसकी यह आतुरता क्षण प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी। बहक कमल भी चला था। सोनिया इस नशीले खेल के शबाब को छू रही थी।

जज्बात कमल को भी बहका गए थे। उसका खून तपने लगा था। सोनिया ने कब व कैसे अपने को लिबास की बंदिशों से मुक्त कर लिया था यह कमल नहीं जान सका था। उसके बदन पर कपड़े का रेशा तक नहीं था। सांवला-सुडौल-हरारत भरा मादक जिस्म। कठोर सुडौल वक्ष...पुष्ट जंघाएं...पतली सुडौल कमर...।

कमल के हवासों पर सरूर छाने लगा।

वो बेअख्तयार ही हरकत में आया था।

सोनिया ने अपने वक्षों पर कमल के हाथों की कटोरियों की हरारत भरी चिपचिपाहट महसूस की—उसके मुंह से सिसकारी निकली। पलकें मुंद गई। वजूद ढीला पड़ गया। वक्षों की गोलाइयों के नीचे हल्के-हल्के पसीने की झिलमिलाती बूंदें चमचमा उठीं।

कमल आपा खोता जा रहा था।

सोनिया के रोम रोम से यौवन की उन्मादी महक एक उष्मा को जन्म दे चली। केबिन की हर शै ही जैसे मादकता में नहा गई थी। मादकता के इसी ज्वार भाटा में उभरते-डूबते कमल ने खुद को संभाला और सोनिया पर सिमट आया।

उसके प्यासे होंठ अब सोनिया के कांपते बेचैन होंठों पर थे। कमल अब इन रसीली व नाजुक पंखुड़ियों से हौले-हौले रस निचोड़ने लगा।

सोनिया गहरी सांसें लेने लगी। अपनी सीप सी पलकें मूंदे-मूंदे ही उसने कमल के हाथ थामे और उन्हें धीरे-धीरे खुद ही अपने यौन-कपोलों पर ले आई।

सोनिया पूर्ण समपर्ण की अवस्था में थी। उसके सुडौल वक्षों के निप्पल अब रंग बदल चले थे। यह उसके यौन उन्माद की पराकाष्ठा को छूने का प्रमाण था। कमल की रगों में भी तो खून लावा बन चला था। कमल की बांहें कसी...सोनिया के होंठों पर उसके अधरों की गिरफ्त तीव्र हुई और सोनिया सीत्कार उठी।

"आह...उई।" उसका बदन बल खाने व मचलने लगा था।

कमल के बदन पर चींटियां सी रेंगने लगी थीं। हाल-बेहाल हो चला तो उसने चेहरा उठाया...और अब उसकी निगाहें, सोनिया के पूर्णतय तन चुके उभारों पर पड़ीं—जो छत की तरफ पहाड़ की चोटियों की मानिन्द तने थे। अब उसके होंठ इन उन्नत गोदाजों पर पिल पड़े थे। हरारत भरा नमकीन अहसास उन्मादी था। कमल के होंठ ही नहीं उसके हाथ भी अब आवारगी पर उतर आए थे। दाहिना हाथ सोनिया के गोदाज को सहलाता हुआ वादियों में उतर गया तो सोनिया के होंठों से मादक सिसकारियां सी फूटने लगीं।

वह अभी पलकें मूंदे पड़ी थी।

कमल से अब रुका नहीं जा रहा था। इसी ले-दे में उसने भी कपड़े उतार डाले थे। और अब जब वो सोनिया में समाने को उतावला हुआ तो सोनिया के मचलाव में तेजी आ गई। आह...उई...आह...की संगीत लहरियों के मध्य उसने 'मेहमान' को बढ़त का रास्ता दिया। इन मादक क्षणों में सोनिया कुछ ज्यादा ही बेहया हो जाती थी।

बेलिबास शब्द उसके होंठों से निकलने लगे। गर्म सासों के बीच उसने जैसे गुहार की—"ऐसे ही...बस ऐसे ही...चलने दो। मेरी जान...यह पिस्टन ऐसे ही चलने दो...आह!" सोनिया अब भरपूर अंदाज में सहयोग देने लगी थी।

उसके होंठों से गर्म सांसों के भभके खारिज होने लगे। इस खेल में कमल के अपने अंदाज थे। वो कोमलता अपनाए रहा। और सोनिया पर उन्मादी लहर बन उठता-गिरता रहा।

"आज तो जान ही ले लोगे।" सोनिया मचली, "कहां से पाई है तुमने चट्टानों में छेद कर लेने वाली यह शक्ति...यह कला... उफ...आह।"

और उसका उन्माद ही था। जिसने कमल को सख्तियां अपनाने को विवश कर दिया। सोनिया अब पिस रही थी। और भी पिसने की गुहार कर रही थी। वो हिलौरें ले रही थी...और अब बेताब सी हो कमल के बदन पर यहां-वहां दांतों से कचौके भी लगा रही थी।

कमल ने तीव्रता ली। यह तीव्रता 'कुछ' को अभी और रोकने के प्रयास में एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया ही थी। उसकी कनपटियां फटने लगी थी। सिसकारियां लेती सोनिया ने अब खुद को कमल की सख्तियों को समर्पित कर दिया था। और कमल अब अपने विशिष्ट अंदाज में उसके कंधों पर हाथ रखे आनंद के हिंडोलों पर ले उड़ा था।

"बस...बस...बस।" सोनिया उन्मादी स्वर में बोली। पर बस-बस करते वो खुद भी एक बार फिर तूफान बन गई थी।

"बस-बस" की गुहार करती सोनिया अब अपने तौर पर "और भी...और भी" पाने को बेचैन थी। इसी तूफान की लपेट में उसने पोजींशन बदली। और अब वो कमल पर बिछी हुई थी। उसने मोर्चा संभाल लिया था।

सोनिया का यह उन्माद कमल को उद्वेलित कर गया।

तूफान का वेग टूटा तो सोनिया ने खुद को जुदा कर कमल की बगल में गिरा देना चाहा—लेकिन कमल ने उसकी कमर सख्ती से भींच ली थी। आखिरी क्षणों में कमल फिर चक्रवात बन उठा। सोनिया की आह-ऊह तीव्र हुई पर कमल को अब इसकी परवाह कहां थी। कितनी ही देर वो उन्माद की इसी स्थिति में रहा। और जब उसने निढालता के आवेश में सोनिया को बुरी तरह भींचा और निश्चल साकत पड़ गया तो सोनिया गहरी-गहरी सांसें ले रही थी।

सोनिया निढाल सी उसी पर बिछी रही।

कितने ही निढाल क्षण यूं ही एक दूसरे की तपती सांसों को अपने चेहरों पर सहते बीते। और फिर सोनिया ने कमल के पहलू में जगह बनाई। उसका अधिकांश बदन अब भी कमल पर साया किए हुए था और वो मुस्करा रही थी।

दोनों तृप्त थे। दोनों प्रसन्न थे।

सोनिया ने अपना चेहरा कमल के चौड़े सीने पर टिकाया व बोली, "तुम सच ही में बेमिसाल हो कमल...माई लव।" उसके होंठ कमल के सीने पर मचलने लगे।

तृप्तता ने कमल को भी खिला दिया था। उसने सोनिया को अपने ऊपर खींच लिया व फिर भावावेश में ही उसकी पीठ पर हाथ फेरते बोला—"सोनिया! तुम्हारी यह चाहत...यह अपनत्व...और यह गर्मजोशी इस बात का सबूत है कि तुम मेरी पुरानी प्रेमिका हो। मुझे बताओ...मुझे बताओ कि क्या हम पहले भी ऐसे मदमाते लम्हों से गुजर चुके हैं? क्या मैं तुम्हें...और तुम मुझे हासिल करती रही हो?"

सोनिया ने इकरार में सिर हिलाते हुए कहा, "हां कमल! तुमने पहले भी मुझे ऐसी ही खुशियों और तृप्तियों से नवाजा है। तुम मेरी जिंदगी के पहले और आखिरी मर्द हो। क्या मुझे अब फिर इस तरह पा कर तुम्हें पिछली कोई बात याद आ रही है?"

कमल को उसे पाकर तो कुछ याद नहीं आया—मगर अचानक ही वह जलती हुई मोमबत्ती याद आ गई। वह फौरन ही उठ कर बैठ गया।

सोनिया ने चौंक कर पूछा, "क्या हुआ? क्या अब सोने का इरादा नहीं है।"

कमल उलझ सा गया था। वो अपने माथे को सहलाते हुए बोला—"मुझे कुछ याद आ गया है।"

सोनिया मारे खुशी के उछल कर बैठ गई, "क्या...क्या तुम्हें पिछली कोई बात याद आ रही है?"

कमल की मुंडी इंकार में हिली, वह बोला, "नहीं। मुझे वह मोमबत्ती याद आ रही है। ऐराज के गुर्गे मुझे जिस कमरे में बेहोशी की हालत में छोड़ गए थे—वहां मोमबत्तियां रोशन थीं। होश में आने के बाद बरबस ही मेरी निगाहें एक मोमबत्ती की लौ पर जम गईं। उस वक्त मुझे यूं लगा जैसे इस नन्ही सी सुलगती हुई 'लौ' से मेरा बहुत पुराना रिश्ता है।"

सोनिया ने मारे उत्तेजना के उसे झंझोड़ते हुए कहा, "बेशक—मोमबत्ती की 'लौ' से तुम्हारा पुराना और गहरा रिश्ता होना चाहिए। क्योंकि तुम टेलीपैथी जानते थे और टेलीपैथी सीखने वाले सबसे पहले मोमबत्ती की 'लौ' को ही अपलक निहारते हैं ताकि उनके दिमाग की तमाम सोचें एक बिन्दू या एक 'लौ' पर केन्द्रित हो जाएं। तुमने भी यकीनन ऐसा ही किया होगा।"

कमल सोचने लगा कि वाकई उसने यही किया होगा। इसीलिए उसकी आंखें और उसका दिमाग दोनों ही मोमबत्ती की 'लौ' से चिपक कर रह गए थे। सिर के पिछले हिस्से में लगने वाली भयंकर चोट से वहां गूमड़ निकल आया था। कमल ने सिर के उसी हिस्से को सहलाते हुए कहा—

"ऐराज के एक साथी ने यहां बड़ी जबरदस्त चोट लगाई थी। होश में आने के बाद भी पीड़ा की तीव्रता से मेरा बुरा हाल था। लेकिन जब मैंने बत्ती की 'लौ' को देखना शुरू किया तो मुझ पर इसकी आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया हुई हैरतअंगेज तौर पर ही मेरी पीड़ा आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो गई।"

सोनिया बदस्तूर सी बोली, "इस वाकये से यही साबित होता है कि तुम्हारी तमाम विशेषताएं अभी जिंदा हैं—लेकिन अचेतना के गहन अंधेरों में छिपी हुई हैं। इन अंधेरों को मोमबत्ती की वही 'लौ' रोशन कर सकती है, तुम्हारी याददाश्त लौट सकती है...तुम्हारा अतीत तुम्हारे जहन में उजागर हो सकता है।"

"इस हकीकत को मैं भी समझ रहा हूं।" कमल संजीदगी से बोला, "मैं मोमबत्ती की इस 'लौ' से अपनी खासियतों तक और इन खासियतों से अपने अतीत तक पहुंच सकता हूं। मैं...मैं वहां

'लौ' को निहारते हुए अपने अतीत तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। लेकिन मोमबत्ती अचानक ही बुझ गई। सारा मोम पिघल चुका था। मैं फिर अंधेरे में भटकने लगा। वहां मुझे नई मोमबत्ती नहीं मिली। तब मैंने सोचा था कि वहां से निकलने के बाद—मुझे जहां भी मोमबत्ती उपलब्ध होगी मैं 'लौ' द्वारा मानसिक एकाग्रता के इस अमल को जरूर दोहराऊंगा। पर मौजूदा हंगामों में ऐसा फंसा कि यह ख्याल ही जहन से निकल गया।"

"जहाज पर मोमबत्तियां होंगी।" सोनिया बोली, "जहाज पर आने वाले परिवारों के पास भी मोमबत्तियां होंगी। मैं मालूम करती हूं।"

सोनिया उठी। उसने लपक कर अपने कपड़े उठाए व पहनने लगी। कमल ने अपने ऊपर चादर खींच ली थी। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

सोनिया ने दरवाजा खोला। एक अधेड़ उम्र की औरत एक बड़ी सी ट्रे में उनके लिए खाना ले कर आई थी। सोनिया ने ट्रे उससे ले ली और उसे कहा, "सुनो! हमें ज्यादा से ज्यादा मोमबत्तियां दरकार हैं, हर एक से पूछो जितनी मोमबत्तियां मिलें सब इकट्ठी कर लाओ।"

वह औरत पलट गई।

वो दोनों ही पिछली रात से भूखे थे। खाने की महक ने उनकी भूख बढ़ा दी। वे उसी वक्त खाने बैठ गए। खाना खाने से पहले कमल ने कपड़े पहन लिए थे। खाने से पहले सोनिया ने शराब के दो पैग बना दिये थे। एक-एक डबल पैग के बाद खाने का लुत्फ ही और आया था। यूं भी खाना जिसने पकाया था—खूब पकाया था।

शराब के साथ लजीज खाना। सरूर सा छाने लगा था।

कमल दोबारा कोच पर जा कर लेट गया। सोनिया बर्तन उठा बाथरूम में चली गई थी। वह कब लौटी कमल नहीं जान सका। क्योंकि वह गहरी नींद सो चुका था।

❑❑

जिंदगी के लिए इतनी लंबी जंग लड़ने के बाद सकून से नींद आई थी।

कमल एक ही नींद में बहुत से उल्टे सीधे ख्वाब देखता रहा।

कमल ने सोनिया को देखा। वह सोनिया की 'रानों' पर सिर रखे लेटा हुआ था और सोनिया स्टेनगन लिए अलर्ट-चौकन्नी बैठी हुई थी।

फिर कमल ने सुपर मास्टर को देखा। उसके सिर पर दो नोकीले सींग थे और दो लंबे-नुकीले भयावह दांत उसके होंठों से बाहर निकले हुए थे। आंखें सुर्ख बल्ब की तरह जल रही थीं और उसके पीछे एक लंबी सी मुड़ी हुई दुम थी जिस पर वो कमल को बैठा-झूला झुला रहा था।

वे सुपर मास्टर को चूंकि सुपर शैतान कहते थे—इसलिए वो शैतान के रूप में नजर आ रहा था। इसके अलावा भी बहुत सी सूरतें नजर आई थीं। ख्वाब की महफिल जमी हुई थी और वहां कोई भी आ सकता था। सो दो-चार रूपसियां भी नजर आईं। पर कमल उन्हें उनकी सूरत-शक्ल से पहचान नहीं सका। उसने सोचा—ये 'चांद चेहरा' शायद उसके अतीत के किसी मोड़ से गुजरी होंगी।

काजल—जिसे कमलकान्त दिल से चाहता था—और जिसे वह बड़ी संजीदगी से हमेशा के लिए अपना लेना चाहता था—याददाश्त खो बैठने के बाद—उसे वह यूं भुला बैठा था जैसे इस नाम की कोई युवती कभी उसकी जिंदगी में आई ही ना हो। जिसे उसने कभी देखा ही न हो। शायद उसे भी कमल ने अब अपने ख्वाब में देखा हो। मगर अफसोस—काजल ख्वाब में भी कमल को उसके अतीत की तरफ नहीं लौटा सकी थी। अगर यह काजल उसे अपने साथ गुजारे हुए क्षणों की दास्तान सुनाती भी तो कमल उसे सिर्फ एक कहानी समझ कर सुन लेता।

क्योंकि इस वक्त सिर्फ सांवली-सलोनी सोनिया ही उसके लिए उसकी मौजूदा जिंदगी की सच्चाई थी।

नींद से जागने के बाद—कमल जल्दी-जल्दी नहा-धोकर आया तो उसके लिए चाय तैयार थी। सोनिया जलपान के दौरान बोली—"जहाज पर किसी के पास एक मोमबत्ती भी नहीं है। वह बूढ़ी औरत तमाम लोगों से पूछ चुकी है।"

कमल को निराशा हुई, वो बोला, "हैरत है। क्या किसी ने यह नहीं सोचा कि किसी वक्त अंधेरे में मोमबत्ती की जरूरत पड़ सकती है।"

"अंधेरों का खौफ शायद होगा उन्हें भी। इसीलिए कुछ लोग अपने साथ लालटेन और कुछ लोग टार्च लेकर आए हैं।"

कंमल खाली कप मेज पर रखते बोला, "शायद मेरे रब को अभी यह मंजूर नहीं है कि मैं अपने अतीत तक या अपने 'टेलीपैथी' जैसे सामर्थ्य तक पहुंचूं। बहरहाल! मेरे लिए मेरे रब का इतना ही इशारा काफी है कि मैं किसी वक्त भी बत्ती की 'लौ' के जरिए अपनी खोई

हुई खासियतें हासिल कर सकता हूं। खैर, जो लिबास मैंने उतारा है, वह मैला हो चुका है। मेरे लिए कहीं से दूसरा लिबास हासिल करना होगा।"

यह कहते हुए कमल ने सोनिया पर तवज्जो दी। उसका लिबास बदला हुआ था। नहाने के बाद वह ब्लैक-चेकदार स्कर्ट और सुर्ख रंग के ब्लाउज में गुलाब के खिले हुए फूल की तरह नजर आ रही थी। सोनिया उसकी सवालिया नजरों को समझती हुई बोली—"यह बेचारी रमना का लिबास है। ऐराज वाकई उसे दिल से चाहता था। रमना की यादगार के तौर पर उसने उसका सूटकेस अपने पास रखा हुआ था। मैंने कोच के नीचे रखा हुआ ऐराज का सूटकेस भी खोल कर देखा है। कद काठ में वो तुम्हारे जैसा ही था। हो सकता है उसका लिबास तुम्हारे काम आ जाए।"

कमल की आंखों में चमक भर आई। वह कोच के नीचे से सूटकेस निकाल ऐराज के कपड़े टटोलने लगा। उसने एक लिबास पसंद किया और पहनने लगा। सोनिया अब एक लकड़ी के संदूक का ताला तोड़ रही थी। ताला खोलने के बाद जब उसने संदूक को खोला तो हैरत व खुशी से चीख ही तो उठी—"कमल डियर! यह देखो इसमें क्या है?"

कमल ने करीब पहुंच कर देखा। संदूक में अमरीकन डालर की गड्डियां भरी हुई थीं। ऐराज पूरे इंतजाम के साथ इस सफर पर रवाना हुआ था।

इस केबिन में मेज पर एक ब्रीफकेस भी रखा हुआ था, जिसकी तरफ भी इन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया था। कमल ने सोनिया को चाबियों का एक गुच्छा देते हुए कहा—"ये चाबियां ऐराज के सूटकेस से मिली हैं। शायद ब्रीफकेस की चाबी भी इसमें हो, जरा खोल कर तो देखो...।"

सोनिया चाबियां ट्राई करने लगी। एक चाबी काम आई और उसने ब्रीफकेस खोल लिया। ब्रीफकेस में बहुत से कागजात तरतीब से रखे हुए थे। दो छोटे डिब्बों में—दो माइक्रोफिल्में भी रखी मिलीं। डिब्बों पर उन देशों के नाम—जिनसे ये फिल्में ताल्लुक रखती थीं। पर इनमें किसी पर भी 'हिन्दुस्तान' का नाम नहीं था। एक स्पाई-सिगरेट लाइटर भी था—जिससे सिगरेट सुलगाते हुए सामने वाले शख्स की तस्वीर उतारी जा सकती थी।

यानी कि ब्रीफकेस में यह सब चीजें महत्वपूर्ण ही थीं। वो दोनों एक-एक कागज को उठा कर पढ़ने लगे। कागजात विभिन्न देशों से संबंधित थे।

"सोनिया!" कमल कुछ सोचते हुए बोला था, "तुम्हारा सुपर मास्टर ब्लैकमेलिंग का तमाम मवाद समेट कर नहीं ले जा सका था। यह सब कुछ शायद वो रिकार्ड-रूम की अलमारी में छोड़ गया था। ऐराज ये चीजें समेट कर लें आया है।"

कमल ने ब्रीफकेस को लॉक करने के बाद एक चाबी सोनिया को थमा दी और दूसरी अपने पास रख ली।

सोनिया बोली, "मैंने वह डायरी जिसमें तुम्हारी जिंदगी के हालात लिखें हैं—केबिन नंबर एक में रखी थी। मैं उसे भी लाकर इस ब्रीफकेस में रख देती हूं क्या तुम बाहर चलोगे?"

कमल उसके साथ केबिन से बाहर आ गया।

सोनिया वह डायरी लाने को केबिन नंबर एक में चली गई।

कमल रेलिंग के पास आकर खड़ा हो गया।

उसके चारों तरफ समुद्र ही समुद्र था। डेक पर चार सशस्त्र नौजवान पहरे पर तैनात थे। सोनिया कुछ देर बाद डायरी ले कर आ गई। वह कुछ उलझी-उलझी सी नजर आ रही थी। उसने आते ही कहा—"कमल! केबिन नम्बर एक में जो शख्स है—मैं उसे पहचानती हूं। मैंने उसे सुपर मास्टर की उस गुम्बदनुमा इमारत में एक गार्ड की हैसियत से देखा था। मुझे लगता है डैडी के दोस्तों में कुछ दुश्मन भी छुप कर यहां आ गए हैं। हमें तुरंत ही ऐसे लोगों को चैक करना चाहिए।"

कमल ने पलट कर केबिन नंबर एक की तरफ देखा। सोनिया जिस शख्स का जिक्र कर रही थी—वही शायद केबिन के खुले दरवाज़े में खड़ा था, कमल से नजरें मिलते ही वो मुस्करा कर, आगे बढ़ते हुए बोला—"मिस्टर कमलकान्त! मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताएं।"

"शुक्रिया! मुझे अभी तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। तुम आराम करो। बाई दि वे—क्या यह केबिन तुम्हें रहने के लिए दिया गया है?"

"जी नहीं। मेरे डैडी पीटर हेराल्ड को यह केबिन दिया गया है। वो इस जहाज के 'अस्केपर' हैं। वो इंजन रूम में हैं। इसलिए मैं यहां आराम कर रहा हूं।"

"ठीक है। तुम जा कर आराम करो।"

उसने केबिन में वापिस जा कर दरवाजा बंद कर लिया। कमल सोनिया से बोला—"अगर यह शख्स वाकई सुपर मास्टर के गार्डों में से है तो समझ लो हमारा सारा सकून और इत्मीनान खत्म होने वाला है। हम फिलहाल इसे कुछ कह नहीं सकते क्योंकि यह जहाज

के 'खवैया' का बेटा है।"

सोनिया परेशान होकर बड़बड़ाने लगी, "डैडी से यह गलती कैसे हो गई। इस सफर के लिए उन्हें आदमियों का चुनाव सोच-समझ कर करना चाहिए था। मैं अभी जा कर डैडी से पूछती हूं।" वो तैश में आगे बढ़ी, तो कमल ने उसका बाजू थाम लिया।

वह बोला था, "ठहरो सोनिया! जल्दबाजी व तैश में काम बिगड़ सकता है। जहाज पर जाने और कितने ऐसे शख्स हैं जो हमारे दुश्मन हो सकते हैं। वो तुम्हारे तेवर देख कर होशियार हो जाएंगे।"

"पर डैडी से इस बाबत बात तो करनी होगी।"

"हां। चलो।" कमल ने सहमति दर्शाई।

बनजेमन केबिन नंबर दस में था। कमल और सोनिया केबिनों के बीच एक राहदारी से गुजरते हुए दस नंबर के केबिन के दरवाजे पर पहुंचे। दो-चार दस्तक देने के बाद दरवाजा खुल गया। बनजेमन गहरी नींद से उठा था। उसने आंखें मलते हुए उन्हें देखा फिर मुस्करा कर बोला—"अंदर आ जाओ। सफर सकून से कट रहा है ना?"

"यह आप कैसे कह सकते हैं, डैडी?" सोनिया केबिन में आते बोली, "मुझे तो यह सकून और इत्मीनान महज एक खुदफरेबी नजर आता है।"

बनजेमन एक कुर्सी पर बैठ गया—"सोनी!" वह बोला, "तुम कैसी बातें कर रही हो। अब यह जहाज हमारा है और इस जहाज के मुसाफिर—सब हमारे जाने पहचाने हैं।"

कमल कोच पर बैठते हुए बोला, "क्या तुम अस्कीपर पीटर हैराल्ड के बेटे को जानते हो।"

"हां। अच्छी तरह जानता हूं। वो सुपर मास्टर का गार्ड रह चुका है। उसका नाम फ्रांसिस है।"

"डैडी—आपने फ्रांसिस पर कैसे भरोसा कर लिया। वह सुपर मास्टर का वफादार रह चुका है।"

बनजेमन हंस दिया, फिर बोला, "ऐसे तो मैं भी उसका वफादार रह चुका हूं। तुम भी 'मादाम' के ओहदे पर उसके लिए काम करती रही हो। इस जहाज पर जितने भी लोग हैं वो सब ही तो उसके वफादार मुलाजिम रह चुके हैं। लेकिन उस शैतान का असली चेहरा देखने के बाद हम सबने उससे बगावत की थी। इसी तरह अस्पीकर और उसका बेटा भी सुपर मास्टर के लिए दिल में नफरतें और इंतकाम का जज्बा लिए वक्त की इंतजार में रहे थे। यहां तुम जिससे पूछोगी वही उस शैतान को गालियां देगा।"

"मगर हम कैसे यकीन कर लें कि जुबान से गालियां देने वाले

दिल से उसके वफादार नहीं हैं।"

बूढ़े बनजेमन ने संजीदा होते कहा, "इस तरह तो हम किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकेंगे, बेटी! इतने लंबे सफर के लिए हम तीनों इस जहाज को कंट्रोल नहीं कर सकते थे। हमें खाने-पीने व दूसरे कामों के लिए भी मददगारों की जरूरत थी। हम यह मददगार उसी टापू ही से तो इकट्ठे कर सकते थे। और तुम जानती हो अपने टापू के सभी लोग सुपर मास्टर के वफादार रह चुके हैं। हमें उसके वफादार रह चुके लोगों की ही मदद मिल सकती थी।"

बनजेमन सही कह रहा था। मगर किसी छिपी काली भेड़ की मौजूदगी खतरे पैदा कर सकती थी। परेशानियां खड़ी कर सकती थी।

कमल सोचपूर्ण लहजे में बोला, "मिस्टर बनजेमन आप सही कह रहे हैं। लेकिन हमें आसपास खतरा महसूस हो रहा है।"

"खतरा तो दोस्तों से भी होता है कि पता नहीं वो कब दुश्मन बन जाएं। बेटे! हम जिन हालात से गुजर रहे हैं—उनका तकाजा यही है कि हम अपने साये से भी होशियार रहें। आस्तीन के सांपों को खोजना और उनके जहर के दांत तोड़ने होंगे।"

अब तो यही हो सकता था। खामोशी के अलावा कोई चारा नहीं था। सोनिया अपनी जगह से उठते हुए बोली—"डैडी! हम नीचे जा रहे हैं। आप नहा धोकर फ्रेश होकर वहां आ जाएं।"

सोनिया कमल के साथ केबिन से बाहर आ गई।

वो इसी समस्या पर बातें करते जहाज के निचले हिस्से में पहुंचे।

रात का अंधेरा फैल चुका था। जहाज पर रोशनी थी। लेकिन चारों तरफ जहाज का नीला पानी रात के अंधेरे में स्याह हो रहा था। दुनिया कितनी बड़ी थी मगर वो सिमट कर जहाज की छोटी सी दुनिया में आ गए थे। रोशनियां जहाज तक सीमित थी। और चारों तरफ फैले अंधेरे अंदेशों को ही जन्म दे रहे थे।

जब वे निचले हिस्से में पहुंचे तो जहाज के एक सिरे पर मर्दों और औरतों की भीड़ नजर आई। वो सीधे उधर ही पहुंचे।

सोनिया ने तीखे लहजे में पूछा, "क्या बात है? यह भीड़ क्यों लगा रखी है?"

हजूम काई की तरह फट गया। उन्होंने देखा कि एक शख्स डेक पर औंधे मुंह पड़ा है और एक खंजर उसकी पीठ में दस्ते तक पेवस्त है। उसके चारों तरफ खून फैला हुआ था।

कमल के चेहरे पर सख्ती उभरी। उसकी आंखों में कहर भर आया था। उसने चारों तरफ देखते हुए तीखे लहजे में पूछा—"इसे

किसने कत्ल किया है? हम सब इस जहाज पर एक घर...एक परिवार के रूप में सफर कर रहे हैं।" उसने एक तरफ खड़े चंद मर्दों की तरफ देखते हुए कहा, "हम सब आपस में भाई-भाई हैं। फिर किस जालिम भाई ने अपने इस भाई को मार डाला है?"

सबके सिर झुक गए।

एक बूढ़ा रोता हुआ—और अपने बुढ़ापे से कांपता हुआ कमल के करीब आकर और हतप्राण की तरफ देखता हुआ बोला—"यह मेरा जवान बेटा है। यहां तुम सबके एक भाई को ही नहीं—मेरे जवान बेटे को भी बेदर्दी से कत्ल किया गया है।"

वो फूट-फूट कर रोने लगा।

कमल ने उसे अपने बाजुओं में लेकर—अपने सीने से लगा कर तसल्ली दी, "बाबा! सब्र करो। हम इसके कातिल को दर्दनाक सजा देंगे।"

बिफरी सोनिया फिरकनी की तरह घूमते बोली, "इस कत्ल से यह साबित होता है कि जहाज पर हमारे दुश्मन भी मौजूद हैं। और यह एक या कई दुश्मन हमारे गिर्द इस भीड़ में भी हो सकते हैं। अगर ऐसा है तो वो यह समझ लें कि वो जहाज पर मेरे हाथों मरने आए हैं।"

कमल भी अपने रोष को नहीं दबा पा रहा था।

वो तफ्तीश करने लगे कि कत्ल कैसे हुआ था? सबसे पूछा गया—लेकिन कत्ल की इस वारदात का चश्मदीद गवाह कोई नहीं था। सिर्फ इतना मालूम हुआ कि जहाज के इस-सिरे पर मरने वाले की पहरा देने की ड्यूटी थी। इस वक्त जहाज का वह हिस्सा वीरान था। चूंकि लगभग सभी खाने के लिए डायनिंग हॉल में चले गए थे। सो—इस वीरानी व सन्नाटे में किसी ने मौका पा कर उसकी पीठ में खंजर घोंप दिया था।

उसके कत्ल की वजह भी किसी की समझ में नहीं आ रही थी। संयुक्त रूप से यह राय ही बन पा रही थी कि जाती दुश्मनी की बिना पर ही किसी ने ऐसा किया है।

कमल और सोनिया डायनिंग हॉल में आ खाने के लिए बैठ गए। खाने के दौरान बनजेमन वहां आ पहुंचा। उसने चिंता जाहिर करते कहा—"सोनी! तुम्हारा शक सही निकला। हमारे बीच यकीनन कुछ दुश्मन छिपे हुए हैं। लेकिन मैं फ्रांसिस को कातिल नहीं समझता—क्योंकि वो शाम ही से केबिन में मौजूद है। वो यहां से निकल कर डेक पर नहीं आया। उसका बाप पीटर मेरा बहुत अच्छा दोस्त है। वो दोनों बाप-बेटा मुझे धोखा नहीं देंगे।"

इस पर कमल सोचते हुए बोला, "मिस्टर बनजेमन! यह तो जाहिर है कि जहाज पर जो दुश्मन होंगे—वो हकीकतन हमारे दुश्मन होंगे। फिर उन्होंने एक बेगुनाह को कत्ल क्यों किया?"

"हो सकता है कि वो कोई साजिश कर रहे हों और मरने वाले को उसका इल्म हो गया हो। सो—इससे पहले कि वो किसी साजिश की खबर हम तक पहुंचाता—उसे हमेशा के लिए खामोश कर दिया गया।"

कमल ने सहमति में सिर हिलाया, "हां—फिलहाल यही सोचा जा सकता है। मगर अब हमें निश्चिंत नहीं रहना चाहिए। अपना सकून खत्म हुआ समझना चाहिए। अब हम तीनों बारी-बारी सोने और जागने का वक्त मुकर्रर कर लें तो बेहतर है।"

वो खाने के दौरान—मेज पर झुके हुए—धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। उन्हें अपनी चिंता ने घेर लिया था। वो अपनी सुरक्षा के मंसूबे बनाने लगे थे।

बनजेमन ने कहा, "मैं बूढ़ा हूं—सारी रात नहीं जाग सकूंगा। इसलिए आधी रात तक जाग कर जहाज के हर हिस्से में सोने और जागने वालों पर नजर रखूंगा। अपने बाद मैं कमलकान्त को उठा दूंगा।"

सोनिया बोल उठी, "नहीं, डैडी! कमल को आराम करना चाहिए। आधी रात के बाद सुबह तक मैं जागती रहूंगी।"

कमल मुस्करा दिया, फिर इत्मीनान से बोला, "नहीं सोनिया! मैं शाम तक बहुत गहरी नींद सोता रहा हूं। अब मुझे नींद नहीं आएगी। आधी रात के बाद की ड्यूटी मेरी।"

लेकिन सोनिया इस जिद पर रही कि वो कमल को जागने नहीं देगी। और अपनी ड्यूटी पर जाने से पहले वह कमल को सुला कर जाएगी।

इस बातचीत के दौरान कमल की नजरें दूर एक मेज की तरफ गईं। वहां बैठा एक नौजवान बराबर इन्हीं की तरफ देख रहा था। कमल से यह भी छिपा नहीं रहा कि उसकी गहरी दिलचस्पी सोनिया की तरफ है। वो गहरी नजरों से सोनिया की ही तरफ देख रहा था।

कमल ने दबी जुबान में ही सोनिया को इस बाबत बताया और कहा कि वो किसी बहाने एक नजर इस नौजवान को देख ले।

वो कुछ देर वहीं बैठे रहे।

अब सोनिया ने उस नौजवान को अच्छी तरह देख लिया।

"इस नौजवान को संदिग्ध समझा जा सकता है, कमल।" वो

टिप्पणी करते बोली, "वो शायद यही भांपने की कोशिश कर रहा है कि हम क्या मंत्रणा कर रहे हैं। मेरा ख्याल है हमें ड्यूटी का टाइम बदल लेना चाहिए। अब तुम और डैडी अपने केबिनों में जा कर आराम करो। मैं रात को जागूंगी। मेरा दिल कहता है यह नौजवान मुझे अकेला पाकर जरूर मेरे पीछे आएगा।"

यह कह कर सोनिया ने फौरन ही उस नौजवान की तरफ देखा तो उसने अपनी नजरें झुका लीं और सिगरेट सुलगाने लगा। वह सिगरेट के हल्के-हल्के कश लेने लगा—मानो धूम्रपान का आनन्द ले रहा हो। सिगरेट का एक लंबा कश लगाने के बाद उसने फिर इनकी तरफ देखा तो इस बार उसकी नजरें कमल से टकराईं।

वह एकदम उठ खड़ा हुआ और फिर तेजी से चलता हुआ डायनिंग हॉल के दूसरे दरवाजे से बाहर चला गया।

"दाल में काला दिखता है।" कमल इत्मीनान से बोला, "मैं तुम्हारी इस राय से सहमत हूं कि रात तुम्हें जागना चाहिए। तुम इस नौजवान को जरा ढील देती रहना। इस तरह इसके दूसरे साथी भी नजरों में आते रहेंगे।"

यह निर्णय लेने के बाद वो वहां से उठ गए।

□□

सोनिया कमल के साथ डेक पर आई।

यहां एक केबिन को 'शस्त्रागार' बनाया गया था। यहां हथियारों के भंडार से उसने अपने लिए एक ऐ.के. छप्पन को चुना। चमड़े की जिल्द वाली वह डायरी कमल के हवाले की—जिसमें कमल से संबंधित जानकारियां दर्ज थीं। फिर कमल को एक प्रगाढ़ विदाई चुंबन देकर उससे रुखसत होकर नीचे चली गई।

कमल, डायरी लेकर, थोड़ी देर तक डैक पर ही एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलता रहा। दिन ढले जो चार सशस्त्र जवान ड्यूटी पर थे—अब उनकी पाली बदल गई थी। वहां दूसरे लोग नजर आ रहे थे। कमल ने बारी-बारी उनसे मुलाकात की और देर तक उनसे बातें करता रहा।

कमल को अपनी दूसरों के जहन में झांक—दूसरे की सोचें चुरा लेने के अपने हुनर का ख्याल आया। सोनिया ने इस बारे में उसे जो कुछ बताया था वह बड़ा हैरतअंगेज और रोमांचक था? उसने सोचा कि अगर यह हकीकत है कि उसमें दूसरों की सोचें पढ़ पाने का सामर्थ्य था और यह चमत्कारिक शक्ति अब भी बहाल होती तो वह अपने केबिन में आराम से बैठ इन चारों की सोचें पढ़ जान सकता था कि जाहिरा हमदर्द और जांनिसार बन रहे इनके जहन

में क्या है।

"आह!" कमल को अपनी बेबसी का अहसास होने लगा, वो यह सोचे बिना नहीं रह सका, "मैं वही कमलकान्त हूं—जो इंसानी दिमागों के अंधकारमय तहखानों में पहुंच जाता था। उनके अंदर छिपी हुई मक्कार सोचों को चुटकी में दबा कर बाहर ले आता था। और अब यह हाल है कि अपने आसपास फैले हुए दुश्मनों को उनके जाहिरी चेहरों से समझने की कोशिश में नाकाम हो रहा हूं।"

कमल दिमाग पर बोझ लिए रैलिंग से लगा खड़ा रहा।

उसे नींद नहीं आ रही थी। वो अपने केबिन में कैद होकर बैठना या लेटना नहीं चाहता था। वो नीचे जाकर सोनिया के साथ भी वक्त पास नहीं कर सकता था। सोनिया तो उस नौजवान के लिए चारा बन कर गई थी। बेहतर यही था कि आज रात वो अपने शिकार से खुद ही खेलती रहे। और आज रात कमल को खुद क्या करना चाहिए—यही उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

फिर कमल बेअख्तयार व अनचाहे ही जैसे केबिन नंबर एक की तरफ बढ़ गया था। उसने फ्रांसिस से मिलने की सोची थी। उसने दरवाजे पर दस्तक दी तो कुछे क्षणों तक खामोशी रही। फिर अंदर से एक सुरीली आवाज सुनाई दी—

"कौन है?"

"कमलकान्त—दरवाजा खोलो।"

थोड़ी देर तक फिर खामोशी रही। दरवाजा फ्रांसिस ने खोला था। उसके चेहरे पर झेंपती सी मुस्कान नाच रही थी। उसने मुस्कराते हुए ही कहा—"आ जाइए। कोई बात नहीं—आप से क्या पर्दा. ..यह...यह मेरी मंगेतर है।"

कमल की निगाहें केबिन में मौजूद जवां ओं शोख युवती पर जा टिकी थी। वह कोच पर बैठी—अपनी बिखरी हुई जुल्फों को समेट कर लाल रंग के स्कार्फ में बांध रही थी। युवती ने एक नजर कमल पर डाली फिर शर्मीली सी मुस्कराहट के साथ नजरें झुका लीं।

कमल ने दबी जुबान में कहा, "आई एम सॉरी! रियली वैरी सॉरी। मुझे नहीं मालूम था कि मैं कबाब में हड्डी बनने के लिए आया हूं। तुम दरवाजा बंद कर लो।"

कमल पलटने को हुआ तो फ्रांसिस ने फौरन उसका बाजू थाम लिया—"नहीं, मिस्टर कमलकान्त! यह बेगानापन क्यों? अगर आप यूं ही लौट जाएंगे तो हमें दुख होगा। अगर आप मुझसे कोई काम लेना चाहते हैं तो मैं हाजिर हूं। आपके साथ चलने को तैयार हूं। और अगर आप तफरीहा वक्त गुजारने आए हैं तो प्लीज अंदर आ

जाएं। मुझे और ऐलन को खुशी होगी।"

ऐलन ने भी उठते हुए कहा, "मिस्टर कमलकान्त! मैं तकल्लुफ की आदी नहीं हूं। आपकी कंपनी में हमें खुशी ही होगी। प्लीज कम इन।"

कमल अंदर आकर एक कुर्सी पर बैठ गया।

सामने मेज पर शैम्पेन की बोतल और दो जाम रखे हुए थे। दोनों में थोड़ी-थोड़ी शराब हिलौरे लेती नजर आ रही थी।

ऐलन बोली, "फ्रांसिस! एक गिलास और लाओ। मैं अपने हाथ से मिस्टर कमलकान्त के लिए पैग बनाऊंगी।"

कमल ने इंकार करना चाहा, पर कर नहीं सका।

फ्रांसिस गिलास ले आया था। ऐलन ने शराब उड़ेली व फिर कमल से पूछ कर पानी मिला दिया। फिर खुद ही उठा कर जाम कमल को पेश किया।

कमल ने थैंक्यू कहते पैग थामा और एक चुस्की ली।

फ्रांसिस ने भी अपना पैग उठा लिया, शायद कुछ...कुछ भी कहने की गर्ज से वो बोला, "हम सब आपके आभारी हैं मिस्टर कमलकान्त—कि हमें जालिमों से मुक्ति मिली। वर्ना आपकी याददाश्त खत्म हो जाने के बाद और आपको सुपर मास्टर की तरफदारी और वफादारी करते देख हम तो मायूस ही हो गए थे।"

"क्या तुम जानते हो कि मेरी याददाश्त किस तरह गुम हुई है।" कमल ने कुछ सोचते हुए पूछा, "या गुम कर दी गई है?"

"हां—मैं अच्छी तरह जानता हूं, जिस वक्त आपके ब्रेनवाश के लिए आपके दिमाग को शॉक पहुंचाए जा रहे थे तो मैं एक गार्ड की हैसियत से वहां दरवाजे पर मौजूद था। उस वक्त मैं ड्यूटी पर था। लेकिन अब अफसोस होता है। सुपर मास्टर ने आपसे बड़ा भयावह प्रतिशोध लिया है। आपकी एक हैरतअंगेज शक्ति को आपके दिमाग से निकाल दिया। अपनी याददाश्त के साथ ही आप अपनी इस चमत्कारिक शक्ति से भी हाथ धो बैठे।"

कुछ क्षण खामोशी से वे शराब चुस्कते बीते।

ऐलन अपना और फ्रांसिस का खाली पैग फिर बनाने लगी थी।

कमल ने फ्रांसिस से पूछा, "फ्रांसिस! क्या तुम जानते हो कि अभी करीब चार घंटे पहले—इस जहाज में एक नौजवान को कत्ल कर दिया गया है।"

"क्या वाकई...किसने कत्ल किया है?"

वह जो हैरानी जाहिर कर रहा था—उसमें बनावट नहीं थी, ऐलन भी अविश्वास से बोली थी—"मिस्टर कमलकान्त—हम सब कितनी

ही लाशों से गुजर कर आए हैं। मुझे यकीन नहीं आता कि कोई पागल यहां भी ऐसा खेल खेलेगा।"

कमल ने उन्हें इस वारदात के बारे में विस्तार से बताया।

फ्रांसिस संजीदा होते बोला, "आपका ख्याल दुरुस्त है। यह वारदात इस बात का सबूत है कि हमारे बीच एक या शायद एक से ज्यादा दुश्मन छिपे हुए हैं। हमें यहां मौज-मस्ती करने की बजाए बाहर निकल कर ऐसी काली भेड़ों की शिनाख्त करनी चाहिए," वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, "ऐलन! तुम यहां आराम करो। आज मैं तमाम रात जाग कर किसी तरह कातिल तक पहुंचने की कोशिश करूंगा।"

कमल ने उसे रोका, "ठहरो फ्रांसिस! मैं तुम्हारे जज्बे की कद्र करता हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि आज की रात तुम अपने केबिन से बाहर न निकलो। तुम मेरी बात का बुरा न मानना। मुझे तुम पर भी शक है। अगर तुम मेरे मशवरे पर अमल करते इस केबिन तक ही रहोगे तो मैं तुम्हें दोस्त समझूंगा।"

फ्रांसिस कितनी ही देर उलझन में पड़ा कमल को देखता रहा। फ़िर जबरन मुस्कराते हुए बोला—"आप जिन हालात से गुजर रहे हैं—उनके मद्देनजर आपको यहां हर एक पर शुब्हा करना चाहिए। ठीक है—मैं आपका विश्वास खोना नहीं चाहता। आप इत्मीनान रखें मैं सुबह तक इसी केबिन में बंद रहूंगा।"

कमल उठ खड़ा हुआ। दूसरे पैग के लिए क्षमा चाहते उसने फ्रांसिस से हाथ मिलाया और केबिन से बाहर निकल आया। फ्रांसिस ने दरवाज़ा फिर अंदर से बंद कर लिया था।

कमल फिर रैलिंग के पास आ कर खड़ा हो गया था।

बड़ी बोरियत महसूस हो रही थी। वक्त नहीं बीत रहा था। बार-बार सोनिया के पास जाने को जी चाह रहा था—मगर उसके पास जाना मुनासिब नहीं था।

कमल उकता कर अपने केबिन में आ गया।

कुछ नहीं सूझा तो वह, वो डायरी निकाल कर पढ़ने लगा—जिसमें उसके ब्रेनवाश के बाद का उसी से संबंधित विवरण दर्ज था।

डायरी बड़ी दिलचस्प थी। अपनी ही जिंदगी के हालात पढ़ते वक्त कमल को बड़ा मजा आ रहा था। सारी रिपोर्ट्स पढ़ लेने के बाद—वह अपनी ही जात में गुम होकर बहुत सी बातें सोचने लगा।

आधी रात तक कमल कोच पर करवटें बदलता रहा। हर करवट पर उसे सोनिया याद आ रही थी। आखिर उसकी यह बेचैनी—उसे केबिन से बाहर ले आई।

केबिन का दरवाजा बंद करने के बाद उसने अपनी जेब से रिवॉल्वर निकाल कर चैक किया। फिर धीरे-धीरे चलता हुआ वह केबिन नंबर एक के दरवाजे पर पहुंचा और दरवाजे से कान लगा कर सुनने लगा।

अंदर से ऐलन की आवाज ऐसे आ रही थी—जैसे कोई मक्खी भिनभिना रही हो। अगर वह बातें कर रही थी तो इसका मतलब यही था कि फ्रांसिस भी अंदर मौजूद है और अगर वह नशे में बड़बड़ा रही थी तो शराब पीने वाले तन्हाई में भी अपने आप से बातें करते रहते हैं। लिहाजा—वह केबिन में अकेली भी हो सकती थी।

इन्हीं सोचों के साथ कमल ने हौले से दरवाजे पर दस्तक दी।

फ्रांसिस की मौजूदगी और गैरमौजूदगी की बाबत जानना जरूरी था। दूसरी बार दस्तक देने पर दरवाजा खुल गया। ऐलन उसके सामने मदहोशी की हालत में खड़ी थी। उसके सुनहरे बाल कंधों पर बिखरे हुए थे। ब्लाउज का एक बटन खुला हुआ था। जिससे उसके गुलाबी वक्ष झिलमिल-झिलमिल कर रहे थे। उसे अपना होश नहीं था—फिर वह अपना लिबास कैसे संभालती। गनीमत थी कि वो पूर्णतय ही निर्वस्त्र नहीं थी—वर्ना उसने तो उसी अवस्था में भी आ दरवाजा खोल देना था।

ऐलन लिबास में थी—पर बेलिबास भी थी। वह कमल को देखते ही दरवाजे का सहारा छोड़ कर कमल के बाजू का सहारा लेती हुई एकदम से करीब आ गई। उसकी शराबी सांसों से शराब की बू उड़ रही थी।

वह शिकायती लहजे में बोली, "वेट...फ्रांसिस इज ए बास्ट्रड! वो देखो—आधी बोतल ही में लुढ़क गया।" उसने दरवाजे को पूरी तरह खोल दिया।

फ्रांसिस कोच पर औंधा पड़ा हुआ खुर्राटे ले रहा था।

ऐलन फिर कमल की तरफ मुंह उठा कर बोली, "आई वान्ट कंपनी...मुझे साथी की जरूरत है और यह कमबख्त आधा मर चुका है। लेट हिम बी एस डैड फूल...तुम मुझे कंपनी दो—मैं सुलग रही हूं।"

कमल ने उसे बाहर खींच कर दरवाजा बंद कर दिया। फिर उसे सहारा देकर अपनें केबिन में ले आया। उसने अपने केबिन का दरवाजा जानबूझ कर खुला ही रखा ताकि अगर सोनिया इत्तफाक से इधर आ भी जाए तो उसे ऐलन के साथ देख कर कुछ गलत न सोचे।

ऐलन की नजरें मेज पर रखी शराब की बोतल पर पड़ी और

उसकी बांछें खिल गई।

"यू आर ग्रेट।" वह चहकी, "क्या तुम मुझे एक जाम दोगे।"

"क्यों नहीं।" कमल मुस्करा दिया, "यह बोतल तुम्हारे लिए है। शराब पीने के बाद तुम और ज्यादा हसीन नजर आती हो।"

अपनी प्रशंसा सुन वो कमल से लिपट गई और एक हाहाकारी चुम्बन लेते बोली, "आई लाइक यू, हैण्डसम। वो उल्लू का पट्ठा झूठ बोलता था कि मैं उसकी मंगेतर हूं। वो बहुत बड़ा मक्कार है। अगर तुम मुझसे लव करोगे तो मैं तुम से वह करूंगी।"

उसकी बात पर कमल चौंका, पूछा, "क्या करोगी?"

ऐलन कमल से लिपटी जा रही थी। कामुकता उसको शौख किए जा रही थी, वो पंजों के बल उठ कर कमल के कान में सरगोशी में बोली—

"तुम्हें एक राज की बात बताऊंगी—प्लीज किस मी।"

कमल ने उसे अपने दोनों हाथों में सहेजा व उसकी आंखों में झांकते उसका एक भरपूर चुंबन ले डाला। फिर बोला, "राज की बात बाद में बताना। पहले एक पैग हो जाए। बातें तो होती ही रहेंगी।"

कमल साकी बनने के बहाने उससे पीछा छुड़ा मैज के पास आया। उसने ऐलन के लिए एक तगड़ा पैग बनाया ताकि उसे एक-एक घूंट पिलाते उससे राज उगलवाता रहे।

ऐलन कोच पर जा कर पसर गई थी और मस्ती में अंगड़ाई लेती हुई बड़बड़ा रही थी—"मुझे ऐसे लोगों से नफरत है जो शराब पीकर शबाब को भूल जाते हैं। वो जो फ्रांसिस है ना—वो साला एक दम फटीचर है और तुम्हारा दुश्मन है।"

कमल ने उसके करीब आ कर उसे एक हाथ के सहारे से उठाया और दूसरे हाथ से एक घूंट पिलाया। दूसरा घूंट ले उसने अपने तर होंठों पर जिव्हा लहराई।

कमल ने अपना चेहरा झुकाया और उसे अपने गाल पर प्यार की मोहर लगा लेने दी। फिर एकदम ही कमल की आंखों में झांकते राजदारी वाली धीमी सरगोशी में बोली, "आह! कितने हैण्डसम... कितने जवान हो तुम। और वो...वो साला है ना फ्रांसिस वो जहाज में तुम्हारे जितने हिमायती हैं उनको एक-एक करके मार डालना चाहता है।"

उसने कमल से चिपटने की कोशिश की। कमल ने उसे तीसरा घूंट पिलाया।

वो आगे बोली, "और...और जब तुम अकेले रह जाओगे तो...

तो...वो और उसके सारे साथी तुम्हें घेर कर मार डालेंगे।"

कमल ने पैग फिर उसके होंठों से लगा दिया और पूछा, "मगर इतना जबरदस्त मंसूबा बनाने वाला मदहोशी की हालत में कैसे पड़ा हुआ है?"

"बुद्धू।" उसने शोखी से ही अपनी एक उंगली कमल के गाल से छुआई, "वो खुद कुछ नहीं करता है। सब उसके आदमी करते हैं। वो तुमको उल्लू बनाने के लिए...तुम्हारा विश्वास जीतने के लिए जानते हो क्या करेगा?"

"क्या करेगा?"

"वो तुम्हारे गिर्द मौजूद रहेगा या फिर अपने केबिन में यूं ही धुत्त पड़ा रहेगा।" उसने अपनी जेब से एक चाबी निकाली और कमल की आंखों के आगे लहराई, "यह केबिन नंबर एक की चाबी है...उसके दरवाजे को लॉक कर दो, साला भीतर बंद रहेगा और आगे अपने साथियों तक अपने हुक्म भी नहीं पहुंचा सकेगा।"

कमल का जहन बड़ी तेजी से घूम गया था। ऐलन नशे में अगर यूं ही नहीं हांक रही थी तो यह रहस्योदघाटन बड़ा महत्वपूर्ण था। कुछ भी था—ऐलन के कहे को एक शराबी की पिनक नहीं कही जा सकती थी।

कमल ने कुछ सोचते हुए पूछा, "हर केबिन के दरवाजों की दो चाबियां हैं। फ्रांसिस के केबिन की दूसरी चाबी कहां है?"

"मैं नहीं जानती। उसकी जेब में एक ही चाबी थी—मैंने निकाल ली। दूसरी चाबी शायद उसके बाप के पास होगी।" यह कहते हुए उसने कमल के हाथ से जाम ले लिया—उसे होंठों से लगाया और फिर एक ही सांस में खाली कर दिया।

खाली गिलास दूर उछालते उसने अपनी बाहें इस फुर्ती से कमल की गर्दन में डाली की कमल को खुद को बचाने का मौका तक नहीं मिला। इतना ही नहीं उसने कमल को अपने ऊपर खींचते अपने होंठ भी कमल के होंठों पर रख दिए थे।

उसके मुंह से शराब के भभके निकल रहे थे। सांसें तप रही थीं। बदन सुलग रहा था।

"तुम बहुत खूबसूरत हो, हीरो हिंदुस्तानी।" वो अपने होंठ कमल के गाल पर गाड़ते नशीली आवाज में बोली, "साले फ्रांसिस की ऐसी की तैसी। मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगी। बस—आज के बाद...बल्कि अभी से तुम मेरे बन कर रहना।"

"तुम...तुम भी बहुत खूबसूरत हो...चमकते चांद सी खूबसूरत।" कमल ने उसे बहलाने की कोशिश की, "तुम्हें पाकर मैं तो धन्य

हुआ। मैं...मैं उस साले को उसके केविन में बंद करके आता हूं। मैं बस यह गया और यह आया। तब तक तुम एक पैग मारो।"

"नहींSSS।" वो धीमी सीटी सी मारती बोली, "तब तक तो मैं जल कर राख हो जाऊंगी, देखते नहीं मैं सुलग रही हूं। देखते नहीं मैं कितनी बेताब हूं। पहले इन बेताबियों का इलाज...जो तुम्हारे और सिर्फ तुम्हारे पास हैं हैंडसम।" और उसका एक हाथ नीचे सरक जैसे अपने इलाज को ढूंढने लगा।

कमल ने उससे जुदा होने की कोशिश की। पर ऐलन की मरमरी बांह फौलादी शिकंजा साबित हुई। उसने कमल को ऐसा भींचा की कमल को अपना दम घुटता महसूस हुआ।

इस कामातुर कबूतरी से पीछा छुड़ाना संभव नहीं था।

ऐलन की कामोत्तेजना बढ़ती जा रही थी, उसके ब्लाउज के बाकी के दो बटन भी खुल गए थे और अब उसके सुडौल वक्ष अपने खिले-खिले कत्थई मुहांसों के साथ अपनी मुंहजोरी दिखाने को मैदान में थे।

तपते यौवन की काम तरंगों से कमल बचता भी तो कब तक। ऐलन को शांत करना भी जरूरी लगा था। कमल ने खुद को इस वहशी बन चली युवती के हवाले कर दिया। ऐलन दक्ष खिलाड़ी थी। उसने शुरुआत ही कमल के सूख चले मुख को मक्खनी मिठास भरे गोदाज से भरने के साथ की।

और यह हरारतभरा रसपान उनके नशे को बढ़ा गया। इक आग थी जो दोनों तरफ भड़कती-फैलती जा रही थी। कमल की महारतों ने रंग दिखाया—और वो रसपान में ही यूं जूझा कि ऐलन के कंठ से आनन्दातिरेक से सिसकारियां निकलने लगीं। मस्ती से बोझल पलकें बंद होती चली गईं और उसके हाथों की आवारगी बढ़ती गई।

केविन का तापमान एकाएक ही जैसे बेहद गर्मा गया था।

ऐलन ने कमल को अपने ऊपर खींच लिया था। अब कमल में भी धैर्य कहां रहा था। बेताबियां तूफान को जन्म दे गई और कमल ने वो जौहर दिखाए कि ऐलन हाय-हाय और आह-आह करते ही तृप्तियों के सागर में डूबते-उभरते अंततः ऐसी निढाल व बेसुध हुई कि उसे यह भी मालूम न हुआ कि उसे यूं बेसुध छोड़ कमल कब केविन से निकल गया था।

तृप्ति व आनन्द का सरूर ही था कि जब कमल केबिन से निकला तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे।

केबिन से निकलने से पहले वो ऐलन का लिबास व्यवस्थित करना नहीं भूला था और मन ही मन अपने रब का इसके लिए शुक्रिया

भी अदा किया था कि उन उन्मादी क्षणों के दौरान सोनिया नहीं आन पहुंची थी—वर्ना जाने ऐलन बेचारी को अपनी तृप्तियों की क्या कीमत चुकानी पड़ती।

□□

केबिन से बाहर आते ही कमल ने अपने हवासों से ऐलन को झटक दिया और फ्रांसिस के बारे में सोचने लगा।

जैसा कि ऐलन ने सुझाया था, कमल सीधा केबिन नंबर एक के सामने पहुंचा था और फिर उसे बाहर से लॉक करके—जहाज के निचले हिस्से में आ गया था। बहुत से मर्द, औरतें व बच्चे जहाज के एक बड़े हॉल के फर्श पर सो रहे थे, यहां भी चार हथियारबन्द जवान पहरे के तौर पर गश्त कर रहे थे।

कमल सोनिया को खोजता हुआ—जहाज के अगले हिस्से की तरफ चला गया।

सोनिया रैलिंग से टेक लगाए उसी नौजवान से बातें कर रही थी—जो डायनिंग हॉल में सोनिया के प्रति अपनी दिलचस्पी छुपा नहीं पाया था।

सोनिया ने कमल को देख लिया। वो दिलफेंक कमल को नहीं देख पाया था—क्योंकि उसकी पीठ इधर थी।

"सोनिया डार्लिंग। तुमने अपनी मोहब्बत का यकीन दिला कर मुझे एक नई जिंदगी दी है। क्या मैं प्यार से तुम्हारा हाथ चूम सकता हूं।"

सोनिया ने शर्माते हुए अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया। नौजवान जैसे ही उसे चूमने के लिए झुका—वही उलटा हाथ एक ठोकर की तरह उसके मुंह पर पड़ा। वो लड़खड़ाता हुआ दो कदम पीछे चला गया।

सोनिया मुस्कराती और शर्माती हुई बोली, "डार्लिंग तुम जानते ही हो कि मैं एक फाइटर भी हूं। इसलिए लव-गेम में भी फायटिंग की आदी हो गई हूं। जो मुझे शिकस्त दे देता है—उस विजेता को बतौर-ए-इनाम मैं हासिल हो जाती हूं। आओ—तुम भी फाइटिंग वाली मुहब्बत करो। वाइलैन्स—सेक्स का लुत्फ लेते हैं हम। आगे बढ़ कर मुझ पर हमला करो। हम दोनों लड़ते-लड़ते मुहब्बत की हसीन वादियों में पहुंच जाएंगे।"

"ही...ही...ही।" वो और पीछे हट कर खिसियानी हंसी हंसते हुए बोला, "मैं...मैं जानता हूं कि तुम अपने फौलादी नाखूनों से गोश्त और हड्डियां अलग-अलग कर देती हो। मुझे माफ करो। मैं दूर ही दूर से तुम्हें देख कर आहें भर लिया करूंगा।"

वो पलट कर भागने लगा पर फिर कमल को देखते ही क्षण भर के लिए ठिठक गया पर फिर एकदम से भागता चला गया। कमल हंसे बिना नहीं रह सका। उसने सोनिया के निकट आ कर पूछा—"यह क्या हो रहा था?"

"टाइम पास हो रहा था।" सोनिया चहकते हुए बोली, "इस नौजवान को हम रहस्यमय समझ रहे थे वह तो दिलफेंक आशिक निकला। वो सचमुच मुझ पर आशिक हो गया था। इश्क का भूत उतर गया होगा उसके सिर से।"

कमल खुल कर मुस्कराया, "वक्त यूं ही बर्बाद हुआ तुम्हारा पर मैंने वक्त जाया नहीं किया है। अपने दुश्मन को पहचान लिया है मैंने।"

कमल ने उसे ऐलन और फ्रांसिस की दास्तान सुनाई। पर वह अपनी आपबीती पूरी नहीं सुना पाया था कि अचानक ही किसी के रोने-गिड़गिड़ाने की आवाज सुनाई दी।

दोनों ने फौरन पलट कर देखा। आसपास करीब कोई नहीं था।

जहाज पर जितने भी लोग थे वे सब जहाज के बीच के हिस्से में सो रहे थे। वो तेजी से उधर लपके। उन्होंने दूर ही से देख लिया। दो सशस्त्र नौजवान एक बूढ़ी औरत को पकड़े हुए थे—और वह खुद को छुड़ाने की कोशिश में चीखते हुए कह रही थी—"छोड़ दो मुझे। तुम लोगों ने मेरे शौहर को समुद्र में फेंक दिया है। मैं मादाम सोनिया से शिकायत करूंगी। तुम्हें भी समुद्र में फिंकवा कर दम लूंगी।"

सोनिया और कमल ने उनमें से एक एक को कालर से पकड़ा व अपनी तरफ खींचा। वे दोनों पहले तो बौखलाए पर फिर उनसे लिपट गए।

सोनिया के हाथ से स्टेनगन छूट कर दूर जा पड़ी। और इससे पहले कि वो अपने फौलादी पंजे इस्तेमाल करती—पीछे से दो आदमियों ने आ कर उसे मजबूती से जकड़ लिया।

दूसरा बदमाश कमल को अपने साथ धकेलता हुआ रैलिंग तक लेकर आया। कमल रैलिंग से टकरा कर घुटनों के बल संभल गया। और फिर उसने एकदम झुकते अपने मुकाबिल की टांगें पकड़ कर उसे दूसरी तरफ उछाल दिया। वो कमल के सिर पर से होता हुआ पीछे की तरफ गया। उसकी दिल दहला देने वाली चीख सुनाई दी। फिर छपाक की तेज आवाज के साथ समुद्र का पानी उछल कर ऊपर आया और वो हमेशा के लिए नीचे चला गया।

तभी किसी ने कमल को ललकारा, "हीरो हिंदुस्तानी! अगर तुम

अपनी सोनिया की जिंदगी चाहते हो तो खुद को हमारे हवाले कर दो।"

कमल ने रैलिंग के पास से उठते हुए देखा। सोनिया के पीछे खड़े दोनों जवानों ने सोनिया के हाथों को मज़बूती से जकड़ रखा था और सामने खड़ा नौजवान रिवॉल्वर की नाल को उसकी कनपटी से लगाकर धमकी दे रहा था।

रिवॉल्वरधारी फिर गर्जा, "हम सुपर मास्टर के वफादार हैं और वफादार रहेंगे। हमारा मास्टर दुम दबा कर भागने वालों में से नहीं है। वो सैनिक सहायता के साथ वापिस आने वाला है। मगर तुम और गद्दार ऐराज टापू से फरार हो रहे थे। यह अच्छा हुआ कि तुम दोनों में ठन गई और ऐराज सुपर मास्टर के हाथों सजा पाने को वहीं रह गया। उसकी मौत सुपर मास्टर के हाथों लिखी थी और तुम्हारी शायद हमारे हाथों।"

तभी वही नौजवान मुस्कराता हुआ कमल के सामने आया जो सोनिया का तलबगार था। वो दांत निकालते हुए बोला—"सोनिया के आशिक तो तुम हो। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती—फिर भला मैं उसका आशिक कैसे बन सकता था। मैं मादाम सोनिया से जहाज के उस हिस्से में पैच इसलिए लड़ा रहा था कि जहाज के दूसरे हिस्से में मेरे साथी बगैर किसी हस्तक्षेप के इत्मीनान से अपना काम करते रहें।"

कमल ने कनखियों से सोनिया की तरफ देखा। रिवॉल्वर की नाल बदस्तूर उसकी कनपटी से लगी हुई थी। कमल ने उस रंगबाज को बातों में उलझाने के लिए पूछा—"ओह! पर तुम्हारे साथी जहाज के दूसरे हिस्से में क्या कर रहे थे?"

"हम जब से इस जहाज पर आए हैं—तभी से सुपर मास्टर के वफादारों को एकजुट कर रहे हैं। शाम को जिस शख्स की पीठ में खंजर घोंप दिया गया था, वो हमारा साथ देने को तैयार न हुआ था। वो तुमसे वफादारी निभाना चाहता था। उसे इसका इनाम मिल गया। अब तक एक बूढ़े को और चार जवानों को समुद्र में फेंका जा चुका है क्योंकि वो सब तुम्हारे हिमायती थे।"

यह बड़ी दुखदायी और खौफनाक खबर थी।

मौजूदा स्थिति भी कम खतरनाक नहीं थी।

वो दुश्मनों के कब्जे में थे और कमल को कुछ सूझ नहीं रहा था। सहसा उस शख्स की चीख उभरी जो सोनिया की कनपटी से रिवॉल्वर लगाए खड़ा था। वो सब उस बुढ़िया को भूल गए थे, जिसके पति को समुद्र में फेंक दिया गया था। वो बुढ़िया को निरीह और

मजबूर सगझ बैठे थे। यही भूल गए थे कि जब इंतकाम की आग भड़कती है तो ऐसा ही होता है।

बुढ़िया ने पीछे से आकर रिवॉल्वरधारी के सिर पर चोट लगाई थी। और जैसे ही उसके हलक से चीख निकली—उसका ध्यान बंटा—सोनिया ने उसके पेट पर अपना घुटना दे मारा।

कमल भी तत्काल एक्शन में आया था। उसने अपने सामने खड़े रंगबाज आशिक को एक तरफ धक्का दिया और सोनिया की तरफ छलांग लगा दी—और सोनिया के साथ उसे थामे खड़े दोनों बदमाशों को लिए फर्श पर गिर पड़ा। उनकी गिरफ्त ढीली पड़ते ही सोनिया तड़प कर करवट बदलती हुई दूसरी तरफ गई। उसने अपने करीबी दुश्मन को पंजा मारा।

और फिर।

थोड़ी ही देर में आजाद होकर दोनों अपने पैरों पर खड़े थे।

संभलते ही वो दुश्मनों की गिरी स्टेनगनों की तरफ लपके। पर वो अभी गनें उठाने के लिए झुके ही थे कि तड़ातड़ गोलियां चलने लगी। ऐन उनके हाथों के करीब कई गोलियां फर्श पर बजती चली गई।

कमल और सोनिया दोनों ही अपनी जगह से उछल कर फर्श पर लुढ़कते चले गए।

और फिर उन्होंने सिर उठा कर देखा—जो जीना डैक की तरफ जाता था—उस जीने के निचले हिस्से पर उनकी निगाहों के सामने, ऐलन स्टेनगन लिए खड़ी थी और कमल की तरफ देख कर कहकहे लगा रही थी। ऐलन तो नशे व तृप्तियों की मदहोशी में बेहोश हो गई थी फिर?

ऐलन कहकहे लगाते बोली—"हीरो हिंदुस्तानी! सुपर मास्टर अपने वफादारों को कभी असहाय और बेयारो-मददगार छोड़ कर नहीं जाता। अपने पीछे किसी मास्टर को उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी सौंप जाता है। मास्टर तो सब मर चुके हैं—ऐसे वक्त में कोई मादाम ही एक्शन में आती हैं। सोनिया मुझे नहीं जानती—मगर आज यह भी मुझे पहचान ले। मैं अपनी इस संस्था की सबसे खतरनाक मादाम हूं। इतनी खतरनाक कि अपने सुपर मास्टर की तरह छूट देना नहीं जानती। लो अपने अंजाम को पहुंचो।"

यह कहते हुए उसने एक बार फिर सोनिया और कमल को लक्ष्य कर गोलियों की बरसात कर दी थी। और उसके हाथ में रिवॉल्वर नहीं था कि वो बच जाते। स्टेनगन के सामने आकर तो कोई सुपरमैन भी बच कर नहीं निकल सकता था।

ऐलन उन पर गोलियां बरसाती रही।

□□

सोनिया या कमल कोई फौलाद के बने हुए न थे कि निरंतर बरसती हुई गोलियां उन पर असर न करतीं। उन्होंने बुलेट-प्रूफ शील्ड भी नहीं पहन रखी थी। जीने के निचले पर—निगाहों के ऐन सामने ऐलन स्टेनगन से उन पर गोलियां बरसा रही थी—इसके बावजूद कमल और सोनिया बच गए। एक चमत्कार हुआ था।

वही बात थी कि जाको राखे सांईया मार सके न कोई।

ऐलन निसन्देह एक दरिंदा फितरत मादाम थी। और उसने जैसा कि अपने बारे में बताया था—वह खतरनाक भी साबित हुई थी। उसने कमल या सोनिया को कुछ करने का मौका दिए बिना ही उन पर गोलियों की बौछार कर दी थी।

लेकिन ट्रेगर पर उसकी उंगली कसते वक्त सिचुएशन अचानक बदल गई थी। बूढ़ा बनजेमन कहीं छिपा खड़ा था—फौरन ही उछल कर अपनी बेटी सोनिया के सामने आ उसकी ढाल बन गया—क्योंकि ऐलन जिस दिशा से गोलियां चला रही थी—उस हिसाब से सोनिया पहले उसकी जद में आ रही थी।

बूढ़े बाप ने अपनी जान की कुर्बानी देकर बेटी को बचा लिया।

अब कमल की बारी थी। स्टेनगन के सामने इतनी मोहलत नहीं मिलती कि कोई बाजीगरी के करतब दिखा कर बच सके। गोलियां कमल को लक्ष्य कर चलाई गई थीं—वे कमल की तरफ ही आई भी थीं—लेकिन गोलियों की यह बौछार उसके सिर के ऊपर से गुजरती चली गई थी। और ऐसा इसलिए हुआ था कि ऐलन, एकाएक बल खा गई थी...और कमल की बजाय खुद वह चीख रही थी क्योंकि जीने के ऊपरी सिरे से कोई उस पर गोलियां बरसा रहा था।

कौन था वह? जीने का ऊपरी हिस्सा नजर नहीं आ रहा था। वह गोलियां बरसाने वाला फरिश्ता भी नजर नहीं आ रहा था और अभी उसे देखने की फुर्सत भी कहां थी।

कमल ने जब देखा कि ऐलन के हाथों से स्टेनगन छूट कर गिर पड़ी है और वह खुद भी जीने के नीचे आ कर फर्श पर ढेर हो गई है तो तब कमल ने सबसे पहले फर्श पर पड़ी एक स्टेनगन पर कब्जा किया।

ऐलन के साथी बौखला गए थे—क्योंकि ऐलन ने गोलियां बरसाते वक्त अपने साथियों का भी ख्याल नहीं किया था। उनमें से एक गोलियों की जद में आ गया था—बाकी दूसरी तरफ भाग गए थे।

कमल ने स्टेनगन हाथ में लेते ही दूर भागने वालों पर गोलियां

बरसाई। वो गिनती में चार थे। एक बुढ़िया के हाथ से डंडे की चोट खाकर जख्मी पड़ा था। दूसरे को खुद ऐलन ने मार डाला था। बाकी दो अब कमल के हाथों मारे गए थे।

उनकी तरफ से निश्चिंत हो जाने के बाद कमल ने सोनिया की तरफ देखा।

सोनिया घुटनों के बल बैठी—अपने बूढ़े बाप को सीने से लगाए बैठी थी। लेकिन अब वो अपनी बेटी के दिल की धड़कने नहीं सुन सकता था। सोनिया उसके माथे को चूम रही थी और हौले-हौले कुछ बड़बड़ा रही थी। सोनिया गम से निढाल हो रही थी लेकिन इस पर भी उसकी आंखों में एक आंसू नहीं था। वो पाषाण बनी बैठी थी।

कमल ने जरा झुक कर उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"सोनिया मुझे अफसोस है। मैं तुम्हारे गम को अपने गम की तरह समझ रहा हूं और महसूस भी कर रहा हूं। क्योंकि मैं तुमसे अलग नहीं हूं।"

सोनिया एक सर्द आह भर कर कांपती आवाज में बोली, "हम जिस आग और खून के दरिया से गुजर रहे हैं। इस रास्ते पर हम में से कोई भी—किसी भी वक्त मर सकता है। मुझे अफसोस सिर्फ इस बात का है कि अपने बूढ़े बाप के सामने ढाल मुझे बनना चाहिए था। लेकिन न बन सकी—यह फर्ज डैडी ने अदा कर दिया है। बहरहाल, तुम इस सिचुएशन को संभाल लो। ऐसा न हो कि हम फिर धोखा खा जाएं।"

कमल ने जीने की तरफ कदम बढ़ाते ऊंची आवाज में कहा, "जिस दोस्त ने मेरी जान बचाई है, मैं उसका शुक्रगुजार हूं, अब वह नीचे आ जाए। कोई खतरा नहीं है।"

लकड़ी के जीने पर कदमों की आवाज सुनाई देने लगी। वह धीरे-धीरे खट-खट की आवाज के साथ जीने के एक-एक पायदान पर पांव रखता हुआ नीचे आ रहा था। और आने वाला जब—जीने के निचले हिस्से में और निगाहों के सामने आया तो कमल और सोनिया दोनों चौंक गए। खुले मुंह लिए उन्होंने एक बार एक दूसरे को देखा व फिर उनकी निगाहें आने वाले पर जम कर रह गईं।

आने वाला फ्रांसिस था। पीटर हेराल्ड का बेटा फ्रांसिस। जिस पर वे दुश्मन होने की मोहर लगा चुके थे।

कमल कुछ क्षणों तक उसे हैरानी से देखता रहा।

फ्रांसिस को तो ऐलन ने इतनी पिला दी थी कि कमल ने उसे खुद अपने केबिन में बेसुध पड़े देखा था। तब ऐलन उसके केबिन

की चाबी के साथ कमल के केबिन में आ गई थी। और उस मक्कार औरत ने भी बहुत ज्यादा मदहोश और कामाग्नि में सुलगती होने की एक्टिंग की थी। कमल इसी खुशफहमी में रहा था कि वो मदहोशी की हालत में फ्रांसिस को बेनकाब कर रही थी। ऐलन के फरेब में आकर ही तो कमल फ्रांसिस के केबिन को बाहर से बंद कर आया था।

फ्रांसिस खड़ा मुस्कराता रहा।

कमल ने खुद को संभाला व उससे पूछा, "तुम केबिन से बाहर कैसे आ गए—जबकि मैंने उसे लॉक कर दिया था।"

मुस्कराते हुए ही उसने जेब से चाबी निकाल कर दिखाई, बोला, "यह दूसरी चाबी मैंने ऐलन से छिपा रखी थी। वो जिस अंदाज में मुझे पिला कर आउट करना चाहती थी—उसी से मुझे शक हो गया था कि वह कोई बहुत बड़ा गेम खेल रही है।"

"क्या तुम नशे में नहीं थे?"

"हां—मैं इतना मदहोश हो चुका था कि कोच से उठने तक की हिम्मत न रही थी। इसके बावजूद दिमाग थोड़ा बहुत काम कर रहा था। मैं आंखें मूंद कर खुर्राटे लेने लगा था। ऐलन समझ गई कि अब सुबह तक के लिए मैं गया काम से और उसे मेरी तरफ से कोई खतरा नहीं है। इसलिए वह मुझे छोड़ कर तुमसे निपटने चली गई।"

"वह नहीं आई थी—मैंने खुद ही दावत दे डाली थी उस हराफा को।" कमल पश्चाताप पूर्ण लहजे में बोला, "तुम्हारे प्रति हमारे संदेह का ही फायदा उठाया उसने। उसने तुम्हारे खिलाफ वही सब सुनाया जो हम सुनना चाहते थे। मैं उसे बेसुधी व मस्ती की हालत में ही अपने केबिन में छोड़ आया था और तुम्हारे केबिन को लॉक कर दिया। अब कहा जा सकता है कि ऐलन नशे में नहीं थी—वह सिर्फ अदाकारी कर रही थी। लेकिन तुमने तो बहुत ज्यादा पी रखी थी। फिर तुम कैसे इतनी जल्दी होश में आ गए।"

फ्रांसिस ने हंसते हुए बताया, "बेशक मैंने बहुत ज्यादा पी ली थी और आपे में नहीं रहा था। लेकिन ऐलन जैसे ही तुम्हारे साथ बाहर गई—मैंने थोड़ी सी कोकीन मुंह में रख ली। जाने तुम जानते हो कि नहीं—कि पूरी बोतल का नशा हो तो वह नाखून बराबर कोकीन से एकदम खत्म हो जाता है। शराब पानी की तरह बेअसर हो जाती है। तुम देख ही रहे हो मैं तुम्हारे सामने बिल्कुल चौकस और अलर्ट खड़ा हूं।"

"मुझे अफसोस है दोस्त।" कमल आगे बढ़ता बोला, "कि हम

तुम्हें दुश्मन समझते रहे। लेकिन तुमने बहुत ही कड़े वक्त में दोस्ती का सबूत दिया है।" उसने फ्रांसिस को अपने गले से लगा लिया था।

"मिस्टर कमलकान्त! हम एक ऐसे ही दौर से गुजर रहे हैं कि आजमाइश के बिना दोस्त और दुश्मन की पहचान मुमकिन नहीं है। मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने अपनी पहचान करा दी है।"

एक तूफान आकर गुजर गया था।

और अब उन्होंने दूसरे काम निपटाने शुरू कर दिए। फ्रांसिस की मदद से ही ऐलन और उसके साथियों की लाशें समुद्र में फेंकी। दो-चार औरतों को फर्श की सफाई पर लगा दिया। सोनिया के बाप को पूरे सम्मान के साथ दफनाने के लिए पूरी रस्में अदा कर पाना चूंकि मुमकिन नहीं था क्योंकि वो समुद्र के बीच में थे और चारों तरफ पानी ही पानी था। अंत्येष्टि के लिए सुर्ख फूल, मोमबत्तियां और लोबान इत्यादि भी नहीं था—इसलिए उसे लाल कफन में लपेट कर बहुत आहिस्ता व आदर के साथ—समुद्र के पानी में उतार दिया गया।

अब सुबह हो चुकी थी।

वो रात भर के जागे हुए थे। सोनिया कुछ निढाल सी थी। कमल उसे केबिन में ले आया और उसका सिर अपने बाजू पर रख कर उसे बच्चों की तरह थपकते हुए सुलाने की कोशिश करता रहा। जब वह सो गई तो उसे कोच पर लिटाने के बाद कमल केबिन से बाहर आ गया।

कमल केबिनों के बीच की राहदारी से गुजरता हुआ फ्रांसिस से मिलने उसके केबिन की तरफ जा रहा था कि एक केबिन के पास से गुजरते वक्त उसे फ्रांसिस की ही आवाज सुनाई दी तो वह ठिठक गया।

फ्रांसिस किसी से कुछ कह रहा था।

कमल ने दरवाजे से कान लगा कर सुना तो उसे जवाब में दूसरे आदमी की आवाज सुनाई दी। कमल ने उस आवाज को पहचान लिया। वो ऐलन का वही साथी था जिसके सिर पर बुढ़िया ने डंडे से प्रहार किया था।

जहाज पर सुपर मास्टर के वफादारों में वही एक जिंदा रह गया था। और उसे इसलिए कैद करके रखा गया था कि उसे यातनायें देकर यह मालूम कर सकें कि ऐलन चाहती क्या थी...वो इस जहाज को कहां ले जाना चाहती थी? और अब जहाज में उनके और कितने आदमी रह गए हैं?

और शायद यही सब मालूम करने को फ्रांसिस इस वक्त उसके पास पहुंचा हुआ था।

कैदी गुस्से से चीख कर कह रहा था—"गद्दार मैं नहीं तुम हो। तुमने संस्था की एक वफादार मादाम को मार डाला है। सुपर मास्टर तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेगा।"

फ्रांसिस के कहकहे की आवाज सुनाई दी।

"सुपर मास्टर को कैसे पता चलेगा कि मैंने ही मादाम ऐलन को मारा है। एक तुम ही चश्मदीद गवाह हो—और तुम भी अब सिर्फ कुछ देर के ही मेहमान हो।"

कमल चकरा कर रह गया।

यह फ्रांसिस तो गिरगिट की तरह रंग बदल रहा था।

कैदी कह रहा था, "मैं जानता हूं तुम मुझे जिंदा नहीं छोड़ोगे। लेकिन याद रखो—तुम अपनी इन दोगली हरकतों से उस हिंदुस्तानी के हाथों जरूर मरोगे। वो तुम्हारी असलियत जान लेगा और...।"

फ्रांसिस ने उसकी बात लपकते कहा, "ऊंह। मैं इतना नादान नहीं हूं, वो हिंदुस्तानी हीरो एक कैदी की हैसियत से टापू पर आया था—मैं तबसे उसे देख रहा हूं और जानता हूं कि वो कितना खतरनाक है। उसने सुपर मास्टर का खाना-पीना...सोना-जागना सब हराम कर रखा था। उसे अपना गुलाम बनाने की सुपर मास्टर की जिद ही उसके लिए महंगी पड़ी है। मैं कभी उससे उलझने की कोशिश नहीं करूंगा। अगर हम सकुशल किसी मुल्क तक पहुंच गए तो मैं हमेशा कमलकान्त का वफादार बन कर रहूंगा और अगर इस दौरान कहीं सुपर मास्टर इस हीरो पर हावी होता नजर आया तो मैं फौरन पटरी बदल कर सुपर मास्टर को यही कहानी सुनाऊंगा कि कमलकान्त को टापू से फरार होने के लिए एक जहाज कंट्रोल करने वाले की जरूरत थी। इसीलिए वह मुझे और मेरे डैडी को कैदी बना कर ले आया है। मेरी इस बात की गवाही देने के लिए इस जहाज पर मेरे बहुत से हिमायती मौजूद हैं।"

इतना कह कर वह थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया।

थाली के इस बैंगन ने कमल को संजीदगी से सोचने को विवश कर दिया था। इसी फ्रांसिस ने अभी चंद घंटे पहले कमल को ऐलन के हाथों छलनी होने से बचाया था। इसके बावजूद भी वो कमल का पूरी तरह वफादार या दोस्त नहीं था। आइन्दा किसी वक्त भी पटरी बदल सकता था।

उसकी आवाज फिर सुनाई दी, "हर इंसान को अपनी जिंदगी प्यारी होती है। यह हीरो हिंदुस्तानी हो या सुपर मास्टर हो—जिसके

साये में मुझे अपनी जिंदगी की जमानत मिलेगी मैं उसी का वफादार बन जाऊंगा।''

कमल ने कुछ सोचा व वहीं से पलट कर अपने केबिन की तरफ लौट लिया। वह अभी अपने केबिन के दरवाजे पर ही पहुंचा था 'ठांय' से फायरिंग की आवाज सुनाई दी। कमल ने केबिन में आ दरवाजा अच्छी तरह बंद कर लिया। उसे आनन-फानन में ही कोई फैसला लेना था कि उसे इन हालात में क्या करना चाहिए।

वह बेचैनी से केबिन में चकराने लगा।

इस बात का खतरा नहीं था कि फ्रांसिस अब अपने साथियों के साथ हथियारों से लैस होकर इन पर चढ़ दौड़ेगा। उसकी बातों से जाहिर था कि वो एक मौकापरस्त इंसान है। उसे जब तक यहां सुरक्षा हासिल रहेगी वो कमल का दोस्त बन कर रहेगा।

कमल कोच पर सोनिया के पहलू में आ लेटा।

सोनिया बेसुधी की नींद सो रही थी। कमल भी बुरी तरह थका हुआ था पर सोना चाह कर भी सो नहीं सकता। गनीमत थी कि फ्रांसिस उससे खौफजदा था। उसने उसकी तरफ से आंखें मूंदे रहना ही ठीक समझा।

फ्रांसिस के बारे में सोचना छोड़ उसने हालात के बारे में सोचा। तभी एकाएक उसे ख्याल आया कि उसे इंजन रूम में जाकर कम से कम यह तो मालूम करना चाहिए कि जहाज इस वक्त किस समुद्री मार्ग पर है और किस बंदरगाह की तरफ अग्रसर है।

इस जानकारी से कोई मंसूबा बनाने में भी मदद मिल सकती थी।

कमल उठ खड़ा हुआ।

और उसने एक निगाह निद्रामग्न सोनिया पर डाली। और इसके साथ ही उसके जहन में अंदेशों के नाग फुफकारने लगे। क्या वह सोनिया को अकेला छोड़े? हालांकि कमल बाहर से लॉक लगा कर जा सकता था लेकिन फ्रांसिस या उसके किसी साथी के पास इस केबिन की दूसरी चाबी हो सकती थी और उसकी गैरमौजूदगी में उसकी सोनिया को नुकसान पहुंचाया जा सकता था। सोनिया जो अब तक उसकी हिफाजत करती आई थी और अब उसकी हिफाजत भी तो कमल का फर्ज था।

कमल को उसे अकेला छोड़ना उचित नहीं लगा।

ऐसी जल्दी और बदहवासी की भी जरूरत नहीं थी। दो-चार घंटे की इंतजार की जा सकती थी।

कमल फिर कोच पर बैठ गया।

अब उसकी निगाह ऐराज के उस बड़े से संदूक पर पड़ी जो अमरीकन डालर की गड्डियों से ठसाठस भरा हुआ था। मेज पर दो स्टेनगनें रखी हुई थीं और उनके पास वह ब्रीफकेस पड़ा हुआ था—जिसमें कितनी ही हकूमतों को ब्लैंकमेल कर सकने को 'मवाद' जमा किया गया था।

इन सब चीजों को तो कमल को पहले ही से समेट कर रख लेना चाहिए था।

कमल फिर उठ गया। उसने कोच के नीचे से ऐराज और रमना की दोनों अटैचियां निकाल लीं। इनमें कपड़े भरे हुए थे। रमना की अटैची छोटी थी जिसे आसानी से ही कहीं भी ले जाया जा सकता था। सो—कमल ने पहले वह अटैची खाली की। अटैची मेज पर रख उसने ब्रीफकेस खोला व उसमें से लाइटर-कैमरा निकाल कर अपनी जेब में रख लिया। फिर कुछ महत्वपूर्ण कागजात व माइक्रोफिल्में निकाल कर अटैची में रखीं और फिर संदूक में से गड्डियां निकाल कर कुछ ब्रीफकेस में रखीं कुछ अटैची में रख दीं।

कमल हर चीज के दो हिस्से इसलिए कर रहा था कि आधा सामान उसके पास और आधा सोनिया के पास रहे। उसने रमना के दो जोड़े सोनिया के लिए निकाल कर अटैची में रख दिए। अपने लिए ऐराज का एक जोड़ा ब्रीफकेस में रख लिया।

इसके बाद कमल ने दो घंटे बड़ी खामोशी व निश्चिन्तता के साथ गुजारे।

और फिर...ठीक बारह बजे उसने बड़े प्यार से सोनिया को जगाया।

"चलो, अब उठ जाओ। तुमसे बहुत सी बातें करनी हैं। पर पहले तुम ताजा दम हो जाओ।"

फिर उन दोनों ने एक साथ ही स्नान किया इन क्षणों की मादकता को भुला कमल ने उसे सारी कहानी सुना दी कि फ्रांसिस किस तरह थाली का बैंगन साबित हो रहा है कि अब उन्हें इस जहाज को छोड़ना होगा। सोनिया हैरान भी हुई व परेशान भी और उसे भी मौजूदा समस्या का यही हल ठीक लगा कि वो जहाज ही से निकल जाएं। नहाने के बाद उन्होंने कपड़े बदले व केबिन से बाहर आ गए। दरवाजे को लॉक करने के बाद वे राहदारी से गुजरते हुए जीने की तरफ जाने लगे। एक नंबर केबिन के पास से गुजरते वक्त फ्रांसिस अचानक ही दरवाजा खोल कर सामने आ गया।

उसने इन्हें देखते ही कहा, "आप दोनों सो रहे थे। मैंने आपको जगाना मुनासिब नहीं समझा। वह कैदी हमारे काम का नहीं था।

यह बता के नहीं दे रहा था कि मादाम ऐलन इस जहाज को कहां ले जाना चाहती थी। इसलिए मैंने उसे शूट कर दिया।"

"तुमने बहुत अच्छा किया।" कमल उसका कंधा थपथपाते बोला, "हम ऐसे किसी गद्दार को जिंदा रखने का खतरा मोल नहीं ले सकते। मुझे विश्वास है कि तुम जो भी करोगे उसी में हम सब का हित होगा।"

फ्रांसिस आभारी सा बोला, "मैं आपको कभी शिकायत का मौका नहीं दूंगा। क्या आप लंच के लिए जा रहे हैं?"

"हां। पर हम पहले इंजन रूम में जाएंगे। क्या तुम भी साथ चलोगे?"

"हां, जरूर...चलिए।"

वो तीनों सीढ़ियां उतर कर निचले हिस्से में आए। नीचे रैलिंग के पास पहुंच कर फ्रांसिस ने समुद्र में दूर तक निगाहें दौड़ाई, फिर बोला, "अब हमारा सफर खुशगवार और निष्कंटक हो गया है। मेरा ख्याल है कि आप दोनों भी खूब एन्जाय कर रहे होंगे।"

"हां। मगर यह मेरा पहला लंबा समुद्री सफर है।" कमल बोला, "चारों तरफ पानी ही पानी देख कर एक नामालूम सी घबराहट होती है। सोनिया की भी यही ख्वाहिश है कि हम किसी करीबी सागर तट या बंदरगाह पर कम से कम एक दिन के लिए लंगर डाल दें तो तबीयत जरा बहल जाएगी।"

फ्रांसिस ने सोनिया की तरफ देखा, बोला, "ताज्जुब है, मैडम सोनिया! आप तो पहले भी कई बार ऐसे समुद्री सफर कर चुकी हैं, फिर यह उकताहट कैसी?"

सोनिया की बजाय कमल ने मुस्करा कर जवाब दिया, "सोनिया को उकताहट नहीं हो रही। ना ही वह घबरा रही है। मगर ऐसी अवस्था में औरत की हालत कुछ बिगड़ जाती है।"

"क्या मतलब?" फ्रांसिस चौंका, फिर मुस्कराती नजरों से सोनिया की तरफ देखते पूछा, "क्या हमारी मादाम मां बनने वाली हैं।"

"हां। मेरे बच्चे की मां।"

वो यूं ही बातें करते हुए इंजन-रूम में पहुंचे।

वहां फ्रांसिस के बाप ने मुस्करा कर इनका स्वागत किया। कमल ने दीवार पर लटके नक्शे की तरफ देखा व सीधे अपने मतलब की बात पूछी, "क्या आप बता सकते हैं कि इस वक्त हमारा जहाज कहां से गुजर रहा है।"

बूढ़े पीटर ने एक लंबी सी घड़ी उठा कर उसके दूसरे सिरे को

नक्शे के एक हिस्से पर रखते हुए कहा, "यह टापू कोवाई है। मैंने यहां से सफर शुरू किया था। अब हम समुद्र के इस हिस्से से गुजर रहे हैं। यानी जापान से सात सौ समुद्री मील की दूरी पर हैं हम।"

फ्रांसिस बोल उठा, "डैडी मैं आपको एक खुशखबरी सुना दूं। हमारी मादाम सोनिया 'एड्वांस स्टेज' में हैं।"

"मुझे यह सुन कर बड़ी खुशी हुई।" बूढ़े पीटर ने खुशी जाहिर करते कहा, "बेटी! तुम्हें अब उछल-कूद नहीं करनी चाहिए, यह स्टेनगन उतार कर रख दो। तुम्हारी हिफाजत के लिए मिस्टर कमलकान्त काफी हैं।"

बात चल निकली थी सो कमल बोला, "मुझे सोनिया की बड़ी फिक्र है। वह समुद्री सफर से घबरा रही है, मैं चाहता हूं कि हम दो-चार दिन के लिए जापान के सागर तट पर ठहर जाएं। वहीं मैं सोनिया को किसी लेडी डॉक्टर के पास ले जा सकूंगा।"

बूढ़ा 'अस्कीपर' माथे पर बल डाल कर कुछ सोचने लगा। फिर उसने कहा, "मिस्टर कमलकान्त! ऐसा शायद मुमकिन नहीं है। सोनिया के पास जापान का वीजा नहीं है। वो हमें जहाज के लिए ईंधन वगैरह लेने के लिए लंगरअंदाज होने की इजाजत तो दे देंगे। लेकिन 'पोर्ट' से बाहर निकल कर अपने मुल्क में दाखिल होने की इजाजत नहीं देंगे।"

कमल परेशान हो उठा।

उसका और सोनिया का पासपोर्ट तो कोवाई टापू पर ही रह गये थे। यानी कि उन्हें किसी भी देश में प्रवेश की अनुमति नहीं मिल सकती थी। उसने पीटर से कहा, "इस तरह तो हम किसी भी मुल्क में दाखिल नहीं हो सकेंगे।"

"नहीं। कुछ देश ऐसे हैं जहां छूट मिल जाती है। ऐसे ही किसी देश में हम कुछ समय तक रहने की इजाजत हासिल कर लेंगे।"

"लेकिन सोनिया अब और सफर करने के काबिल नहीं है। आप ऐसा करें कि आप हमें जापान के आसपास के किसी टापू की स्थिति समझा दें। मैं सोनिया को मोटरबोट में ले जाऊंगा।"

पीटर हेराल्ड नक्शे व कुतबनुमा की मदद से कुछ देर तक अध्ययन करता रहा। फिर बोला—"हम जापान से लगभग सात सौ नाट (समुद्री मील) की दूरी पर हैं। मैं तुम्हें मोटर बोट के जरिए जाने की इजाजत नहीं दूंगा। जापान की समुद्री पुलिस बहुत सख्त है। दिन रात पूरी चौकसी रखती है। क्योंकि हांगकांग के बदनाम स्मगलर वहां से गुजरते रहते हैं। तुम्हें भी स्मगलर समझ कर वो तुम दोनों से बहुत बुरा सलूक करेंगे।"

कमल के होंठों पर कटुतापूर्ण मुस्कान नाची, वो खिन्न सा ही बोला था, "जिंदगी हर मोड़ पर हमसे बुरा सलूक कर रही है। सच पूछिए तो हमने यह फिक्र करनी ही छोड़ दी है कि आगे क्या होने वाला है। हम जहां भी जाएंगे—कोई-न-कोई मुसीबत अपनी बांहें फैलाये हमारा स्वागत करने को खड़ी होगी। मिस्टर पीटर—हो सके तो जापान के निकट ही हमें किसी टापू पर पहुंचा दें।"

बूढ़े जहाजी पीटर ने दोबारा घड़ी उठाई और नक्शे की तरफ पलटते बोला, "यह देखो, हमारा जहाज फिलीपाईन और फारमोसा के बीच इस रास्ते से गुजरेगा। यहां करीब ही तवान नाम का एक टापू है। तुम मोटरबोट से इस टापू तक पहुंच सकते हो।"

कमल और सोनिया थोड़ा निकट जा नक्शे को देखने लगे।

तवान टापू के दक्षिण में फारमोसा था। फारमोसा के निकट ही तीन छोटे-छोटे टापू बिंदुओं की तरह नजर आ रहे थे। बिंदुओं पर इन टापुओं के नाम नहीं लिखे थे, इसका मतलब था कि ये टापू अधिक महत्व के नहीं थे।

कमल ने पीटर के हाथ से मार्गदर्शक घड़ी लेकर इन तीनों टापुओं की तरफ इशारा करते हुए कहा—"हम यहां जाएंगे। यहां से जापान का एक टापू चोको बिल्कुल करीब है। अगर इस तरफ हमें बढ़ने से रोका गया तो हम बीच समुद्र में पहुंच कर नागासाकी की तरफ बढ़ जाएंगे। बहरहाल, यह तो हालात पर निर्भर है। पता नहीं हम कहां पहुंचने वाले हैं और तकदीर हमें कहां पहुंचाएगी?"

पीटर ने सिर हिलाते कहा, "अच्छी बात है। अगर तुम जिद कर रहे हो तो मैं तुम दोनों को नहीं रोकूंगा। जाओ, आराम करो। हम कल शाम तक 'फारमोसा' के करीब पहुंच जाएंगे।"

इसके बाद बूढ़ा पीटर उन्हें समझाता रहा। उसने यह भी बताया कि कमल और सोनिया को अपने साथ कौन सा जरूरी सामान ले जाना चाहिए। और फिर...।

इंजन रूम से निकल कर वे डायनिंग हॉल में आ बैठे। खाने के दौरान फ्रांसिस ने कहा—"मिस्टर कमलकान्त! मुझे आपकी जुदाई सहन नहीं है। अगर मादाम 'एडवांस स्टेज' पर न होती तो मैं आपको अपने से दूर न जाने देता।"

कमल उसकी इस नौटंकी पर मुस्करा भर दिया था।

थोड़ा सा खाना खाने के बाद सोनिया ने हाथ रोक कर कहा, "कमल! तुम तो जबरदस्ती मुझे खाने में शामिल कर लेते हो। मैं तुम्हें कैसे समझाऊं कि इस हालत में कुछ खाया नहीं जाता।"

कमल ने एक निवाला बना कर उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा,

"इन हालात में जबरदस्ती खाने की कोशिश करनी चाहिए। जरा हिम्मत से काम लो, चलो, मैं तुम्हें खिला रहा हूं।"

कमल ने निवाला उसके मुंह की तरफ बढ़ाया। वो बच्चों की तरह ठुनकती हुई बोली, "ऊं हूं...मैं नहीं खाऊंगी। मुझे मितली हो रही है।"

"ऐसा तो होता ही है—क्या मेरे हाथ से भी नहीं खाओगी?"

कमल अपनी जगह से उठ कर उसके पास चला आया। फ्रांसिस को दिखाने को वह बड़ी शानदार एक्टिंग कर रही थी। कमल शोख लहजे में बोला—"अगर तुम डटकर नहीं खाओगी तो फिर हमारा बेबी स्वस्थ और पहलवान बन कर पैदा नहीं होगा।"

सोनिया अपनी हंसी न रोक सकी—खिलखिला कर हंसने लगी। फिर कमल के बाजू में एक जोर की चुटकी लेते हुए बोली—"शरीर कहीं के। ऐसी बातें करते तुम्हें शर्म नहीं आती?"

कमल ने उसके कान में कहा, "शर्माने का वक्त तो गुजर चुका है।"

वह उसे जोर का धक्का देते हुए बोली, "चलो, जाओ। अपनी जगह जा कर बैठो और दूर ही से हाथ बढ़ा कर खिलाओ। तुमसे तो दूर की ही दोस्ती भली।"

फ्रांसिस उनकी इस छेड़छाड़ और रोमांस से आनन्दित हो रहा था। उसने मुस्करा कर कहा—"आप लोगों के साथ कितना अच्छा वक्त गुजर रहा है। काश! कि जहाज पर हमारे बीच एक लेडी डॉक्टर भी होती तो फिर आप इस सफर में हमारा साथ कभी न छोड़ते।"

कमल संजीदा होते बोला, "हां—हम से बड़ी भूल हुई, हमें टापू से किसी डॉक्टर, या लेडी डॉक्टर और नर्स को भी साथ लाना चाहिए था।"

सोनिया बोल उठी, "मैं तो यह सोच कर ही परेशान हो रही हूं कि कल शाम तक इस जहाज में कैसे वक्त गुजारूंगी।"

"मजबूरी है।" कमल ने गहरी सांस ली, "किसी न किसी तरह गुजारना होगा।"

खाने के बाद फ्रांसिस ने सुझाव दिया कि कमल और सोनिया उसके साथ ताश खेलें। खेल में वक्त गुजरने का अहसास नहीं होता।

"यह ठीक रहेगा।" कमल ने जैसे अपनी सहमति दी।

फ्रांसिस खुश हो गया था।

□□

खाने के बाद कमल और सोनिया फ्रांसिस के साथ उसके केबिन में आ गए। फ्रांसिस भी अपने लिए एक खूबसूरत साथी ढूंढ लाया

था।

कमल—अपने अतीत को भूलने वाला—ताश के पत्तों को भी भूल चुका था। इसलिए उसे ताश का सबसे आसान खेल 'कोट पीस' सिखाया गया। इसी खेल में उन्होंने दोपहर से शाम कर दी। सोनिया कमल की जोड़ीदार थी। कमल से खेलने में चूक होती तो वो बाजी बड़ी चालाकी से संभाल लेती।

जाहिरा तो इंसान ताश के पत्तों से खेलता है—लेकिन हकीकतन ताश के पत्ते इंसान से खेलते हैं। बाजी शुरू होने से पहले कोई नहीं जानता कि उसके हाथ कौन सा पत्ता आने वाला है। और आने वाला पत्ता उसे 'तख्त' पर बैठाएगा या उसका 'तख्ता' कर देगा।

लेकिन कुछ अर्सा पहले यही ताश के पत्ते कमल के सामने महज एक खिलौना थे। वह अपने मुकाबले में बैठे हुए खिलाड़ियों की सोच पढ़ कर मालूम कर लेता था कि किसके पास कौन-कौन से पत्ते आए हैं, पर अपनी टेलीपैथी की शक्ति वह खो चुका था।

यह ख्याल आते ही कमल ने सोचा, "अगर मैं दोबारा अभ्यास शुरू कर दूं तो क्या मैं यह चमत्कारी शक्ति फिर से नहीं पा सकता, काश! जहाज पर मोमबत्ती उपलब्ध होती तो मुझे मेरी इस उलझन का जवाब भी अब तक मिल चुका होता।"

इस मायूसी ने उसे बेचैन कर दिया और वह पत्ते फेंकते हुए बोला—"बस—अब बोरियत हो रही है। चलो, सोनिया जरा बाहर चलते हैं।"

फ्रांसिस ने उन्हें नहीं रोका और कमल सोनिया के साथ केबिन से बाहर आ गया।

बाहर अंधेरा फैल चुका था।

कमल ने पलट कर देखा—केबिन का दरवाजा बंद हो चुका था। वह बेअख्तयार ही मुस्करा दिया था। फ्रांसिस ताश का शौकीन था। इसलिए 'ताश' के पत्ते फेंटने के लिए अंदर रह गया था। 'ताश' की एक 'नई गड्डी' उसके पास थी, इसलिए उसने बाहर आना बेकार समझा था।

कमल बाहर की खुली हवा में एक गहरी सांस लेते बोला, "चलो, आज का दिन तो किसी तरह गुजर ही गया। रात को हम सकून से सोयेंगे। इसके बाद भगवान ही जाने क्या सकून की नींद नसीब होगी या नहीं।"

सोनिया उसकी तरफ देख कर मुस्कराई। फिर उसने पूछा, "यह बच्चे वाली बात तुम्हारे दिमाग में कैसे आ गई थी?"

"बस—अचानक ही आ गई थी—वर्ना ऐसे हंगामों में तो बाप

बनने का इरादा कतई नहीं है।" कमल शोखी से बोला।

सोनिया उसके बाजू से लग गई, फिर एक गहरी सांस लेते हुए बड़ी हसरत से बोली, "मैं चाहती हूं। हां—पहले मैंने एक बच्चे के बारे में तो क्या किसी मर्द के सामीप्य के बारे में भी नहीं सोचा था। उस वक्त मुझे नहीं मालूम था कि इतनी बड़ी दुनिया में—तुम्हारे जैसे शिकस्त देने वाले मर्द से भी वास्ता पड़ेगा। अब बहुत जी चाहता है कि तुम्हारी एक निशानी हो। तुम्हारा दूसरा एक नन्हा सा रूप हो—जिसे मैं सीने से लगा कर रख सकूं।"

कमल ने उससे अपना बाजू छुड़ाया और बोला—"वाई गॉड! मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि मारधाड़ करने वाली और कदम कदम पर मौत से पंजा लड़ाने वाली सोनिया के अंदर भी एक औरत इस तरह जाग सकती है—जो पहले महबूबा और फिर दर्जन भर बच्चों के ख्वाब देख सकती है। नहीं सोनिया। इस कामना को दिल से नोंच कर फेंक दो। जब कभी हम एक घरेलू जिंदगी गुजारेंगे तब देखा जाएगा।"

सोनिया को कमल की बेरुखी पसंद नहीं आई थी। लेकिन वो कमल के लिए मुस्कराने लगी।

बहरहाल; वह रात उन्होंने सकून से सोकर ही गुजारी। पर आधा दिन बड़ी मुश्किल से कटा। पर जैसे तैसे कटा और फिर अगले दिन शाम होते ही कमल और सोनिया जहाज के निचले हिस्से में उस जगह पहुंच गए जहां मोटर बोट रखी हुई थी।

कमल ने मोटरबोट का फ्यूल चैक किया। एक बड़े टिन में फालतू पैट्रोल भी रखा हुआ था। उनके लिए खाने का सामान दो स्टेनगनें—दो रिवॉल्वर और एक लकड़ी के संदूक में गोलियों का भंडार रख दिया गया था।

मोटरबोट एक लंबे सफर के लिए बिल्कुल तैयार थी।

कमल और सोनिया अपने साथ ऐराज का ब्रीफकेस और रमना वाली अटैची उठा ही लाए थे। फ्रांसिस और उसके बाप से, सोनिया व कमल दोनों ने विदा मांगते हाथ मिलाए। जहाज के दूसरे साथियों को हाथ हिला कर अलविदा कहा—फिर मोटरबोट में आकर बैठ गए।

फ्रांसिस ने उस दरवाजे को खोल दिया जो समुद्र की तरफ खुलता था।

कमल ने इंजन स्टार्ट किया। स्टेयरिंग को संभाला और फिर धीमी गति के साथ बोट को आगे बढ़ाते हुए एकदम रफ्तार बढ़ा दी।

मोटरबोट दरवाजे के पास पहुंच कर तेजी से उछली फिर समुद्र

की सतह पर आकर तेज रफ्तार से भागने लगी।

जहाज के करीब बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थीं। यहां कमल को स्टेयरिंग कंट्रोल करने में बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा था। जब बोट समुद्र की शांत सतह पर पहुंच गई तो उसने रफ्तार को सीमित करते हुए बोट को घुमाया और जहाज की तरफ देखने लगा।

जहाज के लोग अब डेक पर पहुंच गए थे और वहां से सर्च-लाइट के जरिए रोशनी फेंक रहे थे ताकि इन्हें इस अंधेरे में दूर तक समुद्र नजर आता रहे।

सोनिया और कमल ने हाथ हिला कर आखिरी बार अलविदा कहा व फिर बोट को उस तरफ घुमा दिया जिधर कुतुबनुमा का कांटा इशारा कर रहा था यानी बोट अब दक्षिण की तरफ बढ़ रही थी।

उन्हें सर्च लाइट की रोशनी से दूर निकल कर ही पता चला कि अंधकार किसे कहते हैं। फिर ऐसा अंधकार जो जमीन पर न हो...बेकरार समुद्र के सीने पर फैला हुआ हो। अंधेरा आगे भी था और पीछे भी कहीं से एक जुगनू की चमक भी न थी। इन गहरे अंधेरों की तरह, समुद्र भी गहरा था।

सोनिया कमल के कंधे पर हाथ रखते बोली, "यहां तो कुछ नजर ही नहीं आ रहा है। रोशनी में बैठ कर मंसूबे बनाओ तो अंधेरे में अंधे सफर के खतरे याद नहीं आते। उफ ऐसा लग रहा है जैसे यह दुनिया मर गई हो। सूरज-चांद-सितारे आपस में टकरा कर खत्म हो गए हों। और हम दोनों इस सृष्टि के घोर अंधेरों में आंखें फाड़े अपने आप को भी देखने की नाकाम कोशिश कर रहे हों।" यह कह कर उसने टार्च रोशन कर दी।

इस रोशनी में उन्होंने बोट के उस डायल और कांटे को देखा जो उन्हें फासला बता सकता था। जहाज से निकलने के बाद वो अभी सिर्फ दो मील आगे बढ़े थे। बूढ़े पीटर ने समझाया था कि दक्षिण में लगभग छः मील जाने के बाद—अगर वो पूर्व की तरफ मुड़ जाएं तो फिर क़रीब पंद्रह-बीस मील के फासले पर वे तीनों छोटे-छोटे टापू दिखाई दे सकते हैं।

कमल ने सोनिया से कहा, "बस, अब टार्च बुझा दो, हमें यह टार्च सिर्फ जरूरत के वक्त ही इस्तेमाल करना चाहिए।"

सोनिया ने टार्च बुझा दी।

कुछ क्षण खामोशी से बीते। यह खामोशी अंधेरों की भयानकता को बढ़ा ही रही थी। कमल को शोखी सूझी। सोनिया उसके पीछे बैठी हुई थी। वह बोला—"सोनिया! जरा नेरे करीबं आ जाओ...अंधेरा

घट जाएगा।"

सोनिया ने पीछे से अपनी दोनों बांहें कमल की गर्दन में डाल दीं और इसके साथ ही तनहाई का अहसास मिट गया। सोनिया का स्पर्श पा कर यकीन आ रहा था कि इस अंधकारपूर्ण सृष्टि में उसके अलावा भी उसका कोई है। यूं सफर रोमांटिक हो चला।

एक घंटे बाद कमल नें उसे फिर टार्च जलाने को कहा।

टार्च की रोशनी में कमल ने दूरी बताने वाले डायल पर निगाह डाली। मालूम हुआ कि बोट छः मील से कुछ आगे निकल आई है। कमल ने बोट को दाईं तरफ मोड़ दिया और कुतुबनुमा पर नजरें जमाये रखीं। जब इस बात का यकीन हो गया कि बोट सही दिशा में जा रही है तो सोनिया ने टार्च बुझा दी।

फिर करीब दो घंटे तक वो अंधेरे में सफर करते रहे।

अचानक उन्हें दूर—बहुत दूर टिमटिमाती हुई रोशनी सी नजर आई। पहले तो वह दीए की 'लौ' की तरह नजर आती रही—कुछ आगे बढ़ने के बाद पता चला कि शोले लपक रहे हैं। जाहिर है कि समुद्र की सतह पर आग नहीं जल सकतीं थी—यकीनन किसी ने किसी टापू के किनारे पर आग जला रखी थी, इतनी सर्दी नहीं थी कि लोग आग तापने के लिए बैठ जाते।

कमल ने बोट की स्फ्तार कुछ कम करते हुए सोनिया से कहा, "इस रोशनी का क्या मकसद हो सकता है?"

"हां। मैं भी यही सोच रही हूं। शायद उन्होंने इस कोहरे में भटके हुए जहाजों या लांचों को रास्ता दिखाने के लिए यह आग जला रखी है।"

कमल ने बोट की रफ्तार बहुत ही कम कर दी।

वह कुछ सोचते हुए बोला था, "मेरी जान! ऐसा भी तो हो सकता है कि वो किसी को खास सिगनल दे रहे हों। मत भूलो कि नक्शे पर अंकित वो तीनों टापू बेनाम थे। ऐसे बेनाम टापू स्मगलरों का अड्डा बन जाते हैं।"

"अगर ऐसा है तो हम स्मगलरों के बीच फंसने वाले हैं।" सोनिया रोमांचित सी बोली।

"हम तो फंसते ही रहते हैं और फांसते भी रहते हैं, कभी शिकारी शिकार से खेलता है—कभी खुद शिकार के हाथों शिकार हो जाता है। अब देखें—हमारा क्या अंजाम होता है?"

टापू के किनारे पर प्रज्जवलित अलाव क्षण प्रति क्षण करीब आता जा रहा था। कमल बोट को दाईं तरफ मोड़ते हुए बोला, "सोनिया! मैं इस अलाव से दूर सागर तट के अंधकारमय हिस्से की तरफ बढ़

रहा हूं। तुम टार्च की रोशनी किनारे की तरफ फेंकती रहो। यूं हम जान सकेंगे कि अंधकार में कितनी मुसीबतें हमारे स्वागत के लिए छिपी हुई हैं। लेकिन जरा सावधानी से। पहले बोट पर लेट जाओ फिर हाथ को ऊंचा करने के बाद टार्च जलाना। यूं अगर किनारे से फायरिंग हुई तो तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचेगा।"

सोनिया कमल के निर्देशानुसार अमल करने लगी।

बोट अलाव की रोशनी से दूर हो गई थी। कमल अब बोट को किनारे के साथ-साथ आगे बढ़ाता जा रहा था। टार्च की रोशनी में खजूर के ऊंचे-ऊंचे पेड़ नजर आ रहे थे। एक जगह बांस के छोटे-छोटे काटेज भी नजर आए थे। इसके बाद वीरानी ही वीरानी थी।

उन्होंने एक घंटे में पूरे टापू का चक्कर काट लिया। यानी कि टापू छोटा सा ही था। वो जहां से चले थे बोट फिर वहां पहुंचने लगी तो दूर ही से अलाव की रोशनी देख कर कमल मोटरबोट को खुशकी पर ले आया।

सोनिया ने थोड़ी देर के लिए टार्च बुझा दी। कमल ने बोट का इंजन बंद कर दिया था। ऐसे में गहरे अंधेरे में कोई यह मालूम नहीं कर सकता था कि वे कितने फासले पर हैं।

थोड़ी देर तक चुपचाप बोट में बैठे अंधेरे को देखते रहे। फिर उनकी आंखें इस अंधेरे की अभ्यस्त हो गई। उनके निकट ही जो पाम के पेड़ थे वो अब मिटे-मिटे से नजर आ रहे थे।

"सोनिया!" कमल कुछ सोचते हुए बोला, "किनारे पर जो भी हैं—वो हमसे ज्यादा इन अंधेरों में देखने के अभ्यस्त होंगे। हमें यह खुशफहमी खत्म कर देनी चाहिए कि कोई हमें देख नहीं सकेगा।"

"फिर?"

"तुम यहां बैठो। मैं आगे बढ़ कर देखता हूं। मुझे यकीन है कि यहां करीब ही कोई छोटी-मोटी बस्ती भी होगी। हो सकता है हमें यहां दुश्मन की बजाए दोस्त मिलें। आगे बढ़ कर खतरा मोल लेने से ही कुछ मालूम हो सकेगा।"

"अगर ऐसी बात है तो मैं आगे बढ़ कर देखती हूं।"

"नहीं, सोनिया! क्या तुम मुझे—हाथों में चूड़ियां पहना कर बैठाना चाहती हो। प्लीज—ऐसी बातें मत करो जिससे मेरी मर्दानगी को ठेस पहुंचे।"

"आह, कमल डार्लिंग! तुम बिना सोचे समझे नाराज हो जाते हो। यह भूल जाते हो कि तुम्हारी दिलेरी और मर्दानगी ने ही तो मुझे तुम्हारे कदमों से लिपट कर रहने के लिए मजबूर किया है।

मैं तो आगे बढ़ने के लिए इसलिए कह रही हूं कि 'हवाई' से लेकर 'थाईलैंड' के बीच जितने भी टापू हैं—वहां की जुबानें मैं किसी हद तक समझती हूं। किसी से सामना होने पर मैं अनजान बन कर उनकी बातों से उनके इरादों को समझ सकती हूं।"

सोनिया ठीक कह रही थी लेकिन कमल भी तो यह गवारा नहीं कर सकता था कि वो मर्द होकर एक जगह बैठ जाए और एक औरत को अनजाने खतरों की तरफ धकेल दे। और अगर वो दोनों ही आगे बढ़ते तो यहां के वासी उनके पीछे मोटरबोट पर कब्जा कर सकते थे। यूं उनके फरार हो सकने का यह इकलौता सहारा भी हाथ से निकल सकता था।

"क्या सोच रहे हो?" सोनिया ने पूछा।

"यही कि या तो मैं अकेला जाऊंगा या फिर हम दोनों साथ चलेंगे।"

"और यह मोटरबोट?" सोनिया ने वही बात पूछी जो कमल के जहन में थी। खतरों से खेलने वाली यह औरत बड़ी तेजी से हर पहलू का जायजा ले लेती थी।

"देखो सोनिया! यह मैं जानता हूं कि तुम मुझे अकेले नहीं जाने दोगी। और तुम भी यह समझ लो कि मैं यहां बैठ कर तुम्हें खतरों से खेलने की इजाजत नहीं दूंगा। यानी एक दूसरे की हिफाजत करना हम दोनों का ही फर्ज है। मोटरबोट यहीं छोड़ दो। हम सलामत रहेंगे तो फरार होने का कोई दूसरा रास्ता ढूंढ लेंगे।"

यह तय हो जाने के बाद वो मोटरबोट को खींच कर किनारे पर एक पाम के पेड़ के पास ले आए और उसे रस्सी से बांध दिया। फिर उन्होंने अपनी-अपनी स्टेनगन कंधे से लटकाई। अटैची व ब्रीफकेस को उठाया। सोनिया ने टार्च ली। कमल ने एक लंबा सा चाकू हाथ में ले लिया।

और फिर कमल आगे बढ़ते हुए बोला—"अगर हम स्मगलरों के जाल में फंस गए तो ब्रीफकेस और अटैची का माल उनके लिए खजाना बन जाएगा। अक्लमंदी इसी में है कि हम कहीं जमीन खोद कर इन्हें छुपा दें। अगर हालात साजगार हुए तो हम इन्हें वहां से निकाल लेंगे।"

"गुड आइड़िया!" सोनिया ने सहमति दर्शाई।

वो धीरे-धीरे बातें करते हुए चारों तरफ सतर्क नजरों से देखते जा रहे थे और उन्हें अभी तक कोई प्राणी नजर नहीं आया था। सागर तट से थोड़ा दूर—जब रेतीली जमीन खत्म हो गई तो वो एक पेड़ के पास रुक गए।

कमल ने जमीन का जायजा लिया फिर उकड़ूं बैठ कर चाकू से ही जमीन खोदने लगा था। सोनिया स्टेनगन संभाले इधर-उधर टहलती रही। चाकू का फल नोकीला तेज और मजबूत था। जमीन पथरीली नहीं थी। पंद्रह मिनट की निरंतर मेहनत के बाद कमल ने एक हाथ गहरा गड्ढा खोद लिया। इसकी चौड़ाई इतनी रखी कि एक ब्रीफकेस इसमें समा सके।

अब सोनिया आगे आई। उसकी अटैची में ब्लैक-मेलिंग का जितना मवाद था उसने उसे निकाल कर ब्रीफकेस में रख दिया और ब्रीफकेस से कमल के कपड़े निकाल कर अटैची में रख दिए। फिर ब्रीफकेस को गड्ढे में रख कर उसे मिट्टी से भरने लगी।

इस बीच कमल ने चाकू की नोंक से पेड़ के तने पर एक छोटा सा क्रास बना दिया। ताकि जरूरत पड़ने पर ब्रीफकेस की जगह की निशानदेही हो सके।

जमीन बराबर करने के बाद कमल ने टार्च संभाली—सोनिया ने अटैची उठा ली और वे आगे बढ़े। उनका रुख रोशन अलाव की तरफ ही था। जल्दी ही उन्हें वह अलाव दूर से नजर आ गया। अब उसके शोले धीमे पड़ गए थे और वहां दो इंसानी साये नजर आ रहे थे।

कमल ठिठकते हुए बोला, "वो रोशनी में हैं—हमें नहीं देख सकेंगे। क्यों न हम उस तरफ बढ़े जहां बांस के काटेज नजर आए थे?"

सोनिया बोली, "पता नहीं हम अंधेरे में कहां भटक जाएं। मेरा ख्याल है अलाव के पास सिर्फ वही दो शख्स हैं। हम इन पर आसानी से काबू पा सकते हैं। फिर इनसे इस टापू के बारे में जानकारियां पा लेंगे।"

कमल की मुंडी इंकार में हिली। वो बोला, "नहीं। हम यहां किसी को छेड़ने में पहल नहीं करेंगे। खामोशी से ही मालूमात हासिल हो जाए तो बेहतर है।"

उसी वक्त वे साये अलाव के पास से हट गए और एक तरफ जाने लगे।

"यह बुरा हुआ।" कमल बड़बड़ाया, "अब हम अंधेरे में उन्हें दूर तक नहीं देख सकेंगे।"

सोनिया ने सरगोशी की, "मैंने सुना है ऐसी ऐनक का आविष्कार हो चुका है—जिससे गहन अंधकार में भी देखा जा सकता है।"

"उल्लू की आंखों से बनाई गई होगी।" कमल ने झल्ला कर कहा, "वैसे सोनिया डार्लिंग! अगर ऐसी कोई ऐनक है भी तो वह

इस वक्त तुम्हें अंधेरे में देखने के लिए नहीं मिलेगी सब्र करो। हां—भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है...

सुखमात्यन्तिकं यत्तद् बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।।

सोनिया एकदम चौंक कर बोली, "अरे! यह तो तुम शायद संस्कृत बोल रहे हो।"

कमल चकित सा ही सोचने लगा कि वो संस्कृत कैसे बोल गया था। कि क्या वो अतीत में गीता या संस्कृत को भी जानता समझता था।

सोनिया बोली, "अपने अतीत में तुमने गीता और यह संस्कृत भाषा भी पढ़ी होगी।"

कमल उत्तेजना महसूस कर रहा था। वो उत्तेजित सा बोला, "यकीनन पढ़ी होगी। यह सब मेरी गुमशुदा याददाश्त के किसी अंधेरे कोने से निकला है। पता नहीं मैं क्या था? और अब क्या बन कर भटक रहा हूं। रब मुझ पर दया करे।"

तभी सहसा कमल को अपनी गलती का अहसास हुआ, इस अंधेरे में...इस अनजानी धरती पर तो उन्हें बातचीत से परहेज करना चाहिए था।

कमल सरगोशी में बोल उठा, "बस! हमें खामोश रहना चाहिए। वर्ना अंधेरे में हम अपनी आवाज से ही पकड़े जाएंगे।"

कहते हैं कि खामोशी हजार बलाओं को टालती है। समय पर की—इस खामोशी ने उन्हें बचा लिया—क्योंकि थोड़ी दूर तक चुपचाप दबे पांव चलते रहने के बाद उन्हें किसी के बातें करने की आवाज सुनाई दी थी। कमल के लिए यह एक अजनबी जुबान थी। वो एक पेड़ की आड़ में हो गए। कमल ने सोनिया के कान में सरगोशी की—"क्या तुम समझ सकती हो?"

सोनिया ने भी सरगोशी में जवाब दिया, "जरा ठहरो। मुझे अच्छी तरह सुन लेने दो।"

बोलने की आवाजें उनके सामने से गुजरती हुई बाईं तरफ जा रही थी। अगर वे पेड़ के पीछे न छिपते तब भी वो इन्हें देख नहीं सकते थे क्योंकि वो भी कमल या सोनिया को दिखाई नहीं दे रहे थे। बस उनकी आवाज बता रही थी कि वो कहां हैं और किधर जा रहे हैं।

कमल और सोनिया भी दबे पांव उसी दिशा में बढ़ने लगे।

□□

सोनिया बड़ी तवज्जो से उनकी बातें सुनती जा रही थी। कुछ

दूर जाने के बाद इन्हें रुकना पड़ा। क्योंकि सामने बांस के एक काटेज की खिड़की से केरोसिन लैम्प की रोशनी बाहर आ रही थी। जिनके पीछे वो यहां तक आए थे—वो दोनों काटेज के दरवाजे की तरफ जा रहे थे।

और अब सोनिया ने कमल को बताया, "वो दोनों हमारे ही बारे में बातें कर रहे थे। वो इतनी देर तक हमारी मोटरबोट का इंतजार कर रहे थे। उनका ख्याल था कि अलाव के शोले देख कर हम उनकी तरफ आएंगे।"

"उनके ऐसा सोचने की कोई वजह?"

"हां। वे हमें अपना आदमी समझ रहे थे। उन्हें किसी मोटरबोट का ही इंतजार था। अब वे इस काटेज में अपने किसी चीफ को रिपोर्ट देने गए हैं।"

कमल कुछ देर सोचता रहा। उसका ख्याल ठीक निकला कि ऐसे छोटे वीरान टापुओं पर स्मगलर पाये जा सकते हैं। रात के अंधेरे में सागर तट पर अलाव की रोशनी का सिगनल किसी मोटरबोट का इंतजार...इस बात का सबूत था कि वहां शरीफ आदमियों से सामना नहीं होगा।

सोनिया बोली, "तुम्हारा शुब्हा ठीक निकला कमल! ये कमबख्त स्मगलर मालूम होते हैं। अब हमें क्या करना चाहिए?"

"जरा इंतजार करना होगा। हम यथासंभव इसी तरह छिप कर यह मालूम करने की कोशिश करेंगे कि यहां कितने लोग हैं?"

उन दोनों की निगाहें, इस बीच, काटेज के दरवाजे पर ही टिकी रही थीं। काटेज का दरवाजा खोल कर एक कद्दावर शख्स बाहर आया था और चुपचाप खड़ा इन आने वालों की बातें सुनने लगा था। खुले दरवाजे से लैम्प की रोशनी बाहर आ रही थी। और वो इस बीमार-मंलगजी सी रोशनी की तरफ पीठ किए खड़ा था। इसलिए उसका चेहरा नजर नहीं आ रहा था। लेकिन उसके कद-काठ व बलिष्टता से यह पता चल रहा था कि वो कोई हाथी का बच्चा है।

फिर दूर से ही उसकी गुर्राहट सुनाई दी। लेकिन उसने क्या कहा यह समझ नहीं आया।

सोनिया फुसफुसाई, "साला आदमी है कि गैंडा! कैसा जंगली जानवर की तरह गुर्रा रहा है।"

वो गैंडा पलट कर काटेज के अंदर गया। फिर कुछ क्षणों बाद ही लैम्प बुझ गया। काटेज के अंदर और बाहर एकदम से गहन अंधकार छा गया।

अब इन्हें कुछ नजर नहीं आ रहा था। कमल ने सोनिया से

कहा—"तुम इस पेड़ के पीछे रहो। मैं दूसरे पेड़ के पीछे जा रहा हूं। मेरा ख्याल है इस तरह भी हम बिछड़ेंगे नहीं। तुम मेरी बू सूंघ कर मेरे पास आ सकती हो।"

"हां। तुम जाओ। यह अंधेरे मुझे तुम्हारे पास पहुंचने से नहीं रोक सकते।"

कमल दबे पांव चलता हुआ—अंधेरे में ठोकरें खाता हुआ—सोनिया से जरा दूर एक पेड़ के पीछे पहुंच गया।

अब उन लोगों के कदमों की आहटों से या उनकी बातों से मालूम हो सकता था कि वे क्या करने वाले हैं। कमल लगभग दस मिनट तक चुपचाप पेड़ के पीछे खड़ा रहा।

अंधेरी रात, खामोशी और तनहाई में यह दस मिनट दस सालों की तरह गुजरे, कमल ने बेजार होकर सोचा कि अब कोई खतरा मोल लेना चाहिए—वर्ना यूं ही खड़े-खड़े जिंदगी बीत जाएगी। उसने काटेज की तरफ जाने व तांक-झांक का मन बनाया। पर तभी उसे पीछे की तरफ से आवाज सुनाई दी—"अजनबी दोस्तों। तुममें से एक के हाथ में टार्च है—उसे रोशन न करना वर्ना मैं गोली चला दूंगा।"

कमल फौरन ही घूम कर उस पेड़ के दूसरी तरफ चला गया।

आवाज फिर उभरी, "मुझसे छिपना बेकार है। इसलिए कि मैं दिन के उजाले की तरह रात के अंधेरे में भी देख लेता हूं।"

अब कमल उसे उल्लू तो कह नहीं सकता था—क्योंकि उल्लू अंग्रेजी नहीं बोलते। फिर हैरानी की बात यह थी कि इतने गहरे अंधेरे में उसने कमल को अपनी पोजीशन बदलते देख लिया था। आवाज से ही महसूस हो रहा था कि वह बहुत दूर है और ना जाने इतनी दूर से कैसे देख रहा था।

जवाब न पाकर उसकी आवाज फिर सुनाई दी, "लड़की! मैं तुम्हें भी देख रहा हूं। तुम पेड़ के पीछे छिपी हुई हो लेकिन तुम्हारी स्टेनगन दिखाई दे रही है। और अटैची जमीन पर रखी हुई है।"

कमल आश्चर्यचकित सा ही उसकी बातें सुन रहा था। अविश्वसनीय ही था कि कोई इंसान ऐसे घटाटोप अंधेरे में यूं साफ-स्पष्ट देख सके। कहीं इसने अंधेरे में देखने वाली पावरफुल ऐनक तो नहीं लगा रखी—जिसका जिक्र अभी कुछ देर पहले सोनिया ने मजाक में किया था।

कुछ सोच कमल ने पूछा, "तुम कौन हो? अगर तुम अंधेरे में देख सकते हो तो हमें भी टार्च जला कर देखने दो।"

इस बार कमल को अपने दाईं तरफ जरा दूर से आवाज सुनाई

दी—"लगता है कि तुम अभी बच्चे हो या फिर मुझे नादान बच्चा समझ रहे हो। तुम्हारे हाथों में स्टेनगन देख कर कोई अहमक भी खुद को तुम्हारे सामने जाहिर नहीं करेगा। अगर तुम दोस्त बनना चाहते हो तो फिर स्टेनगन फेंक दो। और चुपचाप अपनी बेबी फ्रैण्ड के साथ काटेज में चले आओ।"

कमल तनिक शुष्कता के साथ बोला, "हथियार इसलिए नहीं उठाए जाते कि दुश्मन के कहने में आकर उसे फेंक दिया जाए। पहले हम यह यकीन करना चाहते हैं कि वाकई हम से दोस्तों जैसा सलूक किया जाएगा। और यकीन इस तरह किया जा सकता है कि दोस्ताना अंदाज में हम सब के पास हथियार हों।"

जवाब में कहकहा उभरा।

"तुम तो यूं शर्त मनवा रहे हो—जैसे बहुत बड़ी फौज के साथ हम पर हमला करने आये हो। नादानों जैसी बातें न करो। तुम्हारी भलाई इसी में है कि हथियार फेंक कर वही करो जो मैं कहता हूं—यानी काटेज में चले आओ।"

कमल बोला, "तुम्हारी बातचीत का अंदाज दोस्ताना नहीं आदेशपूर्ण है। और मैं किसी का हुक्म मानने के लिए पैदा नहीं हुआ। मैं दोस्ती की शर्त पर ही हथियार अपने से अलग कर सकता हूं। हमारे कबीले का दस्तूर है जब विरोधियों के बीच कोई बात नहीं बनती तो हम अपना रूमाल एक जगह रख देते हैं।"

सुनने में कमल की यह शर्त बड़ी बेतुकी थी। लेकिन कमल को यकीन था कि सोनिया उसकी बातों का आशय समझ रही थी।

अजनबी ने कहीं दूर से पूछा, "तुम्हारे कबीले का यह कैसा दस्तूर है? अगर हम अपना अपना रूमाल एक जगह रख देंगे तो क्या इससे दोस्ती हो जाएगी?"

"हां। हमारा यही विश्वास है कि रूमाल से रूमाल मिल जाए तो हाथ से हाथ और दिल से दिल भी मिल जाते हैं।"

उसका कहकहा सुनाई दिया।

"लगता है कि तुम किसी बहुत ही प्राचीन जंगली कबीले से ताल्लुक रखते हो। बहरहाल, तुम्हारा यह विश्वास मेरे लिए महत्वहीन है इसलिए मैं इसे माने लेता हूं। तुम इंतजार करो मैं अभी बताऊंगा कि मैंने अपना रूमाल कहां रखा है।"

खेल शुरू हो गया था।

कमल इंतजार करने लगा। वैसे इतनी देर तक उससे बातें करने के बाद इस बात का अंदाजा तो हो ही गया था कि यह अफलातून उन्हें अकेला ही कंट्रोल करना चाहता है। शायद इसलिए कि उसके

साथी उसकी तरह अंधेरे में देख नहीं सकते। यानी कि आज की रात सिर्फ इसी से ही निपटना होगा।

थोड़ी देर बाद अजनबी की आवाज फिर सुनाई दी—"तुम्हारे और तुम्हारी बेबी-फ्रेण्ड के ठीक सामने करीब पंद्रह कदम के फासले पर एक पेड़ है। मैंने अपना रूमाल वहां रख दिया है। जाओ—अब तुम मेरे रूमाल से अपना रूमाल मिला लो। मैं देखना चाहता हूं कि तुम्हारे विश्वास में कितनी सच्चाई है?"

कमल ने सोनिया को आवाज दी। उसे इशारों में कहा, "जाओ, सोनिया! हमारे दस्तूर के मुताबिक पहले औरत को वह रूमाल उठाना चाहिए। उसे सूंघ कर देखो—कहीं उसमें रूमाल वाले के पसीने की बू तो नहीं है?"

यह कह कर कमल इस बात की इंतजार करने लगा कि देखें अब सोनिया क्या करती है? यूं तो कमल ने स्पष्ट तौर पर इशारा दे दिया था कि इस अंधेरे में अब वही अपनी विशेषताओं का प्रदर्शन कर सकती है।

तभी कमल को उस अजनबी की आवाज़ सुनाई दी, "तुम्हारी यह जोड़ीदार बड़ी समझदार है। शायद कहीं गोरिल्ला जंग में हिस्सा ले चुकी है। वो स्टेनगन हाथ में लिए जमीन पर औंधी लेटी हुई बड़ी फुर्ती से रूमाल की तरफ रेंगती जा रही है, मैं उसकी एक-एक हरकत को देख रहा हूं, अब वो रूमाल उठा कर पेड़ के पीछे चली गई है। हां-हां छुप कर देख लो। सूंघ लो—मैंने जो खुशबू लगा रखी है वही खुशबू तुम्हें रूमाल में मिलेगी।"

इसके जवाब में सोनिया की आवाज सुनाई दी, "वाकई बड़ी मोहक खुशबू है। अब यह खुशबू तुम्हारे हाथ से रिवॉल्वर गिरा देगी। अगर तुम अंधेरे में देख सकते हो तो मैं भी तुम्हें अंधेरे में देखकर फायरिंग कर सकती हूं। चलो, अब संभल जाओ।"

इसके साथ ही उसने स्टेनगन का एक ब्रस्ट मारा। उस अजनबी की चीख और गुर्राहट सुनाई दी। उसके चीखने के दौरान कमल ने, सोनिया के दौड़ते हुए कदमों की आवाज सुनी। जिधर से चीखने की आवाज सुनाई दी थी वो उधर ही तेजी से दौड़ती हुई गई। फिर एक जगह कदमों की आवाज थम गई।

अजनबी गुर्रा कर कह रहा था—"सुअर की बच्ची। मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। तुम लोगों ने मेरी दोस्ती को ठुकरा कर मुझे धोखा दिया है।"

कमल पेड़ के पीछे से चिल्ला कर बोला, "बच्ची के सुअर बाप। यही हमारे कबीले का दस्तूर है। अंधेरे में तुम्हारे पास एक दांव

था—इसलिए हमारे कबीले की बच्ची भी अपना एक दांव इस्तेमाल कर रही है। इसे धोखा नहीं दूरदर्शिता कहो। अब तुम जहां जाओगे—वहीं तुम पर गोलियां बरसेंगी।"

कुछ देर तक खामोशी रही, फिर अजनबी ने किसी पेड़ के पीछे से कहा—"मैं तुम्हारे फरेब में आने वाला नहीं। इस छोकरी ने इतफाक से ही वहां फायरिंग की जहां मैं खड़ा हुआ था। यह नामुमकिन सी बात है जो लड़की अंधेरे में अब तक अंधी बनी हुई थी अब वह अंधेरे में देखकर फायर कर सकती है।"

"अच्छा।" कमल के लहजे में व्यंग भर आया था, "तुम जरा अपनी जगह से इधर उधर हो कर देख लो। अब यह छोकरी गोलियों की जुबान से बात करेगी।"

कुछ देर के लिए फिर खामोशी छा गई। और फिर रात के अंधेरे में धप्प की आवाज सुनाई दी। सोनिया ने कहा—"तुमने मुझे सुअर की बच्ची कहा है—इसलिए मैं तुम्हें डैडी कहती हूं। प्यारे डैडी—तुम एक पत्थर फेंक कर मुझे यह धोखा नहीं दे सकते कि तुमने अपनी जगह बदल ली है। मैं साफ देख रही हूं तुम अभी भी वहीं अपनी जगह खड़े हुए हो।"

सोनिया उसे यही आभास देने की कोशिश कर रही थी कि उसकी तरह वो भी अंधेरे में देख सकती है। हालांकि वह सिर्फ बू सूंघ कर ही उसकी मौजूदा पोजीशन को समझ रही थी।

वह फिर बोली, "सुनो! मैं ज्यादा देर इंतजार नहीं करूंगी। दस तक गिनूंगी। अगर तुमने अपना रिवॉल्वर मेरी तरफ नहीं फेंका तो मैं गोलियां बरसाते हुए तुम्हारे सामने पहुंच जाऊंगी। तुम्हें अपना रिवॉल्वर इस्तेमाल करने का मौका नहीं मिलेगा। एक...दो... तीन...चार।"

वह रुक-रुक कर गिनने लगी।

गिनती छः तक पहुंची तो अजनबी ने फैसला कर लिया कि रिवॉल्वर नहीं फेंकेगा। वो यही समझ रहा था कि उससे खेला जा रहा है...कि उसे बेवकूफ बनाया जा रहा है। लिहाजा—सोनिया के 'सात' कहते ही वह काटेज की तरफ भागने लगा।

उसके दौड़ते हुए कदमों के साथ ही फायरिंग शुरू हो गई।

फिर उसकी चीख सुनाई दी। धप्प से उसके गिरने की आवाज आई तो कमल ने आवाज की दिशा में टार्च रोशन कर दी।

वह जमीन पर औंधा पड़ा तड़प रहा था। रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट कर उससे जरा दूर एक छोटे से पत्थर के पास पड़ा हुआ था। वह जख्मी दरिन्दे की तरह गुर्राते हुए इधर-उधर देख रहा था।

जब टार्च रोशन हुई और उसे रिवॉल्वर नजर आया तो वह जमीन पर घिसटता हुआ रिवॉल्वर की तरफ बढ़ने लगा।

इस बीच कमल भी बढ़ता हुआ उसके करीब पहुंच गया था।

कमल ने उसके मुंह पर एक ठोकर मारी। वो जंगली भैंसे की तरह डकराता हुआ एक तरफ उलट गया। कमल ने टार्च बुझा कर रिवॉल्वर उठा लिया।

टार्च बुझने के बाद जब दोबारा अंधेरा छा गया तब कमल ने एक खास बात नोट की। उस अजनबी की आंखें अंधेरे में जंगली बिल्ले की तरह चमक रही थीं। कमल को लगा यह शख्स यकीनन अंधेरे में देखने की कुदरती क्षमता रखता है। उसकी आंखें साधारण आंखें नहीं थीं। कमल उसे एक हल्की सी ठोकर मारते बोला—"उठो। जंगली बिल्ले! और अपने आदमियों से कहो कि वो काटेज में लैम्प रोशन कर दें।"

वो दर्द की शिद्दत से कराहते हुए बोला, "मेरी दोनों टांगों पर गोलियां लगी हैं, मैं उठ नहीं सकता।"

"कोई बात नहीं। पहले अपने आदमियों से लैम्प रोशन करने को कहो," कमल लापरवाही से बोला, "फिर वो तुम्हें उठा कर काटेज में ले जाएंगे।"

वो दोनों हाथ जमीन पर टेक कर बैठ गया। फिर ऊंची आवाज में 'लोकल' जुबान में कुछ कहने लगा। कमल आश्वस्त था कि सोनिया यह भाषा समझ रही होगी। अपने साथियों को कुछ कहने के बाद वो कमल से संबोधित हुआ—"मिस्टर! यहां के लोग अंग्रेजी नहीं जानते। इसलिए मैंने उन्हें उनकी जुबान में समझा दिया है कि वो तुम्हारे हुक्म की तामील करें, मेरा ख्याल है कि तुम यह जुबान समझते होवोगे?"

"नहीं। हम यह जुबान नहीं जानते। पता नहीं तुमने इस जुबान में हमें कितनी गालियां दी हैं।"

"मैंने तुम लोगों के खिलाफ कुछ नहीं कहा है। मुझ पर भरोसा करो।"

"जरूर! हम तो भरोसा कर रहे हैं—मगर यह भी समझ लो कि हमारा यह विश्वास आइंदा भी तुम्हें कितना महंगा पड़ेगा।"

दूर काटेज में जब लैम्प रोशन हो गया तो सोनिया ने कमल को बताया—"अब इसके आदमी इसे उठाने आएंगे। हमें इससे कुछ दूर खड़े रहना चाहिए। कमल तुम इधर चले आओ।"

कमल सोनिया के पास आ गया।

सोनिया उस जख्मी से जरा दूर हट कर आहिस्ता से बोली, "यह

कमबख्त स्थानीय जुबान में अपने आदमियों से कह रहा था कि लैम्प जलाने से पहले दो आदमी स्टेनगनें लेकर काटेज के अंदर छिप जाएं। लैम्प रोशन हो चुका है। दो आदमी यकीनन वहां छिपे हैं। अब बताओ क्या करना चाहते हो?"

कमल ने काटेज की तरफ देखा।

वहां से चार आदमी, स्ट्रेचर लेकर अपने इस जख्मी चीफ को उठाने आ रहे थे।

कमल धीमे से बोला, "करना क्या है? उन दो चूहों को बिल से निकालना है। और हां—इन पर यह जाहिर न करना कि तुम इनकी जुबान समझती हो। हम इस जख्मी अफलातून को काटेज के बाहर ही रोक लेंगे। तुम यही जाहिर करना कि तुम अंधेरे में ही नहीं रोशनी में भी छिपे हुए लोगों को देख लेती हो।"

उस जख्मी गैंडे को अब स्ट्रेचर में डाला जा रहा था। कमल और सोनिया ने उन्हें स्टेनगन से कवर कर लिया।

कमल बोला, "स्ट्रेचर उठा कर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ो। अगर किसी ने कोई होशियारी दिखाने की कोशिश की तो सभी मारे जाओगे।"

वे स्ट्रेचर उठा कर आगे बढ़ने लगे। काटेज के बरामदे में पहुंच कर सोनिया ने अचानक हुक्म दिया—"ठहर जाओ। स्ट्रेचर यहीं बरामदे में रख दो।"

कराहता हुआ जख्मी गैंडा, सवालिया नजरों से सोनिया की तरफ देखने लगा।

सोनिया मुस्कराते हुए बोली, "तुम सिर्फ अंधेरे में छिपे हुए दुश्मन को देख सकते हो। लेकिन मैं अपने कबीले की चमत्कारिक शक्तियों के जरिए दुश्मन के रूमाल के सदके रोशनी में छिपे हुए दुश्मन को भी देख सकती हूं, इस काटेज के अंदर तुम्हारा एक नहीं दो आदमी छिपे हुए हैं। अगर वे फौरन ही बाहर नहीं आए तो यह स्ट्रेचर ही तुम्हारी अर्थी बन जाएगी। मैं तुम्हें गोलियों से भून दूंगी।"

वो बड़ी बेबसी से सोनिया की स्टेनगन की तरफ देखने लगा। उसका मुंह हैरत से खुला हुआ था कि यह छोकरी है क्या बला?

सोनिया ने उसके खुले मुंह में स्टेनगन की नाल ठूंसते हुए कहा, "सोचते क्या हो? क्या कहना चाहते हो?"

वह आतंकित होकर इनकार में सिर हिलाने लगा। सोनिया ने उसके मुंह से नाल निकाल ली तो उसने उखड़ी-उखड़ी आवाज में कहा—"जार्ज...माईक...तुम दोनों फौरन अपना हाथ उठा कर बाहर आ जाओ।"

केबिन में आहटें उभरी और कुछ ही क्षणों में सुर्ख चेहरों वाले अंग्रेज अपने हाथ उठाए बाहर आ गए। और अब कमल ने उन लोकल वासियों से कहा कि वे स्ट्रेचर अंदर ले चलें।

कमल के इशारे पर उन्होंने यंत्रवत ही स्ट्रेचर उठाया और आगे बढ़ गए।

❑❑

कमल ने माईक और जार्ज को वहीं रोक लिया था।

उसने उन दोनों की तलाशी ली। एक की जेब से चाकू और दूसरे की जेब से छोटा सा पिस्तौल निकला। उनके हथियार हथिया लेने के बाद कमल ने हुक्म दनदनाया—"तुम दोनों यहीं खड़े रहो। अगर कोई चालाकी दिखाने की कोशिश की तो हम तुम्हारे बॉस को मार डालेंगे।"

उनमें से एक ने कहा, "चीफ बहुत जख्मी है, हमें मरहम पट्टी करने दो।"

"जरूर करना। हम तुम्हें अभी अंदर बुला लेंगे।"

कमल उन्हें वहीं छोड़ भीतर चला गया। सोनिया उन दोनों को स्टेनगन के निशाने पर लिए खड़ी रही।

अंदर वो चारों स्थानीय वाशिन्दे—अपने जख्मी चीफ को स्ट्रेचर से उठा कर पलंग पर लिटा रहे थे। कमल ने उनमें से एक को अपनी तरफ आकर्षित किया और इशारों की जुबान में समझाया कि केबिन में अगर दूसरा लैम्प हो तो उसे रोशन किया जाए।

कमल के आदेश का तत्काल पालन हुआ।

कमल ने उसे लैम्प लेकर अपने आगे-आगे दूसरे कमरे में चलने का इशारा किया। काटेज दो कमरों का था। कमल ने दूसरे कमरे को भली-भांति देखने के बाद किचन और बाथरूम को भी देखा। काटेज के पिछली तरफ खुलने वाले दरवाजे को अंदर से बंद कर दिया। फिर बाहर वाले कमरे में आकर उन दोनों स्टेनगनों को अपने कब्जे में किया जो जार्ज और माईक वहां छोड़ गए थे।

अब उसने सोनिया को आवाज दी—"उन दोनों को भीतर ले आओ, वो अपने हाथों से इसकी मरहम पट्टी करेंगे।"

वो दोनों भीतर आ गए। सोनिया स्टेनगन लेकर दरवाजे पर खड़ी हो गई।

उन दोनों में से एक बोला, "फर्स्ट-एड बाक्स अंदर वाले कमरे में है। मैं लेकर आता हूं।"

वो तेजी से आगे बढ़ा पर कमल ने अपनी स्टेनगन की नाल उसके सीने पर रखकर उसे पीछे हटाया।

"इतनी बेकली न दिखाओ। किसी लोकल वाशिन्दे को बोलो। फर्स्ट एड बॉक्स वो लेकर आएगा।"

उसने कंधे उचकाए व एक लोकल आदमी को फर्स्ट एड बॉक्स लाने के लिए कहा। जाने यहां की यह लोकल भाषा कैसी थी कि वो सिर्फ एक फर्स्ट-एड बाक्स लाने के लिए काफी देर तक बोलता रहा था।

वो शख्स अंदरुनी कमरे में चला गया तो कमल ने पूछा, "यह तुम उसे कौन-सी लंबी-चौड़ी बात समझा रहे थे?"

"कुछ नहीं। तुम खामख़ां शक कर रहे हो। मैं उसे समझा रहा था कि फर्स्ट-एड बाक्स कहां रखा है ताकि उसे ज्यादा तलाश न करना पड़े।"

कमल ने सोनिया की तरफ देखा, वह निश्चिंत व संतुष्ट नजर आ रही थी। कमल भी बेफिक्र हो गया। वह शायद थोड़ी देर में ही दूसरे कमरे से फर्स्ट-एड बाक्स उठा लाया।

माईक उसे लेने के लिए फौरन आगे बढ़ा। कमल ने ललकार कर कहा, "हाल्ट! मैं तुम्हें पहले भी समझा चुका हूं कि ज्यादा चालाकी न दिखाओ। चलो—पीछे हट जाओ।"

वो पीछे हटता गुस्से से बोला, "एक इंसान जख्मों की तकलीफ से तड़प रहा है। उसे फौरन मेडिकल एड चाहिए और तुम खामाखां वक्त जाया कर रहे हो।"

"वक्त तुम जाया कर रहे हो।" कमल भी शुष्कता से बोला, "अगर अपने साथी की मदद करना चाहते हो तो बिना चूं-चपड़ के दीवार की तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ।"

वो होंठों ही होंठों में बड़बड़ाता हुआ दीवार की तरफ मुंह करके खड़ा हो गया। उस आदमी ने फर्स्ट एड बाक्स पलंग के सिरहाने वाली मेज पर रख दिया था। कमल ने आगे बढ़ कर उसे खोला। ऊपरी खानों में विभिन्न दवाइयां भरी हुई थीं। पर जब कमल ने उसके निचले खाने में हाथ डाल कर टटोला तो एक रिवॉल्वर उसके हाथ में आ गया, कमल के होंठों पर मुस्कान नाच गई। उसने पीछे हट कर रिवॉल्वर को खाली किया—गोलियां अपनी जेब के हवाले की व खाली रिवॉल्वर एक कोने में उछालते हुए कहा—"चलो—अब इसकी मरहम पट्टी करो।"

माईक और जार्ज ने उसे खा जाने वाली निगाहों से देखा—फिर आगे बढ़ कर अपने बॉस की एक-एक टांग संभाल ली और मरहम पट्टी करने में जुट गए।

कमल ने पूछा, "तुम्हारे इस गैंडे बॉस का क्या नाम है?"

"यह मिस्टर बोल्डमैन हैं।"

"इस टापू पर तुम कुल कितने आदमी हो।"

"आदिवासी लगभग पचास हैं और हम तीन हैं।"

कमल ने जार्ज की गर्दन से स्टेनगन की नाल टिका दी, "मुझसे झूठ बोलोगे तो मैं तुम्हें जहन्नुम में पहुंचा दूंगा। सच-सच बताओ—तुम गोरी चमड़ी वालों की संख्या कितनी है?"

"मैं सच कह रहा हूं—हम सिर्फ तीन हैं।"

कमल ने स्टेनगन के दस्ते से उसकी कनपटी पर प्रहार किया। वो बिस्तर से उलट कर फर्श पर जा पड़ा। अब कमल माईक से संबोधित हुआ—"सागर तट पर वह अलाव क्या तुमने हमें अपना रिश्तेदार समझ कर जला रखा था। वह सिगनल किसके लिए था?"

माईक ने सहमी नजरों से कमल को देखते पूछा—"क्या तुम समुद्री पुलिस हो?"

"नहीं। हम भटके हुए मुसाफिर हैं। तुम मेरे सवाल का जवाब दो।"

माईक ने एक नजर अपने साथी जार्ज पर डाली, जो होश में आ रहा था। फिर बोला, "हम कुल छः आदमी हैं। हमारे बाकी तीन साथी मोटरबोट में आने वाले थे।"

"फिर वो आए क्यों नहीं?"

"मैं क्या कह सकता हूं। जब वो आएंगे तो वजह मालूम होगी। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वो एक रात न आएं तो फिर दूसरी रात को पहुंचते हैं।"

"वो किस देश से आएंगे?"

वह जवाब देने से हिचकिचाने लगा। उसने अपने बॉस बोल्डमैन की तरफ देखा।

बोल्डमैन कमजोर आवाज में बोला, "हमारा धंधा हांगकांग से होता है।"

"हांगकांग से तुम क्या स्मगल करते हो?"

"यह जान कर तुम क्या करोगे—तुम पुलिस के आदमी तो हो नहीं।"

"यह मैं सिर्फ अपनी जानकारी के लिए पूछ रहा हूं। तुम दोस्त बनना चाहते हो। हो सकता है हम दोस्त बन कर तुम्हारे काम आएं।"

बोल्डमैन ने कुछ देर सोचने के बाद जवाब दिया, "मैं भी तुमसे दोस्ती करना चाहता हूं। तो सुनो—हम थाईलैण्ड से अफीम ले कर हांगकांग जाते हैं। हांगकांग में इंडिया से जो चरस आती है—उसे हम फारमोसा और जापान की तरफ स्मगल करते हैं।"

कमल बोला, "ओह! यानी कि तुम यहां बैठ कर फारमोसा और जापान दोनों की समुद्री पुलिस से निपटते रहते हो।"

"दोनों से नहीं।" बोल्डमैन ने बताया, "फारमोसा पुलिस से हमारी सैटिंग है। मगर जापान की पुलिस बड़ी सख्त है। उससे अक्सर टकराव होता रहता है।"

उसकी दोनों टांगों की मरहम पट्टी हो चुकी थी। कमल के आदेश पर एक स्थानीय व्यक्ति एक बड़ी सी मजबूत रस्सी ले आया। कमल ने अपनी स्टेनगन सोनिया के पास रख कर जार्ज और माईक के हाथ-पैर इस रस्सी से बांध दिए।

"इन्हें घसीट कर बाथरूम में लें जाओ।" कमल ने लोकल आदमियों को हुक्म दिया।

बोल्डमैन बोल उठा, "यह क्या हो रहा है मिस्टर! तुमने अभी दोस्ती की हामी भरी थी।"

"हम दोस्ती ही निभा रहे हैं।" कमल बोला, "और दोस्ती के तुम्हारे अंदाज भी हमसे छिपे नहीं हैं। याद करो—अपनी अंधेरे में देख पाने की खूबी से फायदा उठा कर तुमने हमें दोस्ती का फरेब देना चाहा। दूसरी बार हम पर काबू पाने के लिए तुम्हारे दो आदमी इस काटेज में छिप गए। तीसरी बार बाजी अपने हाथ में लेने के लिए फर्स्ट-एड बाक्स में रिवॉल्वर मंगवाया गया। जब दोस्ती के उसूल यही हैं तो हमें भी इन्हीं उसूलों पर चलने दो।"

उसे जवाब दे कमल बाथरूम की तरफ बढ़ गया। जार्ज अभी तक नीम बेहोशी की अवस्था में था। माईक लोकल आदमियों को उनकी जुबान में कुछ कह रहा था—शायद अपने हाथ-पांव खोलने के लिए कह रहा था। वो लोग सहमे हुए एक तरफ खड़े हुए थे।

कमल के हाथ में गन थी—सो हुक्म तो उसी का चलना था।

कमल के आदेश पर उन दोनों को घसीट कर बाथरूम में पहुंचाया गया। फिर उनके मुंह में कपड़े भी ठूंस दिए गए और ऊपर से पट्टी बांध दी गई।

फिर कमल ने बाथरूम के दरवाजे को बाहर से बंद कर दिया।

कमल पलट कर कमरे में आया तो बोल्डमैन आंखें बंद किए पड़ा था।

कमल ने पूछा, "यह तुम बार-बार आंखें क्यों बंद कर लेते हो। क्या तकलीफ ज्यादा हो रही है?"

"हां। तकलीफ बहुत है।"

"अपनी आंखें खोलो।" कमल कुछ सोच कर बोला, "मैं इन्हें देखना चाहता हूं।"

उसने आंखें खोल दी, मगर ज्यादा देर तक खुली नहीं रख सका। उसकी आंखें फिर बंद हो गईं तो कमल बोला—"उल्लू रोशनी में नहीं देख सकता। इसलिए तुम भी लैम्प की रोशनी में आंखें बंद कर लेते हो। मुझे बताओ प्यारे कि तुम दिन के वक्त कैसे देखते हो?"

"मैं दिन के वक्त काले शीशों की ऐनक लगाए रहता हूं।"

"ओह! बड़ी अजीब है तुम्हारी आंखें।" कमल मुस्कराया, "मैं इन्हें निकाल कर किसी वैज्ञानिक को तर्जुबे के लिए तोहफा दूंगा।"

उसने घबरा कर आंखें खोल दीं, "न...न...नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते। यह जुल्म है। किसी जिंदा इंसान की आंखें निकाल कर एक्सपेरीमेंट नहीं किया जाता।"

"तुम अपनी आंखें निकाल कर तर्जुबे के लिए दोगे तो सोचो, इससे मानवता का कितना भला होगा। हो सकता है कि डॉक्टर वगैरह प्रयोग के बाद आपरेशन के जरिए दूसरों की आंखों में भी यही खासियत पैदा कर दें। इस तरह सारी दुनिया में तुम्हारा नाम अमर हो जाएगा।"

कमल ने लोकल-वाशिंदों से कहा कि वो बोल्डमैन के दोनों हाथ पलंग की पट्टी से बांध दे। यह कहते हुए उसने अपनी जेब से चाकू भी निकाल लिया था। कमल इस गैंडे को दिमागी तौर पर दहशतजदा करने का मन बना चुका था। इन लोगों को अल्पकालिक खौफजदा करके ही इनसे सच्चाइयां जानी जा सकती थीं।

कमल के बदले तेवर देख बोल्डमैन बोल उठा, "नहीं। मेरी आंखें न निकालो। मैं सच-सच बता देता हूं। मेरी आंखें आम इंसानों जैसी ही हैं। यह...यह जो तुम देख रहे हो—ये सब स्पेशल किस्म के 'आई-लैंस' हैं जिन्हें मैं रात के वक्त अपनी आंखों में सैट कर लेता हूं।"

कमल और सोनिया एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कराए।

सोनिया अपनी कमर पर हाथ रखते बोली, "क्यों डियर! मैंने कहा था ना। ऐनक न सही—लैंस ही सही, साईंसदानों ने अंधेरे में अंधेपन का इलाज ढूंढ निकाला है।"

कमल बोल्डमैन से बोला—"जरा यह 'आई-लैंस' अपनी आंखों से निकालो। मैं देखना चाहता हूं।"

कमल ने दो आदमियों से कहा कि वो अपने बॉस के हाथ खोल दें।

बोल्डमैन बेबस और मजबूर था। अपने हाथ खुलने के बाद—उसने वे 'आई लैंस' अपनी आंखों से निकाल कर कमल की

तरफ बढ़ा दिए। कमल ने उन्हें हाथ में लेकर उन्हें रूमाल से साफ किया।

कमल पहले भी 'आई लैंस' इस्तेमाल कर चुका था—करता रहा था—और भूली याददाश्त के बावजूद भी यह सब उसके अचेतन में था। थोड़ी सी कोशिश के बाद ही उसने लैंस अपनी दोनों आंखों में सैट कर लिए। और फिर दरवाजे पर आ कर वो बाहर दूर तक फैले हुए अंधेरे में देखने लगा।

वाकई इंसान का दिमाग कैसे-कैसे अनूठे आविष्कार कर लेता है। 'आदम की औलाद से शैतान भी पनाह मांगता है। अगर दूर तक फैले हुए इस अंधकार में कहीं कोई शैतान छिपा होता तो अपना कमलकान्त उसे भी देख लेता, क्योंकि जहां तक नजर जाती थी—उसे हर चीज स्पष्ट तौर पर उजागर नजर आ रही थी। उसकी आंखों के सामने दिन का सा उजाला तो नहीं था—मगर दूर तक हल्की-हल्की नीली-नीली सी रोशनी थी। ठीक वैसे ही जैसे बेडरूम में हल्की स्वप्निल सी नीली रोशनी होती है।

सोनिया ने उसके पास आ कर पूछा, "क्या तुम्हें वाकई नजर आ रहा है, जानेमन?"

"हां। बहुत ही खूबसूरत मंजर है मेरी आंखों के सामने। लगता है कि पूरे टापू में शयन-कक्ष की तरह हल्की नीली राजदार रोशनी फैली है।"

"गुड। यह तो बड़ी कारआमद चीज हाथ लग गई।" वह बोली, "अब सोचो आगे क्या करना है?" कमल ने उसे अपने करीब खींच कर आहिस्ता से कहा, "जानेमन। अब तो जो करना है तुम्हें ही करना है। हम जान चुके हैं कि इन तीन अंग्रेजों के अलावा इनके तीन और साथी भी हैं जो किसी वक्त भी यहां पहुंच सकते हैं। वैसे इन तीनों के बदन की बू से तो तुम परिचित हो ही गई होगी।"

"हां। ये तीनों कहीं भी जाएंगे तो मैं इनकी बू से इन्हें तलाश कर लूंगी।"

"बस तो फिर तुम्हें उन तीन आदमियों की बू को भी पा लेना चाहिए जो यहां मौजूद नहीं हैं। वो तीनो भी इसी टापू पर रहते हैं। उनका सामान यहां मौजूद होगा। तुम उनके सामान की तलाशी लो—तुम्हें कोई ऐसी चीज मिल जाएगी जो तुम्हें उनकी बू तक पहुंचा देगी।"

सोनिया की आंखों में चमक भरी, वह शोखी से बोली, "कमाल है—यह 'आई-लैंस' तो लगता है दिमाग भी तेज कर देते हैं। यह बात तो मुझे सूझनी चाहिए थी, पार्टनर! जो तुम्हें सूझी। मैं देखती

हूं।"

वह लपक कर दूसरे कमरे में जा घुसी। कमल बोल्डमैन के पास आ बैठा और उससे बातें करता रहा। कमल ने उससे एक महत्वपूर्ण सवाल किया—"देखो मिस्टर बोल्डमैन! तुम यहां सिर्फ छः हथियारबंद साथी हो। बाकी यहां के लोकल आदमी हैं जो निरीह मजदूरों की तरह निहत्थे व बेचारे से लोग हैं। अब तुम मुझे सच-सच बताओ कि तुम लोग जापान की आर्ग्रेनाइज्ड पुलिस का मुकाबला किस तरह करते हो? कहीं ऐसा तो नहीं है कि ऐसे वक्त तुम्हें कहीं बाहर से मदद पहुंचती है।"

बोल्डमैन हिचकिचाया, फिर एकदम बोला, "यहां कहां से बाहरी मदद पहुंचेगी। तुम शायद हमेशा उल्टा ही सोचते हो। हकीकत यह है कि यहां आसपास जो तीनों टापू हैं वे फारमोसा की सीमा में आते हैं। जापानी पुलिस इधर नहीं आती। जब हम चरस हेरोइन जैसी चीजों के साथ जापान का रुख करते हैं तो खुले समुद्र में कभी-कभी उनकी पुलिस से सामना हो जाता है। दो बार हमारी मोटरबोट पकड़ी गई—मगर हर बार हम बच कर निकल गए।"

कमल को वह झूठ बोलता नहीं लगा था। कमल आश्वस्त हो गया।

तभी सोनिया दूसरे कमरे से पलट आई। उसने कमल को दरवाजे के निकट बुलाया और धीमे से बोली—"यहां मुझे सिर्फ इन तीन आदमियों की बू मिल रही है। मेरा ख्याल है वो तीनों जो मौजूद नहीं हैं—किसी दूसरे काटेज में रहते हैं।"

कमल ने पलट कर बोल्डमैन से पूछा तो सोनिया के ख्याल की तस्दीक हो गई। कमल उससे बोला—"तुम अपने आदमियों से कहो कि वो मादाम सोनिया को उनके काटेज में ले जाएं जहां वो रहते हैं।"

बोल्डमैन ने एक आदमी को ऐसा करने को कहा। उस आदमी ने आगे बढ़ कर सोनिया को अपने साथ चलने के लिए कहा। सोनिया ने कमल के हाथ से टार्च ली व उसके साथ हो ली।

❑❑

सोनिया चली गई।

कमरे में कुछ देर तक खामोशी छाई रही।

इस खामोशी को बोल्डमैन ने ही तोड़ा, उसने उलझे-उलझे अंदाज में पूछा था, "मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं मिस्टर कमल! तुम्हारा नाम कमल ही है ना?"

"हां, कमल कह सकते हो तुम मुझे। वैसे मेरा नाम कमलकान्त

है। हिन्दुस्तानी हूं, हां, तुम शायद कुछ पूछना चाह रहे थे।"

"हां—मेरी समझ में यह नहीं आ रहा है कि मादाम सोनिया मेरे रूमाल को पाते ही अंधेरे में कैसे देखने लगीं? फिर यह कैसे जान गई कि इस काटेज में जार्ज और माईक छिपे हुए थे? मुझे शक है कि वो यहां की लोकल भाषा जानती हैं।"

"अगर सोनिया ने लोकल जुबान समझ कर तुम्हारे छिपे साथियों की बावत जान लिया था तो फिर अंधेरे में तुम पर फायरिंग करने के लिए कौन-सी लोकल जुबान सुनी थी?" कमल मुस्करा दिया था।

वह लाजवाब होकर कमल का मुंह तकने लगा।

कमल संजीदगी ओढ़ते बोला, "तुम साईंसी 'आईलैंस' पहनने वाले—कबायली मान्यताओं को नहीं समझ सकोगे, हमारे कबीले की लड़कियां—एक दुश्मन के रूमाल को हाथ में लेकर दूर-दूर तक छिपे हुए बाकी के दुश्मनों का भी पता बता देती हैं।"

बोल्डमैन ने उलझे से अंदाज में ही सिर हिलाया, बोला, "मैं समझ गया। हम इसे ब्लैक-मैजिक यानी काला जादू कहते हैं। अफ्रीका के 'विच-डॉक्टर' भी ऐसे ही चमत्कार दिखाते हैं।"

"समझदार हो।" कमल बोला।

कुछ देर फिर खामोशी रही। सोचों में डूबे बोल्डमैन ने सिर उठाया व कमल की तरफ देखते बोला, "तुम दोनों हमारे लिए बहुत सी कठिनाइयां पैदा कर रहे हो, क्या हमारे बीच दोस्ती का समझौता नहीं हो सकता।"

"नहीं—मैं सिर्फ एक बार धोखा खाता हूं बार-बार नहीं।"

"मैं...मैं...माफी मांगता हूं। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगा। तुम दिलेर हो और सोनिया काला जादू जानती है। तुम दोनों हमारे लिए इतने काम के हो कि तुम्हें दुश्मन बनाना हिमाकत है, मेरे जहन में एक प्लानिंग है—अगर तुम दोनों साथ दो तो हम जापान की समुद्री पुलिस को तिगनी का नाच नचा देंगे।"

"अच्छा।" कमल ने दिलचस्पी दिखाई, "वो कैसे?"

"ऐसे कि हमारे एजेंट जो जापान में हैं—हम उनके जरिए तमाम समुद्री पुलिस अफसरों के रूमाल हासिल कर लेंगे और मादाम सोनिया के हाथों में दे देंगे। इसके बाद जब भी समुद्री पुलिस छापा मारने आएगी...यानी खुले समुद्र में हमें घेरने की कोशिश करेगी तो मादाम सोनिया काले जादू के जरिए हमें बता देगी कि वो किस दिशा से आ रहे हैं।"

"समुद्री पुलिस किस तरफ से आ रही है—यह तो लांच या मोटरबोट की आवाज से ही पता चल जाता है। फिर तुम मेरे कबीले

की लड़की से काम क्यों लेना चाहते हो?"

"तुम नहीं जानते।" उसने कहा, "जापान की समुद्री पुलिस के पास आधुनिक और बेआवाज लॉन्चें और मोटरबोट हैं। वे इतनी खामोशी के साथ आते हैं कि हमें भागना पड़ता है।"

"यह भी कैसे मुमकिन है।" कमल ने उसे घूरा, "जब वो खामोशी से सिर पर आ पहुंचते हैं तो तुम कैसे भाग सकते हो?"

उसने एक गहरी सांस लेते जवाब दिया, "हमारे पास भी दिमागी हथकंडे हैं। हमारी लांच और मोटरबोट में भी चुंबकीय संयत्र हैं—जो हमें यह बता देते हैं कि सौ गज की दूरी पर लोहे का कोई 'मकड़ा' समुद्र की सतह पर तैर रहा है, हम समझ लेते हैं कि वह पुलिस लांच या मोटरबोट है।"

कमल ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली।

डेढ़ बज रहा था। वह और सोनिया दिन में खूब सोये थे, और खूब आराम किया था। इसलिए अब आधी रात के बाद भी ताजा दम थे, हां लैम्प की रोशनी से कमल की आंखें दुख रही थीं। कमल ने इस गैंडे से कहा कि वो अपनी काली ऐनक उसे दे दे या फिर अंधेरे में रहना पसंद करे कि वह लैम्प बुझा रहा है।

बोल्डमैन तुरंत बोला, "पता नहीं अंधेरे में तुम क्या करोगे, प्लीज लैम्प न बुझाओ। मेन्टलपीस पर मेरा चश्मा है उसे पहन लो।"

कमल ने चश्मा उठा कर पहन लिया। अब लैम्प की रोशनी उसकी आंखों में नहीं चुभ रही थी। वह एक ईजी-चेयर पर बैठ कर सोचने लगा कि इन लफाड़ियों के साथ उनका गुजारा कैसे होगा। उन्हें इस टापू पर बरसों तो रहना नहीं था—उसका तो इरादा जापान के किसी शहर में पहुंच कर कुछ समय तक सोनिया के साथ सकून से बिताने का था।

कमल अपने अतीत को याद करना चाहता था। उसे अपनी याददाश्त वापिस पाने की कोशिश करनी थी।

वह एकाएक ही कुर्सी पर सीधा होकर बैठ गया। अतीत और याददाश्त का ख्याल आते ही उसे मोमबत्ती और उसकी 'लौ' याद आ गई थी।

उसने बोल्डमैन से पूछा, "क्या यहां मोमबत्तियां मिल सकती हैं।"

"लैम्प है तो...मोमबत्ती का क्या करोगे?" बोल्डमैन हैरान हुआ था।

"मुझे जरूरत है। अपने आदमियों से कहो—वो एक दर्जन ले आएं।"

"एक दर्जन क्या—यहां एक भी नहीं मिलेगी। हम काटेज में लैम्प

रोशन करते हैं और बाहर टार्चों से काम लेते हैं।"

यह जानकर कमल को बहुत निराशा हुई। जहाज में भी किसी के पास एक भी मोमबत्ती नहीं मिली थी और यहां भी मोमबत्ती उपलब्ध न थी। तकदीर जाने कब तक कमल के अतीत को उससे छिपाना चाहती थी। ऐसे ही वक्त—मानना पड़ता है कि इंसान हजार कोशिशें करे—लेकिन उस वक्त तक कुछ भी नहीं कर सकता जब तक कि रब को मंजूर न हो।

कमल फिर मौजूदा हालात और इन दुश्मनों के बारे में सोचने लगा।

हालात भी कम खतरनाक नहीं थे। वह जान चुका था कि जापान की समुद्री पुलिस इधर चौकस और चौकन्नी है। फिर जापान में गैरकानूनी तरीके से प्रवेश भी कम खतरनाक नहीं था। कमल इसी बारे में सोचता रहा और किसी भी फैसले पर नहीं सोच पाया कि सोनिया वापिस आ गई।

कमल अपनी जगह से उठकर दरवाजे के पास आ गया।

"क्या रहा?" उसने धीमी आवाज में ही सोनिया से पूछा।

"मैंने बहुत सी मालूमात हासिल की है। यहां निकट ही जो दूसरे दो टापू हैं—वे स्मगलरों के हैडक्वार्टर हैं। हैडक्वार्टर से जो आदेश मिलता है—यह गैंड़ा और इसके पांचों साथी उसी का पालन करते हैं। इस टापू पर चरस का भंडार छिपा कर रखा जाता है। यूं समझ लो कि यहां के जो आधा दर्जन अंग्रेज हैं वो पहरेदार के तौर पर यहां रहते हैं। इस गैंडे की हैसियत उनके इंचार्ज की है।"

"तुम्हें यह सब मालूम कैसे हुआ।"

"यहां के वासियों की जुबानी।" सोनिया ने बताया, "मैंने उन्हें बातें करते सुना है। उनमें यही चर्चा है कि यहां के इन अंग्रजों को—जिन्हें वो अजय व बहुत खतरनाक समझते थे—उन्हें हम आने वालों ने शिकस्त दे दी है। उनका ख्याल है कि अगर हैडक्वार्टर तक इन हंगामों की सूचना पहुंच गई तो फिर हमें चारों तरफ से घेर लिया जाएगा।"

"ओह।" कमल चिंतित हो उठा, "यह तो आकाश से गिरे खजूर पर अटकने वाली बात हुई। बेहतर यह है कि हम पहले ही यहां से निकल लें।"

"मैं भी यही सोच रही हूं। लेकिन हम यहां से निकल कर जाएंगे कहां?"

यही मसला फिर सामने था—जिसकी बाबत कमल सोचता रहा था। बिना पासपोर्ट के तो किसी बंदरगाह पर कदम नहीं रख सकते

थे। कुछ सूझ ही नहीं रहा था।

तभी अचानक—रात के सन्नाटे में उन्हें बहुत दूर से मोटरबोट की आवाज सुनाई दी। कमल ने पलट कर बोल्डमैन की तरफ देखा। वह भी आवाज सुनकर बिस्तर पर उठ बैठा था।

वह बोला, "मिस्टर! हमारे आदमी आ रहे हैं। वो तुम्हें यहां से निकल कर जाने नहीं देंगे। तुम्हारी भलाई इसी में है कि जार्ज और माईक को आजाद कर दो। उन्हें साथ लेकर आने वालों के स्वागत के लिए सागर तट पर चले जाओ।"

सोनिया बरामदे में खड़ी—मुंह उठाए—इधर-उधर गहरी सांसें लेती सूंघ रही थी। उसने कमल को अपने करीब बुला कर कहा—"आनेवाले इनके वो बाकी के तीनों साथी हैं। मैंने दूसरे काटेज में जाकर उनके उतारे कपड़ों को सूंघ लिया था। अब वो तीनों वापिस आ रहे हैं। मैं हवाओं में उनकी बू सूंघ पा रही हूं।"

मोटरबोट की आवाज सुनाई देनी बंद हो गई थी।

यानी कि आने वाले सागर तट पर पहुंच गए हैं और बोट का इंजन बंद कर दिया गया है।

"हमें फौरन ही अपनी बोट तक पहुंचना चाहिए। इस गैंडे को यहीं लॉक कर जाते हैं।" वो दोनों कमरे में बिस्तर के पास आ गए। उन्होंने बोल्डमैन को जबरदस्ती लिटाया और उसके दोनों हाथ पलंग की पट्टियों से बांधने लगे। कमल ने एक स्थानीय वासी को इशारे से समझाया कि वो ताला-चाबी ले आए। जब तक बोल्डमैन का शिकंजा कसते वो शख्स एक ताला और दो चाबियां ले आया। कमल ने लोकल आदिवासियों को बाहर कर ताला लगाते हुए कहा—"तुम लोग अपने घरों को जाओ। हम यहां अंधेरे में छिपे देखते रहेंगे। अगर कोई ताला खोलने या तोड़ने आएगा तो हम उसे फौरन शूट कर देंगे।"

वो इशारों की जुबान समझ कर अपने घरों की तरफ चले गए। तभी दूर से फायरिंग की आवाज सुनाई दी। एक स्थानीय शख्स जाते-जाते ठिठक गया और उसने कमल और सोनिया की तरफ यूं देखा जैसे कुछ कहना चाहता हो।

कमल ने इशारे से पूछा, "क्या कहना चाहते हो? हमें इशारे से बताओ हम समझ जाएंगे।"

उसने एक हाथ उठा कर पहले सागर तट की तरफ इशारा करते हुए 'ठांय' की आवाज निकाली, फिर काटेज की तरफ इशारा किया। कमल की समझ में नहीं आया कि वो क्या कहना चाहता है।

उसने सोनिया से कहा, "अब तुम इनकी जुबान में पूछ ही लो,

यह जरूर कोई खास बात समझाना चाह रहा है।"

सोनिया उससे संबोधित हुई, उन्हीं की जुबान में पूछा, "क्या कहना चाह रहे हो तुम?"

वह पहले तो चौंक कर सोनिया को देखता रहा, फिर जवाब में कुछ कहने लगा।

सोनिया ने कमल को बताया, "अभी सागर तट पर जो फायरिंग हुई है—उसका मतलब है कि आने वाले बोल्डमैन की कुशलता पूछ रहे हैं। क्योंकि हमेशा की तरह उन्हें अलाव का सिगनल नहीं दिया गया, दूसरे यह कि कोई उनकी अगवानी के लिए सागर तट पर नहीं गया है। इन हालात में वो खतरा महसूस कर रहे हैं।"

कमल ने सोनिया से कहा, "इससे पूछो कि फायरिंग के जवाब में कुशलता की इत्तला किस तरह दी जा सकती है?"

सोनिया उससे पूछने लगी।

उसी वक्त एक हल्की सी फायरिंग हुई। जिस तरह आतिशी हवाई आसमान की तरफ उड़ान लेती है उसी तरह आग का एक नन्हा सा गोला अंधकारमय वातावरण में उड़ता हुआ बहुत ऊंचाई तक गया। फिर उस ऊंचाई पर पटाखों की आवाज सुनाई दी और इन पटाखों से रंग-बिरंगी किरणें निकलने लगी।

उस लोकल आदमी ने सोनिया से जल्दी-जल्दी कुछ कहा फिर वहां से भाग निकला।

सोनिया ने कमल का बाजू थाम लिया, बोली, "जितनी जल्दी हो सके यहां से भाग चलो यहां जो करीबी टापू है—यानी जहां इन स्मगलरों का हैडक्वार्टर है...वहां तक इस आतिशी हवाई के जरिए खतरे की सूचना पहुंचा दी गई है। इन्हें जल्दी ही हैडक्वार्टर से मदद पहुंच जाएगी।"

□□

वो अपनी मोटरबोट को कहां छोड़ कर आए थे—उस सही जगह तक फौरन पहुंचना मुश्किल ही था। क्योंकि, उस वक्त वो अंधेरे में भटकते हुए आए थे और कमल की आंखों पर यह लैंस भी नहीं चढ़ा हुआ था वह रास्ते को पहचान पाता।

अब रास्ते नजर आ रहे थे तो मंजिल गुम हो गई थी।

बहरहाल उन्हें मंजिल को तो तलाश करना ही था इसलिए वो दोनों तेजी से आगे बढ़ते चले गए। अब पोजीशन यह थी कि कमल बोल्डमैन वाले उन आईलैंसों की मदद से अंधेरे में दूर तक देख सकता था। काले शीशों वाली ऐनक उतार कर उसने अपनी जेब में रख ली थी। सोनिया को इस अंधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा

था—पर वो भी दुश्मनों की बू सूंघ कर अपनी हिफाजत कर सकती थी।

शीघ्र ही उन्हें इस बात का अहसास हो गया कि वे भटक रहे हैं—क्योंकि वहां दूर तक एक ही जैसे पाम के पेड़ थे। कोई पहाड़ी टीला, खन्दक या कोई मकान नहीं था कि जिसे वो निशानी के तौर पर याद कर सकते।

यूं ही भटकते हुए वो एक काटेज के सामने पहुंचे तो मालूम हुआ कि यह बोल्डमैन का वही काटेज है जहां से वो चले थे।

कमल ने दूर ही से देख लिया था कि एक शख्स दरवाजे पर लगे ताले को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। कमल ने यह बात सोनिया को बताई तो वो बोली—"मैं भी यही कहने वाली थी कि मैं उन तीनों को अपने आसपास ही कहीं महसूस कर रही हूं। एक मेरे दाईं तरफ कहीं छिपा हुआ है—दूसरा पीछे से आ रहा है, तीसरे को तुमने सामने दरवाजे पर देख ही लिया है।"

"ठीक है।" कमल कुछ सोचते हुए बोला, "मैं तुम्हारे दाईं तरफ छिपे हुए गीदड़ को भगाने जा रहा हूं। तुम पीछे वाले की तरफ फायर करो। सामने वाला धमाके सुन कर ही भाग लेगा।"

यही हुआ—सोनिया ने पीछे पलट कर अंधाधुंध फायरिंग की तो ताला तोड़ने वाला उछल कर भागता हुआ काटेज के पीछे चला गया।

दाईं तरफ—जहां सोनिया ने किसी की बू महसूस की थी—वहां दूर एक पेड़ के पीछे से एक शख्स ने अपना सिर और हाथ निकाल कर सोनिया पर फ़ायरिंग करना चाही। अंधेरे में सोनिया की स्टेनगन से निकलने वाले नन्हे-नन्हे शोलों ने उसे बता दिया था कि सोनिया कहां खड़ी हुई है। मगर उससे पहले ही कमल ने स्टेनगन का एक ब्रस्ट मारा।

वो गालियां देता हुआ फिर पेड़ के पीछे गुम हो गया।

कमल सोनिया को खींचता हुआ एक पेड़ के पास ले आया।

"तुम यहीं खड़ी रहो। वो गालियां देने वाला जवाबी फायरिंग करेगा। वो लोग नहीं जानते कि मैं इन लैंसों की मदद से उन्हें देख सकता हूं। मैं...।"

कमल उसे पूरी तरह समझा भी नहीं पाया था कि अचानक धमाकों की आवाज के साथ एक गोली उस पेड़ के तने को छीलती हुई गुजर गई—जिसकी आड़ में वे खड़े हुए थे।

कमल ने फायरिंग की दिशा में देखा।

एक शख्स भागता हुआ दूसरे पेड़ की तरफ जा रहा था। कमल की स्टेनगन से होने वाली गोलियों की बौछार ने उसे जमीन पर गिरा

दिया, वो लुढ़कता हुआ थोड़ी दूर जाकर साकत हो गया।

उसे गोली नहीं लगी थी, वर्ना वो साकत होने से पहले तड़पता हुआ नजर आता। वो यकीनन सिर्फ दहशतजदा होकर जमीन से चिपक गया था।

काटेज के एक तरफ से उसके साथी की आवाज आई, "टोनी होशियार रहो—दुश्मन सेंटी डार्कनेस लैंस से देख रहा है।"

इस चेतावनी ने उसके दूसरे साथियों को चौकन्ना कर दिया, उनकी समझ में आ गया कि उन्होंने अगर छुपी हुई जगह से जरा भी हरकत की तो, मारे जाएंगे।

जमीन पर पड़े हुए टोनी ने फिर उठने की जुर्रत नहीं की।

कमल सरगोशी में बोला, "सोनिया यही मौका है, वो हमारा पीछा नहीं करेंगे। हम इस बार दाईं तरफ घूम कर कहीं मुड़े बिना आगे बढ़ते रहेंगे, यूं हम सागर तट तक पहुंच सकते हैं।"

और फिर।

कमल सोनिया का हाथ पकड़ कर दबे कदमों से चलता हुआ उस पेड़ से आगे निकल गया—जिसके पीछे उनमें से एक शख्स दुबका हुआ था। कमल उसे साफ तौर से देख सकता था। इसके बावजूद उसने उसे नहीं छेड़ा।

कमल चाहता था कि ये शिकारी बस इस अंधेरे में इसी तरह सहमे अपनी-अपनी जगह साकत खड़े रहें। खामखां के खून-खराबे का कोई फायदा नहीं था। कमल का मकसद तो सिर्फ अपनी और सोनिया की जान बचा कर निकल जाना था।

उन्हें सागर तट तक पहुंचने का मौका मिल गया था और वे समुद्र के किनारे तक पहुंच भी गए। पर तभी बहुत सी मोटरबोटों की आवाजें सुनाई देने लगी। पानी के सीने पर उन्हें चार मोटरबोट सफेद धब्बों की तरह नजर आईं। ये मोटरबोट दूर थीं मगर टापू को घेर रही थीं।

कमल सोनिया का हाथ थामे—किनारे से दूर रहते—पेड़ों के पीछे-पीछे भागता चला गया। आगे जाकर दो और मोटरबोट किनारे की तरफ आती दिखाई दीं।

लगता था जैसे एक बाकायदा फौज थी जो उन्हें घेर रही थी।

सोनिया परेशान सी हो गई। उसने पूछा, "अब क्या होगा?"

"वही होगा जो मंजूरे खुदा होगा।" कमल दृढ़ता से बोला, "खौफजदा होकर हथियार फेंकने से तो बेहतर है भागती रहो जानेमन! जब तक कि हमारी मोटरबोट नजर न आए।"

यूं ही भागते रहने पर अपनी मोटरबोट तक पहुंचने की संभावनाएं

भी थी हीं। दुश्मनों ने एकदम से पहुंचकर उनका गणित बिगाड़ दिया था।

जहां से वे भागते हुए निकले थे—वहां करीब ही किनारे पर उन्हें दो मोटरबोट नजर आई। मोटरबोट्स के खुश्की पर आते ही उनमें से हथियारबंद नौजवान छलांगे लगाते हुए रेतीली जमीन पर आ गए। उन सबके हाथों में स्टेनगनें थीं।

कमल और सोनिया जहां आकर रुके थे—वहां करीब ही एक नारियल का पेड़ जड़ से उखड़ कर जमीन पर गिरा हुआ था। वो दोनों फौरन ही उसके तने के नीचे दुबक कर लेट गए।

उनका यह एक्शन दूरदर्शितापूर्ण ही साबित हुआ था।

क्योंकि वो लोग किनारे पर उतरने के बाद चारों तरफ शक्तिशाली टार्चों की रोशनियां फेंक रहे थे। पेड़ का तना अपनी गोलाई में करीब पांच फुट का था—जिसके साये में वो दोनों आसानी से छिप गए थे। कितनी ही बार टार्च की रोशनी उस तने पर से होती हुई गुजर गई।

अंधेरे में टार्चों की रोशनियां जल रही थीं वो इन्हें तलाशते हुए आगे ही आगे बढ़ते जा रहे थे। वे खासे एरिये में फैले हुए थे।

एक टार्च इधर इनकी पनाहगाह की तरफ भी आ रही थी।

कमल और सोनिया चूंकि पेड़ के दूसरी तरफ और उसके साये में दुबके हुए थे—इसलिए विपरीत दिशा से आती रोशनी में उनके देखे जाने का खतरा नहीं था, रोशनी बता रही थी कि आने वाला क्षण प्रतिक्षण करीब आता जा रहा है।

सोनिया परेशान होकर कमल को देखने लगी, बल्कि यूं कहना चाहिए कि कमल परेशान सा उसे देखने लगा। क्योंकि सोनिया अंधेरे में नहीं देख सकती थी, कमल ने हाथ बढ़ाकर धीरे से उसका कंधा थपथपाया। बड़ी खामोशी से उसे तसल्ली दी। इस वक्त सिर्फ तसल्ली ही तो दी जा सकती थी—वर्ना कमल खुद नहीं जानता था कि क्या होने वाला है।

उन्होंने खुद को प्रभु-इच्छा व तकदीर की दया पर छोड़ दिया था।

कमल की निगाहें टार्च वाले पर टिकी रहीं।

पर तभी वह टार्च वाला अचानक उछल कर इस गिरे पेड़ पर चढ़ गया।

कमल और सोनिया ने अपनी सांसें रोक लीं। पेड़ के तने पर उसके बूटों की रगड़ महसूस हो रही थी। तने की गोलाई के सबब टार्च की रोशनी उसके साये में नहीं पहुंच रही थी—और ना ही

वो कमल और सोनिया के बिल्कुल करीब—उनके सिरों पर पहुंचने के बावजूद उन्हें देख ही सकता था। हां, अगर वो शख्स वहां से कूद कर और फिर पलट कर टार्च की रोशनी फेंकता तो उसने अपने शिकारों को साफ-साफ देख लेना था।

वो कुछ देर तक यूं ही तने पर खड़ा हुआ अपने चारों तरफ रोशनी फेंक कर देखता रहा। फिर तने से छलांग लगा कर—वहां से दो कदम के फासलें पर पहुंच कर थोड़ी देर खड़ा रहा।

कमल और सोनिया दम साधे उसके जूतों को देखते रहे।

गनीमत थी कि जूतों का रुख उनकी तरफ नहीं हुआ। वो सीधा आगे बढ़ता चला गया। वो जो बहुत सी टार्चों की रोशनियों को अपने सामने दूर-दूर तक देख रहे थे—वे सब उनसे अब और दूर होती जा रही थीं।

कुछ देर बाद जब खतरा टल जाने का यकीन हो गया तो कमल सोनिया का हाथ थामे तने के साये से निकल आया।

कमल ने अपने कपड़ों से गर्द झाड़ते हुए चारों तरफ का जायंजा लिया।

दोनों मोटरबोट किनारे पर नजर आ रही थीं।

कमल के जहन में एक ख्वाब कौंधा और उसने सोनिया से पूछा, "जानेमन! अपनी बोट तक जाने पहुंच भी पाते हैं या नहीं। क्यों न हम इनकी मोटरबोट ही में फरार हो जाएं।"

"और अपना वह सामान?" सोनिया बोली, "क्या हम वह यहीं दबा छोड़ कर चले जाएंगे।"

"मजबूरी है।" कमल ने गहरी सांस ली, "हमारे पास इतना वक्त नहीं है, कि हम उस पेड़ को तलाश करें—जिस पर हमने 'क्रास' का निशान बनाया था। अगर हम सकुशल निकल लेते हैं तो हम जापानी पुलिस की मदद से यहां वापिस आ सकते हैं। क्योंकि उस ब्रीफकेस में जापानी सरकार से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। वहां की पुलिस इस सिलसिले में हमारी मदद करेगी।"

कमल मोटरबोट की तरफ बढ़ता सोनिया को समझाता जा रहा था कि उन्हें क्या करना है। कमल की सतर्क निगाहें चारों तरफ घूम रही थीं। उसके ख्याल से उनके इर्द-गिर्द कोई भी नहीं था, लेकिन मोटरबोट के करीब पहुंचते ही 'हाल्ट' की चेतावनी सुनाई दी।

वो दोनों ठिठक गए।

कोई कह रहा था, "जरा सी भी हरकत न करना। अगर मेरी किसी बात से इंकार करोगे तो तुम लोगों को पलट कर फायर करने का मौका भी नहीं मिलेगा। अगर अपनी मौत मंजूर है तो कोई

चालाकी दिखाओ—वर्ना हथियार फेंक दो।"

कमल और सोनिया इस घड़ी किनारे पर एक खुली जगह खड़े हुए थे। पेड़ों के झुंड उनसे बहुत दूर थे। यानी कि वो चाहे कितनी ही फुर्ती दिखाते—छिपे हुए दुश्मन से नहीं बच सकते थे। कमल ने सोनिया की तरफ देखते कहा—"मजबूरी है, स्टेनगन फेंक दो। माईक के पास से मिला पिस्तौल मेरी जेब में है। हमें मौके की इंतजार करनी होगी।"

उन्होंने स्टेनगनें रेत पर फेंक दी।

पीठ पीछे से वही आवाज फिर उभरी, "क्या तुम दोनों वही हो जिनकी तलाश में ये इतनी बड़ी फौज आई है?"

कमल चौंका, यह सवाल कई दूसरे सवालों को जन्म दे गया था। पर वह शांत भाव से बोला, "हां—हम वही हैं।"

"तुम्हारे दूसरे साथी कहां हैं?"

"हम सिर्फ दो हैं, हमारा कोई तीसरा साथी नहीं है।"

"क्या तुम मुझे अपना तीसरा साथी बनाओगे? अगर दोस्ती मंजूर है तो पलट कर देखो।"

कमल और सोनिया—एक साथ ही आवाज की दिशा में पलट गए।

सोनिया अंधेरे में दूर से नहीं देख सकती थी, लेकिन कमल उसे साफ-साफ देख रहा था। वह एक पेड़ के पास बिल्कुल निहत्था व तन्हा खड़ा था। वो अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला—"मिस्टर! अंधेरे में तुम्हारी आंखें चमक रही हैं। इसका मतलब है कि तुम अंधेरे में देख सकने वाले लैंस की मदद से मुझे देख रहे हो। देख लो, मेरे पास कोई हथियार नहीं हैं। मेरा मतलब है कि तुम दोनों को मुझ पर भरोसा कर लेना चाहिए।"

"तुम कौन हो?" कमल ने पूछा।

"मैं एक डॉक्टर हूं। आज दोपहर को ये लोग मुझे फारमोसा से पकड़ लाए थे। हैडक्वार्टर में शायद इनके एक आदमी को गोली लगी थी। मैंने उस जख्मी के बाजू से गोली निकाल दी है। पर इसके बाद भी ये लोग मुझे आजाद नहीं करना चाहते।"

कमल ने उसे सिर से पांव तक देखा, वह दुबला-पतला था। उसने सूट पहन रखा था और आंखों पर नजर का चश्मा था।

कमल ने उससे पूछा, "क्या वे तुम्हें पास वाले टापू पर ले गए थे?"

"हां। जब मुझे यकीन हो गया कि ये मुझे कैदी बना कर रखेंगे तो मैं वहां से भागने की फिक्र करने लगा, अभी करीब एक घंटा

पहले ही मौका पाकर भाग कर सागर तट पर पहुंच गया था। लेकिन मेरी बदकिस्मती कि उसी वक्त खतरे का अलार्म बजने लगा। बाद में पता चला कि खतरे का अलार्म मेरी वजह से नहीं बज रहा था बल्कि इस टापू से खतरे व आपातकालीन मदद की इत्तला पहुंची थी।"

"ओह! मैं समझ गया। हमारी वजह से तुम फंस गए।"

"हां। हुआ तो यही है। लेकिन मैं तुम दोनों को इल्जाम नहीं दे सकता। बल्कि यह सब मेरी अज्ञानता के कारण हुआ। उनकी बोट के इंजन व दूसरे संयत्रों को मैं ठीक से समझ नहीं पाया और यूं मेरे मोटरबोट के साथ निकल भागने से पहले ही वहां के जवान बोट पर पहुंच गए। उन्होंने मुझे पकड़ कर मेरी पिटाई की। उनके पास इतना वक्त नहीं था कि मुझे वापिस अपनी बस्ती में ले जाते। इसलिए मुझे कैदी बनाकर अपने साथ ही यहां ले आए। वो मुझे जाते-जाते वार्न कर गए हैं कि मैं उनकी वापसी तक यही रहूं। उन्हें इस बात का यकीन है कि मैं उनकी किसी भी मोटरबोट को ड्राइव नहीं कर सकता।"

कमल ने सतर्कतावश ही आगे बढ़ कर उसकी तलाशी ली। उसके पास किसी किस्म का कोई हथियार नहीं था।

डॉक्टर बोला, "तुम अच्छी तरह इत्मीनान कर लो। उसके बाद अगर इस मोटरबोट के मैकेनिज्म को समझ सकते हो तो फिर देर न करो। यहां से जल्द निकल चलो। मैं फारमोसा तक तुम्हारा मार्ग-दर्शन कर सकता हूं।"

निरीह सा डॉक्टर था और इनकी तरह ही निकल भागने की फिराक में था।

कमल और सोनिया उसके साथ मोटरबोट में आ गए। इंजन कक्ष में पहुंच कमल ने वहां के यंत्रों व सिस्टम पर निगाह डाली। बोट अति आधुनिक व शक्तिशाली थी। डेशबोर्ड पर हर बटन के साथ अक्षर अंकित थे। उन्हें समझने में कमल को कोई दिक्कत पेश नहीं आई। एक लाल रंग का बटन ऐसा जरूर था—जिसका प्रयोजन उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने डॉक्टर से पूछा—"यह बटन किसलिए है?"

डॉक्टर ने बताया, "सफर के दौरान मैंने इस लाल बटन को खासतौर से देखा है। यह बटन उस वक्त दबाते हैं जब अपनी-अपनी सीट को आरामदेह बनाना होता है।"

कमल और सोनिया अगली सीट पर आकर बैठ गए। उनके बैठते ही डॉक्टर ने आगे की तरफ झुकते हुए कहा—"चलो, ईजी होकर

बैठ जाओ।"

यह कहते हुए उसने सुर्ख बटन को दबा दिया।

कमल और सोनिया सीट की पुश्त से टेक लगाए बैठे थे, उन्हें अचानक ही अपनी पीठ में चुभन का अहसास हुआ। एक पल की बात थी—इसके बाद जैसे उनके अहसास मर गए।

कमल ने चाहा की हाथ उठाकर डॉक्टर को पीछे की तरफ धकेल दूं। लेकिन उसके हाथ नहीं उठ सके। उसका पूरा शरीर ही जैसे सुन्न हो कर रह गया था। हाथ-पांव हिलाना तो दूर की बात...वह पलकें तक नहीं झपका सकता था।

शायद सोनिया की भी यही हालत होगी? ऐसी अजीब सी मजबूरी थी कि कमल गर्दन घुमा कर उसे देख भी नहीं सकता था। इस क्षण सिर्फ दो बातें ही ऐसी थीं जिससे कमल को अपने जिंदा होने का आभास हो रहा था। एक तो यह कि उसकी सांस बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। और दूसरे यह कि उसका दिमाग काम कर रहा था और दिमाग उसे समझा रहा था—"तुम जिंदा हो—मगर हाथ-पांव हिला कर अपनी जिंदगी का सबूत नहीं दे सकते। इस रात के सन्नाटे को देखते रहो तुम एक ही जगह साकत बैठे बहुत कुछ सोच सकते हो, मगर किसी सोच पर अमल नहीं कर सकते। इसलिए कि शारीरिक रूप से तुम मर चुके हो।"

□□

वाकई अजीब स्थिति थी, कोई इंसान यूं भी जड़ होकर रह जाता है यह कमल के लिए एक नया अनुभव था।

वह दुबला-पतला सा डॉक्टर शैतान उनके सामने विंड-स्क्रीन के उस पार आ कर बत्तीसी निकालने लगा।

"ही...ही...ही...ही ये कितनी उंगलियां हैं?" वो कमल के सामने अपनी उंगलियां नचाने लगा।

उसकी इस हरकत पर कमल को गुस्सा आना चाहिए था—लेकिन वो गुस्सा, नफरत या इंतकामी जज्बों से बिल्कुल खाली था, उसका जहन बिल्कुल शांतमय था वह तो एक अबोध बच्चे की तरह अपने सामने की हर चीज को बिना किसी भावना व अहसास के देख रहा था। कमल हर भावना हर अहसास से खाली हो गया था। बस इतना था कि कान सुन रहे थे—आंखें देख रही थीं और दिमाग सोच रहा था।

फिर डॉक्टर शैतान उसके सामने से हट गया।

वो कमल के बाईं तरफ उधर गया था जिधर सोनिया बैठी हुई थी। वहां जाकर वह क्या कर रहा था—यह कमल सिर घुमा कर

नहीं देख सकता था।

थोड़ी देर बाद उसका चेहरा फिर सामने नजर आया। उसने कमल के गाल थपथपाते हुए कहा—"चलो बेटे। तुम्हारी मैडम पिछली सीट पर पहुंच गई है—तुम भी वहीं पहुंच जाओ।" यह कह कर उसने एक बटन को दबाया। कमल की सीट की पीठ पीछे की तरफ ढुलक गई। कमल खुद भी उसी तरफ उलट गया। डॉक्टर उसकी बगलों में हाथ डाल कर उसे पिछली सीट पर बैठाने लगा। वो बड़ी मुश्किल से कमल को खींच पा रहा था। उसके हांफने और गालियां देने की आवाज कमल के कानों में पहुंच रही थी। पर फिर भी उसने अंततः किसी न किसी तरह कमल को पिछली सीट पर बैठा ही दिया।

इस तरह बैठाया कि कमल बाईं करवट बेबस पड़ा—सोनिया को देखता रहा। सोनिया का रुख भी उसी की तरफ था। वे दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। एक दूसरे को पहचान रहे थे। मगर कुछ बोल नहीं सकते थे।

"हा...हा...हा...हा।" कमल को डॉक्टर शैतान का कहकहा सुनाई दिया, वह कह रहा था, "दुश्मनों को मात देने को हथियार जरूरी नहीं होते, सिर्फ अक्ल की जरूरत होती है। मेरे तमाम आदमी स्टेनगन, मशीनगन और न जाने कैसी गनें लिए फिरते हैं और अब भी वो बेवकूफ तुम दोनों को तलाश कर रहे होंगे। अच्छा है—उन्हें कोशिश करने दो। जब वे नाकाम होकर हैडक्वार्टर वापिस आएंगे तो यह देख कर हैरान रह जाएंगे कि मैंने निहत्थे तुम दोनों को गिरफ्तार कर लिया है, अपने मातहतों के साथ मैं ऐसी ही दिलचस्प तफरीह किया करता हूं और इस तरह उन्हें आत्महीनता का शिकार भी कर देता हूं कि वे हथियारबंद होकर भी मेरे सामने चूहों से ज्यादा अहमियत नहीं रखते।"

उसकी आवाज इंजन के शोर में डूब गई।

वह अब मोटरबोट को खुले समुद्र की तरफ ले जा रहा था। अजीब खुशदिल और मनचला दुश्मन था। उसने कमल और सोनिया की स्टेनगनें—उनके हाथों के पास रख दी थीं। यानी उनका मजाक उड़ा रहा था कि वे अपने हथियारों को छू भी नहीं सकते।

कमल कुछ समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे।

कितने बेबस और लाचार होकर रह गए थे वे दोनों। वे दोनों एक दूसरे के इतने करीब थे कि जब बोट यू टर्न लेती या हिचकोला खाती तो उनके सिर आपस में टकरा जाते थे। लेकिन वे अपनी मर्जी से एक दूसरे का हाथ नहीं पकड़ सकते थे। वे तो बस पलकें

झपकाए बिना एक दूसरे को यूं देखे जा रहे थे जैसे पहली बार इश्किया अंदाज में आंखें लड़ा रहे हों।

बेबसी के इन क्षणों में कमल को अपने टेलीपैथी के ज्ञान की याद आई।

उसने सोचा कि अगर सचमुच ही वह टेलीपैथी जानता था और वह यदि अब भी उसके पास होती तो फिर यूं बेबस होकर भी उसने बेबस नहीं रहना था। उसका मस्तिष्क सक्रिय था। वो अपनी सोच के जरिए सोनिया से बातें करता और उसी सोच के जरिए इस डॉक्टर शैतान का भी कबाड़ा कर देता।

कभी-कभी तो कमल को यकीन ही नहीं आता था कि वो टेलीपैथी जैसे चमत्कारी इल्म का ज्ञाता था।

पूरे सफर के दौरान कमल इसी बारे में सोचता रहा।

वह टापू जहां इन स्मगलरों का हैडक्वार्टर था—वह ज्यादा दूरी पर नहीं था। बोट जल्दी ही उस टापू के किनारे से जा लगी। तटीय रक्षक हाथों में स्टेनगनें लिए खड़े थे। उन्होंने डॉक्टर शैतान को देखते ही फौजी अंदाज में सैल्यूट किया।

डॉक्टर शैतान इंजन बंद करने के बाद बोला—"इन तीनों को 'कन्फेशिंग-हॉल' में पहुंचा दो, ये अपने पैरों पर नहीं चल सकेंगे। इनके लिए स्ट्रेचर ले आओ।"

यह आदेश दे डॉक्टर चला गया।

इस टापू पर ये तटीय रक्षक यहां के आदिवासी ही थे—जो कमल के डील डौल के मुकाबले में चूहे लगते थे। स्ट्रेचर लाए गये। और फिर छः आदमियों ने मिल कर बड़ी मुश्किल से कमल को उठाया और स्ट्रेचर पर लाकर पटक दिया।

सोनिया के साथ भी ऐसा ही किया गया।

पर अपनी इस अनूठी बेहोशी में उन्हें पीड़ा का अहसास कहां हो रहा था। स्ट्रेचर पर चारों खाने चित्त लेटे वो सिर्फ आकाश के सितारों को देख पा रहे थे।

कमल तारे गिनने के मूड में नहीं था—इसलिए चुपचाप पड़ा हुआ था।

पता नहीं कितनी देर तक वो दूसरों के कंधों पर सफर करते रहे।

उन्हें एक बड़े से हॉल में पहुंचाया गया था।

हॉल की तेज रोशनी से कमल की आंखें चुंधियाने लगी। जब स्ट्रेचर नीचे रख दिया गया तो उसे डॉक्टर शैतान की आवाज सुनाई दी—वह अपने एक आदमी से कह रहा था—"रोशनी में इस उल्लू

की आंखें दुख रही हैं। इसकी आंखों से 'आई-लैंस' निकाल दो—मगर जरा अहतियात के साथ।"

उसके आदेश पर कोई कमल के करीब आया तो उसने अपनी आंखें खोल दी। यह एक अंग्रेज था—जिसने बड़ी कुशलता के साथ कमल की आंखों के लैंस निकाल लिये। उसकी इस दक्षता के बावजूद कमल की आंखों से पानी बहने लगा। शायद उसकी आंखों को कोई तकलीफ पहुंची थी—जिसे इस वक्त वो महसूस नहीं कर सकता था।

इसके बाद उन्हें सहारा देकर बैठा दिया गया।

कमल के दोनों हाथ घुटनों से नीचे ले जा कर रस्सी से बांध दिए गये। फिर दोनों पांव बांधे गए और फिर इसी रस्सी को उसके शरीर के गिर्द लपेट कर उसे अच्छी तरह जकड़ दिया गया।

कमल जब बिल्कुल बेबस हो गया तो वही अंग्रेज एक सिरिंज लेकर आया और उसकी सूई कमल के बाजू में इंजेक्ट कर दी गई, कुछेक क्षणों बाद ही कमल ने महसूस किया जैसे उसके बदन में जान आ रही है।

कमल पलकें झपकाने लगा।

वह इतनी बुरी तरह बंधा हुआ था कि टस से मस नहीं हो सकता था। इसके बावजूद उंगलियां आजाद थीं—जो अब आसानी से हरकत कर सकती थी। लेकिन वह इस तरह बंधा हुआ था कि उसके हाथ पीठ पर रस्सी की गिरह तक नहीं पहुंच सकते थे।

कमल ने गर्दन घुमा कर देखा। सोनिया भी इसी तरह बंधी हुई थी—और शायद उसे भी इंजेक्शन लगा दिया गया था। कमल ने उसे पलकें झपकते देखा।

"मिस्टर एण्ड मिसेज।" डॉक्टर शैतान ने उन्हें संबोधित किया, वह ईजी चेयर पर बैठा सिगार के कश ले रहा था, उसने मंद-मंद मुस्कान के साथ पूछा, "मैं तुम दोनों को किस नाम से संबोधित करूं?"

कमल और सोनिया एक दूसरे को देखने लगे।

इन्हें बोलता न देख वो बड़े संजीदा लहजे में बोला, "मैं अपने सवाल के जवाब में देरी पसंद नहीं करता। एक बात अपने जहन में बैठा लो कि सच बोल कर दोस्त बन सकते हो, झूठों को मैं जहन्नुम में पहुंचा देता हूं, चलो, अब मेरे सवाल का जवाब दो।"

कमल ने जवाब दिया, "मेरा नाम कमलकान्त है और यह मेरी जोड़ीदार सोनिया है।"

"तुम दोनों कहां से आए हो?"

"हम कोवाई टापू से आए हैं।" कमल ने इस बार भी शांत भाव से जवाब दिया, "हम कहां से आए? उस टापू पर कैसे पहुंचे। फिर वहां से किस तरह फरार हुए यह एक लम्बी थका देने वाली दास्तान है।"

"मैं थकने वाला इंसान नहीं हूं।" डॉक्टर शैतान ने कहा, "तुम अपनी हिस्ट्री सुनाओ, "मैं तुम्हारे सच और झूठ को परखना चाहता हूं।"

कमल को क्या एतराज हो सकता था।

वह उसे उस वक्त से अपनी आपबीती सुनाने लगा जब याददाश्त खो बैठने के बाद—उसने एक तरह से यह नया जन्म लिया था। यानी अपने अतीत को भूल कर एक नई जिंदगी शुरू की थी।

कमल ने अब तक के सारे हालात सच-सच बयान कर दिये। सिर्फ थोड़े से झूठ का मिश्रण किया था। और वह भी यह कि कोवाई टापू पर उसकी सोनिया से शादी हुई थी और उसने उस ब्रीफकेस का जिक्र भी नहीं किया था जिसमें विभिन्न देशों को ब्लैकमेल करने को 'मवाद' छिपा कर रखा हुआ था।

कमल की कहानी सुनने के बाद वह बोला, "तुम बहुत गहरे आदमी हो। अपनी असलियत को छिपाने के लिए तुमने याददाश्त गुम होने का बहाना किया है। एक बेहद खूबसूरत बहाना, इसमें शक नहीं कि तुम जहीन हो—मगर मैं भी अहमक नहीं हूं। मैं यह कभी नहीं मान सकता कि तुम अपना अतीत भूल चुके हो।"

"मैं तुम्हें यकीन नहीं दिला सकता। बस इतना ही कह सकता हूं कि मैंने तुमसे कोई बात नहीं छिपाई है।"

डॉक्टर शैतान ने सिगार का एक कश लिया। फिर धुआं छोड़ने के बाद कहा, "अगर तुम्हारी यह कहानी सच मान लूं तो यह बात समझ में आती है कि उन मास्टरों की इतनी बड़ी क्रिमिनल संस्था का चीफ तुमसे काफी खौफजदा था। तुम्हें बेकार बनाने के लिए ही उसने तुम्हें जहनी झटके दिए और तुम्हारा ब्रेनवाश कर दिया। अब तुम चूंकि अपना अतीत भूल चुके हो—ऐसे में तुम्हारी यह सोनिया ही बता सकती है कि तुम उस आर्ग्रेनाइजेशन के लिए किस हैसियत से खतरनाक थे और यह भी कि तुम्हें गोली मार किस्सा निपटा देने के बजाय इतनी ढील क्यों दी गई थी?"

वो सोनिया की तरफ सवालिया नजरों से देखने लगा। सोनिया ने जवाब दिया, "मैं कोवाई टापू में पैदा हुई और वहीं जवान हुई। वहां के तमाम वाशिन्दे सुपर मास्टर के पाबन्द हैं। उसके हुक्म पर ही मेरे बाप ने कमलकान्त से मेरी शादी कर दी। शादी से पहले

कमल मेरे लिए अजनबी था। शादी के बाद मुझे पता चला कि यह अपना अतीत भूल चुका है।"

"हूं।" उसने गुर्रा कर कहा, "तुम दोनों सीधी तरह नहीं उगलोगे। तुम्हें तुम्हारा अतीत याद दिलाना ही होगा।" उसने अपने आदमियों को हाथ का इशारा करते कहा, "इन्हें लटका दो।"

कमल ने सिर उठा कर छत की तरफ देखा। छत में थोड़े-थोड़े फासले पर लोहे की कड़ियां नजर आई। दो स्थानीय व्यक्ति पटसन का मजबूत बोरा ले आए। फिर वो कमल को उठा कर एक बोरी में और सोनिया को दूसरी बोरी में ठूंसने लगे।

ऐसा मजबूर तो कमल कभी नहीं हुआ था। हद तो यह थी कि वे मुक्ति के लिए हाथ-पांव भी नहीं हिला सकते थे। मजबूत बन्दिशों में वो पुलन्दा बन कर रह गए थे। और इस पर सितम यह कि अब उन्हें पटसन की खुरदरी चारदीवारी में चिन दिया गया था। इस बोरे में सिर्फ आंखों के सामने दो सुराख थे—जो सांस लेने के लिए बना दिए गए थे। इसके बावजूद भी इस तंग कैदखाने में बड़ी घुटन महसूस हो रही थी।

फिर कमल को महसूस हुआ कि वो हवा में ऊपर उठ रहा है।

उसने आंखें खोल कर सुराख के बाहर देखा, सामने सिर्फ एक दरवाजा नजर आ रहा था। वह दरवाजा नीचे की तरफ जा रहा था—यानी कमल ऊपर की तरफ जा रहा था। फिर वो छत और फर्श के बीच ठहर कर लटकने लगा।

"शायद सोनिया के साथ भी ऐसा ही हो रहा है।" उसने सोचा।

कमल को अब दीवार का बीच का हिस्सा और आसपास की थोड़ी सी दीवारें नजर आ रही थीं। डॉक्टर शैतान ने सामने आते—कमल वाले बोरे की तरफ देखते हुए कहा—"मैं बहुत धीरे-धीरे और बड़े प्यार से यातनाएँ पहुंचाता हूं, तुम दोनों यूं ही उकड़ूं बैठे-बैठे मुर्दों की तरह अकड़ जाओगे—मगर मेरे सामने सच बोलने के लिए जिन्दा रहोगे।"

यह कहने के बाद वो दरवाजा खोल कर बाहर चला गया।

उसके पीछे सशस्त्र जवान भी लैम्प उठाए बाहर गए और दरवाजा बंद कर दिया गया। हॉल में एकाएक ही घुप्प अंधेरा छा गया।

उफ! यह अंधा बना देने वाला गहन अंधकार, कमल को इस वक्त यही लग रहा था—जैसे उसे जिन्दा किसी कब्र में उतार दिया गया हो और कब्र को चारों तरफ से बंद कर दिया गया हो। मुर्दे फिर भी खुशनसीब होते हैं कि उनके हाथ-पांव सीधे होते हैं। उनके तो हाथ-पांव लपेट कर रख दिए गए थे। अगर रस्सियां खुल जाती

तब भी इस बंद बोरे में हाथ-पांव सीधे करने की गुंजाइश न निकलती।

"कमल।" कब्र के इस अंधकार में सोनिया की कांपती हुई कमजोर सी आवाज सुनाई दी।

"सोनिया।" कमल ने उसे पुकारा, "जाने बहार! तुम कहां हो?"

"बड़ी घुटन हो रही है, कमल।" जवाब मिला, "खुद को संभालने की कोशिश कर रही हूं, मगर दिल बुरी तरह घबरा रहा है। यह हम किस मुसीबत में फंस गए हैं।"

"कभी-कभी ऐसी मुसीबतें भी इंसान पर आ टूटती हैं—जिनके बारे में कि इंसान सोच भी नहीं सकता। अब यह सोचकर गुस्सा भी आता है और हैरानी भी होती है कि इस दुबले-पतले डॉक्टर ने हमें कैसे बेवकूफ बनाया है।"

"मेरा सिर चकरा रहा है। मैं ज्यादा देर तक इस हालत में नहीं रह सकूंगी।"

यूं तो सिर कमल का भी चकरा रहा था। कमरा बन्द। हाथ पांव बंद, पूरा वजूद पटसन के बोरे में बंद। ऐसी गर्मी लग रही थी वो पसीने से नहा गया, ऐसी हालत में वह अंदाजा लगा सकता था कि सोनिया का क्या हाल होगा, कुछ भी था आखिर वह थी तो एक औरत ही ना। कमल ने उसे तसल्ली दी—

"सोनिया! जरा हिम्मत से काम लो। इस बार वो कमरे में आएंगे तो मैं कोई चाल चलूंगा।"

कमल ने महज उसे तसल्ली दी थी। उसके जहन में कोई तदबीर नहीं थी कि अगर वहां कोई आया तो वह यूं मजबूरी की हालत में क्या कर सकेगा। सोनिया ने कहा—"वो लोग मेरे फौलादी पंजे निकाल कर ले गए हैं। वर्ना मैं अपने नाखूनों से रस्सी और थैले काटने की कोशिश करती।"

"कोई बात नहीं, मेरी जान! जब वो दुबला-पतला शैतान निहत्था होकर हमें पटकनी दे सकता है तो अक्ल नाम की चीज अपने पास भी है। इस बात से तो यही समझ में आता है कि मैं अपने अतीत के बारे में—जो कुछ मैंने जाना है—सच-सच बता दूं। बल्कि तुम बता दो—क्योंकि मुझे तो कुछ याद नहीं है। तुम जिस हद तक जानती हो उस हद तक सच कहोगी तो हो सकता है हमें इस मुसीबत से छुटकारा मिल जाए।" कमल ने सुझाव दिया।

यह यातना वाकई नाकाबिले बर्दाशत थी। वो देर तक बातें करते रहे और एक दूसरे को समझा कर अपने अंदर हौसला पैदा करते रहे।

दिन निकल चुका था। मगर हॉल में उसी तरह रात का सा अंधकार छाया हुआ था।

मगर कमल और सोनिया के लिए दिन और रात का अंतर मिट चुका था। जाने कितनी देर बीत जाने के बाद दरवाजा खुलते ही ताजा हवा के झौकें भी आए और दिन की रोशनी महसूस हुई।

डॉक्टर शैतान अपने चार आदमियों के साथ आया था।

उसने कमल वाले थैले या बोरे की तरफ देखते हुए पूछा, "जिंदा हो या मर गए?"

कमल बोला, "अभी तो तुमसे अच्छी तरह मुहब्बत करनी है। इतनी जल्दी नहीं मरूंगा।"

"भई वाह! क्या जवाब है।" डॉक्टर चहका, "शाबाश, जिंदादिल हो। बहरहाल, मैं अपने बोल्डमैन की रिपोर्ट सुन कर आया हूं। उसका कहना है कि मादाम सोनिया 'ऐंटी-डार्कनेस लैंस' के बिना अंधेरे में सही फायरिंग करती हैं। उस गधे की बातें समझ से बाहर भी हैं। उसका कहना है कि तुम्हारी औरत ने उसका रूमाल हाथ में लेते ही अंधेरे में देखना शुरू कर दिया था। मैं ऐसी मूर्खतापूर्ण बातों पर यकीन नहीं करता। मगर सबूत मौजूद है कि उसने अंधेरे में पक्की निशानेबाजी दिखाई और बोल्डमैन जैसे अफलातून को बेकार बना दिया।"

कमल को सोनिया की कांपती कमजोर आवाज सुनाई दी—"डॉक्टर! अब मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊंगी। सब सच-सच बता दूंगी। फोर गॉड सेक...खुदा के वास्ते—पहले मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओ।"

"वैरी गुड! तुम चमत्कारी ही नहीं समझदार भी हो। मैं तुम्हें सिर्फ तुम्हारा बयान सुनने के लिए आजाद करता हूं। जब मुझे यकीन हो जाएगा कि तुमने सच कहा है तो फिर तुम्हारे मर्द को भी आजाद कर दिया जाएगा।"

और फिर उसने आदमियों को सोनिया वाले थैले को नीचे उतारने का हुक्म दिया।

कमल ने मन ही मन भगवान का शुक्रिया अदा किया। सोनिया को मुक्ति पाते देख कर उसके जहन का बोझ उतर गया।

कुछ देर बाद डॉक्टर शैतान की आवाज आई, "इसे चित लेटा कर इसके हाथ पांव सेट कर दो।"

कुछ ही क्षणों बाद कमल को सोनिया के कराहने की आवाजें सुनाई देने लगी। इतनी देर तक लटके रहने से हाथ-पांव का अकड़ जाना स्वाभाविक था।

उसने सोनिया से कहा, "सोनिया! अगर तुम आजाद हो चुकी हो तो मेरी निगाहों के सामने आ जाओ। लगता है जैसे मैंने बरसों से तुम्हें नहीं देखा है।"

सो कुछ देर बाद जब सोनिया अपने पैरों पर खड़ी हो गई और चलने-फिरने लायक हो गई तो वो कमल के सामने दरवाजे के पास आ कर खड़ी हो गई, कमल ने तंग कैदखाने के सुराखों से देखा। सोनिया उसी की तरफ देखते मुस्करा रही थी।

डॉक्टर शैतान बोल उठा, "तुम दोनों पक्के आशिक मालूम होते हो। मगर मैं इश्किया चौटंकी देखने के मूड में नहीं हूं, सोनिया तुम मेरे साथ आओ। मैं अकेले में तुम्हारा बयान सुनना चाहता हूं।"

वो दरवाजा खोल कर बाहर जाने लगा तो सोनिया ने हाथ उठाकर कहा, "ठहरो, डॉक्टर! अगर तुम चाहते हो कि मेरे बयान में एक लफ्ज भी झूठ न हो तो मेरी एक ख्वाहिश पूरी कर दो।"

"अगर तुम्हारी ख्वाहिश से मेरा कोई नुकसान नहीं होता होगा तो पूरी कर दी जाएगी।"

"मैं अपने कमल को इस मुसीबत में तो देख सकती हूं—मगर अंधेरे में नहीं देख सकती, मेरी इतनी सी ख्वाहिश है कि उसके लिए यहां एक मोमबत्ती रोशन कर दो।"

कमल के जहन को एक झटका सा लगा। कि यह कैसी जहीन और मौकापरस्त औरत उसके हिस्से में आई थी। जो बात कमल भूल जाता था वह उसे याद रहती थी। परीक्षा की घड़ियों में वो हमेशा हाजिर दिमागी से काम लेती। सोनिया की इस फरमाइश ने कमल को खुश कर दिया था।

डॉक्टर सोनिया की इस 'आशिकाना ख्वाहिश' की गहराई कहां समझ सकता था, वो बोला, "अच्छी बात है। यहां एक लैम्प रख दिया जाए।"

सोनिया इंकार में मुंडी हिलाते बोली, "नहीं। मैं अपने मर्द के मिजाज के मुताबिक ख्वाहिश कर रही हूं। मेरे कमल को मोमबत्ती की हल्की रोशनी पसंद है। तुम औरत के जज्बों को नहीं समझ सकते डॉक्टर! प्लीज डॉक्टर। मुश्किल की इन घड़ियों में उसकी पसंद का ख्याल रखा जाए।"

डॉक्टर शैतान उकताए लहजे में बोला, "अच्छा, अच्छा...यहां एक मोमबत्ती रोशन कर दी जाएगी, तुम चलो यहां से।"

"नहीं डॉक्टर! मेरे सच बोलने की कीमत यहां मेरे सामने चुका दो।" सोनिया बच्चों की तरह जिद करते बोली, "जहां मैं खड़ी हुई हूं—ठीक इसी जगह एक ऊंचे स्टैण्ड पर मैं अपने हाथों से एक

मोमबत्ती जला कर जाऊंगी।"

सींकिया डॉक्टर शैतान इनकी हकीकत जानने के लिए बेचैन था, सो सोनिया की यह ख्वाहिश फौरन पूरी कर दी गई। एक ऊंचा सा लकड़ी का स्टैण्ड वहां लाकर रखा गया, सोनिया ने एक किंग साईज मोमबत्ती अपने हाथों से जला कर वहां रखी। फिर कमल की तरफ देखते बोली—"मैं डॉक्टर के साथ सच बोलने जा रही हूं। तुम भी इस 'शमा' की लौ देख कर अपनी सच्चाई तक पहुंचने की कोशिश करो, डार्लिंग।"

इस कष्टदायक पोजीशन में भी कमल के होंठों पर मुस्कराहट नाच गई, सोनिया डॉक्टर और उसके आदमियों के साथ बाहर चली गई। दरवाजा भी बाहर से बंद कर दिया गया। अब इस कैदखाने में कमल था और वह 'शमा' थी।

❑❑

अपने अतीत को जानने के लिए बेकल कमल की एक बहुत बड़ी ख्वाहिश पूरी हो गई थी।

शमा की लौ से उसके अतीत का यकीनन कोई प्रगाढ़ रिश्ता था—इसका अहसास कमल को शिद्दत से हुआ था और अब उसे इस रिश्ते की तह तक पहुंचने का मौका मिल गया था।

कमल की नजरें शमा की लौ पर केंद्रित हो गईं।

हकीकतन उसकी निगाहें आप ही आप उस नन्ही-सी लौ से या अपने पुराने रिश्ते से लिपट गई थीं।

प्रारम्भिक कुछेक क्षणों तक तो वह बिल्कुल ही खाली जहन हो गया था। सिर्फ यही और इतना ही महसूस किया कि दिल और दिमाग एक नामालूम 'पहचान' की तरफ खिंचा जा रहा है। फिर इस 'शमा' की लौ से न जाने कैसे-कैसे रंग बिखरने लगे।

हर रंग का अपना एक मिजाज था और कमल इस तरह बिखर कर अपने अतीत के बिखरे हुए मिजाज को नहीं समझ सकता था। कमल के अंदर उद्विग्नता व व्यग्रता सी उमड़ती थी—लेकिन उसका दिमाग तो एक बिंदु, एक केन्द्र पर एकाग्र हो जाने का आदी था—उसी के सदके वह उद्विग्नता व व्यग्रता खत्म हो जाती थी।

"आ मेरे अतीत। वापिस आ जा। मेरे बिछड़े हुए रिश्तों तुम कहां हो? मेरे अतीत अब लौट भी आ कि नामालूमी के ये अंधेरे अब बर्दाश्त से बाहर हैं।"

कमल सोचते-सोचते ठहर गया। उसका दिमाग एकदम से चुप हो गया। पर फिर अगले ही क्षण उसे महसूस होने लगा कि उसके चारों तरफ आंधियां सी चल रही हैं। तूफानी हवाएं सांय-सांय करके

गुजर रही हैं, इस अंधकार में और तेज हवाओं में सिर्फ एक नन्ही सी लौ रोशन है और हवाओं के तूफानी शोर में दूर से कोई सदा...कोई गूंज सुनाई दे रही है।

यह कैसी सदा है...कैसी गूंज है। कुछ था जो उसके अंदर मौजूद था...वो इस गूंज...इस सदा के रूप में...बूंद-बूंद टपक रही थी।

हां—'वह' वापिस आ रहा था। वक्त उल्टे कदमों वापिस आ रहा था। वो जो कमल की पूंजी थी...उसकी ताकत थी...अपने पूरे जलाल के साथ लौट रही थी।

अतीत के झरोखे खुल रहे थे।

"मैं कौन हूं? कौन हूं मैं।"

और वह जो कमलकान्त था...अपनों का कमल था...वापिस आ रहा था।

'शमा'...रोशन-जलती 'शमा' भी तो जिंदगी का प्रतिरूप है, जिंदगी भी 'शमा' की तरह जलते-जलते—एक दिन बुझ जाती है। कभी-कभी तो यह चुटकी भर जिंदगी, खुद को तलाश करते-करते ही गुजर जाती है।

कमल इसी तलाश की प्रतिक्रिया से गुजर रहा था।

उसके सामने वह 'शमा' रोशन थी और उसकी क्षीण सी रोशनी कमल की जिंदगी के एक अंधकारमय हिस्से को प्रकाशमान कर रही थी।

बहुत धीरे-धीरे कमल के जहन के झरोखे खोल कर कुछ चेहरे झांकने लगे थे। और कमल इन चेहरों को पहचान रहा था। अतीत करवटें ले रहा था। कभी उसे अपने चाचा कुंदनशाह का चेहरा नजर आता था—जिसके यहां उसने एक अतीत के रूप में परवरिश पाई थी। कभी जालिम बदकार चाची नजर आती थी—जिसे कमल ने अपनी सोच के जरिए ही जहर का प्याला पीने पर मजबूर कर दिया था। फिर मौसी का ममतामय चेहरा दिखाई दिया—वो अपनी बांहें फैलाकर कमल को अपने आगोश में बुला रही थी।

यूं ही कमल की निगाहों के सामने से एक तेज रफ्तार फिल्म की तरह वे तमाम दृश्य गुजर रहे थे—जो कभी मौसी और कभी उनकी बेटी सरिता के साथ पेश आए थे। इसी क्रम में कमल का जहन उस दौर में पहुंच गया जब वो सम्मोहन शक्ति या हिप्नोटिज्म का ज्ञान पाने को इसी तरह मोमबत्ती की लौ को निहारते अभ्यास कर रहा था और अपनी सोच को किसी एक बिन्दू पर केन्द्रित कर सकने का माहिर हो गया था।

सब उजागर हो रहा था...सब स्पष्ट हो रहा था।

फिर उत्तर की तरफ से चलने वाली चुंबकीय हवाएं—कमल की सोच को अपने साथ लेकर उड़ने लगी। कमल को इंसानी दिमागों के अंधेरों तक पहुंचाने लगी।

सम्मोहन व टेलीपैथी की शक्ति पा लेने के बाद—अपनी जिंदगी में कमल ने सबसे पहले जिसके जहन में झांक कर देखा था—वह उसकी रिश्ते की मौसी की जवान बेटी सरिता थी। इस उड़ान ने ही तो कमल को बताया था कि किसी की सोच तक और किसी के दिमाग तक किस तरह पहुंचा जाता है।

यूं शनैः शनै और ठहर-ठहर कर कमल के जहन के अंधेरों में दफन यादें उजागर हो रही थीं...होती जा रही थीं। उसे सब याद आ रहा था। अब उसका अतीत उसके सामने था। वो अपने अतीत में झांक रहा था...उसे वह सब याद आ रहा धा—जो वो भुला बैठा था? जो उसके जहन से सुपर मास्टर ने साफ कर दिया था।

वक्त बीत रहा था। यूं ही बहुत सा वक्त गुजर गया। वह किंग साईज की मोमबत्ती अपनी समाप्ति को पहुंच रही थी और कमल अपनी मंजिल तक पहुंच चुका था। अपने आप को पा लेने के बाद। अपनी दूसरों के जहन में झांक सकने की दक्षता के अहसास के साथ ही कमल ने सबसे पहली आज़माइशी तौर पर अपना ध्यान सोनिया पर केंद्रित किया व उसी के जहन में झांक कर देखा।

चमत्कार हुआ—फिट हुआ।

कमल सोनिया के जहन में झांक उसकी सोच पढ़ रहा था। सोनिया की सोच ने बताया कि वो एक कुर्सी पर बैठी हुई है। जहां पर वो बैठी हुई है—वह एक छोटा सा कमरा है। उसके आसपास कोई नहीं है और वह खामोश बैठी सोच रही है।

वो कमल ही के बारे में सोच रही थी।

वह यही सोच रही थी, "इतनी देर हो चुकी है। खुदा जाने—कमल मोमबत्ती के जरिए अपनी कोशिश में कामयाब होगा भी कि नहीं? अब तो मोमबत्ती भी खत्म हो चुकी होगी। हे प्रभू! मेरे कमल को कामयाबी से नवाजो। उसका अतीत उसकी याददाश्त में उजागर कर दो।"

कमल सोनिया के सोच के इस लहजे को अच्छी तरह समझता था—पर इसके बावजूद भी उसके जहन में यह सवाल तेजी से उभरा कि क्या वो वाकई सोनिया की सोचें पढ़ रहा है—या यह सब उसके अपने जहन की बेचैनी है कि वो अपने तौर पर अपनी कल्पना की आंखों से सोनिया को एक कमरे में बैठा देख रहा है।

और हकीकत जानने के लिए उसने सोनिया की सोच में—उसी

की सोच बन कर कहा—"उफ़! मैं कितनी देर से बैठी हुई हूं। मुझे कुर्सी की पुश्त से टेक लगा कर थोड़ा आराम करना चाहिये।"

और सोनिया की सोच के जरिये ही कमल ने जाना कि अपने जहन में यह सोच उभरते ही वो कुर्सी की पुश्त से टेक लगा कर आराम की पोजीशन में आ गई थी।

कमल बेअख्तयार ही मुस्कराने लगा।

उसे इस अविश्वसनीय कामयाबी के बाद मारे खुशी के इस उपलब्धि का यकीन ही नहीं हो रहा था। उसने अपने इस सामर्थ्य को कुछ और आजमाने के बाद ही—इस बारे में सोनिया को बताने का सोचा और उसने एक बार फिर एक चोर की तरह सोनिया के जहन में झांकते—उसी की सोच बन कर उससे कहा—

"यूं खामखां ही हलकान होती खामोश बैठे रहने से तो बेहतर है कि मैं अपने व उस शैतान डॉक्टर के बीच हुई बातचीत के बारे में सोचूं और देखूं कि मुझसे कोई भूल तो नहीं हुई है। हां—मुझे उस वक्त के बाद की हर बात सोचनी चाहिए, जब मैं अपने कमल के सामने, उसके लिए मोमबत्ती जला कर आई थी तो...।

कमल ने बात अधूरी छोड़ दी—ताकि इसके बाद सोनिया खुद ही सोचती चली जाए।

और सोनिया ने इस अधूरी सोच को पूरा करते सोचा—"तो डॉक्टर शैतान यहां एकांत में बैठकर मुझसे कहने लगा कि मैं वक्त जाया किए बिना ही सच्चाई से सब कुछ बता दूं। और उसका पहला सवाल था—तुम बिना अंधकार विरोधी लैंस के अंधेरे में कैसे देख लेती हो।"

अब मुझे कोई बात नहीं छिपानी थी, सो मैंने जवाब दिया, "दरअसल मुझमें जानवरों की तरह सूंघने की संवेदनशीलता है। और मेरे सूंघने की शक्ति इतनी तेज व अनूठी है कि एक बार किसी इंसान की बू सूंघने के बाद उससे सैंकड़ों मील जा कर जान सकती हूं कि वह किस दिशा में है।"

इस पर डॉक्टर हैरान हुआ था और यही कहा था—"तुम...तुम एक अविश्वसनीय बात कह रही हो। चण्डुखाने की सी उड़ा रही हो। मुझे घिस्सा देना चाह रही हो।"

"तुम्हें मेरा यकीन करना चाहिए।" सोनिया डॉक्टर से हुई बातों को जहन ही में दोहराती जा रही थी, "तुम्हारे अपने आदमी बोल्डमैन ने तुम्हें बताया है कि उसने अपना रूमाल एक जगह रख दिया था। अब आप खुद सोचिये—उस रूमाल को उठाने के बाद मैंने घटाटोप अंधेरे में किस तरह का सही निशाना लिया था? उसके रूमाल से

उसके बदन की बू चुरा कर मैं अंधेरे में उसकी बू सूंघ रही थी—इस बू का स्रोत मेरे सामने था। यानी कि मैं अंधेरे में उसकी बू जिस तरफ जाती थी मैं उसी तरफ मुंह करके उसे चैलेंज करती थी और उसे बता देती थी कि वो इस वक्त कहां है। पहले मैंने उसे समझाया कि वो अपना हथियार फेंक दें। उसने मेरा हुक्म मानने से इंकार किया तो मुझे मजबूरन फायर करना पड़ा।"

डॉक्टर की हैरत बढ़ती जा रही थी, उसने पूछा, "तुम व्यवहारिक तौर पर इसका सबूत दे सकती हो?"

"क्यों नहीं—बोलो किस तरह सबूत दूं।"

"मैं कमरे से बाहर जा रहा हूं। अगर तुम मेरी बू सूंघकर आ सकती हो तो उस जगह चली आना जहां मैं छिपने जा रहा हूं। ठीक पांच मिनट के बाद।"

"यह कह कर वह कमरे से बाहर चला गया। मैं उसकी बू सूंघती रही। पहले उसकी बू दूर चली गई। फिर करीब आने लगी। करीब और करीब। इतनी करीब महसूस होने लगी कि पांच मिनट बाद मैंने बाथरूम के दरवाजे पर दस्तक देकर कहा—"डॉक्टर बाहर आ जाओ। क्या बच्चों की तरह आंख-मिचौनी खेल रहे हैं।"

बाथरूम का दरवाजा खुला और डॉक्टर हैरत से मुंह फाड़े मेरे सामने चला आया, वो थोड़ी देर तक कुछ बोल ही नहीं सका। शायद खुद उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या बोलना चाहता है। बाथरूम का दरवाजा खुलने पर मैंने पहली बार देखा था कि बाथरूम के पिछली तरफ भी एक दरवाजा है। मैंने पूछा—"क्या हुआ डॉक्टर? तुम इस तरह बौखला कर मुझे क्यों देख रहे हो?"

उसने मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहा, "तुम...तुम बहुत ग्रेट हो, उस हिंदुस्तानी छोकरे के साथ अपनी जिंदगी बर्बाद कर रही हो, क्या नाम है उसका...हां, कमलकान्त। वो कमलकान्त तुम्हें क्या देगा। तुम मेरे साथ हो जाओ मैं तुम्हारे कदमों में दौलत के ढेर लगा दूंगा। तुम्हें मुझसे कभी धोखा नहीं होगा।"

मैंने अपने कंधे पर से उसका हाथ झटका—फिर कहकहा लगाती हुई—उससे जरा दूर जाकर बोली—"धोखा...हा हा हा...मुझे धोखा देने वाला अभी पैदा नहीं हुआ, डॉक्टर यह बात अभी तक तुम्हारी खोपड़ी में नहीं आई कि मैं धोखे की बू भी सूंघ लेती हूं, तुम मुझसे क्या छिपाओगे। कहो तो मैं अभी ड्रग्स की बू सूंघती हुई—तुम्हारे गुप्त गोदाम तक पहुंच जाऊं।"

डॉक्टर का चेहरा एकदम से पीला पड़ गया। वो मेरी इस ताकत का प्रदर्शन देख चुका था। समझ गया था कि मेरे लिए उसके लाखों

करोड़ों डालर के नशीली दवाइयों के छिपे गोदाम तक पहुंचना मुश्किल नहीं है। जाहिर था वह डॉक्टर शैतान हवा के कंधों पर चलने वाली बू को तो नहीं रोक सकता था। वो मेरी नाक को यूं देखने लगा—जैसे मेरी नाक को काट कर फेंक देना चाहता हो। वो खुद को संभालते सख्त लहजे में बोला—"तुम तो बहुत ही खतरनाक औरत हो?"

"कोई भी खतरनाक होता है तो सिर्फ अपने दुश्मनों के लिए होता है। आपको तो ऐसा कुछ भी नहीं सोचना चाहिए डॉक्टर। आप क्यों डरते हैं कि मैं आपके किसी राज की बू तक पहुंच जाऊंगी।"

"मैंने किसी अपने को भी अपना इस कद्र राजदार बनाने की बाबत कभी नहीं सोचा, अब तुम्हारे बारे में भी बहुत संजीदगी से सोचना पड़ेगा। अब तुम इसी कमरे में कैद रहोगी, मैं किसी फैसले पर पहुंचने के बाद ही यहां आऊंगा।"

यह कह कर वो चला गया। उसे गए तीन घंटे हो चुके हैं।" सोनिया ने डॉक्टर शैतान से अपनी बातचीत के बारे में सोचा था और अब फिर वह कमल के बारे में सोचने लगी थी।

कमल चुपचाप उसकी सोच चुराता रहा।

वह अब सोच रही थी—"डॉक्टर को गए करीब तीन घंटे हो चुके हैं। कमल के सामने वह मोमबत्ती बुझ चुकी होगी। अब मैं क्या करूं। हां—यूं हाथ पर हाथ रखे बैठने से कुछ नहीं होगा, अब कुछ करना ही होगा।"

अब वो बड़ी तेजी से सोच रही थी कि वो क्या कर सकती है। कमल ने उसे शांत करने को ही उसकी सोच में सवाल उठाए, "पर मैं कर ही क्या सकती हूं। मेरे फौलादी पंजे इन्होंने निकाल कर रख दिए हैं। यहां सभी हथियारबंद हैं, मैं निहत्थी कुछ नहीं कर सकती।"

कमल के इस हस्तक्षेप ने उसे ठंडा कर दिया। वह बड़े जोशीले अंदाज में उठ कर खड़ी हो गई थी। कमल ने उसे बेबसी का अहसास दिलाया तो वह फिर कुर्सी पर बैठ गई।

अब उसका जहन खुद सोच रहा था—"अगर मैं जिद और तैश में आ कर कुछ कर बैठूंगी तो कमल को नुकसान पहुंचेगा। कमल बेबस बंधा पड़ा है। हां—अगर वह किसी तरह आजाद हो जाए तो फिर हम मिलकर अपने बचाव के लिए कुछ न कुछ कर सकते हैं।"

वह कमल के लिए बड़ी परेशान थी। कमल उसकी जहानत को समझाना चाहता था कि वह ऐसी मजबूरी की हालत में क्या कर सकती है? कमल ने यही सवाल उससे उसकी सोच के जरिए पूछा

तो वह थोड़ी देर सोचती रही।

"टकराव का रास्ता अपना कर कमल को आजाद नहीं कराया जा सकता। क्योंकि मैं डॉक्टर शैतान से कहूं कि वह कमल के पास एक मोमबत्ती और पहुंचा दे, बस—अब तो यही एक रास्ता नजर आता है, ना जाने क्यों मेरा दिल कहता है कि कमल मोमबत्ती की लौ के माध्यम से अपनी सम्मोहन व टेलीपैथी की ताकतें फिर से पा लेगा।"

कमल उसकी सोचें पढ़ रहा था। सोनिया बेचारी अभी तक इस बारे में ही चिंतित थी कि कमल को अपनी टेलीपैथी की महारत पाने को शायद अभी और मोमबत्ती की जरूरत थी। कमल को शरारत सूझी। उसने सोनिया को छेड़ने के लिए उसके जहन में कहकहा लगाया—

"हा-हा-हा...सोनिया ही-ही-ही...सोनिया हू-हू-हू...सोनिया हा-हा-हा।"

सोनिया ने घबरा कर दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया।

"यह मेरे जहन में कैसे कहकहे उभर रहे हैं।" उसने सोचा, "यह मुझे कौन पुकार रहा है। कमल...कमल...क्या यह तुम हो?"

कमल ने बदस्तूर कहकहा लगाया, "हा-हा-हा, यह मैं हूं—मास्टर लयूशे।"

उसने सोचा, "यह झूठ है। मास्टर लयूशे मर चुका है।"

"हो-हो-हो। इस दुनिया में सभी मरते हैं। लेकिन इंसान की सोच नहीं मरती। इंसान की सोचें...सृष्टि के बेकरार सन्नाटे में भटकती रहती हैं। मैं मास्टर लयूशे जो सोच का शहंशाह था—मर कर भी न मर सका। मैं पहले हाड़-मांस का पुतला था—अब सोचों का पुतला हूं और भटकता हुआ उस जगह पहुंच गया हूं—जहां तुमने अपने डियर-डार्लिंग कमल के लिए मोमबत्ती रोशन की थी। वो शमा की लौ को माध्यम बना अपने अतीत को याद करना चाहता था। लेकिन मैं उसकी राह में रुकावट बन गया।"

सोनिया हैरान और परेशान—आंखें फाड़े शून्य में घूर रही थी, उसने कांपती आवाज में पूछा, "क-क्या...क्या तुमने कमल को नुकसान पहुंचाया है?"

कमल ने फिर कहकहा लगाया, बोला, "नहीं। अभी तो मैं उस बोरे के दो सुराखों के सामने आ कर खड़ा हो गया था ताकि वो मोमबत्ती की लौ को न देख सके।"

सोनिया चीख ही तो पड़ी, "शैतान के बच्चे। तुम...तुम...इस दुनिया में फिर कैसे चले आए। मुझे यकीन नहीं आता।"

"आ जाएगा...यकीन भी आ जाएगा। जब अपने डियर-डार्लिंग से मिलोगी तो यकीन भी आ जाएगा। इंसान इस दुनिया में जो बोता है—मरने के बाद काटता है। मैं टेलीपैथी का मास्टर...सोचों का बादशाह...सारी उम्र उसकी रोशनी पीता रहा। अब ऐसी आदत हो गई है कि मोमबत्ती खा कर पेट भरता हूं, तुमने जो मोमबत्ती अपने कमल के सामने रोशन की थी—उसे मैंने खा लिया।" सोनिया को उसे सताने में बड़ा मजा आ रहा था।

सोनिया मुट्ठियां भींचते बोली, "मैं तुम्हारा मुंह नोंच लूंगी।"

"मरने के बाद मेरा मुंह ही नहीं रहा—सिर्फ सोच रह गई है—तुम कैसे नोंचोगी?"

वह बेबसी से कुर्सी पर पहलू बदलने लगी। उसकी सोच बता रही थी—"आह! कैसी तिगड़म से मैंने अपने कमल के लिए मोमबत्ती हासिल की थी। मुझे यकीन था कि वो अपने अतीत के साथ अपनी टेलीपैथी की ताकतें भी वापिस पा लेगा। मगर इस शैतान ने मेरे मंसूबे को खाक में मिला दिया। मास्टरों के गिरोह के इस टेलीपैथी मास्टर को तो कमल ने मार डाला था। फिर... फिर...यह सब क्या चक्कर है। इस शैतान की सोच दुनिया में वापिस कैसे आ गई है?"

कमल ने उसकी सोच को दस्तक दी और कद्रे शुष्क लहजे में बोला—"सोनिया डार्लिंग! यह न भूलो कि मैं तुम्हारी सोच पढ़ रहा हूं। तुम मुझे बार-बार शैतान कह रही हो। यह बुरी बात है। मरने वालों को गाली नहीं देनी चाहिए। वैसे मरने के बाद—मैं दयालू बन गया हूं। सुनो—मैं तुम्हारी तीन ख्वाहिशें पूरी कर सकता हूं। खूब सोच समझ कर बताओ कि तुम क्या चाहती हो?"

सोनिया हैरान परेशान हो सोचने लगी कि शैतान किस तरह मेहरबान हो रहा है। उसने अविश्वास पूर्ण लहजे में पूछा, "क्या वाकई तुम मेरी तीन ख्वाहिशें पूरी करोगे?"

"आजमा कर देख लो।"

"अच्छा तो मेरी पहली ख्वाहिश यह है कि कमल रस्सियों से बंधा हुआ छत से लटक रहा है—तुम उसकी रस्सियां खोल दो।"

"सोनिया, मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि खूब सोच-समझ कर अपनी ख्वाहिशें बयान करो। अब मरने के बाद मेरे हाथ-पांव नहीं रहे हैं। और चूंकि मेरे हाथ नहीं है मैं रस्सियां नहीं खोल सकता। इसलिए तुम्हारी पहली ख्वाहिश व्यर्थ गई।"

सोनिया गुस्से से चीख कर बोली, "शैतान के बच्चे मैं तुम्हें मार डालूंगी।"

"मैं मर चुका हूं। इसलिए तुम्हारी वह दूसरी ख्वाहिश भी पूरी

नहीं हो सकेगी। अब एक आखिरी मौका है। खूब सोच-समझ कर अपनी ख्वाहिश बयान करो।"

और इस बार सोनिया संजीदगी के साथ सोचने लगी। और अंततः वह बोली, "मास्टर लयूशे! सम्मोहन और टेलीपैथी की ताकतों के ज़रिए मुझे और मेरे कमल को इस कैद से छुटकारा दिला दो।"

"हां—यह माकूल ख्वाहिश है, अब तुम अपनी जगह से उठकर उस शख्स को बुलाओ, जिसने तुम्हें कैद किया है, मैं तुम्हारे माध्यम से उसके जहन में झांक कर उससे निपट लूंगा।"

सोनिया ने इत्मीनान की एक गहरी सांस ली। अपनी जगह से उठकर दरवाजे के पास आई और दरवाजे को जोर-जोर से पीटने लगी।

दूसरी तरफ से पूछा गया, "क्या बात है? क्यों शोर मचा रही हो?"

"दरवाज़ा खोलो। मैं तुम्हारे बॉस से मिलना चाहती हूं।"

"बॉस तुम्हारे बुलावे पर नहीं आएगा। वह अपनी मर्जी का मालिक है। तुम गला मत फाड़ो।"

सोनिया फिर शोर मचाना चाहती थी। कमल ने उसकी सोच में कहा, "बस, मेरी जान। मैंने दरवाजे के पीछे इस आदमी की आवाज को सुन लिया है। अब मैं उसके लहजे और उसकी सोच के जरिए उसके बाप तक भी पहुंच जाऊंगा।"

सोनिया खुश होकर अपनी जगह आ बैठी।

और अब कमल ने उस शख्स के जहन में झांक कर देखा—जो बंद दरवाजे के बाहर खड़ा हुआ था।

इस शख्स की सोचों से ही कमल ने जाना कि उसके कंधे पर राइफल रखी हुई थी। राइफल की नाल ऊपर की तरफ थी—और उसका भारी कुन्दा नीचे की तरफ था।

दूसरों की सोचों में दखल दे—सम्मोहन व टेलीपैथी द्वारा मनमानी कराने की ताकत थी कमल में। उसने अपना यह सामर्थ्य वापिस पा लिया था। उसने अपना खेल इसी से शुरू किया। उसने उस शख्स की सोच में उसे सोचाया—

"मैं इतनी भारी राइफल खामखां ही उठाए खड़ा हूं। लानत है, इस बोझ पर मुझे इसे जमीन पर पटक देना चाहिए। यह लो मैंने पटक दिया।"

कमल ने यह बात उसकी सोच में इतने झटके से कही थी—यह उसके अपने दिमाग का आदेश बन गई। और मानव शरीर तो उसके

दिमाग के नियंत्रण में ही होता है। दिमाग के आदेश पर यंत्रवत ही अमल होता है। उस शख्स ने राइफल को एकदम ही एक झटके से नीचे पटका—तो राइफल के भारी कुन्दे से उसका अपना पांव कुचल गया।

"माई गॉड।" उसने पीड़ा से बिलबिला कर अपने जख्मी पांव को उठा कर अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और दूसरी टांग पर इधर से उधर फुदकने लगा। कुछ देर बाद जब पीड़ा कम हुई तो वह गुस्से से जमीन पर पड़ी राइफल को देखने लगा।

उसने हैरानी से ही सोचा, "यह अभी मुझे क्या हो गया था?"

कमल ने उसकी सोच बन जवाब दिया, "मैं पागल हो गया था। बल्कि अब भी मेरी खोपड़ी घूम रही है। बल्कि वो सामने वाली दीवार घूम कर इधर से उधर जा रही है। मेरा दिल एक आशिक के दिल की तरह उछल रहा है। नीचे से ऊपर—ऊपर से नीचे...हो हा...हो हा...।"

कमल हो हा की तान पर उसके दिमाग में निरंतर चीखता चला गया।

उस शख्स की हालत देखने वाली थी। वो जुनूनी अंदाज में सिर को इधर से उधर झटक रहा था। और राहदारी की तरफ की दीवारों से कभी यहां और कभी वहां टकरा रहा था।

वह अब पूरी तरह से कमल की सोच के शिकंजे में आ गया था।

कमल ने उसे सोचाया, "अब मैं यह राइफल उठा कर दरवाजे पर मारूंगा। जोर से—और जोर से—मैं मार-मार कर यह दरवाजा तोड़ दूंगा।" और वो शुरू हो गया था।

घड़ाघड़ का शोर उठने लगा था। वह दरवाजा टूटने पर आ गया था, उसी वक्त चारों तरफ से भागते हुए कदमों की आवाजें सुनाई देने लगी।

ये आवाजें कमल उस शख्स के दिमाग के जरिए सुन रहा था।

फिर किसी के ललकारने की आवाज सुनाई दी।

कोई लोकल जुबान में कुछ कह रहा था, कमल समझ नहीं पाया—लेकिन यह बात समझ में आ गई कि जो शख्स उसकी सोच का कैदी बन यह जनूनी हरकतें कर रहा था—वो अंग्रेजी के अलावा दूसरी जुबानें भी जानता है।

"मुझे यह लोकल जुबान नहीं समझनी चाहिए।" कमल ने उसके दिमाग के जरिए उसे आदेश दिया, "लोकल जुबान बोलने वाले की ऐसी-की तैसी, मैं फायर कर रहा हूं।"

इस सोच के साथ ही उसने राइफल सीधी की और एक फायर झोंक दिया। राहदारी में दोनों तरफ से आने वाले सशस्त्र गार्ड वहां से भागे—ताकि अपने इस पागल हो चुके साथी की गोलियों से सुरक्षित रह सकें।

कमल की सोच के आदेशानुसार वो शख्स राइफल के कुन्दे से दरवाजा तोड़ता रहा। तीन-चार प्रहारों के बाद ही दरवाजा टूट गया।

अब कमल ने उसकी सोच में कहा, "अब मैं यह राइफल फेंक कर अपने बॉस के सामने पेश होने जा रहा हूं।"

उसने राइफल फेंक दी और भागता हुआ बॉस की तरफ जाने लगा। सोनिया कमरे में खड़ी टूटे हुए दरवाजे को देख कर सोच रही थी—

"यह क्या हो रहा है? क्या वो मुर्दा मास्टर लयूशे ये हंगामा कर रहा है?"

कमल ने उसकी सोच में कहा, "हां—वो जो कुछ अर्से के लिए मुर्दा हो गया था—अब वो जिंदों के बीच हंगामें करने आ गया है। तुम इत्मीनान से अपनी जगह बैठी रहो। अब इनका बॉस तुम्हारे पास खुद ही आएगा।"

सोनिया बैठ गई। पर ऐसे में इत्मीनान कहां आता। वह अब फिर कमल ही के बारे में सोच रही थी।

"यह कमबख्त मास्टर लयूशे—यूं ही इन बेहूदा हंगामों में मजा लेता रहेगा और वहां मेरे कमल के हाथ-पांव अकड़ गए होंगे। ओए, शैतान के पिल्ले! तफरीह बाद में कर लेना। पहले उसे आजाद करा दे।"

सोनिया ठीक सोच रही थी। कमल खुद यही चाहता था कि किसी तरह उसे हाथ-पांव सीधे करने का मौका मिले। पर यह एकदम ही मुमकिन नहीं था। उसे इसके लिए अभी दो-चार लोगों को इसी तरह अपनी सोच की उंगलियों पर नचाना था। कमल यह भी तो नहीं चाहता था कि डॉक्टर शैतान या किसी को भी उसकी टेलीपैथी का इल्म हो। इसीलिए इस ड्रामेबाजी की जरूरत पेश आ रही थी।

डॉक्टर शैतान जल्दी ही सोनिया के पास पहुंच गया।

उसके पीछे कई सशस्त्र गार्ड थे। दो जवानों ने उस शख्स को पकड़ रखा था जो अभी गोलियां दाग कर और दरवाजा तोड़ कर अपना पागलपन दिखा चुका था।

डॉक्टर ने आते ही सोनिया से पूछा, "यह क्या हो रहा है?"

सोनिया ने आश्चर्य व खौफ का दिखावा किया, बोली, "मैं खुद हैरान हूं। मैं इस कमरे में कैद थी। बाहर तुम्हारा यह आदमी जाने

क्या कर रहा था? मुझे सिर्फ तोड़ने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। इसने दरवाजा तोड़ डाला और फिर अपनी राइफल फेंक कर न जाने कहां चला गया।"

डॉक्टर उस शख्स को घूरने लगा।

वो शख्स बोला, "बॉस! मैं पहले ही कह चुका हूं कि यह लड़की यहां अंदर थी, इसने मुझे आपके खिलाफ नहीं भड़काया है। मैं...मैं खुद नहीं जानता कि मुझे क्या हो गया था।"

सोनिया अपनी जगह से उठते हुए बोली, "डॉक्टर मेरी समझ में यह बात आती है कि यह शख्स बहुत ज्यादा नशा करता होगा। शायद उस वक्त भी नशा कर रहा होगा। इसलिए इसका दिमाग उलट गया था।"

"नानसैंस।" डॉक्टर बोला, "यहां कितने ही लोग चरस का नशा करते हैं। लेकिन आज तक किसी ने पागलपन का प्रदर्शन नहीं किया।"

कमल दूर बोरे में टंगा यह सब जैसे अपने सामने देख व सुन रहा था। उसने फौरन डॉक्टर की सोच में कहा—

"हो सकता है कि इस बार चरस की जो खेप आई है। उसमें किसी ऐसी चीज की मिलावट हो जो दिमाग पर जुनूनी असर डालती हो।"

डॉक्टर इस बारे में संजीदगी से सोचने लगा। उसने अपने एक अंग्रेज साथी से कहा—

"इस बार जो खेप आई है उसका सैम्पल ला कर मुझे दिखाओ।"

उसके इस मातहत ने जेब से सिगरेट का एक पैकेट निकाला और उसमें से एक सिगरेट निकाल कर डॉक्टर की तरफ बढ़ाते हुए बोला—

"यह सिगरेट नई खेप वाली चरस की ही है।"

डॉक्टर ने वह सिगरेट लेकर अपने होंठों में दबाई और फिर उसे सुलगा कर कुर्सी पर बैठ गया। उसने धीरे-धीरे कुछ कश लिए। उसके चार कश लगाने के बाद कमल ने उसके दिमाग में झांक कर कहा—

"तक धिना धिन...धिना धिन...तक धिना धिन।" डॉक्टर पहले तो बौखलाया फिर एकदम से उछल कर खड़ा हो गया। वो जैसे ही खड़ा हुआ—कमल ने उसके जहन में चीख कर कहा—

"अबाउट-टर्न।" जैसे ही वो 'अबाउट टर्न' हुआ—कमल ने उसकी सोच में फौरन हुक्म दिया—

"कुर्सी तुम्हारे पीछे है बैठ जाओ।"

मगर कुर्सी तो उसके आगे थी। आदेश दिमाग का था। वो अपने दिमाग के आदेश पर बैठा और धड़ाम से फर्श पर आ रहा। दो गार्डों ने आगे बढ़कर उसे उठाया। वो उल्लू की तरह आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था और सोच रहा था।

"यह...यह अभी मुझे क्या हो गया था।"

कमल ने उसकी खुद की सोच में कहा, "अभी 'तक-धिना-धिन' हुआ था। यह तक-धिना-धिन क्या होता है? मुझे एक और कश लगा कर देखना चाहिए।"

उसने घबरा कर ऊंची आवाज में कहा, "अब मैं इस सिगरेट को हाथ भी नहीं लगाऊंगा।" वह सिगरेट फर्श पर पड़ा हुआ था। बदहवास डॉक्टर ने अपने अंग्रेज मातहत से पूछा—

"क्या तुमने अपने पैकेट से कोई सिगरेट पिया था?"

"नहीं। सिगरेट तैयार ही किए थे कि यह हंगामा सुन कर इधर चला आया।"

डॉक्टर ने सिगरेट की तरफ इशारा किया, "इसे उठाओ और इसके कश लगा कर दिखाओ। मैं देखना चाहता हूं कि इस बार हम किस तरह से यह मिलावटी माल उठा लाए हैं।"

उस अंग्रेज ने पैकेट से दूसरा सिगरेट निकालते हुए कहा, "उस सिगरेट को आप आजमा चुके हैं, मैं यह दूसरा सिगरेट टेस्ट करके देखता हूं।"

डॉक्टर ने उसे इजाजत दे दी।

वो सिगरेट सुलगा कर आहिस्ता-आहिस्ता कश लगाने लगा। कमरे में गहरी खामोशी छा गई थी। यूं लगता था जैसे वो सब ही सांस रोके इस तीसरे शख्स के पागल होने का इंतजार कर रहे हैं।

लेकिन कमल ने जानबूझ कर इस तीसरे शख्स को छूट दे दी—मगर उसके दिमाग में झांकता रहा। यह शख्स कश लेते भीतर ही भीतर दहला जा रहा था कि जाने उसके साथ क्या होता है। जहन में खौफ समाया हुआ था, सो सिगरेट के कश लगाते वक्त उसके हाथ कांप रहे थे। चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। वो अपना खौफ छिपाने के लिए जबरन बत्तीसी निकाल कर हंसा। उसे सहसा ही दांत निकाल कर हीं-हीं-हीं करते देख कर सब पीछे हट गए।

कमल ने उसे पागल नहीं बनाया था—मगर हालात ऐसे थे कि उसके साथी उसे पागल समझने लगे।

डॉक्टर ने मायूसी से सिर हिला कर कहा—"तुम्हारे सिगरेट में जो चरस है वो ज्यादा घातक नहीं है। तुम पर बहुत हलका दौरा पड़ा है। कम ऑन-तीसरा सिगरेट सुलगाओ।"

वो दूसरे सिगरेट से तीसरा सिगरेट सुलगाने लगा।

एक बार फिर गहरी खामोशी छा गई।

सभी मुंहबाए...उसका मुंह देख रहे थे।

दूसरा सिगरेट सुलगा कर एक कश लेने के बाद भी वह पहले जलते हुए सिगरेट को अपने दूसरे हाथ में पकड़े हुए था। कमल ने उसके दिमाग में कहा—

"मैं इस सिगरेट को खामखां ही पकड़े हुए हूं। मुझे इसे फेंक देना चाहिए। मैं इसे फेंक रहा हूं।"

सामने डॉक्टर फर्श पर से उठ रहा था। वह सुलगता हुआ सिगरेट उसके मुंह पर आ कर लगा तो वो बौखला कर दोबारा फर्श पर आ रहा।

वह हलक फाड़ चीखा, "यह क्या बदतमीजी है—यू ब्लडी फूल।"

"तक-धिना-धिन।" सिगरेट का कश लगाने वाले ने कहा। क्योंकि कमल उसके दिमाग में कह रहा था। फिर कमल ने उसे आदेश दिया—

"यह सामने डॉक्टर का चेहरा नहीं, ऐश-ट्रे है...राख इसी में झटकनी चाहिए।"

और उसने मंत्रमुग्ध ही आगे बढ़ कर डॉक्टर के चेहरे पर राख झटक दी, तभी दूसरे गार्डों ने आगे बढ़ उसे दबोच लिया और उसे धकेलते हुए पीछे ले गए। फिर उसके हाथ से सिगरेट छीन कर फेंक दिया।

इस बार डॉक्टर को गुस्सा नहीं आया था। वह फर्श से उठते हुए बोला—

"हमें माल पहुंचाने वालों ने हमारे साथ धोखा किया है, इस बार जो 'सप्लाई' आई है उसे अलग रखा जाए, अगली बार जब वो माल लेकर आएंगे तो हम उन्हें यहां लाकर कैद कर देंगे। और उन्हें उनकी यह चरस पीने पर मजबूर कर देंगे। उनकी यही सजा है कि उनका दिमाग उलट दिया जाए।"

और अब उसने सोनिया की तरफ गहरी नजरों से देखा।

कमल उससे अपने दिमागी तार जोड़े हुए था—डॉक्टर सोच रहा था—"यह बू सूंघने वाली औरत भी खतरनाक है, क्यों न इसे भी यह सिगरेट पिला कर इसका दिमाग उलट दिया जाए।"

कमल ने तुरंत उसकी सोच में सवाल किया, "लेकिन इसे पागल बनाने से क्या फायदा होगा?"

डॉक्टर की अपनी सोच ने हैरानी से कहा, "अरे! मैं इस औरत की हिमायत में क्यों सोच रहा हूं? मुझे तो चाहिए कि इसे फौरन

गोली मार दूं, अगर यह इस टापू से बाहर जाएगी तो जापानी पुलिस के साथ वापिस भी आ सकती है। तब अगर मैं चरस का स्टॉक एक जगह से कहीं और भी छिपा दूंगा—तो यह हर्राफा बू सूंघती हुई वहां भी पहुंच जाएगी। मैं इसे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। पर सकून से मरने भी नहीं दूंगा। टार्चर कर कर के मारूंगा इसे।"

कमल ने उसी की सोच में उसे सुझाया, "चरस का नशा सोनिया का दिमाग तो उलट सकता है मगर उसे जहनी यातनाएं नहीं पहुंचा सकता। इस औरत के तड़पने का तमाशा तो उस वक्त देखने को मिलेगा—जब इसके सामने इसके शौहर को यह चरस इस्तेमाल कराई जाएगी। उसका पागलपन इसे मानसिक झटके देगा।"

डॉक्टर इस पर सहमति में सिर झुलाता सोचने लगा—"हां—यह वाकई उम्दा तरकीब है। मैं एक को पागल बना दूंगा तो दूसरे को भी सजा मिलती रहेगी।" इस निर्णय पर पहुंचते ही उसने अपने एक आदमी से कहा, "जाओ, इसके मर्द को बोरी से निकाल कर ले आओ।"

आदेश पाते ही कुछ गार्ड वहां से चल दिये।

❑❑

कमल को अपने इस खेल में मजा आ रहा था।

उसे मुक्ति दिलाने, डॉक्टर के भेजे गार्ड, उसकी तरफ आ रहे थे, सो अब कमल ने अपने बारे में सोचा। एक ही अंदाज में अकड़ कर बैठे रहने के कारण उसका समूचा बदन ही सुन्न हो गया था। रगों में रक्त-प्रवाह सामान्य नहीं था। थोड़ी देर बाद—हाथ-पांव सीधे करते वक्त उसे कितनी तकलीफ होगी—इसका अंदाजा वह कर सकता था।

इसलिए अपनी सम्मोहन शक्ति द्वारा कमल अपने आप को मानसिक तौर पर आने वाले इन क्षणों के लिए तैयार करने लगा। यूं वह शारीरिक कष्ट की पीड़ा के अहसास से बच सकता था। उसने ऐसा ही किया। उसने अपने दिमाग को निर्देश दिए—

"अब कुछ समय तक मेरा दिमाग शारीरिक पीड़ा को महसूस नहीं करेगा। मेरे सारे अहसास दिमाग से ताल्लुक रखते हैं। और यह दिमाग मुझे अभी हर दुख-दर्द से आजाद रखेगा। और इसका आसान रास्ता यही है कि अब मुझे नींद आ जाएगी।" उसने धीरे से अपनी आंखें बंद की व एक सम्मोहनकर्ता की तरह अपने आप को आदेश देने लगा, "अब मैं सो रहा हूं, गहरी नींद सो रहा हूं। नींद के दौरान मुझ पर जो कुछ गुजरेगी—उससे मैं बेखबर रहूंगा। जब मेरी शारीरिक अकड़न जाती रहेगी। मेरे हाथ-पांव सीधे व नार्मल

हो जाएंगे, शरीर में रक्त-प्रवाह सामान्य हो जाएगा तो मैं जाग जाऊंगा।"

यूं कमल आरम्भ ही से इस बात का आदी था कि वो सोने से पहले अपने दिमाग को हिदायत देता था एक निश्चिंत वक्त तक उसकी नींद में किसी प्रकार का कोई विघ्न न पड़े और वो इतने समय बाद जाग जाए।

और ऐसा ही होता भी था।

इस बार भी ऐसा ही हुआ।

थोड़ी ही देर बाद वह गहरी नींद की आगोश में था।

उसे कुछ मालूम न हो सका कि डॉक्टर शैतान के कारिन्दे कब आएं। कैसे उन्होंने उसे छत से उतार कर बोरी से निकाला और कितनी देर तक उसके हाथ-पांव की मालिश करते हुए उसे सीधा करते रहे। जब कमल के हाथ-पांव सीधे हो गए। रगों में खून रवां हो गर्दिश करने लगा और उसे स्ट्रेचर पर डाल कर ले जाने लगे तो कमल के दिमाग ने उसकी हिदायत के मुताबिक उसे जगा दिया।

कमल ने पलकों की झिर्री से देखा। उसे स्ट्रेचर पर एक राहदारी से ले जाया जा रहा था। फिर वो टूटे हुए दरवाजे में से कमरे में दाखिल हो गए और स्ट्रेचर को फर्श पर रख दिया। अब कमल आंखें खोल कर चारों तरफ हैरान हो कर देखने लगा।

डॉक्टर शैतान की आवाज सुनाई दी, "मिस्टर कमलकान्त! इस वक्त तुम मेरे सामने हो। तुम्हें तकलीफ़ तो होगी मगर किसी तरह उठ कर बैठने की कोशिश करो।"

कमल धीरे-धीरे उठ कर बैठने लगा। तकलीफ क्या होनी थी—लेकिन वह तकलीफ हो रही होने का प्रदर्शन कर रहा था।

डॉक्टर शैतान के होंठों पर विजयी मुस्कान तैर गई थी, वह बोला, "मिस्टर कमलकान्त! मैंने तुम्हें अट्ठारह घंटे टेढ़ा रख कर तुम्हारी रग-रग सीधी कर दी है। मुझे यकीन है कि अब तुम कोई बात नहीं छुपाओगे।"

कमल ने झल्लाहट जाहिर की, बोला, "आखिर तुम पूछना क्या चाहते हो? मैं तुम्हें सब कुछ बता चुका हूं।"

"झूठ न बोलो। तुमने यह नहीं बताया था कि तुम्हारी औरत सूंघने की असाधारण शक्ति रखती है। मुझे लगता है कि तुम में भी असाधारण विशेषता है जिसे तुम अब तक मुझ से छिपाये हुए हो।"

"काश! मेरे में भी ऐसी कोई विशेषता होती।" कमल ने गहरा सांस लिया, "तब तुम हमें चूहों की तरह बेबस करके न रख सकते।"

"फिर तुम में ऐसा क्या है जो सोनिया जैसी औरत तुम्हें इतना टूट कर चाहती है?"

"वाह! तुम्हें क्या कमी नजर आ रही है मुझमें। गोरा-चिट्टा गबरू जवान हूं। सोनिया एक औरत है और एक औरत को एक पूरे मर्द के अलावा और क्या चाहिए। तुम्हारा यह कद्दावर पहलवान अंग्रेज मातहत भी मुझ से पंजा नहीं लड़ा सकेगा।"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि मैं ताकतवर भी हूं।" कमल ने अपने हाथ फैला 'डोले' दिखाए।

डॉक्टर का वह देवकाय अंग्रेज बाडीगार्ड कमल को घूरने लगा। उसने अपनी मुट्ठियां यूं भींची जैसे कमल से पंजा लड़ाने को बेताब हो रहा हो।

"तुम मेरे इस बाडीगार्ड को चैलेंज न करो। हम इसे जगलर कहते हैं। तुमने बोल्डमैन जैसे गैंडे को देखा है। वह गैंडा भी इस जगलर से टकरा कर हार मान जाता है। तुम इससे पंजा लड़ाओगे तो तुम्हारी उंगलियों का कचूमर निकल जाएगा।"

कमल को अचानक ख्याल आया कि उसे हीरो बन कर दिखाने की कोई हिमाकत नहीं करनी चाहिए। इन लोगों की निगाह में तो पूरे अट्ठारह घंटे की यातना सहने के बाद वो एक टूटा-फूटा इंसान ही तो था। ऐसे में अगर कमल कोई कारनामा कर दिखाता है तो इस सनकी डॉक्टर का यह अंदेशा यकीन में बदल जाना था कि उसमें भी कोई असाधारण चमत्कारी शक्ति है।

मगर डॉक्टर शैतान के दिमाग में कुछ और था।

वो सोच रहा था, "मुझे इन दोनों मियां-बीवी को जिंदा नहीं छोड़ना है। मैं इसे चरस इस्तेमाल करने पर मजबूर करने वाला था। अब जरा तमाशा हो जाए। इसे पागल बनाने से पहले क्यों न जगलर के हाथों इसके पंजे तुड़वा दिए जाएं। अच्छा है यह दोनों हाथों से बेकार हो जाए।"

उसने जगलर से पूछा, "क्यों क्या ख्याल है? इसका चैलेंज सुना तुमने?"

"सुना, बॉस।" वो बोला, "पर पूरे अट्ठारह घंटे की यातना के बाद इसमें ताकत कहां रह गई होगी। और तुम तो जानते ही हो कि जगलर किसी कमजोर शख्स से कोई भी मुकाबला करना अपनी तौहीन समझता है।"

"यह कमजोर है या निढाल...मुझे इससे कोई दिलचस्पी नहीं है। इसने तुम्हें चैलेंज किया है। मैं देखना चाहता हूं कि उंगलियों

के चटखने और टूटने की आवाज किस तरह आती है। चलो, आगे बढ़ो और इससे पंजे लड़ाओ।"

कमल ने अपनी गलती सुधारने को जाहिरा घबराहट दिखाई, "नहीं...अभी नहीं। अभी तो मैंने खुद को संभाला भी नहीं है। यह बराबर का मुकाबला नहीं होगा। मैं अभी इससे पंजा नहीं लड़ाऊंगा।"

यह कह कर कमल धीरे-धीरे यूं उठने लगा—जैसे घबरा कर भागने का इरादा हो। उसे अपनी जगह से उठते देख कर चार गार्ड टूटे हुए दरवाजे के पास जा खड़े हुए ताकि वह भाग न सके। कमल ने दरवाजे की तरफ देखा तो सोनिया अपनी जगह से उठते हुए बोली—

"कमल! तुम इस वक्त वाकई कमजोरी महसूस कर रहे होगे। तुम एक तरफ हट जाओ। इससे मुकाबला मैं करती हूं।"

कमल उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला, "नहीं, मेरी जान! मेरी तकदीर में जो लिखा है वो अभी सामने आएगा। मां का दूध और पंजाब का पानी पिया है मैंने।"

डॉक्टर शैतान ने कहकहा लगाते कहा, "हां, सोनिया जान। तुम अपनी जगह जाकर बैठो, तुम इसकी मर्दानगी पर फिदा हो, यह कैसे औरतों की तरह मार खाता है—यह तमाशा देखो तुम।"

दो गार्डों ने डॉक्टर के इशारे पर सोनिया को दोनों तरफ से पकड़ कर कमल से दूर हटा दिया।

जगलर इस विश्वास के साथ आगे बढ़ा कि कमल कमजोर है और उसे ज्यादा ताकत इस्तेमाल नहीं करनी पड़ेगी। उसने कमल की तरफ अपने दोनों पंजे बढ़ाते हुए कहा—

"आओ। तुम कमजोर हो। मैं कुछ नहीं करूंगा। तुम खुद ही पंजा मिला कर मेरी उंगलियां तोड़ दो। आओ, मुन्ना। घबराओ नहीं।" वो मुंह बना कर कमल को पुचकारने लगा।

कमल ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर—उसकी उंगलियों में अपनी उंगलियां फंसाते वक्त उसकी सोच को पढ़ लिया कि वो क्या करना चाहता है। कमल ने जगलर का तमाशा बनाने का सोच लिया था। सो—जगलर के कुछ करने से पहले ही उसने उसके दिमाग को एक झटका पहुंचाया। कमल के सोचाए उसने सोचा—

"तक-धिना-धिन। चरस का नशा फिर बोल रहा है, मेरा दिमाग ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर हो रहा है। ये...ये मेरे दिमाग को कैसे झटके लग रहे हैं।"

जगलर के दोनों हाथ सुन्न पड़ गए, वो अपने सिर को झटकने लगा। उंगलियां तोड़ देने का फन कमल भी जानता था। वो अगर

चाहता तो इस चरसी के दोनों हाथों की उंगलियों को एक हल्के से झटके से बेकार कर देता। लेकिन कमल अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करना चाहता था।

उसने अपना खेल आगे बढ़ाया और जगलर के दिमाग में कहा, "वो कमबख्त कमल मेरे दाईं तरफ है...मुझे एक उलटा हाथ रसीद करना चाहिए।"

दिमागी झटके पहुंचने के कारण उसकी आंखें बंद थी। सो दाईं तरफ खड़े हुए डॉक्टर शैतान के मुंह पर उसका उल्टा हाथ पड़ा। जगलर का यह वार अप्रत्याशित था—दुबला-पतला डॉक्टर उसके इस एक ही हाथ में फर्श पर चारों खाने चित्त हो गया। जगलर के फौलादी हाथों में कितनी ताकत है इसका सबूत नजर आ रहा था।

डॉक्टर बेहोश पड़ा हुआ था और उसकी नाक से खून निकल रहा था।

कुछ क्षणों तक किसी की समझ में नहीं आया कि वो क्या देखना चाहते थे और क्या तमाशा नजर आ रहा था। फिर वे सब एकदम एक्शन में आए और चारों तरफ से जगलर को जकड़ लिया। डॉक्टर का एक दूसरा अंग्रेज मातहत उस पर रिवॉल्वर तानते कह रहा था—

"तुम चरस भरी दो सिगरेट पी चुके हो। तुम्हारा दिमाग रह रह कर पटखनी खा जाता है। जब तक तुम्हारा दिमागी संतुलन ठीक नहीं हो जाता—उस वक्त तक तुम कैद में रहोगे।"

और उसी के आदेश पर चार सशस्त्र गार्ड—उसे पकड़ कर वहां से ले गए, कुछ गार्ड डॉक्टर पर झुके हुए थे और उसे होश में लाने की कोशिश कर रहे थे।

डॉक्टर कुछ देर बाद होश में तो आ गया मगर उस पर अजीब सी बदहवासी व्याप्त रही। दो आदमियों ने सहारा देकर उसे उठाया और लाकर कुर्सी पर बैठा दिया। डॉक्टर अभी कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं था।

कमल ने सोनिया की तरफ देखा। सोनिया उसी को घूर रही थी और सोच रही थी—

"कमल की याददाश्त यकीनन लौट आई है। उसकी सम्मोहन शक्ति उसे वापिस मिल चुकी है। मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं। मैंने देखा है—ठीक पंजे लड़ाते ही जगलर के जहन को झटका लगा—और उसने फिर पागलों जैसी हरकतें की, अपने बॉस पर हाथ छोड़ दिया। और...और...अगर यह मास्टर लयूशे की शरारत है तो फिर वह इतनी देर से कहां गायब था। अगर वो गायब है तो जगलर को यह झटका जरूर कमल ने दिया है।"

उसकी सोच पढ़ते ही कमल ने फौरन व अनज़ान बनते हुए पूछा, "सोनिया! यह अचानक क्या हो गया? क्या जगलर पर पागलपन का दौरा पड़ता है?"

सोनिया की आंखें सुकड़ गईं। उसके दिमाग में यही ख्याल उभरा था कि कमल जानबूझ कर अनजान बन रहा है। पर वह यह बात अपनी जुबान पर नहीं ला सकी क्योंकि अब डॉक्टर उन्हीं को घूर रहा था। सो सोनिया ने अपनी सोच के विपरीत जवाब दिया—

"हां! इस डॉक्टर पर भी इसी किस्म का दौरा पड़ चुका है। इन दोनों ने ही कोई गड़बड़ी वाली चरस इस्तेमाल की है। उसी के कारण इनका दिमागी संतुलन रह-रह कर बिगड़ जाता है। अब डॉक्टर पर भी दोबारा दौरा पड़ सकता है।"

डॉक्टर ने घबरा कर—इंकार में सिर हिलाते कहा—"नहीं...फार गॉड सेक। ऐसी मनहूस बातें न करो, यह एक्सपीरियंस मुझे महंगा पड़ा है, जगलर मेरा जांनिसार बाडीगार्ड है। उसने पागलपन से मजबूर होकर ही ऐसा किया होगा। बहरहाल, मैं इस वक्त परेशान हूं। थोड़ा आराम कर लूं—फिर निपटूंगा तुमसे।"

"मुझे तुमसे हमदर्दी है।" सोनिया बोली।

डॉक्टर ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि कमल और सोनिया को किसी दूसरे कमरे में ले जा कर बंद कर दिया जाए। यह आदेश दे वो अपने एक मातहत का सहारा लेते हुए वहां से चला गया।

□□

कमल और सोनिया को राइफलों के निशाने पर एक दूसरे कमरे में पहुंचा दिया गया।

गार्ड जब दरवाजा बाहर से बंद करके चले गए तो सोनिया बिस्तर पर गिर पड़ी और सोचने लगी—

"अब मैं थोड़ी देर तक कुछ नहीं सोचूंगी। क्यों कभी दिमाग सोच से खाली नहीं रह सकता?"

कमल ने उसकी सोच में जवाब दिया, "जब दिमाग सोच से खाली होता है तो यह इंसान की मौत का वक्त होता है।"

सोनिया ने अपनी सोच द्वारा तर्क दिया, "यह कोई जरूरी नहीं है कि इंसान खाली दिमाग हो जाए तो मर ही जाए। यह बात तुम कैसे कह सकते हो, कमल डियर।"

"मैं दावे के साथ।" और कमलकान्त को अचानक ही अपनी गलती का अहसास हुआ कि वो अपनी सोच के जरिए ही सोनिया की सोच का जवाब दे रहा है।

मगर अब तीर निकल चुका था। सोनिया बिस्तर से उछल कर

खड़ी हो गई। उसने लपक कर ही कमल का गिरेवान पकड़ा था। और फिर वह उसे बड़ी शोखी, खिन्नता व अपनत्व से ही झंझोड़ते हुए बोली—

"तुम मुझे बेवकूफ समझते हो, मैं बहुत देर से इस मौके की तलाश में थी। मैं जानती थी जब जहनी कलाबाजियों की बातें आएंगी तो तुम अपने स्वभाव से मजबूर होकर बरबस ही बहस करने लगोगे। क्यों कैसे पकड़ा? बताओ—तुम यह बात मुझसे क्यों छुपाना चाहते थे कि तुम्हें तुम्हारी याददाश्त मिल गई है और अब तुम अपने अतीत के साथ-साथ सम्मोहन व टेलीपैथी की ताकत भी पा चुके हो।"

"गुस्सा थूक दो जानेमन।" कमल झेंपी सी मुस्कराहट के साथ बोला, "मैं तो तुम्हारे साथ जरा दिल्लगी कर रहा था और मामला जरा लंबा खिंच गया, सच डार्लिंग! मुझे मौके का इंतजार था कि मैं इसी तरह तुम्हें अपने बाजुओं में लेकर तुम्हें यह खुशखबरी सुनाऊं कि तुम्हारा टेलीपैथी जानने वाला कमल वापिस आ गया है।"

और कमल ने उसे अपनी बांहों में भींच लिया था।

सोनिया यह तो पहले ही समझ गई थी कि कमल सोचों का शहंशाह बन गया है—लेकिन कमल के मुख से इसकी पुष्टि सुनकर वो खुशी से पागल हो गई। ऐसा लंबा व प्रगाढ़ चुम्बन लिया उसने कमल के होंठों का कि कमल निढाल हो गया।

वो भावावेश से रूंधी आवाज में बोली, "अब तो मुझे इतना इत्मीनान है डार्लिंग कि सिर्फ खुदा से डर लगता है। वर्ना दुनिया की कोई भी ताकत मेरे कमलकान्त का रास्ता नहीं रोक सकेगी।"

"यह खुदा की ही मेहरबानियां हैं कि मुझे अब ना सिर्फ अपना अतीत हासिल है बल्कि मैं अपनी टेलीपैथी व सम्मोहन शक्ति भी पहले की तरह पा चुका हूं। और इसका सेहरा तुम्हारे सिर है सोनिया! मेरे लिए मोमबत्ती जलवा कर रखवाना, मेरे लिए वरदान साबित हुआ है। मैं हैरान हूं कि तुमने ऐसे नाजुक मौके पर यह इतनी दूर की सोची थी।"

और अब कमल ने उसे बताया कि शमा की 'लौ' पर ध्यान केन्द्रित कर उसने किस तरह अपने अतीत को याद किया है और उसे अतीत के बिछुड़े हुए रिश्ते किस तरह याद आए हैं।

"सोनिया!" वो सोनिया को गर्मजोशी के साथ भींचते हुए बोला, "मुझे यकीन है कि फुर्सत में इत्मीनान से बैठ कर सोचूंगा तो मुझे और भी बहुत से रिश्ते...बहुत सी बातें याद आएंगी।"

और अब इसी सिलसिले में सोनिया ने कमल को उसके दोस्त कबीर बेदी की याद दिलाई। वो बोली, "हिंदुस्तान में वहां की

इंटेलीजैंस के एक डिप्टी डायरेक्टर तुम्हारे गहरे दोस्त थे—उनका नाम याद है तुम्हें।"

और यह नाम कमल को तुरंत याद आ गया था, "उसका...उसका नाम कबीर बेदी है। एक मुद्दत हुई उससे बिछुड़े। मुझे याद आ रहा है कि तुम और मास्टर लयूशे हिंदुस्तान में मेरी तलाश मेरे इसी दोस्त के माध्यम से कर रहे थे, वो ना जाने मेरे बारे में क्या सोच रहा होगा।"

सोनिया शायद कमल के सामर्थ्य को आजमाना चाह रही थी, उसने कमल के गले में बांहें डाल कर मश्वरा दिया, "तो फिर उनकी सोच पढ़ कर देखो ना। अभी पता चल जाएगा। किसी से जहनी तार जोड़ने में तुम्हारे लिए दूरियां और फासले तो कोई महत्व रखते नहीं।"

कमल कुछ सोचने लगा, फिर बोला, "नहीं सोनिया? अब मैं बहुत ज्यादा सतर्क-सावधान रहना चाहता हूं। तुम्हारा वह सुपर मास्टर अभी भी इसी खुशफहमी का शिकार होगा कि मैं अपना अतीत भूल चुका हूं कि मेरी यह टेलीपैथी की ताकतें भी मेरे दिमाग से धुल चुकी हैं।"

"क्या मतलब?" सोनिया उसकी सूरत तकते बोली।

"मतलब यह कि मैं अपनी इस ताकत को अभी कम से कम इस्तेमाल करना चाहता हूं। जब तक तुम्हारे इस सुपर मास्टर के खौफ के बादल हमारे सिरों से छंट नहीं जाते—मैं चाहता हूं कि वो इसी खुशफहमी का शिकार रहे कि मैं अपने आप को और अपने अतीत को भूला हुआ हूं।"

"मैं समझ गई।" सोनिया संजीदा होते बोली थी, "सुपर मास्टर को हमें कम करके नहीं आंकना चाहिए। उसे इसी खुशफहमी का शिकार बना रहना चाहिए। ना जाने कब व कहां उससे टकराव हो जाए। तुम्हें यह भेद छिपा कर ही रखना चाहिए।"

"इसीलिए तो मैं अपने दोस्तों व प्रियजनों से भी दिमाग का नाता स्थापित नहीं करना चाहता। हां—मैं खामोशी से ही, कबीर बेदी को भी अहसास कराए बिना, उसकी खेरियत मालूम कर सकता हूं। तुम थोड़ी देर के लिए खामोश रहो—मैं उसके जहन में झांक कर देखता हूं।" कहते हुए उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

खुद को एकाग्र करते उसने कबीर बेदी के चेहरे को याद किया। कबीर बेदी की आवाज—उसका लबो-लहजा अच्छी तरह याद आया तो कमल उसके जहन और उसकी सोच तक पहुंच गया। और अब कबीर बेदी की सोच के जरिए ही उसने जो कुछ जाना, उससे वो

बेअख्तयार ही मुस्करा दिया।

कबीर बेदी—अग्निकुण्ड के सम्मुख दूल्हा बना बैठा था और निशी दुल्हन! उनकी शादी हो रही थी और रीत-रस्मों के अनुसार वे फेरे लेने वाले थे। वही निशी—वही निशी जो कबीर बेदी की महबूबा थी और जिसके बाप को निशी की सौतेली मां ने ही दवाइयां दे पागल बना पागलखाने पहुंचा दिया था। मास्टर लयूशे ने अपनी टेलीपैथी व सम्मोहन शक्ति से ही काम ले—निशी के बाप बद्रीनाथ को उस पागलपन से मुक्ति दिलाई थी। अब बद्रीनाथ नॉर्मल था और खुद शादी में शामिल था।

सोनिया ने कमल के चेहरे पर खुशियां पढ़ते हुए पूछा, "क्या बात है खुशी से खिल रहे हो?"

"हां, सोनिया! बात ही खुशी की है। आज अपने यार कबीर बेदी की जिंदगी में बहार आ रही है। तुम कबीर बेदी से वाकिफ हो और उसकी महबूबा निशी से भी। इस घड़ी उनकी शादी हो रही है। और अब उन्हें भी वही खुशियां हासिल होंगी जो मुझे तुमसे हो रही हैं।"

"उनकी शादी हो रही है?" सोनिया ने बड़ी हसरत से पूछा।

"हां, मेरी जान।"

"आह! कितनी खुशनसीब है निशी। क्या...क्या हमारी शादी नहीं हो सकती?" वो कमल की आंखों में झांकने लगी।

सोनिया के इस सवाल में हसरतें मचल रही थीं। कमल ने उसे फिर अपनी बांहों में ले भींच लिया।

वह बोला, "शादी का मतलब है खुशी और यह खुशी हमसे दूर नहीं है।"

"नहीं कमल!" वो बदस्तूर संजीदगी से बोली, "अगर बाकायदा कोर्ट मैरिज कर ली जाए तो क्या हर्ज है। मैं तुम्हारी बीवी बनने का गौरव पाना चाहती हूं।"

"बीवी बनने के बाद मेरे बच्चे की मां बनने का गौरव हासिल करना चाहोगी। फिर दादी और नानी बनने का गौरव पाना चाहोगी और जिंदगी मुझे इतनी फुर्सत नहीं देती कि मैं तुम्हें दादी-अम्मा की मंजिल तक पहुंचा दूं।"

"तुम हमेशा यही कह कर टाल देते हो कि मैं किस तरह शादी कर सकता हूं, कि मेरी कोई मंजिल नहीं है...मेरा कोई ठिकाना नहीं है, मैं वक्त की तरह हर पल हर क्षण बहता चला जा रहा हूं। मैं दोस्त बन कर तुम्हारे साथ-साथ रह सकती हूं। क्या तुम कभी शादी नहीं करोगे?"

"हां, सोनिया! हकीकत यही है—जिसे मैं नहीं भूल सकता। भूलना भी नहीं चाहता। तुम ही बताओ, क्या तुम यह पसंद करोगी कि मैं तुम्हें किसी एक घर में बसा दूं और खुद हालात के धारे पर बहता हुआ आगे निकल जाऊं।"

"नहीं—मैं तुम्हें खतरों में कूदने के लिए कहीं अकेला नहीं जाने दूंगी।"

कमल मंद-मंद मुस्कराया, बोला, "तो फिर बबुये को उठा कर मेरे साथ कहां चलोगी? मेरी जान! सिर्फ जज्बात व चाहतों को ही न देखो—हालात को भी देखो। ना जाने सुपर मास्टर जैसे कितने खतरनाक और क्रिमिनल माइन्ड मेरे रास्ते में आएंगे। मैं बीवी बच्चों का काफिला बना कर उनका मुकाबला नहीं कर सकूंगा। सच, सोनिया! मुझे यकीन हो चुका है कि मेरा जन्म ही जुर्म व जरायमपेशा लोगों के खिलाफ एक्शन में रहने के लिए हुआ है।"

सोनिया खामोश हो गई।

वह घूम-फिर कर शादी ही के बारे में सोच रही थी और मायूस हो रही थी।

इधर कमल का जहन भी तो सक्रिय था।

शादी की चर्चा पर कमल के जहन के किसी अंधेरे कोने से निकल काजल याद आ गई। काजल को ही तो उसने अपने जीवनसाथी के रूप में देखा व चाहा था। पर फिर मास्टर लयूशे उसे उसकी काजल से दूर खींच लाया था।

काजल की याद आई तो उसका खूबसूरत प्यारा-प्यारा चेहरा कमल की निगाहों के सामने घूमने लगा।

बहरहाल, काजल की याद आई तो उसका आकर्षण जिज्ञासा बन गया। काजल की कुशलता जानने की उत्कण्ठा ने ही कमल को अपनी इस चहेती से जहनी तार जोड़ने को विवश कर दिया कि देखें तो सही ही उसके साथ जिंदगी बिताने का दम भरने वाली यह उमंगों भरी युवती है किस हाल में। क्या वो अभी भी उसे याद करती है कि गुजर गए हवा के झोंके की तरह वो भी उसे भुला बैठी है।

कमल आंखें मूंद काजल की कल्पना करने लगा। काजल कैसे बातें करती थी—उसके लहजे को याद करने लगा और फिर कमल ने उसकी सोच के लहजे तक पहुंचने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मिल रही थी।

कमल हैरानी और परेशानी से उसे तलाश करने लगा 'सोच' के अंधेरों में भटकने लगा।

"कहां हो काजल? कहां हो? तुम्हारा कमल तुम्हें पुकार रहा है?"

मगर काजल से जहनी तार नहीं जुड़ रहे थे। कमल उसके जहन तक पहुंच कोई जवाब नहीं पा सका था। गहरी खामोशी थी, मौत की सी खामोशी, कोई भी शख्स, सोते या जागते, अपनी सोच से खाली नहीं होता, मगर काजल की सोच सक्रिय नहीं थीं। कमल की सोच उस तक नहीं पहुंच पा रही थी। वो कमल की सोच का जवाब नहीं दे रही थी। तो क्या...क्या...वह मर गई? क्या वो जिंदा नहीं है? इस सवाल के उभरते ही कमल के जहन को एक झटका सा लगा। उसे क्षण भर को तो यूं लगा जैसे उसके दिल की धड़कन छीन ली गई हो। काजल कैसे चुपचाप इस दुनिया से रुखसत हो गई और उसे पता ही नहीं चला। पता कैसे चलता जबकि वो तो खुद ही खुद को भूला हुआ था।

"कमल।" उसे किसी की पुकार सुनाई दी। कमल ने चौंक कर आंखें खोल दीं।

पर यह तो सोनिया थी जो उससे संबोधित थी।

"कमल।" सोनिया चिंतित लहजें में बोली, "क्या हुआ? क्या बात है? अभी तो तुम खुशी से खिले जा रहे थे, और अब एकदम उदास नजर आ रहे हो।"

कमल ने बेअख्तयार ही एक सर्द आह भरी, जवाब दिया, "हां—खुशी और गम साथ-साथ ही तो चलते हैं। अभी मैंने एक दोस्त की खुशियां देखीं और अगले ही पल एक तुम सी प्यारी महबूबा को इस दुनिया से गायब पाया। तुमसे पहले काजल नाम की युवती मेरी जिंदगी में आई थी। अब शायद वो अपनी जिंदगी से भी दूर हो गई है।"

"मुझे अफसोस है, कमल।" सोनिया ने बस इतना ही कहा। कमल को वह चाहती थी और उसे यह कैसे सहन होता कि कोई और भी है जिसे उसके प्रियतम का प्यार हासिल है या हासिल रहा है। वह सोचने लगी—"खुदा मुझ पर मेहरबान है। मुझे इस काजल की अकाल मौत का अफसोस है। मगर यह इत्मीनान भी है कि अब मेरे कमल की सोच सिर्फ मेरे लिए होगी।"

कमल उसकी सोच को ज्यादा देर तक नहीं पढ़ सका।

दरवाजा खुलने की आवाज आ रही थी। कमल व सोनिया, दोनों पलंग पर बैठ गए। चार सशस्त्र गार्ड उन्हें लेने आए थे। बेचारे स्थानीय वाशिंदे थे। इसलिए उन्होंने इशारों से इन्हें अपने साथ चलने को कहा।

इस दौरान कमल को मौजूदा मुसीबत डॉक्टर शैतान के जहन में झांक कर देखना चाहिए था। लेकिन खामखां की चुहलबाजियों

व दिल के रिश्तों के चक्कर में बहुत सा वक्त जाया हो गया था।

उनके साथ कमरे से बाहर निकलते वक्त, कमल यह मालूम करने लगा कि डॉक्टर शैतान है कहां? और वो इनके लिए क्या खिचड़ी पका रहा था। उसके दिमाग में झांक कमल ने जाना डॉक्टर कहीं आराम से बिस्तर पर लेटा हुआ था। वो अभी अपने आप को तसल्ली दे रहा था कि उसकी दिमागी हालत बिल्कुल फिट है और अब उस पर पागलपन का कोई दौरा नहीं पड़ने वाला। उसका मन टटोलने को ही कमल ने उसकी सोच में कहा—

"यह कमबख्त कमलकान्त और सोनिया खामखां ही हमारे रास्ते में आ गए हैं। मेरे आदमी अब उन्हें दूसरी जगह ले जा रहे होंगे। मुझे तो ऐसा लगता है कि ये दोनों बड़े ही सख्त जान हैं। आसानी से नहीं मरेंगे।"

पर उसकी अपनी सोच ने भड़क कर कहा, "मरेंगे। इतनी आसानी से मरेंगे कि जैसे च्यूटियां मरती हैं।"

उसके जहन में कमल की आरोपित सोच व उसकी अपनी सोच जैसे मुकाबले पर आ गई।

"लेकिन किस तरह मरेंगे?" कमल ने उसकी सोच को कुरेदा तो वो दोनों हाथों से अपना सिर थाम कर बैठ गया और परेशान हो कर सोचने लगा।

"यह मुझे हो क्या गया है? मैं अच्छी तरह जानता हूं कि वो कैसे मरेंगे और यह जानते हुए भी सोच रहा हूं कि वो कैसे मरेंगे। क्या मैं जहनी तौर पर फिर बहक रहा हूं?"

वह अपना सिर सहलाने लगा।

उसकी सोच कमल के अंकुश में नहीं आ रही थी। डॉक्टर मौजूदा हालात के कारण खुद ही परेशान था। एक ही बात बार-बार सोचते हुए डरता था कि कहीं यह भी पागलपन न हो।

कमल और सोनिया अब उस इमारत से बाहर आ गए थे, जहां उन्हें कैद किया गया था। एक लोकल वासी उनके आगे चल रहा था और बाकी तीन उनके पीछे थे और इस वक्त रात का अंधेरा फैल चुका था।

कुछ दूर निकल आने के बाद सोनिया अंग्रेजी में बोली, "मैं इनकी जुबान समझ रही हूं। यह हमें एक छोटे से काटेज में ले जा रहे हैं। उस काटेज में शायद कुछ कैदी और भी हैं। वहां हम सब को एक साथ खत्म कर दिया जाएगा।"

वो कंधे से कंधा मिलाकर चल ही रहे थे। कमल भी सरगोशी में बोला था—"किसी तरह मालूम करो कि यह हमें किस तरह मारना

चाहते हैं।"

"यानी तुम चाहते हो कि मैं इनकी जुबान में बातें करूं?"

"हां। चाहता तो यही हूं। पर फिर सोचता हूं कि ये इतने अहमक तो होंगे नहीं कि अपने मंसूबों से हमें आगाह कर दें।"

"फिर क्या किया जाये?"

सोनिया सोच रही थी कि कमल शायद कुछ सोच रहा है इसलिए उसने भी दोबारा टोकने या कुछ कहने की कोशिश नहीं की थी। काटेज के निकट पहुंचते ही वो परेशान सी बोली, "क्या बात है, जानेमन! तुम बिलकुल ही खामोश हो गए हो?"

"कोई बात नहीं बन रही है।" कमल ने जवाब दिया, "कुछ हालात ऐसे भी सामने आते हैं कि टेलीपैथी जैसी अचूक ताकत भी किसी काम नहीं आती। हमें मौके की इंतजार करनी होगी।"

सोनिया खामोश रही।

❑❑

वो कॉटेज के दरवाजे पर पहुंच गए।

दरवाजे पर तैनात गार्ड ने दरवाजे का ताला खोलकर अपने साथियों को इशारा किया कि कमल और सोनिया को अंदर ले जाएं।

कमल दरवाजे में कदम रखने की बजाय तीखे स्वर में बोला, "यह क्या हो रहा है? हमें इस काटेज में क्यों ले जा रहे हो?"

वो कमल की बोली नहीं समझते थे। वो कमल और सोनिया को राइफलों से ठेलते अंदर ले गए, कमरे में कुछ स्थानीय लोग नजर आए। उनमें तीन औरतें भी थीं। उनके पीछे दरवाजा बंद हो गया तो कमल ने कुछ सोचते हुए सोनिया से कहा—

"ये सब लोकल लोग हैं और हमारी तरह कैदी हैं, यह हमारे काम आ सकते हैं। तुम इनसे बात करो।"

सोनिया उनकी तरफ बढ़ गई व इन कैदियों से उनकी जुबान में बातें करने लगी।

पर तभी बाहर से कोई शख्स ऊंची आवाज में बोलने लगा। सभी खामोश हो उसकी बातें सुनने लगे।

सोनिया ने कमल के करीब आ कर कहा, "बाहर वह शख्स कह रहा है कि आधी रात के बाद इस काटेज को बारूद से उड़ा दिया जाएगा।"

कमल का दिमाग कंप्यूटर बन गया। वो सोचने लगा कि काटेज को किस तरह बारूद से उड़ाया जाएगा। जाहिर था धमाके के वक्त काटेज के आसपास कोई नहीं रहेगा। एक बहुत लंबा सा तार बिछा दिया जाएगा...दूर इस तार के एक सिरे को आग दिखा दी जाएगी।

फिर वह तार सुलगता हुआ काटेज के करीब आता जाएगा और यहां पहुंच कर बारूद के ढेर को ज्वालामुखी बना देगा।

कमल ने सोचा कि बारूद के कई गोले काटेज के आसपास रखे गये होंगे—जो एक साथ फटेंगे। अगर ये गोले काटेज के अंदर रखे जाते तो उन्हें यूं वक्त से पहले मौत की इत्तिला न दी जाती।

फिर भी कमल ने सोनिया से कहा, "तुम इन लोगों को समझाओ कि शोर न मचायें। इनसे कहो कि ये काटेज के अंदर बारूद के गोले तलाश करें। अगर वह मिल गए तो हम तार के कनेक्शन को काट देंगे।"

सोनिया उन्हें समझाने लगी। वो सभी अपनी जान बचाने की फिक्र में थे। दरवाजा तोड़ कर निकल जाना चाहते थे—जो उनसे नहीं टूट सकता था। सोनिया ने समझाया तो वे काटेज के एक-एक कोने में बारूद के गोले तलाश करने लगे। यह एक व्यर्थ सी कोशिश थी। क्योंकि गोलों के काटेज के भीतर कहीं होने की संभावनायें बहुत कम थी।

काटेज में तीन कमरे थे। तीनों कमरों को अच्छी तरह देख लेने के बाद वे थक हार कर बैठ गए।

सोचों में डूबे कमल ने सोनिया से पूछा, "यह बात समझ में नहीं आती कि वो हमें आधी रात तक क्यों जिंदा रखना चाहते हैं। क्या वह शख्स कुछ और भी कह रहा था?"

"हां—वो कह रहा था कि करीबी समुद्र से ग्यारह बजे जापान का एक जहाज गुजरने वाला है, अगर अभी इस काटेज को बारूद से उड़ा दिया जाएगा तो जलने वाले काटेज के शोले दूर तक नजर आएंगे और जहाज वालों के लिए खतरे की घंटी बन जाएंगे। इसलिए हमारी मौत का वक्त आधी रात के बाद मुकर्रर किया गया है।"

कमल बोला, "पता नहीं अभी क्या वक्त हुआ है। तुम दरवाजे के पास जाकर किसी से कहो कि वो हमें कम-से-कम वक्त तो बताते रहें।"

सोनिया दरवाजे के पास जाकर किसी से बातें करने लगी। वो लोकल जुबान में कुछ कह रही थी। उसकी बातें सुन कर इनके कैदी साथी इन्कार में सिर हिलाते एक साथ ही जैसे कुछ कहने लगे।

सोनिया ने कमल को बताया, "ये लोग घबरा रहे हैं कि इन्हें वक्त न बताया जाए। यह अपने तौर पर ठीक कह रहे हैं कमल! इन्हें जैसे-जैसे मालूम होता जाएगा कि वक्त करीब आता जा रहा है तो इनमें कई तो मारे दहशत से ही मर जाएंगे।"

सोनिया की बात खत्म होते ही बाहर से टन टन की आवाजें

आने लगी। नौ घंटे बजे थे। यानी नौ बज रहे थे; यानी जापानी जहाज़ दो घंटे बाद गुजरने वाला था और उसके एक घंटे बाद ये कैदी इस दुनिया से चल गुजरने वाले थे। कैदियों की गुहार सुन कर शायद उन लोगों को भी मौत से पहले इन कैदियों को तड़पाने का ख्याल आ गया था—वर्ना शायद उन्होंने सोनिया के अनुरोध पर ध्यान नहीं देना था।

"कमल कुछ करो। हम सब मजबूर हैं, शारीरिक शक्ति से बात नहीं बन सकती। अगर दरवाजा तोड़ने में कामयाब हो भी जाते हैं तब भी बाहर खड़े गार्डों की गोलियों से बचना मुमकिन न होगा।"

कमल ने उसका कंधा थपथपाते कहा, "फिक्र न करो। मुझे यकीन है कि मैं कुछ कर गुजरूंगा। फिलहाल मुझे एकांत की जरूरत है।"

सोनिया ने दूसरे कैदियों को समझाया कि वे सब दो कमरों में आ जाएं और एक कमरा खाली छोड़ दें।

सोनिया के कहने पर एक कमरा खाली कर दिया गया। मगर फिर एक नई समस्या उठ खड़ी हुई। एक औरत प्रसव पीड़ा का शिकार हो गई थी। वो गर्भवती थी और 'जचगी' का वक्त आ गया था और उसके लिए भी एक कमरे की जरूरत थी।

कमल उस औरत के कराहने की आवाजें सुनता रहा। कैसा वक्त आन पड़ा था कि वो सब मौत के मुंह में जाने वाले थे और एक नया इंसान जन्म लेना चाहता था। मरने और पैदा होने का सिलसिला यूं भी चलता है कि जिद्दी आत्मा बारूद के धमाकों में भी जन्म लेने से बाज नहीं आती। आखिर यह हुआ कि तमाम मर्द सिमट कर एक कमरे में आ गए। औरतें उस कमरे में चली गईं जहां एक मां मौत से लड़ते-लड़ते अपने बच्चे को जिंदगी देना चाहती थी।

कमल तीसरे कमरे में आकर दरवाजा भीतर से बंद करने के बाद नंगे फर्श पर पालती मार कर बैठ गया। दक्षिण की तरफ रुख करके बैठ कर उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और सोचने लगा कि किसे अपना टारगेट बनाना चाहिए।

इस टापू पर वो तीन अंग्रेजों को जानता था। एक डॉक्टर शैतान, दूसरा जगलर और तीसरा वह अंग्रेज था जिसने जगलर को इस शक पर कैद किया था कि उसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है।

कमल इस तीसरे अंग्रेज के जहन में झांकने लगा।

मालूम हुआ—कि वो किसी काटेज के एक कमरे में सोफे पर बैठा हुआ शराब पी रहा था। उसके पहलू में एक अल्हड़ नवयौवना थी। वो अपनी भाषा में इस छोकरी के सामने प्रेम दर्शा रहा था—लेकिन छोकरी कुछ समझ नहीं पा रही थी, कोई और वक्त

होता तो कमल इस मंजर से लुत्फ उठाता। पर अब उसने अपना खेल सीधे ही शुरू कर दिया।

उसने इस अंग्रेज की सोच में कहा, "यह छोकरी मेरे लिए गूंगी है। फुल-फुल मजा लेना है तो दो-चार पैग और चढ़ाऊं। तभी मजा आएगा।"

उसकी अपनी सोच ने कहा, "हां—वाकई नशे में इसका गूंगापन भी अपना मजा देगा। मुझे एक पैग और लेना चाहिए।"

इस सोच के साथ ही उसने एक डबल पैग बनाया और उसे गटागट पीने लगा। कमल चाहता था कि वह बिल्कुल ही पागल हो जाए और ऐसे वक्त उसके दिमाग में सिर्फ कमल की ही सोच काम करे, इसलिए कमल उसे एक के बाद दूसरा व दूसरे के बाद तीसरा पैग पीने को उकसाता रहा और उसके दिमाग पर अपना नियंत्रण कायम करता रहा। वो पीने के दौरान नशे की ज्यादती महसूस न करे—इसलिए भी कमल उसके जहन में कहता रहा—

"मैं नशे में नहीं हूं। यह शराब मेरे लिए पानी है। पैग क्या पूरी बोतल पी सकता हूं मैं।"

कमल ने उस शराबी के दिमाग में कहा—"हुश्त...तेरी नशे की ऐसी की तैसी, मैं नशे में नहीं हूं। अगर यह छोकरी मेरे लिए गूंगी है तो इसकी भी ऐसी की तैसी। शिकार को भूनकर खाते वक्त उसकी बोली नहीं सुनी जाती—वो ऐसे ही चखा जाता है।"

वो छोकरी के करीब पहुंच गया तो कमल ने उसकी सोच में कहा, "ताज्जुब है। शराब मैंने पी और नशा इस छोकरी को हो रहा है। यह कमबख्त उलटी खड़ी हुई है। इसका सिर नीचे है और टांगें ऊपर हैं। भूतनी लगती है यह। मुझे इसे डांट कर सीधा करना चाहिए।"

और अब कमल जैसे-जैसे उसकी सोच में कहता गया—वो उसी के अनुसार अपनी जुबान से बोलता और अमल करता रहा।

"ऐ, उल्लू की पट्ठी...तुम समझती हो कि सिर नीचे और टांगे ऊपर कर लोगी तो मैं तुम तक नहीं पहुंच सकूंगा। यह देखो...मैं तुम्हारे रसभरे होंठों से ही शुरू करता हूं।"

यह कह कर वो फर्श पर झुक गया।

झुकते वक्त अपना संतुलन बनाए न रख सका और धड़ाम से युवती के कदमों में जा पड़ा। लेकिन नशे और टेलीपैथी का मिलाजुला कमाल था कि छोकरी उसे सिर के बल खड़ी नजर आ रही थी।

वो अपने होंठ आगे बढ़ा कर उसके कदमों का चुम्बन लेने लगा।

"अरे, सिर किधर गया...साली फिर सीधी हो गई।"

वो सोफे का सहारा लेकर उठने लगा। अब वो दिमागी तौर पर पूरी तरह से कमल के काबू में आ गया था। कमल अब उसे अपनी इच्छानुसार नचा सकता था।

कमल ने उसकी सोच में कहा, "यह छोकरी इसी तरह उल्टी-सीधी होती रहेगी शराब का लुत्फ तो इसी में है कि बाहर खुली हवा में चहलकदमी की जाए।"

और कमल की इस हिदायत पर वो लड़खड़ाते कदमों से दरवाजे की तरफ जाने लगा। युवती ने उसे आवाज देकर शायद उससे जाने की अनुमति मांगी थी। पर कमल ने युवती की आवाज को उसके कानों तक नहीं जाने दिया और उस मदहोश अंग्रेज को काटेज से बाहर ले आया।

फिर कमल ने उसके जहन में कहा, "बहुत देर हो गई है। मुझे जगलर की खबर लेनी चाहिए। अब शायद उसका दिमाग ठिकाने आ गया होगा।"

वो डगमगाते कदमों से उस काटेज की तरफ बढ़ने लगा—जहां जगलर को कैद किया गया था। इस काटेज के दरवाजे पर सशस्त्र गार्ड तैनात थे।

वो काटेज के भीतर पहुंचा तो जगलर सोने की तैयारी कर रहा था।

जगलर उसे देखने लगा तो वो कमल की सोच के निर्देश पर कहने लगा, "अब कैसे हो जगलर?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं जेकब?"

कमल ने जिस शराबी हुए अंग्रेज को अपना जहनी गुलाम बना लिया उसका नाम जेकब था। जगलर कह रहा था, "तब से अब तक मुझ पर दौरा नहीं पड़ा है और मैं खुद को स्वस्थ महसूस कर रहा हूं। लेकिन आज तुम बहुत ज्यादा नशे में नजर आ रहे हो। ठीक से खड़े भी नहीं हो पा रहे। और यह भी हैरत की बात है कि इतने नशे में होते हुए भी होशमंदों की तरह बातें कर रहे हो।"

जेकब अपना सीना ठोंक कर कहने लगा, "मेरा नाम जेकब है। और जेकब शराब पानी की तरह पीता है और पानी की तरह निकाल देता है। मैं पूरे होशोहवास में हूं और चाहता हूं कि तुम्हें बॉस के पास पहुंचा दूं। बॉस को भी यह यकीन हो जाना चाहिए कि तुम्हारी जहनी हालत अब फिट है।"

यह कह जेकब बाहर आ गया? कमल की सोच जो कुछ उसके दिमाग में कह रही थी—जेकब उसी के अनुसार अमल करता जा रहा था।

जेकब ने पहरेदारों को हुक्म दिया, "मिस्टर जगलर को बॉस के काटेज में पहुंचा दो। मैं भी उधर ही जा रहा हूं।"

उन्हें हिदायत कर जेकब उधर बढ़ गया।

डॉक्टर शैतान अपने कमरे में बैठा दूध पी रहा था।

जेकब कमल की दिमागी लाइन पर चलता हुआ उसके पास पहुंच कर बोला—"बॉस! आपको नार्मल देख खुशी हो रही है। गार्ड जगलर को आपके पास लेकर आ रहे हैं, मैं चाहता हूं कि आप कम-अज-कम आधे घंटे तक उससे बातें करें। इस लंबी बातचीत में आप उसे आजमा लेंगे।"

डॉक्टर ने सहमति में मुंडी हिलाई, "ठीक है—उसे आने दो। मगर आज तुमने बहुत ज्यादा पी रखी है।"

जेकब ने हंस कर कहा, "बस, बॉस! पी बैठा हूं। यह आप देख रहे हैं कि मैं पूरे होशो-हवास में हूं। आप मेरी फिक्र न करें, अब मैं कैदियों की खबर लेने जा रहा हूं। मुझे अपनी ड्यूटी याद है। आधी रात के बाद उनके चीथड़े उड़ा दिए जाएंगे।"

कमल जेकब से अपने जहनी तार जोड़े हुए था।

ठीक इसी क्षण बाहर टन-टन कर घंटे बजने लगे। कमल ने आंखें खोल दीं। वह घंटे गिनने लगा। दस बजने का ऐलान हुआ था। कमल ने गहरी सांस ली व एक बार फिर जेकब के जहन में झांका।

डॉक्टर शैतान बोल रहा था और उसका वह आज्ञाकारी चुपचाप इसलिए खड़ा था कि नशे की अधिकता की वजह से फिर उसकी खोपड़ी घूम रही थी और वो खुद को संभालने की कोशिश कर रहा था।

कमल ने उसके दिमाग को कंट्रोल में लेते उसे सहारा दिया। जेकब अब फिर कमल की सोचों के अंकुश में था और उसकी कठपुतली बन अमल करने लगा था।

जेकब बोला था, "बॉस! अब मुझे इजाजत दीजिए मैं आधे घंटे बाद फिर हाजिर होता हूं।"

तभी गार्ड जगलर के साथ वहां पहुंचे।

पर जेकब रुका नहीं था। वह काटेज से बाहर आ गया और अब उसका रुख उस काटेज की तरफ था जिसमें कमल और सोनिया दूसरे कैदियों के साथ बंद थे।

कमल का दिमाग तेजी से काम करने लगा। हालात साजगार हो चले थे। बच निकलने के आसार नजर आने लगे थे।

कमल जेकब की सोच पढ़ रहा था। जेकब सोच रहा था—"क्या

जरूरी है कि आधी रात के बाद धमाका किया जाए। जब इन कैदियों को मारना ही है तो फिर इस नेक काम में देरी क्यों। मैं अभी जा कर हुक्म देता हूं कि बारूदी धमाके से अभी और इसी वक्त काटेज को उड़ा दिया जाए।"

कमल ने यह मशवरा दे उसकी सोच आजाद छोड़ दी तो इस खासे नशे में होने के बावजूद भी उसके दिमाग में यह सोच उभर आई थी कि ग्यारह बजे करीबी समुद्र से एक जापानी जहाज गुजरेगा। ऐसे में काटेज उड़ाने में जल्दबाजी खतरनाक रंग भी ले सकती है।

कमल ने फौरन उसकी सोच को अपना रंग दिया, उसे सुझाया, "वह जहाज यहां से ग्यारह बजे गुजरने वाला है। अभी बहुत वक्त है। वह काटेज अगर अभी उड़ा दिया जाए तो काटेज से उठने वाले शोले तब तक मंद पड़ जाएंगे, अगर ऐसा न हुआ तब भी पानी से बुझा दिया जाएगा, कुछ भी हो धमाका अभी होना चाहिए।"

जेकब कमल की सोच में बहता हुआ काटेज के पास आ पहुंचा और इसी सोच के बहाव में उसने एक निगरान से पूछा—

"मुझे बताओ बलास्ट किए जाने वाले बम कहां-कहां रखे गए हैं?"

दो गार्ड—उसे साथ लेकर काटेज के गिर्द घूमते हुए उसे बमों की पोजीशन समझाने लगे। काटेज के चारों तरफ चार बारूदी गोले रखे गए थे जो अपनी-अपनी जगह एक साथ फटने वाले थे।

और अब जेकब ने कमल की सोच के वशीभूत कहा, "बॉस ने प्रोग्राम बदल दिया है। इस काटेज को अभी और इसी वक्त उड़ा दिया जाएगा। तुम यह बताओ कि तार कितनी दूर तक बिछाया गया है?"

"पचास गज की दूरी तक बिछाया गया है। हम वहां से पलीते को आग लगाएंगे।"

"ठीक है—जाओ और पलीते को आग लगा दो।"

गार्ड हुक्म के बन्दे थे—वे वहां से चले गए।

जेकब भी काटेज के पीछे चला आया। यूं सब एक दूसरे की नजरों से ओझल हो गए थे, यूं भी अंधेरे ने उन्हें छिपा लिया था।

जेकब की खोपड़ी में कमल का दिमाग काम कर रहा था।

उसने काटेज के पीछे आकर बम के गोले को उठा लिया। फिर काटेज के दाएं तरफ जा कर दूसरे गोले को भी उठा लिया। इसी तरह उसने यंत्रवत ही हरकत करते चारों गोलों को समेट कर अपने दोनों बाजुओं में भर लिया, एक तार के जरिए वे चारों गोले एक दूसरे से जुड़े हुए थे ही।

और उधर—पचास गज के फासले पर उसके मातहत तारनुमा पलीते को आग लगा चुके थे, अब वह तार सर्रसर की आवाज के साथ तेजी से जलता हुआ अपनी आग को गोलों की तरफ ले जा रहा था।

तभी दूर से टार्च की रोशनी फेंकी गई।

फिर स्थानीय वासी यह देख कर चीखने लगे कि जेकब चारों गोलों को अपने बाजुओं में संभाले हुए खड़ा है। उनके चीखते ही जेकब तेजी से दौड़ने लगा। उसके भागते ही वो तमाम हथियारबंद गार्ड—चीखते हुए उससे दूर भागने लगे। किसी में इतनी जुर्रत नहीं थी कि कोई जेकब के पास जाकर उससे गोले ले सके। क्योंकि वह तार बड़ी तेजी से जलता हुआ अपनी आग को गोलों के पास पहुंचा रहा था और कमल उसी तेजी से जेकब को भगा रहा था।

सभी खौफ व सनसनी का शिकार थे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसे वक्त क्या करना चाहिए।

काटेज में बैठे हुए डॉक्टर शैतान और जगलर ने भी दूर से चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनी। लेकिन इससे पहले कि वो काटेज से निकलते—जेकब दौड़ता हुआ उनके काटेज में दाखिल हो गया।

और ऐन इसी वक्त।

एक जबरदस्त कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ।

धड़ाम...धड़ाम...धड़ाम...मौत हलक फाड़ चीख रही थी।

आग का एक बवंडर उठा जिसके शोले आकाश छूने लगे।

❑❑

धमाकों की आवाजों के बाद—कमल नहीं जान सका कि उसके बाद क्या हुआ। जाहिर था कि वो तीनों अंग्रेज जिनके दिमाग में कमल झांक सकता था—वो मौत के अनन्त अंधेरों में गुम हो गए थे। अब उनके जहन में झांकने को—टेलीपैथी का कोई माध्यम नहीं रहा था। अब तो कमल और उसके साथ काटेज में बंद कैदी सिर्फ धमाकों की ऐसी आवाजें सुन रहे थे कि जिनसे इनके काटेज का फर्श भी कांप रहा था। दीवारें कांप रही थीं, तमाम कैदी यूं चीख रहे थे जैसे वो खुद बम के धमाकों से उड़ रहे हों।

वह जो दहशत बैठा दी गई थी—उसकी वजह से औरतें भी चीख रही थीं। और तो और मां बनने वाली भी प्रसव पीड़ा से मुक्ति पा गई थी।

प्रायः बम के धमाके ऐसे ही होते हैं।

कमल अब अपने कमरे में बैठा उस नवजात बच्चे के रोने की आवाज सुन रहा था।

कमल ने अपनी जगह से उठ कर दरवाजा खोल दिया।

सोनिया दरवाजे के पास ही उसकी प्रतीक्षक खड़ी थी। वह कमल को देखते ही उससे आ लिपटी। सारे कैदी भी हैरान परेशान व आतंकित से खड़े थे। जैसे कोई अपने होश में न हो।

सोनिया ने कमल के सीने से सिर उठा कर पूछा, "यह...यह सब क्या है कमल! धमाके तो किसी दूसरी जगह हो रहे हैं।"

कमल ने मुस्करा कर कहा, "हां—शिकारी खुद अपने जाल में आ गए। डॉक्टर शैतान, जगलर और उनका तीसरा अंग्रेज साथी जेकब—तीनों ही अपने बारूदी गोलों का शिकार हो गए हैं। यह सब कैसे हुआ? मैं तुम्हें इत्मीनान से बताऊंगा। अब तुम इन दहशतजदा लोगों को समझा दो कि मौत की घड़ी टल गई है। हम उस वक्त मरेंगे जब रब की मर्जी होगी।"

सोनिया उन बदहवास आतंकित लोगों की तरफ बढ़ गई।

वो लोग बड़ी मुश्किल से ही सोनिया का यकीन कर पाये थे।

"तुम इन्हें समझाती रहो।" कमल बोला, "मैं अब जरा यह मालूम करना चाहता हूं कि काटेज के बाहर क्या हो रहा है।"

कमल अन्दरुनी कमरे में पलट आया। दरवाजे को अंदर से बंद करने के बाद वो फिर पहले की तरह फर्श पर पलथी मार कर बैठ गया।

अब वह उस स्थानीय व्यक्ति से दिमागी संबंध स्थापित करना चाहता था—जिसने जेकब के साथ इंगलिश में बातचीत की थी और उसे दिखाया था कि बम के गोले कहां-कहां रखे गए थे।

कमल एक ही बार किसी की आवाज व उसका लहजा सुन कर फौरन ही अपने जहन में सुरक्षित कर लेता था और अपनी इस उपलब्धि को वो भगवान की देन ही समझता था।

अपने मस्तिष्क को एकाग्र करते—उस आदिवासी की आवाज व लहजे के माध्यम से कमल ने उसके जहन में झांका तो उसके दिमाग के जरिए ही कमल को चारों तरफ के शोर का अहसास हुआ।

कमल यह शोर सुन पा रहा था। उस शख्स की आंखें जो कुछ देख रही थीं—वह नजारा उसके दिमाग तक पहुंच रहा था, मगर कमल उसकी सोच को नहीं समझ पा रहा था। कारण यही था कि यह आदिवासी अंग्रेजी जानते हुए भी—अपनी आदत के अनुसार अपनी ही जुबान में सोच रहा था।

कमल ने उसे अंग्रेजी जुबान की तरफ आकर्षित करने के लिए—उसके लहजे में कहा, "यह सब कुछ कैसे हो गया? जेकब साहब तो ठीक-ठाक थे—फिर वो अचानक ही पागल कैसे हो गए?

अपने साथ वॉस और जगलर को भी ले मरा।"

जब उसके दिमाग में अंग्रेजी जुबान में सोच उभरने लगी तो, वो चौंका, "कमाल है—इससे पहले तो मैं कभी इंगलिश में नहीं सोचता था। अब यह अंग्रेजी खुद-ब-खुद मेरे अंदर पक रही है। अंग्रेज बन चुका हूं मैं, खैर—मुझे यह सोचना चाहिए कि मेरे सामने यह हो क्या रहा है?"

"होगा क्या? काटेज धड़ाधड़ जल रहा है। धमाकों से उसकी छत उड़ गई है। काटेज के जिस हिस्से में बम फटे थे—वहां की दीवारें भी रेत और कंकरी की तरह उड़ गई हैं। उन तीन साहबों के साथ हमारे भी तीन आदमी मारे गए हैं जो काटेज के बाहर मौजूद थे।"

वो कमल के इशारे पर रवानी से सोचता रहा और कमल अपनी जगह बैठा बाहर के हालात और इस शख्स की मनोस्थिति से अवगत होता रहा।

वो शख्स पश्चाताप कर रहा था। दीन-धर्म की सोचने लगा था। कमल ने उसकी इसी सोच को हवा दी। उसने उसकी सोच बन कर कहा—

"मैं अब भी उन मजलूमों के काम आ सकता हूं—जिन्हें खुद भगवान ने भयानक मौत से बचाया है। वो काटेज में बंद हैं। वॉस और उसके अंग्रेज साथियों के चिथड़े उड़ गए हैं। अब हम उनके गुलाम नहीं रहे। बाकी जो अंग्रेज बचे हैं हम उनसे निपट सकते हैं। मुझे हिसाब लगाना चाहिए अब बाकी कितने अंग्रेज बचे हैं।"

और वह गिनती करने लगा कि इस टापू पर और इसके साथ वाले टापू पर कितने अंग्रेज हैं। उसने एक-एक को गिना और यूं कमल को मालूम हुआ कि जिंदा बचे अंग्रेजों की गिनती कुल पन्द्रह है।

कमल ने उसे उकसाया, "यह पंद्रह किस गिनती में हैं। इन्हें तो एक ही हल्ले में खत्म किया जा सकता है। यह टापू हमारा है। यहां सिर्फ हमारी हकूमत होनी चाहिए। मैं अपने आदमियों को अपने हक के लिए खड़ा होने को तैयार करूंगा।"

वह शख्स खुद तैयार हो गया और अपने आसपास मौजूद दूसरे आदिवासियों से अपनी जुबान में कुछ कहने लगा, कमल यह जुबान नहीं जानता था पर इस शख्स के तेवर बता रहे थे कि वो अपने साथियों को बगावत के लिए उकसा रहा है।

कमल का काम हो गया था। उसने इस शख्स से अपने जहनी तार तोड़े व उठ कर दूसरे कमरे में आ गया।

अब दूसरे कैदी भी काफी हद तक शांत संयत नजर आ रहे

थे।

कमल सोनिया को बताने लगा कि मौत डॉक्टर शैतान और उसके साथियों की तरफ किस तरह चली गई थी।

फिर उसने सोनिया से पूछा, "क्या तुमने मालूम किया है कि ये स्थानीय वाशिंदे कैदी क्यों बनाये गए हैं।"

"हां। डॉक्टर इन लोगों को बागी समझता था। ये लोग बड़ी खामोशी से अपनी गतिविधियां चला रहे थे कि इन स्मगलरों को इस टापू से बाहर निकाल दें। लेकिन यहां के अधिकांश मूलवासी इन स्मगलरों के गुलाम हैं। उन्होंने ही इनकी बागी गतिविधियों की इत्तिला डॉक्टर तक पहुंचा दी। और ये बेचारे घेर लिए गए। अभी भी कुछ बागी ऐसे हैं जिन्हें ये अंग्रेज शिनाख्त नहीं कर सके और वो अभी भी आजाद हैं। अगर उन्हें मौका मिल गया तो वो इन अंग्रेजों को चुन-चुन कर कत्ल कर देंगे।"

और तभी काटेज के करीब उन्हें कदमों की आवाजें सुनाई दी। कमल के कान खड़े हो गए। बाहर कुछ लोग मौजूद थे। फिर कोई बंद दरवाजे के करीब आकर स्थानीय जुबान में कुछ कहने लगा। सारे कैदी उसकी बातें ध्यान से सुनने लगे। फिर अंदर से भी जवाब दिए जाने लगे।

सोनिया ने कमल को बताया कि बाहर से बोलने वाला इन कैदियों का साथी है। वह कह रहा है वो दरवाजे का ताला तोड़ने वाला है और वो उसे अपना दुश्मन न समझें और दरवाजा खुलते ही उस पर हमला न कर दें।

"कमल! उसने अपने इन साथियों को आगाह किया है कि आने वालों के पास इतने हथियार नहीं हैं कि वो इन कैदियों को भी दे सके। सो—यहां से निकलने वाले अपनी-अपनी हिफाजत खुद करें।"

तभी दरवाजा खुल गया। आजादी की ख्वाहिश में सभी एक-दूसरे को धकेलते हुए बाहर निकल गए।

कमल सोनिया के साथ एक कोने में आ खड़ा हुआ था।

और इस वक्त उन्हें उस औरत की आवाज सुनाई दी—जो मां बन चुकी थी।

"मैं इस नन्ही सी जान को लेकर कहां जाऊंगी। खुदा के लिए मेरी मदद करो। मुझे मेरे घर तक पहुंचा दो।"

सोनिया उसकी जुबान समझ रही थी, उसने कमल को बताया कि वो औरत क्या कह रही है, फिर कहा, "इस औरत के लिए क्या किया जा सकता है कमल। यह अपने नवजात बच्चे को लेकर

कहां जाएगी।"

कमल ने गहरी सांस ली, बोला, "सभी को अपनी-अपनी फिक्र है—लेकिन हम इसे बेसहारा छोड़कर नहीं जाएंगे। तुम इसे तसल्ली दो। मैं बाहर जाकर अपनी हिफाजत का कुछ इंतजाम करता हूं।"

सोनिया उस औरत के पास चली गई।

इस बीच काटेज खाली हो गया था। सभी निकल गए थे। कमल भी बाहर आ गया। कैदी तो यकीनन इधर-उधर भाग गए थे। अंधेरे में कमल को कुछ व्यक्ति नजर आए। कमल टेलीपैथी द्वारा लोकल वाशिन्दे के दिमाग तक पहुंच गया था—उसे वह शक्लोसूरत से नहीं पहचानता था। कमल ने उसके जहन में झांका तो मालूम हुआ कि वो भी काटेज के करीब ही मौजूद है।

कमल ने उसकी सोच में कहा, "यह जो कमलकान्त और सोनिया नाम के दो अजनबी पकड़े गए हैं—उन्हें बॉस खतरनाक कहता था। मुझे इस हिन्दुस्तानी का परिचय हासिल करना चाहिए। वो हमारे काम आ सकता है। वो यहीं कहीं होगा। कहां है वो?"

उसकी सोच ने बताया कि वो अंधेरे में आंखें फाड़-फाड़ कर इधर-उधर देख रहा है। वो आगे बढ़ा और फिर काटेज के दरवाजे की तरफ बढ़ते उसने कमल को देख लिया। वह कमल की तरफ बढ़ गया और उसके करीब जाकर बोला—

"हैलो, मिस्टर कमलकान्त! मेरा नाम जोजो है। मैं समझता हूं कि आपके यहां आने से ही इन स्मगलरों का बेड़ा गर्क हुआ है।"

कमल मुस्करा दिया—मुस्कराते हुए ही बोला, "यह तुम्हारी अपनी सोच है। वर्ना हम तो इस काटेज में कैद होकर रह गए थे। मैं नहीं जानता कि मौत की यह बाजी किस तरह पलट गई। वैसे अगर तुम दोस्त बन कर आए हो तो अपनी यह स्टेनगन मुझे दे दो।"

जोजो ने निसंकोच ही स्टेनगन कंधे से उतारी व कमल की तरफ बढ़ा दी, "अगर इस से मुझे आपकी दोस्ती हासिल होती है तो लो इसे रख लो। वैसे यहां हथियारों के गोदाम पर अभी इन अंग्रेजों का कब्जा है। अगर उन्हें मालूम होता कि अब मैं भी बागियों में शामिल हूं तो उन्होंने यह स्टेनगन मुझसे छीन ली होती।"

"तुम फिक्र न करो। अपने हम ख्याल साथियों को जमा करो और मुझे सिर्फ इतना बता दो कि हथियार कहां रखे गए हैं।"

जोजो ने दूर अंधेरे में देखते हुए जवाब दिया—"जिस काटेज में तुम्हें छत से लटकाया गया था—वहीं एक कमरे में असलाखाना है। हो सकता है कि हमारे कुछ आदमियों के पास राइफले हों, लेकिन

वो स्टेनगनों के सामने नहीं ठहर सकेंगे। फिर भी मैं उन्हें एक जगह इकट्ठा करने की कोशिश करता हूं।"

जोजो चला गया।

कमल ने केबिन के दरवाजे पर आ कर सोनिया को आवाज दी। सोनिया उस नवजात बच्चे को गोद में लेकर आई और उसे कमल को दिखाते हुए बोली—"देखो, कितना प्यारा बच्चा है। इसे सीने से लगा कर मुझे कुछ अजीब सा लग रहा है।"

कमल समझ गया कि इस मूर्ख की ममता जाग उठी है। उसने एकदम जवाब दिया, "बच्चे सभी प्यारे होते हैं और यह औरत की गोद में फूल की तरह खिलते हैं। लेकिन इस वक्त तुम्हारे हाथों में बच्चे की नहीं स्टेनगन की जरूरत है।" यह कहते हुए कमल ने स्टेनगन उसकी तरफ बढ़ा दी।

सोनिया ने एक हाथ से बच्चे को और दूसरे हाथ से स्टेनगन को संभालते हुए पूछा—"क्या इरादा है तुम्हारा? हम इस काटेज से जाएंगे या यहीं रहेंगे।"

"इस औरत और बच्चे की हिफाजत अब हमारा फर्ज है और बाहर के मौजूदा हालात से भी निपटना है।" कमल बोला, "इसलिए तुम इस औरत के पास रहो—मैं बाहर जा रहा हूं।"

"क्या तुम निहत्थे जाओगे?" सोनिया ने पूछा।

कमल ठिठकते हुए बोला, "भगवान का शुक्र है कि उसने सम्मोहन व टेलीपैथी के रूप में एक चमत्कारी हथियार मुझे दिया है। ताज्जुब है कि तुम मुझे निहत्था समझ रही हो।"

सोनिया संतुष्ट होते मुस्करा दी।

कमल दूर तक फैले अंधेरों की तरफ बढ़ गया।

□□

कमल अब अनुमान से ही उस दिशा की तरफ बढ़ गया, जहां एक काटेज में उन्हें छत से लटकाया गया था।

लेकिन वो अंधेरे में कहीं से कहीं पहुंच गया। एक तरफ से फायरिंग की आवाजें सुनाई दे रही थीं। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह फायरिंग कौन कर रहा है और अंधी गोलियां खुद उसकी तरफ भी आ सकती थीं।

कमल एक मकान की ओट में आ छिपा और संजीदगी से सोचने लगा कि इन हंगामों के दौरान उसे और सोनिया को इस टापू से निकल जाना चाहिए। लेकिन एक मुश्किल यह भी तो आन पड़ी थी कि एक मां और उसके नवजात बच्चे की हिफाजत करना जरूरी हो गया था। मां-बच्चे को उनके भाग्य सहारे छोड़ जाने की इजाजत

कमल को उसका जमीर नहीं दे रहा था।

अंधेरे में किसी के भागते हुए कदमों की आवाज आ रही थी। कमल फौरन ही दीवार से लग गया। यह भागने वाला उसके निकट से ही गुजर रहा था कि अचानक लड़खड़ा कर गिर गया।

कमल ने एक छलांग लगा कर उसे दबोच लिया। वो हड़बड़ा कर स्थानीय जुबान में बड़बड़ाने लगा। कमल ने उसे पहचान लिया।

"हैलो, जोजो! मैं हूं कमलकान्त तुम इस तरह कहां भागे जा रहे हो।"

जोजो हांफता हुआ उठ कर बैठ गया।

"हम बड़ी बुरी तरह फंस गए हैं। ये अंग्रेज बड़े चालाक हैं। कुछ अपने दिमाग से और कुछ अपनी ताकत से इस संघर्ष को कुचल रहे हैं। यहां के वासी जिन्हें हमारा साथ देना चाहिये था उनका साथ दे रहे हैं। मैं सागर तट की तरफ गया था। मगर वहां भी इनका पलड़ा भारी है। वहां जितनी मोटरबोट हैं उन सब पर इनका कब्जा है। इस टापू से फरारी का भी कोई रास्ता नहीं है।"

जोजो की बातें सुन कर कमल की यह खुशफहमी जाती रही कि वो दुश्मनों पर हावी हो सकते हैं। डॉक्टर शैतान, जगलर और जेकब की मौत के बाद यह यकीन हो चला था रास्ते की दीवारें गिर गई हैं और सुबह होने तक इस टापू पर इन लोकल लोगों का कब्जा हो जाएगा और वो यहां सोनिया के साथ कुछ मस्ती के दिन गुजार कर अपनी अगली मंजिल तय कर सकेगा। मगर ऐसा होता नजर नहीं आ रहा था।

तभी जोजो ने पूछा, "मिस्टर कमलकान्त! स्टेनगन कहां है?"

"स्टेनगन मैंने सोनिया को दे दी है। वह एक मां और उसके नवजात बच्चे की हिफाजत कर रही है।"

जोजो जमीन से उठते हुए बोला, "यह क्या हिमाकत है? यहां हर कदम पर हमारी जान को खतरा है और तुम स्टेनगन मादाम सोनिया को देकर चले आए। मैं समझता था कि तुम हमारे किसी काम आओगे। मगर तुम तो काम आने वाली चीज को भी हाथ से गवां देते हो।"

कमल ने उसका कंधा थपथपाया, बोला, "तुम्हारी बातों से तो लगता है कि एकाध स्टेनगन से काम बनने वाला नहीं। फिर यह गुस्सा क्यों?"

जोजो बदस्तूर गुस्से से बोला, "ऐसे में तो एक छोटा सा चाकू भी बहुत बड़ा सहारा बन जाता है और स्टेनगन तो ऐसी चीज है कि मैं घंटों अपनी हिफाजत के लिए मुकाबला कर सकता हूं।"

कमल ने उसका बाजू थामा व उसके साथ आगे बढ़ते हुए कहा—"ठीक है तो फिर उस काटेज की तरफ चलो। मैं सोनिया से स्टेनगन लेकर तुम्हें दे देता हूं।"

जोजो ने अपना हाथ छुड़ाते कहा, "मैं मूर्ख नहीं हूं," वो शुष्क लहजे में बोला, "इन हालात में तुम स्टेनगन से मुझे मार तो सकते हो पर स्टेनगन मुझे देने की हिमाकत नहीं कर सकते।"

कमल काटेज की तरफ़ बढ़ते बोला, "अगर तुम्हें मेरी बात का यकीन है तो आ जाओ, वर्ना जहन्नुम में जाओ।"

कमल उसे छोड़ कर आगे बढ़ गया।

पर जोजो के तेवर ऐसे ना थे कि कमल उससे गाफिल हो जाता। उसे पीछे छोड़ कर आगे बढ़ते ही कमल ने उसके जहन में झांका।

जोजो उसे गालियां दे रहा था। हालांकि कमल इनकी लोकल जुबान नहीं जानता था—लेकिन अजनबी जुबान के तेवर भी बता देते हैं कि दुआएं दी जा रही हैं या गालियां। फिर कमल ने अपने दिमाग की स्क्रीन पर एक छोटा सा चाकू निकालते हुए देखा।

चाकू निकालते ही उसने दो-चार लंबे डग भरे और फिर कमल पर छलांग लगा दी। चाकू की नोक ऐन कमल की पीठ की तरफ थी। कमल ने फुर्ती दिखाई व एक तरफ हट गया। जोजो औंधे मुंह जमीन पर गिरा और चाकू का फल मिट्टी में पेवस्त हो गया।

कमल ने पलट कर उसके सिर पर एक ठोकर मारी।

कमल के जूते की नोंक उसकी नाक पर लगी थी।

वो तड़पने लगा। चाकू उसके हाथ से छूट गया था, कमल ने झुक कर चाकू उठा लिया। जोजो को शांत-निश्चल पड़ा देख कमल ने उसे छूकर देखा, वो जिंदा था मगर बेहोश था।

कमल ने उसे उसकी हालत पर छोड़ दिया कि होंश में आने के बाद फिर अपनी जान बचाता फिरे। उसने जल्द से जल्द सोनिया के पास पहुंचने का फैसला किया था। मौजूदा हालात के मद्देनजर उनको एक ही रहना चाहिए था।

कुछ दूर जाने के बाद कमल को टार्च की रोशनी दिखाई दी।

कमल एक पेड़ की आड़ में हो गया।

रोशनी करीब आती गई और जब रोशनी काफी करीब आ गई तो कमल ने देखा कि वो कोई एक शख्स नहीं था बल्कि चार थे। दो अंग्रेज थे और दो लोकल व्यक्ति। दोनों अंग्रेज आपस में बातें करते जा रहे थे। और फिर करीब से गुजरते वक्त कमल ने उनकी आवाज साफ तौर पर सुनी।

उनमें से एक कह रहा था, "हम बेकार ही उस काटेज की तरफ

जा रहे हैं। तमाम कैदी वहां से निकल कर भाग गए हैं। तुम क्या समझते हो वो कमलकान्त और सोनिया वहां हमारी इंतजार में बैठे होंगे।"

वो दूर निकल गए थे और पेड़ की तरफ रोशनी फेंकने के बावजूद भी उसके पीछे छिपे कमल को नहीं देख पाए थे। कमल अब उनकी भिनभिनाती आवाज सुन पा रहा था। क्या कहा जा रहा था—यह वो नहीं समझ सका था।

पर अब यह दूरियां कमल की राह में रुकावट कहां रही थीं। उसने जिस अंग्रेज की आवाज और उसका लहजा सुन लिया था वह उसके लिए लाइन ऑफ एक्शन बन गया था, कमल फौरन उसके जहन में झांक कर दूसरे का जवाब सुनने लगा।

वह कह रहा था—"अब तो काटेज के करीब पहुंच गए हैं। एक नजर देख लेने में क्या हर्ज है, हमें बताया गया है कि काटेज में एक लोकल औरत ने बच्चे को जन्म दिया है—और सोनिया उस औरत के पास रह गई है। हो सकता है वो अब भी वहीं हो। ऐसे में वो हिंदुस्तानी भी कहीं आसपास ही होगा।"

उनकी बातों से मालूम हुआ कि कमल खुद काटेज की तरफ जाने की बजाए दूसरी तरफ भटकता जा रहा था। रास्ता वही था जिधर वो जा रहे थे।

कमल ने फौरन ही सोनिया के जहन पर दस्तक देते हुए कहा—"सोनिया...मैं हूं तुम्हारा कमल।"

"मैं सुन रही हूं।" जवाब मिला, "तुम कहां हो प्रिय।"

"दिमागी रिश्ते से बहुत करीब हूं। एक जरूरी इत्तिला है। दुश्मन तुम्हारे काटेज के करीब आ रहे हैं। उनमें दो अंग्रेज हैं—जिनके पास स्टेनगन हैं। उनके साथ जो लोकल शख्स हैं—उनके पास राइफलें हैं। तुम क्या कर रही हो?"

"बच्चे को खिला रही हूं।"

"क्या हिमाकत है।" कमल झल्ला गया, "यह बच्चे को खिलाने का वक्त है। चलो, स्टेनगन उठाओ।"

"बच्चे को मुसीबत कहोगे तो मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगी।"

"क्या बच्चे के साथ मरने का इरादा है?"

"ऐसी अशुभ बातें मुंह से न निकालो, यह मेरा बच्चा है जिस बच्चे का बाप चमत्कारी ताकतों का मालिक हो उसे वक्त से पहले कोई नहीं मार सकता।"

"क्या मतलब?" कमल ने हैरानी से पूछा।

"मतलब यह कि मैं जिस बच्चे की मां हूं—तुम उसके बाप हो,

तुम एक बार कह दो कि मेरे बच्चे के बाप हो और फिर देखो कि मैं किस तरह दुश्मनों को भून कर रख देती हूं।"

कमल ने गहरी सांस ली, बोला, "वह तो मैं जानता हूं। चलो अब बकवास न करो और काटेज में फौरन अंधेरा कर दो, वो लोग करीब पहुंचने ही वाले हैं।"

सोनिया को यह हिदायत देकर कमल भी धीरे-धीरे काटेज की तरफ बढ़ने लगा। अब अंधेरे में भटकने का अंदेशा भी नहीं था—क्योंकि वो अपना माध्यम बन चुके उस अंग्रेज के जहन को पढ़ता जा रहा था।

कुछ देर बाद ही उसकी सोच से पता चला कि अब उन्हें काटेज नजर आ रहा है। उनका इरादा काटेज को दोनों तरफ से घेरने का था।

कमल का दिमाग अब कंप्यूटर बन गया था। काटेज की तरफ धीरे-धीरे बढ़ते वो सोनिया को एक प्लानिंग समझाता रहा।

सोनिया बच्चे को उसकी मां के हवाले करने के बाद काटेज में अंधेरा कर चुकी थी—और अब खिड़की के पास आ कर स्टेनगन संभाले खिड़की से बाहर अंधेरे में देखने की नाकाम कोशिश कर रही थी।

और तभी एक अंग्रेज ने ललकार कर कहा; "जो लोग काटेज में हैं वो बाहर आ जाएं।"

सोनिया खामोश रही।

कुछ देर इंतजार के बाद उस अंग्रेज ने दरवाजे की तरफ रोशनी डाली। फिर रोशनी रेंगती हुई खिड़की की तरफ जाने लगी।

इस वक्त सोनिया ने स्टेनगन का एक ब्रस्ट मारा। उस अंग्रेज के हलक से चीख निकली और वह जमीन पर गिर कर तड़पने लगा। टार्च उसके हाथ से छूट कर जमीन पर लुढ़कती चली गई थी। उसकी रोशनी भी इधर-उधर लुढ़कती जा रही थी। और एक आदिवासी की बदकिस्मती कि इधर-उधर ठेलती हुई रोशनी उस पर पड़ी और अगले ही क्षण वो सोनिया की गन की जद में आकर जमीन पर गिर पड़ा।

और इस वक्त कमल ने सोनिया को खतरे से आगाह किया—

"सोनिया, सावधान! वो दूसरा अंग्रेज खिड़की की तरफ फायरिंग करने आ रहा है।"

कमल की तरफ से इत्तिला मिलते ही सोनिया खिड़की से हट कर दीवार से लग गई। उसी क्षण खिड़की पर गोलियों की बौछार हुई। फायरिंग के दौरान कमल को नारी कंठ से निकली चीख सुनाई

दी।

कमल ने घबरा कर पूछा, "क्या बात है सोनिया? खैरियत तो है।"

सोनिया की सोच ने बताया—"वो औरत अपने बच्चे की हिफाजत के लिए अंदरुनी कमरे की तरफ भाग रही थी—फायरिंग की जद में आ गई है।"

यह कहते हुए सोनिया फर्श पर घुटनों के चलती हुई उस औरत के पास पहुंच गई।

कमल उसकी सोच के माध्यम से ही उसकी हरकतों को समझ पा रहा था। वह अंधेरे में उस औरत और बच्चे को टटोल कर देख रही थी।

मां-बेटा दोनों खून में भीगे हुए थे। दोनों साकत हो गए थे। सोनिया का दिल डूब रहा था, उसने स्टेनगन रख जल्दी से बच्चे को उठा लिया और उसे सीने से लगा कर भींचने लगी और अब बच्चे ने अपने जीवित होने का प्रमाण दिया। वह चीख-चीख कर रोने लगा। सोनिया मारे खुशी के भावावेश में उसे चूमने लगी।

सोनिया दुश्मनों की तरफ से गाफिल हो गई थी।

कमल ने उस अंग्रेज के जहन में झांकते, उसकी खबर ली। वह कॉटेज की दीवार से जाकर लग गया था और दबे पांव धीरे-धीरे खिड़की की तरफ बढ़ रहा था।

कमल ने फौरन सोनिया को इत्तला दी—"सोनिया क्या कर रही हो? स्टेनगन उठाओ। वह अंग्रेज का पिल्ला दीवार से लगा हुआ खिड़की की तरफ आ रहा है।"

सोनिया एक हाथ में बच्चे को लेकर और दूसरे हाथ में स्टेनगन उठाकर दीवार की आड़ में आ गई और चीखते हुए बोली—

"सफेद चूहे! तू खिड़की की तरफ नहीं, अपनी मौत की तरफ आ रहा है।"

वह अंग्रेज एकदम से बौखला गया कि उसे देखा जा रहा है। अब उसमें आगे बढ़ने की जुर्रत नहीं थी। वो तेजी से पलट कर खिड़की से दूर चला गया।

कमल अब खुद भी कॉटेज के करीब पहुंच गया था। लेकिन वो खाली हाथ था और व्यहावारिक रूप से सोनिया की मदद नहीं कर सकता था, कमल सोच के जरिए अंग्रेज़ की गतिविधि को समझ रहा था—मगर उसके स्थानीय साथी का पता नहीं चल रहा था कि वो इस अंधेरे में कहां छिपा हुआ है। उसका एक साथी तो अपने अंग्रेज साहब के साथ मारा गया था। कमल इस दूसरे की तरफ से आशंकित

था कि वह अंधेरे का फायदा उठाकर उस पर हमला कर सकता है।

कमल ने अंग्रेज के दिमाग में कहा, "वो गया कहां है? अपने पास राइफल होते हुए भी फायर नहीं कर रहा, मुझे उसे आवाज देनी चाहिए।"

यह सोचते उसने, उसे नाम लेकर पुकारा, उसे कोई जवाब नहीं मिला। उसने दूसरी बार पुकारा फिर उसे गालियां बकने लगा।

कमल ने एक गहरी सांस ली। जाहिर था उसका यह स्थानीय साथी फितरत से बुजदिल था और अंधेरे में कहीं खिसक गया था। उसकी तरफ से निश्चिन्त हो कमल अब अंग्रेज के दिमाग में झांकते व उसकी स्थिति को समझते हुए, दीवार से लगकर धीरे-धीरे उसी की तरफ बढ़ता जा रहा था और ऐसा करने के लिए कमल अपनी "दिमागी आंखों" से बखूबी काम ले रहा था।

यूं जब कमल का उससे केवल दो कदम का फासला रह गया तो कमल ने उसकी चौंकती हुई सोच को पढ़ा। अंग्रेज की छठी इंद्री ने उसे अज्ञात खतरे का अहसास करा दिया था। उसने पलटकर अंधेरे में कमल की तरफ देखने की कोशिश की तो कमल ने उस पर हमला कर दिया।

कमल ने एक जोर की लात उसके पेट में मारी और वह कराहते हुए, एक हाथ से पेट पकड़कर झुकने लगा। उसका दिमाग बता रहा था कि उसके एक हाथ में स्टेनगन है, वो स्टेनगन इस्तेमाल करना चाहता है—मगर पेट की पीड़ा उसे इसकी मोहलत नहीं दे रही थी।

कमल ने दूसरी ठोकर उसके मुंह पर मारी।

वो चीखता हुआ दीवार से टकराया और फर्श पर आ गिरा। कमल छलांग लगा उस पर जा पड़ा और उससे उसकी स्टेनगन छीनने लगा। यह अंग्रेज भी बड़ी सख्त जान था। ठोकरे खाने के बाद स्टेनगन हाथ से न जाने दी थी। स्टेनगन उन दोनों के हाथों में उन दोनों के बीच थी और दोनों ही उसे कब्जाने की भरपूर कोशिश कर रहे थे।

कमल ने अचानक ढील दे दी। वो अंग्रेज स्टेनगन अपनी ताकत से अपनी तरफ खींच रहा था—नतीजतन खुद उसके हाथों स्टेनगन उसके मुंह पर जाकर लगी।

अब स्थिति कमल के हाथ थी। वो उसकी गन को उसकी ही गर्दन पर रखकर दबाने लगा।

वैसे ऐसी ले-दे की जरूरत थी नहीं। कमल दिमागी झटके पहुंचाकर उसे कमजोर बना सकता था—पर उसका दिल चाह रहा

था कि जरा हाथ-पैर भी चलने दिए जाएं। उसने एक मुद्दत से अपनी शारीरिक ताकत को नहीं आजमाया था।

अब जो कमल ने दबाव बढ़ाया तो वो एकदम से तड़पने लगा। मछली की तरह फड़फड़ाने लगा। कमल ने ढील नहीं दी और आखिर उसका यह प्रतिद्वन्द्वी इसी तरह तड़प-तड़पकर ठण्डा हो गया।

कमल ने सोनिया को पुकारा, "सोनिया! अब लैम्प जला लो कोई खतरा नहीं है।"

स्टेनगन अब कमल के हाथ में थी। वो स्टेनगन सम्भालते उस तरफ गया जहां टार्च अभी तक पड़ी हुई कॉटेज की विपरीत दिशा में रोशनी बिखेर रही थी। कमल ने टार्च उठाकर 'ऑफ' कर दी। उसने पलटकर काटेज का रुख किया।

❑❑

कमल जब काटेज में पहुचा तो सोनिया बच्चे के रक्त-रंजित बदन को गीले कपड़े से पोंछ रही थी। लैम्प जल रहा था, उस औरत की लाश फर्श पर पड़ी हुई थी। कमल खामोश खड़ा सोनिया का यह ममतामय रूप देखता रहा।

सोनिया ने बच्चे को एक साफ-सुथरे कपड़े में लपेटकर अपने सीने से लगाते हुए कहा—"इस बेचारी की लाश को दफन करना चाहिए।"

कमल बोला, "यह तो दफन हो जाएगी, मगर बच्चे का क्या होगा?"

"बच्चा हमारे पास रहेगा। मैं इसे किसी को नहीं दूंगी—पता नहीं दूसरे इसके साथ कैसा व्यहवार करें, देखो यह मेरी गोद में आकर कैसा शांत रहता है।"

मगर बच्चा उसी वक्त रोने लगा, कमल धीरे से हंस दिया, बोला—"यह बच्चा अपनी वनस्पति मां के पास चुप नहीं रहेगा। खामखां ही एक मुसीबत न बढ़ाओ।"

"मुसीबत मेरी गोद में है, तुम्हारे पास तो नहीं। बाप होकर ऐसी बातें करते हो शर्म नहीं आती...।"

"वाह! जबरदस्ती बाप बना रही हो।"

"जबरदस्ती नहीं, जरा इसकी सूरत देखो—तुमसे कितनी मिलती है। नाक मेरी तरह है—आंखें तुम्हारी तरह हैं। बड़ा होकर तुम्हारी तरह दूसरों के दिमागों में झांकेगा।"

"अच्छा बाबा इसे चुप तो कराओ।"

वह उसे बाजुओं के पालने में लिए इधर-से-उधर टहलने लगी। ओ-ओ...हा-हा कर उसे बहलाने लगी। कमल ने कहा—

"बच्चे की अम्मा जान! यह भूखा है, इसे दूध पिलाओ।"

"आं...!" वो सिटपिटाकर बोली, "ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती। मैं-मैं दूध किधर से पिलाऊंगी। ऐसे वक्त शहद चटाया जाता है। हां शहद तो है यहां। जरा इसे पकड़ों मैं लेकर आती हूं।"

उसने बच्चा कमल की तरफ बढ़ा दिया। कमल हिचकिचाने लगा तो वह बोली, "मशींनगन उठा लेते हो एक नन्हे से बच्चे को नहीं उठा सकते। इन्कार करोगे तो मैं तुमसे नहीं बोलूंगी, हां।"

उसके रुठने की यह अदा कमल को बहुत अच्छी लगी। उसने स्टेनगन रखकर बच्चे को दोनों हाथों में ले लिया, वो दूसरे कमरे में जाते हुए बोली—

"मैं अभी आती हूं, इसे फर्श पर न डालना ठंड लग जाएगी।"

कमल का मुंह बन गया। लेकिन हकीकतन उसे बच्चे के साथ खुश देखकर कमल को भी खुशी हो रही थी कि चलो दिल बहलाने के लिए उसे एक खिलौना मिल गया। मगर अचानक ही यह खिलौना पेशाब करने लगा।

कमल चिल्ला ही तो उठा, "ओ-ओ...जल्दी आओ, यह मेरे कपड़े खराब कर रहा है।"

सोनिया लपककर आई। उसके हाथ में शहद की एक छोटी-सी शीशी थी। वह कमल के भीगे हुए लिबास को देख हंसते हुए बोली—

"अब तुम पूरे अब्बाजान लग रहे हो।"

वह बच्चे को लेकर दूसरे कपड़े में लपेटने लगी। बच्चा बदस्तूर रो रहा था। सोनिया ने एक उंगली पर लेकर जरा-सा शहद चटाया तो बच्चा थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया और जब जुबान से शहद की मिठास खत्म हुई तो फिर रोने लगा।

कमल बोला, "यह सिर्फ भूखा नहीं है। ममता की हरारत भी चाहता है।"

सोनिया ने कमल से छिपकर बच्चे को सीने के पास छिपा लिया। कमल अब उसकी पीठ देख पा रहा था। मगर सोनिया की हरकतें भी समझ में आ रही थी। सोनिया एक उंगली पर शहद लगाकर 'कहीं' लगाती थी फिर बच्चे का मुंह "वहां" लगा देती थी। वह ममता के जनून में यह भी भूल गई की उसके पीठ कर लेने के बावजूद कमल सोच के जरिए उसकी हरकतों को समझ रहा है। उसके अहसास व उसके ममतापूर्ण जज्बात को समझ रहा है।

कमल खुद द्रवित हो उठा था। सोनिया के जज्बात ने उसे भी भावुक बना दिया था। कमल सोनिया की पीठ के पास आकर घुटनों के बल बैठ गया और फिर उसे बच्चे सहित अपने बाजुओं में लेकर

बोला—"सोनिया—मैं तुम्हारे बच्चे का बाप हूं, आज से यह बच्चा हम दोनों का है। हम इस बच्चे के लिए जिंदा रहेंगे।"

सोनिया खुशी से निहाल हो गई और बड़ी मुहब्बत से अपना हाथ कमल के चेहरे पर फेरने लगी।

कमल बोला, "तुम बच्चे को सम्भालो। मैं बाहर जाकर दो-चार लोकलवासियों को बुलाकर लाता हूं। वो अपनी रस्मों के साथ इस औरत को दफनाने का इन्तजाम करेंगे।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"नहीं, सोनिया। अब तुम वो औरत नहीं रही जो निर्भय हो दिलेरी के साथ मेरे कंधे-से-कंधा मिलाकर दुश्मनों का मुकाबला करती थी।"

"कमल! मेरे प्यारे! ऐसी बातें करके मेरा दिल न तोड़ो। जब औरत-शौहर और बच्चे की मुहब्बत में बंट जाती है तो एक साथ दोनों मोर्चों पर खड़ी होकर जंग करती है। मैं अगर दुश्मनों के खौफ में चारदीवारी में रहूंगी तो हमारा बच्चा बुजदिल बन जाएगा। नहीं, कमल! यह दूसरा कमल बनेगा और आज ही से बनेगा।"

उसने बच्चे को कपड़े में लपेटने के बाद उसके मुंह को जरा-सा खुला रखा फिर स्टेनगन अपने कंधे पर लटकाते हुए अजीब से लहजे में बोली—

"चलो, हम बाहर जाकर अपने बच्चे को गोले-बारूद की लौरियां सुनाएंगे।"

कमल कुछ नहीं बोला और अपनी स्टेनगन उठाकर उसके साथ बाहर आ गया। सोनिया के जज्बात एक तपिश रखते थे और हकीकत यह भी थी कि अब वो बच्चे को हर पल रह क्षण अपने साथ रखने को मजबूर भी थी।

वो कॉटेज से निकलकर अनुमान से ही बस्ती की तरफ जाने लगे।

रास्ते में सोनिया ने कहा, "हमारे बच्चे का कोई बहुत ही खूबसूरत-सा नाम होना चाहिए।"

"तो फिर इसका नाम कमल रख लो।" कमल शोखी से बोला, "मैं अपना नाम पप्पू रख लूंगा।"

सोनिया बेअख्तयार हंस दी—हंसते हुए बोली, "मजाक न करो। मैं तुम्हारी आधी मोहब्बत बच्चे को तो दे सकती हूं—मगर नाम नहीं दे सकती। इसलिए कि यह नाम मेरे जज्बात के आंगन में महकता है। कमल के प्रति मेरी भावनाएं कुछ और हैं और इस बच्चे के साथ कुछ और...।"

"तो फिर इसे दीपक कहो।" कमल ने सुझाया व 'दीपक' का अर्थ भी समझा दिया।

"दीपक...दीपक! हां, दीपक कहते वक्त अच्छा लगता है।" वो बोली, "बोलने में भी आसान है। मगर अभी बच्चा है ना, मैं इसे दीपू कहकर पुकारा करूंगी।"

वे बातें करते एक अनुमान अनुसार आगे बढ़ते चले जा रहे थे। संयोग से वो उस इमारत के सामने पहुंच गए, जहां उन्हें पहली बार कैदी बनाया गया था और छत से लटकाया गया था। इमारत वीरान नजर आ रही थी।

सोनिया बोली, "हमें अन्दर चलकर देखना चाहिए। अगर अंन्दर कोई अंग्रेज होगा तो वो हमें सागर तट तक पहुंचा देगा। उसके जरिए मोटरबोट भी हासिल हो जाएगी।"

"ठीक है, तुम यहां दीवार के साये में खड़ी रहो। तुम बाहर निगाह रखना। मैं अन्दर वालों से निपट लूंगा।"

कमल उसे छोड़कर इमारत में दाखिल हो गया।

तमाम दरवाजे खुले हुए थे और सारे कमरे खाली नजर आ रहे थे। कमल ने सोचा कि तमाम लोग जरूर सागर तट की तरफ चले गए होंगे। क्योंकि करीब आधा घंटा पहले सागर तट की तरफ से फायरिंग की आवाजें आ रही थीं। जोजो ने भी यही बताया था कि वो लोग अपनी मोटरबोटों की हिफाजत कर रहे हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी को याद करो तो वो शैतान की तरह सामने चला आता है। जोजो इसी इमारत में था और वो एक कमरे में बैठा शराब पी रहा था।

कमल की आहट सुनते ही उसने पास रखी राइफल उठा ली।

पर तब तक कमल ने उसे स्टेनगन की जद में ले लिया था।

"बेटे! राइफल रख दो। वर्ना अपनी आखिरी सांसें गिनने की मोहलत भी नहीं मिलेगी।"

जोजो ने राइफल फेंक दी।

"कमलकान्त! मैं तुम्हारी ही तलाश में था। तुम मुझे वहां बेहोश करके छोड़ आए थे। होश में आने के बाद मुझे मानना पड़ा कि तुम एक ग्रेट इन्सान हो। तुम चाहते तो मुझे मेरे ही चाकू से हलाक कर सकते थे। मगर तुमने वह चाकू भी मेरे पास मेरी हिफाजत के लिए छोड़ दिया था। मैं तुम्हारे सामने अहसानमंदी से झुक रहा हूं।"

वो कमल के सामने झुकने लगा तो कमल ने आगे बढ़कर उसे रोक दिया।

"नहीं, जोजो, मैं इंसान हूं। झुकना है तो खुदा के सामने झुको।" कमल बोला, "तुम यह बताओ कि ऐसे वक्त जबकि वह अंग्रेज तुम्हारे दुश्मन हैं, तुम इनके केबिन में बैठकर शराब क्यों पी रहे हो?"

वो फीकी-सी हंसी के साथ बोला, "इसलिए कि अब जिन्दा रहने की उम्मीद बाकी नहीं रही है। इन लोगों ने हमें चारों तरफ से घेर लिया है। मैं सुबह तक पकड़ा जाऊंगा। यही सोचकर मैं यहां आ गया था कि वो लोग या तो मुझे माफ कर देंगे या गोली मार देंगे। मगर यहां मुझे वो लोग नहीं मिले यह राइफल और शराब की बोतल मिल गई।"

"तुम बहुत जल्दी निराश हो जाते हो। खुदा उसकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करता है। तुम मेरे साथ रहकर जांबाजी का सबूत दो। अपनी जिन्दगी के लिए लड़ो और अगर मरने का वक्त आए तो हंस-खेलकर मौत को गले लगाओ।"

जोजो की आंखों में चमक उभरी। वह बोला, "तुम्हारे जैसा हिम्मत बंधाने वाला साथी मिल गया है, अब मैं यही करूंगा। क्या यहां से बच निकलने की उम्मीद है?"

"क्यों नहीं।" कमल मुस्करा दिया, "जब तक सांस तब तक आस। उम्मीदों के सहारे ही तो इन्सान जिन्दा रहता है। यहां से निकलने के बारे में सोचने से पहले तुम यह बताओ कि तुम्हारे डॉक्टर बॉस का जाती कमरा कौन-सा है, तुम्हारे सामने मेरी आंखों से अंधेरे में देखने वाला लैंस निकाला गया था। मेरा ख्याल है ऐसी चीजें वो अपने जाती कमरे में ही रखता होगा।"

"तुम्हारा ख्याल ठीक है। बॉस का कमरा यही है। उस अलमारी में शायद तुम्हें अपने मतलब की चीजें मिल जाएं।"

कमल ने आगे बढ़कर अलमारी को खोलने की कोशिश की। अलमारी बंद थी। कमल, जोजो की मदद से दरवाजे को तोड़ने की कोशिश करने लगा। दरवाजा लकड़ी का था। राइफल के कुंदे की निरन्तर चोटों से एक तरफ से टूट गया।

कमल ने खोलकर देखा, अलमारी में बहुत से कागजात थे। जापानी करैन्सी व अमरीकी डालर थे। कुछ आधुनिक किस्म के कैमरे और राइफलें वगैरह थीं। सोनिया के फौलादी पंजे रखे हुए थे। कमल ने पंजे अपनी जेब के हवाले किए। एक आटोमेटिक रिवॉल्वर उसे बहुत पसंद आया। कमल ने उसे लोड कर लिया।

जोजो ने भी एक खूबसूरत-सा रिवॉल्वर लोड करके अपने पास रख लिया।

कमल जोजो की तरफ से आश्वस्त था—क्योंकि उसकी सोचें कमल के खिलाफ नहीं थी। कमल ने उससे कहा, "जोजो, तुम यहां के रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ हो। मुझे और सोनिया को सागर तट की तरफ ले चलो। हम यहां से निकल जाने के लिए मोटर बोट हासिल करने की कोशिश करेंगे और हां याद आया, जिस औरत ने बच्चे को जन्म दिया था वो इन दरिन्दों की दरिन्दगी का शिकार हो गई है। तुम अलमारी में से डालर की गड्डियां उठा लो। यहां के लोकलवासियों को कुछ नोट देकर उस बेचारी के कफन-दफन का इन्तजाम करो।"

कमल और जोजो दोनों ने ही कुछ अमरीकी व कुछ जापानी करेंसी अपनी-अपनी जेबों में ठूंस ली।

फिर इमारत से बाहर निकलते वक्त कमल ने सोच के जरिए सोनिया को इत्तला दी कि वो जोजो के साथ बाहर आ रहा है।

वो इमारत से बाहर निकले तो सोनिया उनके साथ हो गई।

जोजो उन्हें एक ऐसी जगह लेकर गया जहां बहुत से झोंपड़े थे। यहां जोजो ने चार वाकिफकारों को इकट्ठा किया और उन्हें दो सौ डालर थमाते हुए उन्हें उस औरत की अंतेष्टि का काम सौंप दिया।

अपना यह फर्ज निपटा कमल और सोनिया जोजो के साथ सागरतट की तरफ चल दिये। उन्होंने टार्च रोशन नहीं की थी कि कहीं कोई रोशनी देखकर उनकी तरफ गोलियां न दाग दे। सतर्कतावश ही कमल ने सोनिया से सोच के जरिए कहा—

"तुम हमारे साथ न चलो। दीपू को नुकसान पहुंच सकता है। अगर तुम हमारे पीछे हमसे दूर भी रहो तब भी हमारी बू सूंघते हुए सही रास्ते पर चलती रहोगी।"

"ठीक है। मैं ऐसा ही करती हूं।"

सोनिया, धीरे-धीरे उनसे बहुत पीछे रह गई। जोजो ने पूछा, "वह तुम्हारी साथी अंधेरे में कहां गुम हो गई है?"

"वह हमारे पीछे आ रही है ताकि बच्चे को कोई नुकसान न पहुंचे।"

"लेकिन वह अंधेरे में कैसे जानेगी कि हम कहां से गुजर रहे है?" फिर उसने चौंकते हुए कहा, "ओह! समझ गया। हमारा बॉस कह रहा था कि तुम्हारी साथी की सूंघने की ताकत बहुत तेज है कि वो सूंघती हुई उनके नशीली दवाइयों के भण्डार तक भी पहुंच सकती है। अब भी वो बू सूंघती हुई हमारे रास्तों को पहचान रही होगी।"

"तुमने ठीक समझा। बस अब तुम भी खामोश रहो। हमें बहुत

होशियारी से काम लेना है।"

और कमल ने सही वक्त पर ही उसे बोलने से मना किया था, क्योंकि कुछेक कदम का फासला तय करने के बाद 'हाल्ट' की आवाज सुनाई दी। कोई अंधेरे में छिपा स्थानीय जुबान में बोल रहा था।

जोजो ने दबी जुबान में बताया, "हम चारों तरफ से घिर चुके हैं। हमें चुपचाप खड़े रहने की वार्निंग दी जा रही है। हमें अपने हथियार भी फेंक देने को कहा जा रहा है।"

कमल ने स्टेनगन और जोजो ने अपनी राइफल फेंक दी।

❑❑

सागत तट तक पहुंच पाने से पहले ही यह मुसीबत आन पड़ी थी।

कमल ने सोच के जरिए फौरन ही सोनिया को सचेत किया कि उन्हें दुश्मनों ने घेर लिया है और फिर वो जोजो से बोला—

"तुम यह मालूम करो कि हमें घेरने वालों में कोई अंग्रेज है या नहीं।"

जोजो उनसे बातें करने लगा। जवाब में एक शख्स की आवाज करीब आती गई। आने वाले करीब आ गए तो कमल ने देखा कि वो गिनती में चार थे और चारों ही लोकलवासी थे। वो चारों तरफ से इन्हें अपनी राइफलों के निशाने पर लिए थे और बड़े सतर्क नजर आते थे, उनमें कोई अंग्रेज नहीं था।

जोजो ने बताया, "ये लोग कह रहे हैं छः अंग्रेज और छः टापूवासी सागर तट के पास हैं और समुद्र में एक जापानी लांच खड़ी हुई है।"

"लांच जापानी पुलिस की होगी?" कमल ने पूछा।

"हां। एक जापानी पुलिस अफसर टापू के लोगों को वार्निंग दे रहा है कि वे हथियार फेंककर खुद को गिरफ्तारी के लिए पेश कर दें। ये स्थानीय लोग हमें उन अंग्रेजों तक पहुंचने से रोक रहे हैं।"

कमल ने राहत की सांस ली।

जोजो की बात खत्म होते ही उनके आस-पास हल्की-सी रोशनी फैल गई, यह जापानी लांच की सर्च-लाइट की रोशनी थी, जिसकी हल्की-हल्की झलक उन तक पहुंच रही थी।

इस रोशनी से सोनिया का भला हो गया।

वह अब दूर से देख रही थी कि कमल और जोजो किस पोजीशन में हैं और दुश्मन उनसे कितने फासले पर खड़े हुए हैं।

अब जोजो उन्हें बातों में लगाए हुए था और कमल सोनिया के जहन में झांक रहा था। सोनिया की सोच बता रही थी कि वो एक

पेड़ की आड़ में खड़ी हुई है। वह इस उलझन का शिकार थी कि फायरिंग किस तरह करे। फायरिंग के लिए बच्चे को जमीन पर लिटाना जरूरी था और वो डर रही थी कहीं बच्चे को कोई जहरीला कीड़ा-मकोड़ा न काट ले।

कमल ने उसकी सोच में कहा, "सोनिया! खुदा पर भरोसा रखो। बच्चे को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। थोड़ी देर के लिए उसे जमीन पर लिटा दो, एकाध मिनट में ही फैसला हो जाना है, मेरी जेब में रिवॉल्वर है। तुम्हारी फायरिंग से जैसे ही इन लोगों का ध्यान बंटेगा मैं रिवॉल्वर निकाल लूंगा।"

सोनिया का दिल तो नहीं चाहता था कि बच्चे को अपने सीने से जुदा करे—मगर कमल की हिदायत पर अमल करना भी उसका फर्ज था। उसने एक नजर बच्चे पर डाली। बच्चा सो रहा था। सोनिया ने उसे धीरे से चूमकर जैसे ही जमीन पर लिटाया वह चौंक कर रोने लगा।

सभी राइफलधारी चौंककर अंधेरे में उसी दिशा में देखने लगे।

सोनिया में यह खूबी तो थी कि वह ऐसी स्थिति में बदहवास नहीं होती थी। उसने तुरन्त समझ लिया कि गड़बड़ हो गई है और अब अगर एक क्षण की भी देर हुई तो दुश्मन आवाज की दिशा में फायरिंग कर देंगे। सो उसने पहल कर दी।

कमल के सामने खड़े दुश्मन जमीन पर गिरकर तड़पने लगे।

कमल भी यूं गिरा जैसे गोलियों ने उसे चाट लिया हो। कमल ने गिरते-गिरते ही ना केवल अपना रिवॉल्वर निकाल लिया था बल्कि तीसरे की तरफ गोली भी दाग दी थी क्योंकि यह तीसरा सोनिया की तरफ फायरिंग कर रहा था।

चौथा व्यक्ति एक पेड़ के पीछे छिपने के लिए भाग रहा था—मगर सोनिया के निशाने ने उसे हमेशा के लिए मौत की गोद में छिपा दिया।

देखते-ही-देखते मैदान साफ हो गया।

जोजो उल्लू की तरह आंखें फाड़े—मुंह खोले इधर-उधर पड़ी लाशों को देख रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि यह सब कैसे हो गया। वो तो बुजदिलों की तरह अपनी मौत के बारे में सोच रहा था। उसकी तकदीर अच्छी थी कि इस फायरिंग के दौरान एक भी गोली उसकी तरफ नहीं आई थी। लेकिन चूंकि दिल में दहशत थी—इसलिए वो थोड़ी देर तक बेवकूफों की तरह खड़े रहने के बाद धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

कमल ने उठते हुए कहा, "लानत है तुम पर जब उठने का वक्त

आया है तो तुम गिर रहे हो। चलो, अब उठ जाओ।"

जोजो झेंपता-सा उठ खड़ा हुआ।

सोनिया बच्चे को उठाए निकट आ गई थी। जोजो झेंप मिटाते बोला, "मैडम तुमने तो कमाल कर दिया। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो...।"

"तो दुम दबाकर भाग जाते।" कमल ने हंसते हुए कहा, "तुम अपनी तारीफ न करो, तुम क्या चीज हो हम जान गए हैं। चलो अब हम इस रोशनी की तरफ जाएंगे।"

और वो सर्च लाइट की रोशनी की तरफ बढ़ने लगे।

थोड़ी दूर जाने के बाद फायरिंग की आवाजें आने लगीं। लांच पर से लाउड-स्पीकर द्वारा वार्निंग भी दी जा रही थी।

"फायरिंग बंद कर दो। हम टापू के बेगुनाह लोगों को मारना नहीं चाहते। हमारी बोट्स टापू को चारों तरफ से घेर रही हैं। तुम्हारे हक में यही बेहतर है कि हथियार फेंक दो।"

वो अब सागर तट के पास पहुंच चुके थे। दूर खड़े हुए अंग्रेज और कुछ आदिवासी नजर आ रहे थे। उनके हाथों में स्टेनगनें और राइफलें थीं। उनका ध्यान जापानी लांच की तरफ था।

कमल ने सोनिया से कहा, "मौका अच्छा है। हमें फायरिंग करनी चाहिए, वे लोग यही समझेंगे कि जापानी सिपाही पीछे से फायरिंग कर रहे हैं।"

और फिर उसने सोनिया को अपने बाएं तरफ दूर एक पेड़ के पीछे जाने के लिए कहा और जोजो को दाईं तरफ भेजते हुए अच्छी तरह समझा दिया कि जो भी उसकी तरफ भागता हुआ आए, वो उसे गोली का निशाना बना दे।

जब सोनिया और जोजो ने अपने मोर्चे सम्भाल लिए तो कमल ने सागरतट पर खड़े लोगों को ललकारा—"बी देयर (वहीं रहो)! अगर जरा भी हरकत करोगे तो मारे जाओगे। तुम चारों तरफ से जापानी सिपाहियों के घेरे में हो।"

कमल की ललकार सुनते ही वे कमल की तरफ पलटे। कमल ने सोच के जरिए सोनिया से कहा—"फायर।"

सोनिया ने ब्रस्ट मारा। उन लोगों ने सोनिया की तरफ फायरिंग करनी चाही। पर उसी क्षण लांच की तरफ से फायरिंग होने लगी। कमल ने भी फायरिंग शुरू कर दी। ऐसी स्थिति में उनका बदहवास हो जाना यकीनी था।

उनमें से कुछ फायरिंग की जद में आ गए। जो बाकी बचे उन्होंने घबराकर हथियार फेंक दिए और अपने हाथ उठा लिए।

अब लांच के पास से छोटी किश्तियां किनारे की तरफ आने लगीं। इन किश्तियों में सर्च-लाइट की तेज रोशनी में सशस्त्र सिपाही नजर आ रहे थे। कमल, सोनिया और जोजो चुपचाप अपनी जगह पर खड़े हुए थे। सोनिया ने बच्चे को गोद में ले लिया था। वो अपने साथ शहद की शीशी लाई थी और एक जांबाज सिपाही की तरह गोलियां चलाने के बाद अब एक मां की तरह बच्चे को शहद चटा रही थी।

जापानी सिपाही किनारे पर पहुंच गए और जिन्दा बचे चारों अंग्रेजों को हथकड़ियां पहना दी गई। एक जापानी ऑफिसर जापानी जुबान में कुछ कहने लगा। उसका रुख कमल की तरफ था। वो शायद इन्हें अपने सिपाही समझकर कुछ कह रहा था।

कमल ने पेड़ के पीछे से निकलते ऊंची आवाज में कहा—"ऑफिसर! हम तुम्हारे सिपाही नहीं हैं। लेकिन तुम हम पर विश्वास कर सकते हो। तुमने देखा कि हमने तुम्हारी मदद की है।"

और अब वो अफसर भी इंगलिश में बोला था, "ठीक है। हम तुम्हारे शुक्रगुजार हैं। अगर तुम दोस्त हो तो सामने आकर हथियार फेंक दो।"

कमल ने सोच के जरिए, सोनिया को सागर तट की तरफ चलने को कहा। उसने जोजो को भी ऊंची आवाज में किनारे की तरफ बुलाया और फिर खुद भी आगे बढ़ा व उस पुलिस अफसर के सामने पहुंचकर स्टेनगन जमीन पर फेंक दी और रिवॉल्वर भी जेब से निकालकर उसके सामने डाल दिया।

सोनिया और जोजो ने भी यही किया।

वह अफसर बोला, "तुम तीनों एशियाई लगते हो। इन स्मगलरों से तुम्हारा क्या ताल्लुक है?"

कमल ने जवाब दिया, "इन अंग्रेज स्मगलरों ने हमें कैदी बना रखा था और हमें जान से मार डालना चाहते थे। मगर इनका एक अंग्रेज साथी अचानक पागल हो गया था। उसने अपने बॉस को मार डाला और खुद भी मर गया। तब से हम अपनी हिफाजत के लिए इन स्मगलरों से मुकाबला कर रहे हैं।"

उस अफसर ने एक अंग्रेज कैदी से पूछा, "तुम लोगों ने इन्हें क्यों कैद किया था...और क्यों मार डालना चाहते थे?"

अंग्रेज ने तुरन्त ही कोई जवाब नहीं दिया। वह तब बोला जब जापानी अफसर का तमाचा उसके गाल पर पड़ा। वह कमल व सोनिया की तरफ इशारा करते बोला—

"ये दोनों मियां-बीवी हैं। ये दोनों पास वाले टापू पर पता नहीं

कहां से आ गए थे। पहले हमें शक हुआ कि ये किसी देश के एजेन्ट हैं, जब हम इन्हें कैद करके यहां लाए तो हमारे बॉस को मालूम हुआ कि इस औरत में सूंघने की अद्भुत क्षमता है। वह किसी भी इन्सान की या किसी चीज की बू सूंघकर खुफिया अड्डों तक पहुंच सकती है। ऐसी खतरनाक औरत और उसके मर्द को हम जिंदा नहीं छोड़ सकते थे। मगर हमारे एक आदमी के पागलपन ने हमें इस मुसीबत में फंसा दिया।"

वो जापानी पुलिस अफसर सोनिया को घूरने लगा, फिर वो उसकी आंखों में झांकते हुए बोला, "मैडम अभी तुमने हम लोगों की मदद की है और इस अंग्रेज के कथनानुसार तुम्हारे पास सूंघने की अद्भुत क्षमता है। तुम हमारी थोड़ी मदद और करो।"

सोनिया बोली, "मैं तुम्हारा आशय समझ रही हूं, ऑफिसर! मैं कानून की मदद करूंगी और इन स्मगलरों के चरस इत्यादि के गोदाम तक तुम्हें ले चलूंगी।"

अफसर ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वो कैदियों को लांच में पहुंचाकर फौरन वापिस आ जाएं।

उसके आदेश का तुरन्त पालन हुआ और जब करीब आधे घंटे बाद वे वापिस आए तो उनके साथ एक सीनियर जापानी पुलिस अफसर भी था।

जूनियर अफसर ने उसे कमल व सोनिया की बाबत बताया। सीनियर अफसर ने भी आभार व्यक्त करते कमल व सोनिया से हाथ मिलाया। कमल ने जापानी पुलिस से अधिक-से-अधिक सहयोग का फैसला कर रखा था।

जापानी पुलिस के अनुरोध पर सोनिया अपनी सूंघने की क्षमता के सहारे उन्हें इन स्मगलरों के नशीले पदार्थों के गुप्त गोदाम की तरफ ले जाने लगी।

कमल रास्ते में सीनियर अफसर से बातें करने लगा। उसने उसे अपने बारे में बताया और कमल ने उसे सिर्फ एक झूठ बोला कि वो अपनी याददाश्त खो चुका है कि दुश्मनों ने उसे इतने जहनी झटके पहुंचाएं हैं कि अब उसे अपना अतीत याद नहीं रहा है।

यह झूठ भी कमल ने इसलिए बोला था कि वो इनसे अपने टेलीपैथी के इल्म को छुपाना चाहता था। जब कमल ने उन्हें बताया कि वो और सोनिया कोवाई टापू पर एक इन्टरनेशनल क्रिमिनल गिरोह के हैडक्वार्टर पर कैद रहे थे तो सीनियर अफसर ने चौंक कर ही कमल की तरफ देखा था।

वह तेजी से बोला, "कोवाई टापू तो एक बेहद मिसटीरियस

ब्लैकमेलर का अड्डा था। बड़े-बड़े मुल्कों के राज उसकी मुट्ठी में रहते हैं। हमारे देश जापान का भी एक राज मालूम नहीं उसके पास कैसे पहुंच गया। हम उस ब्लैकमेलर से उस राज का सौदा करने कोवाई टापू पर जाने वाले थे, पर हमें इत्तला दी गई कि हम अभी उस टापू की तरफ न जाएं, कि सौदा एक हफ्ते बाद होगा।"

कमल मुस्करा दिया, बोला, "ऑफिसर! मैं समझ गया हूं कि उसने एक हफ्ते के लिए क्यों टाल दिया है। हमने वहां तबाही मचा दी थी। वह ब्लैकमेलर जो सुपर मास्टर कहलाता है वहां से फरार हो चुका है। हम भी वहां से भागकर यहां आन फंसे थे। वैसे आप फिक्र न करें, आपके देश का वह राज मेरे पास महफूज है।"

सीनियर ऑफिसर चलते-चलते ठिठक गया—"क्या-क्या बोला तुमने?"

कमल ने अपनी बात दोहरा दी।

"क्या वाकई!" अफसर उत्तेजित हो उठा था, "हमारे वो कागजात कहां हैं?"

"ऐसे सब कागजात मैंने पास वाले टापू पर एक जगह सुरक्षित छिपा दिए हैं। आप वहां चलें, मैं वो कागजात आपके हवाले कर दूंगा।"

"थैंक्स...थैंक्स ए लाट।" अफसर बोला, "मादाम सोनिया यहां हमारे आदमियों के साथ ड्रग्स के गोदाम को तलाशेंगी। तुम मेरे साथ चलो। हम उस टापू पर चलते हैं।"

कमल बोल उठा, "सॉरी ऑफिसर! मैं अपनी बीवी को छोड़कर नहीं जाना चाहता। हम सब एक साथ उस टापू में चलें तो बेहतर है।"

ऑफिसर कुछ देर खामोश रहा, फिर बोला, "क्या नाम बताया था तुमने अपना?"

"कमलकान्त...।"

"वेल, मिस्टर कमलकांत! तुम अपनी बीवी की फिक्र न करो। तुमने दोस्ती का सबूत दिया है। हम भी दोस्ती का सबूत देंगे। तुम दोनों मियां-बीवी को वी.आई.पी. मेहमान की हैसियत से अपने मुल्क में ले जाएंगे। आओ, देर न करो। प्लीज वे कागजात हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।"

कमल उसके साथ वापिस सागर तट पर आ गया और फिर एक मोटरबोट में उस करीबी टापू तक पहुंचने में उन्हें देर नहीं लगी।

वहां किनारे पर पहुंचते ही कमल ने उस अफसर से कहा, "मैं सोनिया के साथ इस टापू के पश्चिमी किनारे पर पहुंचा था। वहीं

किनारे से कुछ दूर एक पेड़ के पास मैंने उस ब्लैकमेलर की सेफ से उड़ाया ब्लैकमेलिंग का वह 'मवाद' यानी कि कागजात, फिल्में, माइक्रोफिल्में सब एक पेड़ के पास जमीन में दफना दी थी। आप अपने सिपाहियों को यहां वह पेड़ तलाश करने को कहें जिसके तने पर चाकू से क्रॉस का निशान बना है।"

उस सीनियर ऑफिसर के आदेश पर सिपाही टार्चों की रोशनी में उस पेड़ को तलाश करने लगे। वे लोग मोटरबोट से गलत जगह उतर गए थे—इसलिए तलाश करते-करते सुबह के चार बजे वह पेड़ नजर आया। कमल ने पेड़ के सामने खड़े होकर अनुमान लगाया व फिर उसने इशारों से ही एक जापानी सिपाही को समझाया कि वो चाकू से किस जगह को खोदे।

वहां की मिट्टी नर्म थी। सिपाही उस जगह को खोदता चला गया। शीघ्र ही कमल का वहां दबाया ब्रीफकेस बाहर निकल आया। सीनियर ऑफिसर ने खुद घुटनों के बल जमीन पर झुकते ब्रीफकेस खोला व बड़ी बेताबी के साथ एक-एक कागज उठाकर देखने लगा।

ब्रीफकेस में कितने ही देशों के गुप्त भेद बन्द थे, लेकिन वांछित कागजात उस अफसर के हाथ शीघ्र ही लग गए।

वो कागजात संभालते उठ खड़ा हुआ और फिर कमल को घूरने लगा। उसके तेवर एकदम ही बदले और वह गुर्राकर बोला—

"हमने इस ब्लैकमेलर सुपर मास्टर को मार डालने की प्लानिंग की थी—क्योंकि वो इन कागजात को पढ़ चुका था। मिस्टर कमलकांत! तुम ही बताओ जो शख्स हमारे मुल्क से ताल्लुक रखते एक बेहद अहम व संवेदनशील राज से वाकिफ हो गया हो, क्या हम उसे जिंदा छोड़ सकते हैं?"

"बेशक उसे गोली से उड़ा देना चाहिए।" कमल सहज भाव से बोला।

"बेशक!" वो अफसर रिवॉल्वर निकालते बोला, "तुम भी इन कागजात को पढ़ चुके हो।"

कमल चौंका, जापानी अफसर ने गिरगिट की तरह रंग बदला था। उसकी उंगली रिवॉल्वर के घोड़े पर पहुंच चुकी थी।

□□

अगर इस धूर्त पुलसिये की उंगली रिवॉल्वर के ट्रेगर तक पहुंच चुकी थी तो क्या?

कुछ लोग मौत को उंगली दिखाकर या ठेंगा दिखाकर जिन्दगी की तरफ वापिस आ जाते हैं। क्योंकि तदबीर उनका हथियार होती है और तकदीर उनका साथ देती है और दुश्मन के हथियारों को

जंग लगा बना देती है।

जिस वक्त वो जापानी अफसर कमल को सजाए मौत देना चाहता था—उसी वक्त समुद्र की तरफ से अचानक तेज हवाएं चलने लगी और ब्रीफकेस पर रखे महत्वपूर्ण कागजात उड़कर इधर-उधर बिखर गए। इन कागजात में ही जापान का कोई ऐसा अहम राज छिपा हुआ था जिसके कारण इन जापानियों ने सुपर मास्टर जैसे शख्स को उसी के घर में यानी कोवाई टापू पर पहुंचकर मार डालने की बकायदा प्लानिंग कर रखी थी और जाहिर था...

ये कागजात अपने कमल की जिंदगी और मौत के फैसले से ज्यादा महत्व रखते थे—इसलिए वो कमल को छोड़कर उन कागजों की तरफ दौड़ने लगे जो बिना पंख के उड़ रहे थे।

कमल खामोश खड़ा यह तमाशा देखने लगा।

टार्च की रोशनियां दूर तक फिसल रही थीं। अंधेरे-उजाले के खेल में वे कागजात कटी पतंग की तरह डौल रहे थे। कुछ कागजात ऐसे थे जिनकी उड़ान नीची थी और कुछ इतनी बुलन्दी पर उड़ रहे थे कि पेड़ों की चोटियों तक पहुंच रहे थे।

कमल एक पेड़ तले खड़ा हो जापानी अफसर के जहन में झांकने लगा।

अफसर अपनी मातृभाषा यानी जापानी जुबान में सोच रहा था जो कमल के पल्ले नहीं पड़ रही थी। कमल ने उसे अंग्रेजी जुबान की तरफ आकर्षित करने को उसकी सोच में कहा—

"व्हाट नॉनसैन्स आई एम थिकिंग अबाऊट...(ये कैसी बेहूदा बातें सोच रहा हूं मैं)।" और वह चौंककर अपनी खोपड़ी सहलाते सोचने लगा—"मैं फजूल बातें तो नहीं सोच रहा हूं। बहुत गड़बड़ हो गई है। अगर इनमें से एक भी कागज कम हो गया तो मुझे हाईकमान को जवाब देना पड़ेगा। क्या मुसीबत है। मैं तो इस हिन्दुस्तानी को शूट करने की महज धमकी दे रहा था। वो भी इसलिए कि अगर उसने कुछ और कागजात कहीं छिपा रखे हों तो वो अपनी जान बचाने के लिए वो भी पेश कर दे। मैं तो उसे विदेश मंत्रालय को सौंपने को मजबूर था। मगर अब यह क्या हो गया है? मेरी जरा-सी गफलत से कागजात को पर लग गये। अरे! वह-वह एक कागज कितनी ऊंची साख पर जा टंगा है।"

अपनी टार्च की रोशनी पेड़ की ऊपरली शाखाओं पर डालते अपने एक मातहत से बोला—"चलो, जल्दी से उस पेड़ पर चढ़ो और उस कागज को सम्भालकर लाओ।"

वो आदेश दे रहा था और इधर-उधर दौड़ता फिर रहा था।

बहरहाल कमल को उसकी सोचें पढ़कर इत्मीनान हो गया कि अभी उसकी जिन्दगी के दिन बाकी है कि मिलिट्री के उच्चाधिकारी ही उसके बारे में कोई निर्णय लेंगे।

उड़ने वाले कागजात को पकड़कर जमा करने में उन्हें करीब एक घंटा लग गया। इस बीच सोनिया बच्चे को गोद में लिए जापानी पुलिस की दूसरी टीम के साथ वहां आन पहुंची।

इस दूसरी टीम के अफसर ने पूछा, "क्या बात है, हमने बहुत-सी टार्चों की रोशनियों को लहराते देखा है। खैरियत तो है?"

दूसरा अफसर उसे कागजात के बारे में बताने लगा और अपनी विपदा सुना वह कागजात को क्रम से लगा उनका जायजा लेने लगा। मगर क्रम नहीं मिल रहा था। एक पेज बीच से गुम हो गया था। अफसर का सिर घूम गया। पर फिर उसने खुद को सम्भाला और कमल को घूरते हुए बोला—

"ये कागजात पूरे नहीं हैं। इसका एक पेज और कहां है?"

कमल मुस्करा दिया व तीखे लहजे में बोला, "बहुत खूब! उलटा चोर कोतवाल को डांटे। एक घंटा पहले जब आपने इन कागजात को पढ़ा था तो ये पूरे थे। एक पेज अगर कम है तो आपकी कोताही की वजह से है। मुझे शूट करने की धमकी देने से पहले आपको यह सोचना चाहिए था कि ये कागजात तेज हवाओं के लपेट में आ सकते हैं। गनीमत है कि एक ही पेज कम है वर्ना दो-चार और भी कम हो सकते थे।"

"यू शटअप!" वो बौखलाकर चीखा, "वह पेज पहले ही कम था, इसीलिए मैं तुम्हें मारने की धमकी दे रहा था।"

अब दूसरी टीम का अफसर बोला, "मगर ऑफिसर! इन कागजात को तरतीब देने से पहले आपने मुझसे भी यही कहा था कि आप पूरे कागजात पढ़ चुके हैं।"

"आं...नहीं तो...मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा था। आपके सुनने में गलती हुई है।"

दूसरा अफसर बदस्तूर सहज भाव से बोला, "हो सकता है मुझसे सुनने में गलती हुई हो और यह भी हो सकता है कि वो पेज उड़कर कहीं इधर-उधर पहुंच गया हो, हमें एक बार फिर तलाश करना चाहिए।"

"हम दूर-दूर तक तलाश कर चुके हैं।" वो अफसर भिन्नाया-सा बोला, "टार्च की रोशनी में कहां तक तलाश करें।"

वो इसी बात पर जोर देता रहा कि कागजात पहले से ही पूरे नहीं थे। कमल के दिमाग में एक ख्याल उभरा और वो सोच के

जरिए सोनिया को सम्बोधित हुआ—

"जानेमन! यह मक्कार हमें झूठा साबित कर रहा है। अब तुम्हें ही यह साबित करना होगा कि यह झूठ बोलकर अपनी कोताही को छिपा रहा है। क्या तुम एक ही तरह के कागजात की बू सूंघ सकती हो?"

"हां, मैं ऐसा कर सकती हूं। ठहरो, मैं अफसर से बात करती हूं।" और फिर वह उस अफसर से सम्बोधित हुई—"ऑफिसर! आप लोगों को तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिस तरह मैं आपको नशीली दवाइयों के खुफिया अड्डों तक ले गई थी, उसी तरह मैं इस गुमशुदा कागज तक भी पहुंच सकती हूं।"

अफसर चौंका और फिर उसका चेहरा खिल उठा। वह तो सोनिया की इस खूबी को भूल ही गया था। वह बोला, "ओह! मैं तो इस बहस में यह भूल ही गया था कि तुम्हारी सूंघने की शक्ति अविश्वसनीय व आश्चर्यजक है, मैं तुम्हारी मदद करता हूं, मादाम! तुम ट्राई करो।"

सोनिया ने कागजात हाथ में ले उन्हें सूंघा।

तमाम जापानी उसे बड़ी हैरत से देख रहे थे।

सोनिया ने कागजात लौटा दिए, एक बार हवा में चेहरा उठा, गहरी-गहरी सांसें ली व फिर दूसरी टीम के अफसर के साथ एक तरफ बढ़ गई। कमल लापरवाही से चलता हुआ करीब के एक पत्थर पर जा बैठा।

उसकी लापरवाही पर वो अफसर भड़क-सा गया। एकदम बोला, "यू नानसैंस! तुम कहां के लार्ड हो कि हमारे सामने बैठ रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि एक मुजरिम को खड़ा रखा जाता है। खड़े हो जाओ।"

कमल उससे बहस नहीं करना चाहता था। खामखां की दुश्मनी मोल लेकर किसी नई मुसीबत को दावत देना हिमाकत ही थी। वह उठकर खड़ा हो गया। मगर इसके साथ ही उसने उस अफसर की सोच में कहा—

"मैं खामखां ही इस हिन्दुस्तानी से पंगा ले रहा हूं। अभी वह मादाम बू सूंघकर कागज ढूंढ़ लाएगी तो मेरी पोजीशन कमजोर पड़ जाएगी। मुझे तो इस हिन्दुस्तानी का पक्ष लेना चाहिए। ऐसे में यह दूसरे अफसरों के सामने मेरे खिलाफ भी नहीं बोलेगा। मुझे इससे दोस्ती दिखानी चाहिए।"

और कमल की ऐसी इस सोच के वशीभूत ही वो कमल से बोला—"अच्छा, कोई बात नहीं तुम बैठ सकते हो।"

कमल खामोशी से फिर यंत्रवत ही पत्थर पर बैठ गया, अफसर उसके निकट आ, इसी दोस्ताना अन्दाज में कहने लगा—

"मिस्टर कमलकांत! मैं अपने पिछले रवैये पर शर्मिन्दा हूं। प्लीज फारगेट देट।"

कमल मुस्कराते हुए बोला, "देट्स आल राइट! मैं समझता हूं आप अपनी पोजीशन साफ रखने के लिए मुझे जिम्मेवार ठहरा रहे थे और जाहिर है कि हर शख्स को अपने बचाव के लिए थोड़ा-बहुत झूठ बोलना पड़ता है। डोंट वरी—सोनिया अभी वह कागज ढूंढ़ लाएगी।"

वो खिसियानी हंसी हंसते हुए बोला, "हां, मगर मेरी पोजीशन कमजोर हो जाएगी।"

"आप फिक्र न करें, अगर मुझसे पूछा जाएगा तो मैं यही कहूंगा कि आपको उन कागजात को पढ़ने-परखने का पूरी तरह मौका नहीं मिला था कि उसी दौरान तेज हवाओं में कागजात उड़कर बिखर गए थे।"

अफसर ने खुशी में कमल का हाथ थाम लिया, "ओह! माई डियर! तुम कितने अच्छे हो। अब मैं तुम्हें सच-सच बता दूं कि उस वक्त मैं तुम्हें शूट करने की सिर्फ धमकी दे रहा था। वर्ना दिल की बात तो यह है कि मैं पहली ही मुलाकात में तुम्हें दिल से पसन्द करने लगा था।"

कमल मन-ही-मन में हंस दिया।

जाहिर है अब यह धूर्त्त यह कैसे समझ सकता था कि कमल उसके दिल की बातें बहुत दूर तक समझता है।

तभी सोनिया लौट आई। उसके साथ जो अफसर गया था उसके हाथ में वह कागज नजर आ रहा था।

कुछ ही देर बाद वो सब मोटर बोट्स में उस दूसरे टापू की तरफ जा रहे थे जो अंग्रेज स्मगलरों का हैडक्वार्टर था। मोटर बोट द्वारा वो उस टापू के किनारे लगी बड़ी लांच में पहुंच गए। कमल संतुष्ट तो था पर यह अन्देशे अभी भी उसे डरा रहे थे कि जाने जापानी पुलिस अब उनके प्रति क्या रवैया अपनाती है।

अब दिन निकल आया था।

सारी रात ऐसे हंगामों में बीती थी कि कमल और सोनिया दोनों का ही थकावट से बुरा हाल था। उन्हें एक केबिन दे दिया गया था। वो केबिन में आकर आराम से लेट गए।

सोनिया को बच्चा परेशान कर रहा था। सोनिया अब तक उस मासूम की भूख शहद चटा-चटाकर शांत करती आई थी। उसने

पुलिस अफसरों से बच्चे के लिए दूध की फरमाइश की थी। मगर यह पुलिस लांच स्मगलरों को पकड़ने आई थी—इसलिए उनके पास दूध के डिब्बों जैसी कोई चीज उपलब्ध नहीं थी।

अफसर ने अफसोस जाहिर करते कहा था—"हमें बहुत अफसोस है, मादाम! पर नागासाकी पहुंचते ही सबसे पहले बच्चे के दूध का इंतजाम किया जाएगा।"

सोनिया उनकी मजबूरी समझती थी, सो मन मसोस कर रह गई थी।

केबिन में आते ही कमल तो बिस्तर पर लेटते ही सो गया। वह शाम तक बेसुधी की नींद सोता रहा और फिर जब उसकी आंख खुली तो उसने देखा कि सोनिया बच्चें को बोतल से दूध पिला रही थी।

'अरे! क्या तुम अभी तक जाग रही हो?"

"नहीं, मुझे भी सोने का मौका मिला था। लेकिन यह शैतान बार-बार उठा देता था। तुमने तो खूब नींद ली। जानते हो शाम हो रही है।"

कमल जल्दी से उठकर बैठ गया। शाम होने का मतलब था कि वो करीब ग्यारह घंटे सोता रहा। उसने पूछा—

"इस वक्त हम कहां हैं?"

"हम नागासाकी पहुंच चुके हैं। लांच बन्दरगाह में हैं। दोनों अफसर यह कहकर गए हैं कि उनकी वापसी तक लांच से बाहर न जाएं...कि यहां हमारी तमाम जरूरतें पूरी होती रहेंगी।" सोनिया ने बताया।

कमल उठकर बाथरूम में चला गया। टापू से वो अपने कपड़ों की अटैची ले आए थे।

कमल ने नहा-धोकर लिबास बदला फिर बाहर डेक पर आ गया। शाम डूब रही थी।

दूर शहर की रोशनियां जागती-सी महसूस हो रही थीं। इस शहर की रोशनियां देखकर कमल के दिल में एक दर्द-सा उठा। क्योंकि यही वो शहर था जो कभी एटम-बम की जद में आकर जिन्दा लाशों का कब्रिस्तान बन गया था।

कमल उन लोगों की याद में निश्चल-खामोश खड़ा रहा—जो एटम बम का शिकार होकर अपाहिजों की तरह जिन्दगी गुजारते हुए—एड़ियां रगड़-रगड़कर मर गए थे और इन चंद लम्हों में ही कमल ने व्यथित दिल से अपने रब से दुआ मांगी कि रब इस दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध से बचाए रखे कि दुनियां को एटमी-धमाकों

की नहीं, मां के दूध की जरूरत है।

फिर सोनिया ने केबिन से बाहर आकर उसे याद दिलाया कि वो भूखे हैं। भूख की याद आते ही भूख का अहसास तीव्र हो उठा। उनकी फरमाइश पर उनके लिए खाने का इंतजाम कर दिया गया।

और खाने के दौरान ही कमल ने मौजूदा हालात के बारे में सोचा। अभी खतरे टले नहीं थे। अनिश्चित भविष्य का खौफ बदस्तूर था।

कमल ने एक जापानी अफसर के जहन में झांक कर देखा कि मालूम हो सके कि क्या खिचड़ी पक रही है।.

अफसर अपनी मातृ-भाषा में किसी से बातें कर रहा था। उसका अंदाज ही बता रहा था कि बड़ी जबरदस्त किस्म की बहस जारी है। कमल ने उसे अंग्रेजी जुबान अपनाने या उसमें सोचने के लिए मजबूर नहीं किया, क्योंकि उसके आस-पास सभी जापानी बैठे हुए थे और ऐसे में उसे अंग्रेजी में सोचने या अंग्रेजी बोलने को बाध्य करना फितरत के खिलाफ होता।

कमल ने सोनिया की तरफ देखा।

सोनिया उसी को निहार रही थी। उसने मुस्कराकर पूछा, "जनाब किसके दिमाग में झांक रहे थे?"

"मैं मालूम कर रहा था कि वो अफसर क्या कर रहे हैं। मगर उनकी जुबान मेरी समझ में नहीं आती। हमें यह जापानी जुबान सीखनी होगी।"

"क्यों नहीं।" सोनिया मूड में बोली, "यहां की जुबान सीखे बिना यहां की लड़कियों से फ्री होने का मौका जो नहीं मिलेगा। यहां की गुड़ियों जैसी अल्हड़ नवयौवनाओं का हुस्न बहुत मशहूर है। इरादे नेक तो हैं जनाब के?"

कमल हंस दिया, हंसते हुए ही बोला, "औरत को जब लड़ने के लिए कुछ नहीं मिलता तो वह अपने साये से लड़ने लगती है। मादाम! अभी तक मैंने किसी जापानी गुड़िया के दीदार तक नहीं किए हैं और तुमने लड़ना शुरू कर दिया। पता नहीं यहां हमारा क्या हश्र होने वाला है। इन लोगों ने अगर हमारे साथ कैदियों जैसा सलूक किया तो यहां से फरार होना मुश्किल हो जाएगा।"

कमल एकाएक संजीदा नजर आने लगा था।

सोनिया के दिमाग में भी अंदेशे थे। जाहिर था अगर यहां की हकूमत का रवैया अगर दुश्मनों वाला हुआ तो यह आकाश से गिरने और खजूर में अटकने वाली बात हो जानी थी।

वो संजीदगी से बोली, "खैर, देखा जाएगा।"

और फिर वो दूसरी बातों में मग्न हो गए। दिलजोही के लिए

सोनिया को बच्चा मिला ही हुआ था। समय बीतते देर न लगी।

□□

जापानी अफसरों की वापसी रात करीब आठ बजे हुई।

उनके साथ एक जापानी औरत भी थी।

उन्होंने कमल व सोनिया का अभिवादन किया व फिर एक अफसर बोला—"मादाम! हमारे अफसर तुमसे कुछ जरूरी बातें करना चाहते हैं। तुम हमारे साथ चलो और बच्चे को इस आया के हवाले कर दो।"

सोनिया ने दीपू को सीने से भींचते हुए कहा, "यह नहीं हो सकता। मैं जहन्नुम में भी जाऊंगी तो यह बच्चा मेरे साथ आएगा।"

जापानी अफसर ने मुस्कराकर कहा, "मादाम! यह ममता नहीं खुदगर्जी है। आप अपनी ख्वाहिश की खातिर अपने बच्चे को भी जहन्नुम में ले जाने की सोचती हैं। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि जहां हम जा रहे हैं, वहां आपको दोस्ताना माहौल ही मिलेगा। चूंकि संजीदा बातचीत के दौरान यह बच्चा परेशान करेगा, इसलिए हमने इसके लिए इस आया का बंदोबस्त किया है।"

सोनिया की सवालिया निगाहें कमल की तरफ उठ गईं।

कमल ने उसे समझाया, "सोनिया! यह नागासाकी है। यहां एक वक्त ऐसा आया था जब एटम बम की जहरीली हवाओं में यहां के नन्हे बच्चे या तो अंधे हो गए थे या हाथ-पांव से पंगू हो गए थे। जापानी कौम बच्चों के दर्द को समझती है। यह तुम्हारे दीपू को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। तुम निःसंकोच इसे आया के हवाले कर दो।"

दोनों जापानी अफसर कमल को प्रशंसाभरी नजरों से देखने लगे।

सोनिया ने ना चाहते हुए भी बच्चे को आया के हवाले कर दिया।

और फिर कमल व सोनिया उन अफसरों के साथ लांच से उतर कर किनारे पर आ गए। किनारे पर एक बड़ी कार उनकी प्रतीक्षक थी। इस कार में उन्होंने एक खासा-फासला तय किया और कार अंततः एक खुले मैदान में आकर रुक गई।

इस मैदान में एक हैलीकॉप्टर खड़ा हुआ था। उन्हें हैलीकॉप्टर में चढ़ने को कहा गया तो सोनिया ने फिर एतराज किया।

"हमें कहां ले जाया जा रहा है? मैं अपने बच्चे को छोड़कर नहीं जाऊंगी।"

जापानी अफसर ने शालीनता से समझाया, "हम पर भरोसा रखें मादाम! कल दोपहर तक आपका बच्चा आपको मिल जाएगा।"

बच्चे के प्रति सोनिया की यह ममता कमल को बड़ी अनूठी लग

रही थी। सोनिया जैसी खूंखार जंगली बिल्ली का यह ममतामय रूप भी बड़ा अजीब था। वह कुछ सोचते हुए बोला—

"सोनिया, हमें इन पर भरोसा करना ही होगा। कल दोपहर तक सब्र करो।"

सोनिया हैलीकॉप्टर में बैठते हुए खिन्न लहजे में बोली, "मैं समझती थी कि तुम बाप बनकर मेरे बच्चे के बारे में सोचोगे। मगर अब समझ गई हूं कि तुम्हें भी मेरे जज्बात का कोई अहसास नहीं है। याद रखो! अगर दीपू को कुछ हो गया तो मैं अपने साथ आठ-दस को ले मरूंगी।"

हैलीकॉप्टर शून्य में उठने लगा।

कमल ने सोच के जरिए सोनिया से कहा, "मेरी जान तुम यह क्यों भूल जाती हो कि मैं टेलीपैथी के जरिए अपने दीपू की कुशलता जानता रहूंगा। अपने दीपू के रोने की आवाज के जरिए उसके नन्हे से दिमाग तक पहुंच सकता हूं।"

सोनिया ने चौंककर उसकी तरफ देखा। फिर उसका चेहरा खिल उठा। उसने सोच के जरिए ही जवाब दिया, "आह! डियर! तुम कितने ग्रेट हो, मैं-मैं...यह क्यों भूल जाती हूं कि हमारा दीपू मुझसे दूर है तो क्या—तुम्हारी सोचों के पालने में तो झूल रहा है। मुझे बताओ वो रो तो नहीं रहा है?"

उसकी बेताबी कमल के दिल को गुदगुदा गई।

कमल ने जवाब दिया, "नहीं, मेरी जान! अपना दीपू बड़े आराम से है और आया की गोद में ममता की हरारत महसूस कर रहा है।"

सोनिया की सोच ने कहा, "पहले मैंने इस बाबत सोचा ही नहीं था कि टेलीपैथी के जरिए अबोध बच्चों के अहसास भी समझे जा सकते हैं। नन्हे से दिमाग में झांकते हुए क्या महसूस होता है, प्रिय?"

कमल कुछ देर तक नन्हे दीपू के दिमाग में झांकता रहा।

अब एक नन्हे से दिमाग में छाई धुन्ध के अलावा उसे क्या दिखना था। चंद घंटों के बच्चे के अहसास तो ममता की हरारत और भूख-पीड़ा के अहसास से जुड़े होते हैं। कमल यही सब सोनिया को बताता रहा।

आधे घंटे की उड़ान के बाद हैलीकॉप्टर मकोका के एअरपोर्ट पर पहुंच गया। यहां से वो जापान एयर लाइन के जरिए टोकियो के लिए रवाना हो गये।

अब सिर्फ एक अफसर उनके साथ था।

सफर के दौरान, कुछ सोचते हुए ही, कमल ने उससे पूछा—"आप

अकेले हमें टोकियो ले जा रहे हैं। क्या यह नहीं हो सकता कि हम किसी भी वक्त आपसे पीछा छुड़ाकर फरार हो सकते हैं।"

अफसर ने हंसते हुए जवाब दिया, "आप फरार होकर कहां जाएंगे। आप जहां भी जाएंगे जापानी पुलिस को अर्ल्ट पाएंगे। यूं भी मुझे तुम दोनों से ऐसी नादानी की उम्मीद नहीं है। हां, अगर दिल चाहे तो यह नादानी करके देख लो।"

"न हमारा ऐसा कोई इरादा है।" कमल बोला, "और शायद न ही इसकी जरूरत है। यूं भी कानून के खिलाफ जाना मेरी फितरत में नहीं है। अगर ऐसा होता तो मैं आपके देश का इतना बड़ा राज आपके हवाले करके आपकी तरफ दोस्ती का हाथ न बढ़ाता।"

"राइट यू आर! हम तुम्हारी नेक नियती को मानते हैं और इसका ही सबूत है यह कि मैं अकेला तुम्हारे साथ हूं और तुम दोनों को कैदियों की हैसियत से नहीं ले जा रहा हूं।"

लेकिन इस अकेले शख्स ने टोकियो पहुंचते ही उनका साथ छोड़ दिया था।

टोकियो एयरपोर्ट के बाहर जो गाड़ी उनकी प्रतीक्षक थी, वह जापान आर्मी की गाड़ी थी और सशस्त्र फौज़ी उनके स्वागत के लिए मौजूद थे।

साथ आए अफसर ने उन्हें फौजी कमान्डर के हवाले कर दिया।

और यह स्थिति कमल की आशाओं के खिलाफ नहीं थी।

जाहिर था इस देश का एक बहुत बड़ा 'सीक्रेट' उनके हाथों से गुजरा था। इसलिए यह मामला सिर्फ पुलिस डिपार्टमेंट तक ही सुरक्षित नहीं रहना था। यही वजह थी कि कमल व सोनिया को मिलिट्री इंटेलीजेंस वालों के सपुर्द कर दिया गया था।

फौजी गाड़ी विभिन्न सड़कों व तंग गलियों से होती हुई एक विशाल इमारत के सामने पहुंची थी। मेन गेट पर सशस्त्र फौजी तैनात थे। उन्होंने कमल व सोनिया को लाने वाले फौजियों का शिनाख्ती कार्ड देखा—फिर गाड़ी को अन्दर जाने की इजाजत दी। अंदर विस्तृत कम्पाउंड में और इमारत के बरामदों में सशस्त्र फौजी चौकन्ने नजर आ रहे थे।

ऐसे इन्तजाम थे कि कोई परिन्दा भी वहां पर नहीं मार सकता था।

चारों फौजी कमल व सोनिया को अपने बीच में लेकर चल रहे थे।

वे एक बन्द दरवाजे के सामने पहुंचकर रुके, एक फौजी ने कॉलबेल का बटन दबाया। दरवाजे पर लगे हुए स्पीकर से आवाज

आई। जापानी भाषा में शायद कोई आदेश दिया गया था। क्या...? यह कमल समझ नहीं पाया था। इस आदेशानुसार उन्हें एक-दूसरे कोरीडोर में ले जाया गया और फिर एक दरवाजे के निकट पहुंच कमाण्डर ने सोनिया से कहा—

"मादाम! आप अन्दर तशरीफ ले जाएं।"

सोनिया ने कमल की तरफ देखा। कमल ने आंख का कोना दबाया और वो दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई। इस दरवाजे के सामने इस राहदारी के दूसरी ओर दूसरा दरवाजा था। कमल को वहां जाने के लिए कहा गया।

कमल भी दरवाजा खोल भीतर समा गया। कमरा खूबसूरत फर्नीचर से सुसज्जित था। एक सोफे के सामने सेंटर टेबल पर एक बड़ा-सा टेप-रिकार्डर रखा हुआ था। कमरे का दरवाजा बंद होते ही दीवार में लगे लाउड-स्पीकर से आवाज आई।

"मादाम सोनिया और मिस्टर कमलकांत! आप दोनों के सामने टेप-रिकार्ड रखे गए हैं। आप इत्मीनान से बैठकर इसे ऑन करें और अपनी हिस्ट्री ब्यान करें। आप दोनों को दो अलग-अलग कमरों में इसलिए रखा गया है कि आप एक-दूसरे के मंशवरे से कोई गलत वयान न दें। अगर कोई एक कुछ गलत कहेगा तो दूसरे के वयान से उसका झूठ पकड़ा जाएगा।"

कमल के होंठों पर उनकी इस ड्रामेबाजी पर मुस्कान नाच गई। वे लोग बड़ी सतर्कता से काम ले रहे थे और अपनी मंशा छिपाई भी नहीं थी, पर बेचारे यह नहीं जानते थे कि यह तिगड़म दूसरों पर तो चल सकती थी लेकिन कमल व सोनिया के साथ नहीं। कम-से-कम कमल के लिए यह कोई समस्या नहीं थी।

कमल ने सोफे पर इत्मीनान से बैठकर पहले सोनिया को सम्बोधित किया—

"सोनिया! मैं अपना ब्यान देते वक्त तुमसे अपने जहनी तार जोड़े रहूंगा। मेरी आवाज मेरी सोच के जरिए तुम तक पहुंचती रहेगी, तुम मेरे ब्यान को ही दूसरे शब्दों में व अपने अंदाज में रिकार्ड करती रहना। ओ.के.?"

"ओ.के. डियर! मैं बिल्कुल तैयार हूं।"

कमल ने अपने सामने रखे टेप-रिकार्डर को ऑन किया व फिर अपनी वही कहानी दोहराता चला गया जो वो इससे पहले भी जापानी पुलिस अफसरों को सुना चुका था। इस बार उसने थोड़ा विस्तार से ही उन्हें बताया कि मास्टरों के इंटरनेशनल संगठन के एक खतरनाक मास्टर—मास्टर लयूशे से किस तरह उसका टकराव हुआ

था...यह सब उसे याद नहीं था...क्योंकि दिमागी झटके सहने के बाद वो अपना अतीत भूल चुका है। कि उसके बारे में वे सारी पिछली बातें उसे सोनिया ने बताई हैं—क्योंकि वो "मास्टरों" के इस संगठन में थी और मास्टर लयूशे के साथ हिन्दुस्तान आई थी और वहीं उसकी व सोनिया की दोस्ती हुई। फिर यह दोस्ती पति-पत्नी के रिश्ते में बदल गई।"

ब्यान देने के दौरान कमल सिगरेट सुलगाने के बहाने रुक गया—ताकि सोनिया को गाईड कर सके।

उसने सोनिया से पूछा, "तुम सब कुछ सुन रही हो?"

"हां, सुन रही हूं। तुम्हारा ब्यान सुनने के लिए जरूरी था कि मैं अभी अपना ब्यान शुरू न करूं। इसलिए मैंने तरोताजा होकर ब्यान रिकार्ड कराने के बहाने चाय मंगवा ली। तुम इत्मीनान रखो, मैं तुम्हारी बातें दिमाग में बैठाती जा रही हूं। तुम अब जरा जल्दी-जल्दी अपना ब्यान दे डालो।"

कमल ने दोबारा रिकार्डर ऑन किया व शुरू हो गया—

वो अब अपनी वह आपबीती सुना रहा था कि किस तरह उसे हिन्दुस्तान से जबरदस्ती लाया गया और फिर 'मास्टरों' के इस संगठन के हैडक्वार्टर यानी कि कोवाई टापू पर ले जाकर—सुपर मास्टर ने उसे अपना जहनी गुलाम बनाने को क्या-क्या खेल खेले—और वो किस तरह उसके चुंगल से निकल कर इस गुमनाम टापू तक पहुंचे थे और यहां किस तरह उन्होंने जापानी पुलिस की मदद की थी।

अपना ब्यान खत्म करने के बाद कमल ने सोनिया के दिमाग में झांका। वो बेचारी कमल का ब्यान खत्म होने की इन्तजार में चाय के तीन कप पी चुकी थी।

"अब तुम अपना ब्यान रिकार्ड करा डालो।" कमल ने उससे कहा।

"ठीक है, मैं शुरू करती हूं।" सोनिया ने कहा और वह अपने सामने वाला रिकार्डर ऑन करके शुरू हो गई।

जो बातें कमल कह चुका था—वही बातें वो दूसरे क्रम के साथ अपने शब्दों में कह रही थी। उसके अलावा उसने यह भी बताया कि उसका बाप जानवरों का बहुत बड़ा डॉक्टर था। वो जानवरों की सूंघने की शक्ति को इतनी गहराई से समझता था कि उसने वही शक्ति सोनिया में भी बरसों की मेहनत के बाद पैदा कर दी थी।

और फिर वो अपने ब्यान के अंत में बोली थी, "मेरा ब्यान खत्म

हो चुका है। मगर मुझे बताया जाए कि मेरे शौहर को जिस तरह अलग रखकर उनका ब्यान लिया जा रहा है—क्या इसी तरह आप मेरे बच्चे से भी ब्यान ले रहे हैं। एक बच्चे को उसकी मां से जुदा कर देना कहां का इंसाफ है। फार गॉड सेक—उसे मेरे पास पहुंचा दें।"

कमल उसकी बातें सुनकर मुस्कराने लगा।

बहरहाल, सोनिया का ब्यान खत्म होते ही दीवार पर लगे लाउडस्पीकर से फिर आवाज आने लगी। बोलने वाला कहीं बैठा उनके ब्यानों को सुन चुका था। वह उसी के मुताबिक तरह-तरह के सवाल करने लगा। मिलेटरी इंटेलीजेंस के ये उच्चाधिकारी अपने तौर पर बहुत सतर्क थे और अपनी जहानत का सबूत दे रहे थे।

वो अपने सवालों से कमल व सोनिया के जहनों को उलझाने की कोशिशें करते रहें। ताकि अगर इन्होंने कोई बात छिपा रखी हो तो उनके जवाबों द्वारा फर्क सामने आ जाए। लेकिन कमल के जहनी तार सोनिया से जुड़े हुए थे। इसलिए किसी प्रकार के फर्क आने का सवाल ही कहां पैदा होता था।

सवालों-जवाब का यह सिलसिला भी थोड़ी देर बाद खत्म हो गया।

कमरे में खामोशी छा गई।

और अब कमल ने स्पीकर की तरफ देखा। वहां से जो आवाज आ रही थी—उसी के जरिए बोलने वाले के जहन में झांक पाना अब कमल के लिए मुश्किल नहीं था।

कमल ने चुपचाप उसके जहन में झांका।

मगर उसके दिमाग में वही अनजानी बोली थी। वो जापानी जुबान में ही बातें कर रहा था और कमल इस जुबान से कतई अनजान था। कमल कोशिश करने लगा कि वो जापानी जुबान में बोलने वाला किसी तरह इंगलिश की तरफ आ जाए।

कमल ने दो बार उसकी सोच और उसके लहजे में उसे छेड़ा। वह दोनों ही बार ठिठक कर अपने सिर को झटकने लगा और जापानी भाषा में ही कुछ बड़बड़ाने लगा।

कमल को यह समझने में देर नहीं लगी कि वो इस जापानी की फितरत के खिलाफ—आम हालात में—उसे अपने तौर पर इंगलिश बोलने या इंगलिश में सोचने के लिए विवश नहीं कर सकता।

कमल ने सोनिया को सम्बोधित करते हुए कहा—"सोनिया। यह जापानी जुबान मेरे सामने बहुत बड़ी रुकावट बन रही है। मेरी टेलीपैथी कहीं काम आती है और कहीं मैं बेबस होकर रह जाता

हूं।"

सोनिया ने अपनी सोच के जरिए जवाब दिया, "यह मजबूरी तो है। बहरहाल, जो होगा देखा जाएगा। मैं अपने दीपू के लिए तड़प रही हूं। तुम उसकी कुशलता मालूम करो।"

"ओह, हां।" कमल ने भी अपनत्व दर्शाया, "इन जापानियों के चक्कर में मैं उसे तो भूल ही गया था।"

कहते हुए कमल ने सोफे की पुश्त से टेक लगाकर अपनी आंखें बंद कर लीं और अपना पूरा ध्यान उस नन्ही जान की तरफ लगा दिया—जिसे उन्होंने दीपक नाम दिया था। बच्चा इस वक्त बिल्कुल खामोश था। लेकिन कमल उसके पुरसकून दिमाग तक पहुंच गया। वहां कितने ही रंगों की ठण्डी चांदनी फैली हुई थी। बच्चा नींद में आ रहा था। कमल बरबस ही मुस्करा दिया और फिर सोनिया से सम्बन्ध स्थापित करते हुए कहा—

"मेरी जान! दीपू को तुम्हारी जरूरत नहीं है, वो ख्वाबों की दुनिया में परियों के साथ खेल रहा है।"

"मेरी जरूरत क्यों नहीं है? जब वो जागेगा तो मेरे लिए जरूर रोयेगा।"

कमल शोखी से बोला, "हां—वो जागते ही कहेगा कि मेरी सोनिया मम्मी कहां है। मैं तो बस अपनी मम्मी का दूध पीऊंगा।"

"तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो—मैं तुमसे नहीं बोलूंगी।" सोनिया बच्चों के-से अंदाज में बोली।

"सोनिया—तुम बनने को तो मां बन गई हो मगर बातें बच्चों की-सी ही करती हो। पगली दो-चार दिन के बच्चों को पीने के लिए दूध और आराम करने के लिए गोद की हरारत चाहिए, बस और ये दोनों चीजें अपने दीपू को प्राप्त हैं। इसलिए तुम्हें उसकी फिक्र नहीं करनी चाहिए।"

"मैं तुम्हारी तरह पत्थर दिल नहीं हूं। तुम मुझे नसीहत न करो।"

"नहीं करता।" कमल बदस्तूर शोखी से बोला, "पर हकीकत यह है कि अभी जाने हमें कैसे-कैसे हालात का सामना करना पड़ सकता है। अगर बच्चा इस वक्त हमारे साथ होता तो उसके लिए नामालूम कितना परेशान होना पड़ता।"

कमल उसे देर तक समझाता रहा।

सोनिया कमल की इस बात से सहमत हो गई कि बच्चे को फिलहाल आया की निगरानी में रहना चाहिए, कि बच्चा यकीनन सुरक्षित हाथों में है।

कमल ने राहत की लम्बी सांस ली थी।

सोनिया के साथ इस लम्बी तकरार में ही जाने कितनी देर बीत गई थी।

कमल तो तब चौंका था जब दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी थी। दरवाजा खोलने वाले फौजी ने उसे बाहर आने का इशारा किया।

कमल अपनी जगह से उठा और बाहर आ गया।

❑❑

कमल बाहर आया तो उसे सोनिया भी राहदारी में खड़ी नजर आई।

सोनिया के साथ भी एक फौजी जवान था और फिर वो दोनों ही इन जवानों के साथ विभिन्न राहदारियों से गुजरते हुए जिस कमरे में पहुंचे वह कमरा एक ड्राइंग रूम की तरह भी भव्यता से सजा हुआ था।

कुछ फौजी अफसर इधर-उधर सोफों पर बैठे हुए थे।

एक बूढ़ा भी था जो अकेला एक सोफे पर बैठा हुआ था।

तमाम लोग फौजी लिबास में थे—सिर्फ वही बूढ़ा एक बेहतरीन डार्क ब्लू सूट में नजर आ रहा था। उसने, कमल व सोनिया को, एक सोफे पर बैठने का इशारा किया और जब वे बैठ गए तो वो बूढ़ा बड़े ही ठहरे हुए लहजे में बोला—

"मैं तुम दोनों के ब्यान सुन चुका हूं। जाहिरा तुम दोनों के ब्यान में कोई खोट नजर नहीं आती और तुमने नशीली दवाइयों के स्मगलरों...मौत के उन सौदागरों के खिलाफ हमारी पुलिस का साथ भी दिया है और जापानी सरकार के साथ तुम्हारा सबसे बड़ा सहयोग यह है कि हमारे एक अति महत्त्वपूर्ण राज को हमारे तक पहुंचा दिया, तुम दोनों इनाम के हकदार हो और तुम दोनों को जरूर इनाम दिया जाएगा।"

कमल बोला, "हमारी कद्र ही हमारे लिए सबसे बड़ा इनाम है। हमें खुशी है कि हम पर विश्वास किया जा रहा है। हमने अपनी आपबीती आपके सामने पेश कर दी है। आपको यह मालूम हो चुका है कि हम एक मुद्दत से इधर-उधर भटक रहे हैं, कोई-न-कोई दुश्मन हमारे पीछे लग जाता है और हम एक जगह से दूसरी जगह पनाह लेने को मजबूर हो जाते हैं, हम यहां भी पनाह चाहते हैं और एक सम्मानित नागरिक की तरह जिन्दगी गुजारना चाहते हैं।"

बूढ़े अफसर ने सहमति में सिर हिलाया, फिर बोला—"मैं स्पष्टवादिता का आदी हूं। अगर तुम वैध पासपोर्ट के साथ अपने मुल्क से यहां आए होते तो मैं फौरन ही तुम्हें यहां से भेज देता।

मगर तुम हमारे एक अतिसंवेदनशील व महत्त्वपूर्ण कागजात के साथ हमारे हाथ लगे हो और हम तुम पर विश्वास करने के बावजूद तुम्हें अपने देश से बाहर नहीं जाने देंगे, क्योंकि तुम हमारे इस अहम राज को जान गए हो। हम नहीं चाहते कि तुम किसी विदेशी एजेन्ट के हत्थे चढ़ जाओ। यहां तुम दोनों एक स्वतंत्र जिन्दगी गुजारोगे लेकिन हमारी गुप्त निगरानी व संरक्षण बना रहेगा।"

कमल और सोनिया ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

फिर सोनिया ने पूछा, "क्या आप यह कहना चाहते हैं कि हम आपकी निगरानी में रहेंगे? आपको हमारी तरफ से किसी बात का अंदेशा है?"

बूढ़े ने मुस्कराते हुए कोमलता से कहा, "नहीं मादाम! फ़िलहाल तो कोई अंदेशा नहीं है। तुम दोनों की हिफाजत इसलिए की जाएगी कि तुम्हारा वो दुश्मन सुपर मास्टर यहां भी तुम लोगों को चैन से नहीं बैठने देगा। वो कोई प्रतिशोधात्मक कार्रवाई जरूर करेगा। वो हमारे इस महत्त्वपूर्ण 'राज' के बदले में हमसे बहुत बड़ी कीमत वसूल करना चाहता था। हम सौदे के लिए तैयार थे। बात चल रही थी और साथ ही हमारे जासूस उसकी ताक में लगे हुए थे। उसके एजेन्ट या गुर्गे हमारे हाथ लग जाते थे—मगर वो खुद नामालूम कितने पर्दों में छिपा रहता है। उसकी कोई शिनाख्त हमारे पास नहीं है। मादाम सोनिया! तुम उसके गिरोह या संगठन में रह चुकी हो...क्या तुम हमारी कुछ मदद कर सकती हो?"

सोनिया ने कुछ सोचा व फिर कमल के इशारे पर बताने लगी।

उसने विभिन्न देशों की हकूमतों को ब्लैकमेल करने वाले इस क्रिमिनल संगठन के बारे में विस्तार से बताया कि प्रकट में 'मास्टरों' की यह आर्गेनाइजेशन चार बड़े मास्टरों का संगठन था और सुपर मास्टर को शायद संगठन के मास्टर सायमन के अलावा किसी ने नहीं देखा है और मास्टर सायमन मर चुका है।

सोनिया ने उन्हें कोवाई टापू पर सुपर मास्टर के हैडक्वार्टर वाली भूल-भूलैया जैसी इमारत के बारे में भी बताया। वहां की सुरक्षा व्यवस्था व दूसरे अति-आधुनिक यंत्रों के बारे में उसने विस्तार से बताया। अपने इस ब्यान के अंत में सोनिया बोली—

"कोवाई में संगठन के इस हैडक्वार्टर के हर कमरे में टी.वी. सिस्टम द्वारा हमें देखा जाता था। वहां दूसरे देशों से जो एजेन्ट अपने या दूसरे देशों के रहस्यों का सौदा करने आते थे उनकी कोई बात या कोई हरकत सुपर मास्टर से छिपी नहीं रहती थी। वो अपने गुप्त चेम्बर में बैठकर एक बड़े से स्क्रीन पर इमारत के हर कमरे के

लोगों को देखता रहता था। यूं वो कोई खतरा पेश आने से पहले ही सावधान हो जाता था। अपने सुरक्षा प्रबंधों के सदके ही वो हमसे निकल गया।"

सारे अफसर सोनिया की बातों को बड़े ध्यान के साथ सुन रहे थे। सवालों-जवाब का सिलसिला शुरू हुआ। सोनिया से बहुत-सी जानकारियां पा लेने के बाद बूढ़े अफसर ने कहा—

"हम सोच भी नहीं सकते थे कि कोवाई जैसे छोटे से टापू पर यह आर्गेनाइजेशन ऐसा किला बनाए बैठी है। हम अपने जासूस वहां भेजने वाले थे। अच्छा ही हुआ कि हमें ऐसा कोई कदम उठाने का मौका नहीं मिला। बहरहाल, तुम लोगों ने नामुमकिन को मुमकिन करके दिखाया है। मगर अब तुम दोनों की यहां मौजूदगी से यह उम्मीद और भी बढ़ जाती है कि वो इधर का रुख जरूर करेगा।"

इस वक्त उनके बीच यह बातचीत इंगलिश जुबान में हो रही थी। कमल ने इसका फायदा उठाते उस बूढ़े की सोच में कहा—

"हां—यह दोनों यहां इस देश में रहेंगे तो सुपर मास्टर या उसके खास आदमी इनके पीछे यहां जरूर पहुंचेंगे। क्या ऐसे वक्त सोनिया अपने मास्टरों के गिरोह में वापिस जाएगी?"

उभरने वाली इस सवालिया सोच के जवाब में वह बूढ़ा अफसर सोचने लगा—"यकीन से कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह औरत भविष्य में क्या करेगी। मैंने ऐसे चालाक मुजरिम देखे हैं जो जाहिरा तौर पर तो अपने गिरोह से कट जाते हैं। कानून और पुलिस से भरपूर सहयोग करते हैं। लेकिन अन्दर-ही-अन्दर कानून की गिरफ्त को कमजोर बनाते रहते हैं। अब ये दोनों लफाड़ी हमारा जो 'रहस्य' वापिस लेकर आए हैं इस 'भेद' की दूसरी नकल उस सुपर मास्टर के पास भी हो सकती है। हमें इस सम्भावना को भी नहीं भूलना चाहिए कि ये दोनों अब भी इस संगठन के वफादार हो सकते हैं और यहां अपने ही किसी खास चक्कर में हमारा विश्वास हासिल कर रहे हैं। बहरहाल, इन्हें कड़ी निगरानी में रखा जाएगा। ऐसा इसलिए भी कि...।"

और इससे आगे वो अचानक ही अंग्रेजी की बजाय जापानी जुबान में सोचने लगा।

उसके लिए यही जान लेना काफी था कि वो इनकी नजरों में संदिग्ध थे और ये लोग उन पर पूर्ण विश्वास नहीं कर रहे हैं।

बूढ़ा अफसर अब कमल से सम्बोधित होते बोला, "मिस्टर कमलकांत! तुम दोनों के लिए बेहतरीन रिहायश का बंदोबस्त किया गया है। वहां तुम्हें हर तरह का आराम मिलेगा। इसके अलावा भी

कोई ख्वाहिश हो तो निःसंकोच कहो।"

कमल ने मुस्कराते हुए अपनी ख्वाहिश बताई, "मुझे जापानी जुबान से दिली लगाव है। हम दोनों यह जुबान सीखना चाहते हैं। आप इसके लिए कोई इंतजाम कर दें।"

कमल की इस ख्वाहिश ने उन सारे अफसरों को ही खुश कर दिया था।

बूढ़े अफसर ने कहा, "यह बड़ी खुशी की बात है कि तुम हमारी जुबान सीखना चाहते हो। इसका इंतजाम हो जाएगा।" यह कहते हुए वो उठ खड़ा हुआ।

यह मीटिंग खत्म होने का इशारा था।

कमल ने खड़े होकर उससे हाथ मिलाया, साथ ही पूछा, "अगर हम कोई जरूरत पड़ने पर आपसे सम्बन्ध स्थापित करना चाहें तो क्या आपसे मुलाकात हो सकेगी।"

बूढ़े ने उन्हें एक फोन नम्बर और अपना नाम व औहदा बता दिया।

वह बूढ़ा वहां की सीक्रेट-सर्विस का चीफ था और अपने लोगों में कर्नल जोशोहो के नाम से पहचाना जाता था।

❑❑

कमल और सोनिया को सीक्रेट-सर्विस के इस हैडक्वार्टर से एक दूसरी गाड़ी में रवाना किया गया था और उन्हें अपने साथ ले जाने वाला आम सिविल ड्रेस में था।

वो व्यक्ति उन्हें टोकियो के एक बहुत ही खूबसूरत आवासीय इलाके में लेकर आया था। एक बड़ी-सी झील के किनारे "पगौड़ा' की आकृति का यह एक छोटा-सा बंगला था, इसके खुले लॉन में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।

सोनिया व कमल जब बंगले पर पहुंचे तो एक जापानी नौकर व नौकरानी ने उनका स्वागत किया था। नौकर ने कमल को उसकी जुबान में और नौकरानी ने सोनिया को उसी की भाषा में खुशआमदीद कहा। फिर वो कमल व सोनिया को भीतर ले जाकर बंगले के कमरे दिखाने लगे। ड्राइंग रूम में एक टेलर मास्टर भी उनका प्रतीक्षक था—जो सोनिया व कमल का माप लेने आया था। कुछ ही देर में कमल और सोनिया को अहसास हो गया कि वहां उनकी हर छोटी-बड़ी जरूरत का ख्याल रखा जा रहा है।

और फिर।

अगले ही दिन से उन्हें जापानी जुबान सिखाने के लिए एक ट्यूटर आने लगा। भगवान ने जैसे उनके मुकद्दर में कुछ दिनों के लिए

सुख-चैन लिख दिया। सोनिया को उसका दीपू वापिस मिल गया था। वे अपनी पसन्द का खाना कभी अपने बंगले में और कभी शहर के विभिन्न होटलों में खाते थे। सोनिया अधिकतर दीपू के साथ व्यस्त रहती थी, सो क्लब इत्यादि में कमल अकेला ही जाया करता था।

कमल का वह हिन्दी-उर्दू और अंग्रेजी जानने वाला नौकर कभी-कभी उसके मार्गदर्शन के लिए उसके साथ हो लिया करता था। वह एक आज्ञाकारी नौकर की तरह कमल का हर आदेश मानता था। जब-जब भी कमल उसे कहता था कि आज वो अकेला रहना चाहता है तो यह नौकर चूं-चां किये बिना उसे अकेला छोड़ देता था।

हां उन्हें यही आभास कराया जा रहा था कि उन्हें बिल्कुल आजाद छोड़ दिया गया है।

लेकिन कमल या सोनिया इस खुशफहमी का शिकार नहीं थे। किंतु उन्हें कोई खौफ भी नहीं था—क्योंकि किसी प्रकार का कोई गलत काम करने का उनका कोई इरादा ही नहीं था। जाहिर है कोई गलत कदम उठा वो अपने लिए मुश्किलें पैदा नहीं करना चाहते थे।

समय आराम से बीतता रहा।

देह सुख के लिए कमल को सोनिया जैसी उमंगों भरी जोड़ीदार हासिल थी। हालांकि सोनिया का पूरा ध्यान अब गोद लिए दीपू की तरफ था—लेकिन कमल की रातें महकाने में भी वो पीछे नहीं रहती थी। रात के महकते क्षणों में उसकी तपती ख्वाहिशें कमल को यही अहसास दिलाती थी कि कमल का वास्ता एक तृप्तियों की प्यासी अल्हड़ नवयौवना से पड़ा है।

करीब छः माह में कमल ने काफी हद तक जापानी भी सीख ली थी। अब यह भाषा बोलने व समझने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती थी। हां लिखने-पढ़ने में अभी रवानी हासिल नहीं हो सकती थी और जब कमल को इस बात का विश्वास हो गया कि अब वो वहां के किसी भी वासी के दिमाग में झांक सकता है तो सबसे पहले उसने जापानी सीक्रेट सर्विस के चीफ बूढ़े जोशोहो के जहन में झांकना शुरू किया।

कमल पहले तो उसके जापानी लहजे को अच्छी तरह समझता रहा कि वह किस तरह ठहरे हुए अंदाज में बोलता और सोचता है। इस तरह कमल उसकी व्यस्तताओं व दिनचर्या को भी समझता रहा।

यह कर्नल जोशोहो बहुत ही रिजर्व रहने वाला अफसर था। अपने

अधिनस्थों से भी खास जरूरत के वक्त मुलाकात करता था। उसका अधिक वक्त बंद कमरे में गुजरता था और वो सीक्रेट-सर्विस के महत्त्वपूर्ण मामलों के बारे में सोचता और उनसे सम्बंधित रणनीति बनाता था।

कमल इस वक्त उससे अपने जहनी तार जोड़े हुए था।

कर्नल जोशोहो इस घड़ी एक विदेशी एजेंट के बारे में सोच रहा था। यह एजेंट एक बड़े मुल्क से आया था। इस देश के जापान से दोस्ताना व सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध थे। मगर ये बड़ी ताकतें दोस्ती की आड़ में दोस्त देशों की कमजोरियां तलाश करती हैं। वह एजेंट जाहिरा तौर पर कारोबारी सिलसिले में वहां आया हुआ था और शहर के एक फाइव-स्टार होटल में ठहरा हुआ था।

कर्नल जोशोहो को धीरे-धीरे ही इस एजेंट की गतिविधियों का इल्म हुआ था। वह एजेंट प्रायः शाम को क्लबों में जाया करता था और फौजी अफसरों की बीवियों से घनिष्टता बढ़ाने की कोशिश करता था। इसी चक्कर में उस एजेंट की दोस्ती कर्नल जोशोहो की नौजवान बेटी सोजुको से हुई थी।

इस बारे में यह सारी जानकारी कमल कर्नल के दिमाग से हासिल कर रहा था।

कर्नल की बेटी सोजुको, जितनी हसीन थी—उतनी ही जहीन भी थी और देशप्रेमी ऐसी कि देश के दुश्मनों से सावधान रहना अच्छी तरह जानती थी।

जब इस विदेशी एजेंट जेम्स हारवे ने उसमें दिलचस्पी लेनी शुरू की तो वह उसकी दोस्त बन गई और इसके साथ ही मौका मिलते ही उसने अपने बाप तक यह सूचना पहुंचा दी कि एक विदेशी जेम्स हारवे उससे दोस्ती बढ़ा रहा है और इसके साथ ही इंटेलीजेंस के आदमी उसके पीछे लग गए। मगर अभी तक उनकी निगरानी दूर-ही-दूर से हो रही थी। कर्नल इस विदेशी एजेंट को छेड़ना नहीं चाहता था—बल्कि वह यह मालूम करना चाहता था कि आखिर यह एजेंट अपने देश की तरफ से किस मिशन पर आया है।

कर्नल के जहन से यह जानकारी भी कमल ने चोरी कर ली थी कि कर्नल की बेटी सोजुको से जेम्स हारवे की दोस्ती सिर्फ एक हफ्ते की थी और वह लड़की अभी तक उससे कुछ उगलवा नहीं पाई थी।

कमल ने इस मौके का फायदा उठाने की सोची और इस वक्त जब उसने कर्नल को जेम्स हारवे के बारे में ही फिक्रमंदी से सोचते पाया तो उसने कर्नल जोशोहो की सोच में कहा—

"इस तरह से काम नहीं चलेगा। मुझे नए सिरे से और सोच-समझकर इस सिलसिले में प्लानिंग करनी होगी। यह एजेंट हकीकतन किस फेर में है यह जानना जरूरी है। पर अगर हमारा कोई आदमी इसके आस-पास रहेगा तो अपने करीब जापानी चौखटों को देखकर यह होशियार हो जाएगा। इसलिए किसी विश्वसनीय विदेशी को अपने विश्वास में लेकर उसे हारवे के पीछे लगाना होगा।"

कमल की रोपी इस सोच ने कर्नल को नई राह दिखाई तो वो अपने तौर पर सोचने लगा—"लेकिन हम ऐसे किस विदेशी पर ऐसा विश्वास कर सकते हैं। अरे हां...मैं कमलकांत और सोनिया को तो भूल ही गया था। वो विदेशी हैं और उनसे यह काम लिया जा सकता है। उन दोनों का अब तक का रिकार्ड अच्छा है। इस मिशन पर उन्हें आजमाया भी जा सकता है।"

कमल उसकी सोच पढ़ता रहा।

कर्नल कुछ देर तक सोचता रहा कि कमल और सोनिया को यह जिम्मेवारी सौंपी जाए या नहीं। फिर वो जैसे किसी फैसले पर पहुंचा और अपनी जगह से उठ गया। कमल उसके दिमाग से उसकी हर हरकत को जैसे अपने दिमागी स्क्रीन पर देख रहा था। कर्नल दूसरे कमरे में गया जो देखने में एक स्टोररूम था। मगर वहां ट्रांसमीटर के विभिन्न यंत्र फिट थे।

कमल कर्नल के इरादे को समझ गया था कि वो उसके जापानी नौकर शंगेटो को कॉनटेक्ट करना चाहता है। सो कमल उसे छोड़कर शंगेटो के दिमाग में झांकने लगा। सम्बन्ध स्थापित होते ही कमल ने उसके दिमाग में टिक-टिक की आवाज सुनी।

शंगेटो ने फौरन सोचा था, "यह आवाज मेरे सिगरेट लाइटर से आ रही है। मुझे कॉल किया जा रहा है।"

उसने अपनी जेब में हाथ डालकर सिगरेट लाइटर के एक बटन को दबाया तो वह टिक-टिक की आवाज बन्द हो गई। इस वक्त वो किचन में था। वह अब अपने सर्वेंट क्वार्टर में जाने को उतावला था पर इससे पहले वो मालूम करना चाहता था कि कमल क्या कर रहा है। वो किचन से निकलकर विभिन्न कमरों में कमल को तलाश करता हुआ—कमल के बेडरूम की खिड़की तक आया।

कमल आराम से आंखें बंद किए बेड पर लेटा हुआ था और अपने दिमागी स्क्रीन पर शंगेटो की एक-एक हरकत जैसे खुली आंखों से देख रहा था।

शंगेटो ने कमल को सोते देखा तो निश्चिन्त होकर अपने बंगले के पिछवाड़े अपने क्वार्टर की तरफ बढ़ गया। अपने कमरे में पहुंचने

में उसने बड़ी तेजी दिखाई थी। दरवाजा अन्दर से बंद कर लेने के बाद उसने अपना सूटकेस खोलकर एक छोटा-सा ट्रांसमीटर बाहर निकाला और थोड़ी देर पहले मिलने वाले सिगनल के जवाब में कर्नल से सम्बन्ध स्थापित करने लगा।

और यूं कुछ ही क्षणों बाद वो कर्नल से बातें कर रहा था।

कर्नल ने उससे कमल व सोनिया के ही बारे में पूछा था।

शंगेटो ने जवाब में कहा, "मादाम सोनिया और कमलकांत दोनों ही आम से मस्त व्यक्ति हैं। मैं इस बारे में अपनी इमीजिएट इन्चार्ज को रिपोर्ट देता रहा हूं। उनके बेडरूम में जो टेपरिकार्डर रखे हुए हैं उनसे भी यही पता चलता है कि वो अपराधी प्रवृत्ति के लोग नहीं हैं।"

कमल के होंठों पर मुस्कान नाच गई।

उसकी और सोनिया की हकीकत जानने के लिए कैसे-कैसे इंतजाम किए गए थे। इन्होंने उनके बेडरूम तक को नहीं छोड़ा था। यह भी नहीं सोचा था कि बेडरूम में तो मियां-बीवी अपनत्वपूर्ण गर्म-गर्म बातें ही करते हैं और गर्म बातें तो कमल और सोनिया करते ही थे, खास बात होती थी तो कमल टेलीपैथी का ही सहारा लेता था और इंसान की सोच को रिकार्ड करने वाला कोई यंत्र अभी तक बना नहीं था।

शंगेटो की रिपोर्ट खत्म होते ही कमल ने फिर कर्नल जौशोहो की तरफ छलांग लगाई। कर्नल संतुष्ट हो चुका लग रहा था। कर्नल सोच रहा था कि कमल और सोनिया का सहयोग इस हारवे वाले मामले में लिया जा सकता है।

कर्नल वापिस अपने निजी चेम्बर में आकर बैठ गया था।

वहां भी वो कुछ देर तक कमल और सोनिया के बारे में सोचता रहा फिर उसने मेज के साथ लगे हुए एक बटन को दबाया जिसके जवाब में अधेड़ उम्र के एक फौजी अफसर ने अंदर आकर उन्हें सैल्यूट दिया।

कर्नल उससे बोला, "हारवे के सिलसिले में हमारी प्लानिंग थोड़ी तब्दील हो रही है। वो होटल में कमरा नम्बर बत्तीस में ठहरा हुआ है। उसके आस-पास का कोई कमरा कमलकांत के नाम से हासिल करो। उसके बाद कमलकांत से जाकर मिलो और उसे इस जेम्स हारवे के बारे में डिटेल से समझा दो और उसे अपना मकसद बताओ कि हम इस एजेंट के खुफिया मिशन के बारे में जानकारी चाहते हैं।"

वो अफसर निर्देश व हिदायतें लेने के बाद विदा हो गया।

कर्नल अब भी कमल से काम लेने के सिलसिले में पूरी संजीदगी के साथ सोच रहा था, एक लम्बी संजीदा सोच के बाद उसने फोन का रिसीवर उठाया और अपने घर का नम्बर मिलाया। कॉल शायद किसी नौकर ने रिसीव की थी।

कर्नल बोला, "सोजुको को बुलाओ।"

थोड़ी देर बाद ही कमल ने कर्नल के जहन के माध्यम से उसकी बेटी की सुरीली आवाज सुनी और अब कमल सोजुको का बातचीत करने का अंदाज...उसके लहजे और उसकी सोच को स्टडी करने लगा।

कर्नल उससे कह रहा था—"बेटी! तुमने बताया था कि आज रात फिर क्लब में तुम हारवे से मिलने वाली हो?"

"यस पापा! वह आठ बजे मिलेगा मुझसे।"

"तुम अपने प्रोग्राम में थोड़ी-सी तब्दीली कर लो। आज शाम को उसके होटल पहुंच जाओ, तुम उससे यही कहना कि अकेलेपन से बोर हो रही थी इसलिए वक्त से पहले चली आई। यूं वो इस भ्रम का शिकार हो जाएगा। उसका जादू तुम पर चल गया है और तुम उसके इश्क में गिरफ्तार हो गई हो।"

"पापा! यह सब तो मैं कर लूंगी। पर मेरी ख्वाहिश है कि मैं आपकी बेटी हूं...सीक्रेट सर्विस के चीफ की बेटी हूं...आप मुझसे कोई महत्त्वपूर्ण काम क्यों नहीं लेते? मैं आप की तरह कोई जासूसी कारनामा सरअंजाम देना चाहती हूं।"

"मेरी गुड़िया! यह जो कुछ तुम कर रही हो जासूसी ही है और आज एक महत्त्वपूर्ण काम ही तुम्हें सौंपा जा रहा है। हारवे के आस-पास किसी कमरे में एक हिंदुस्तानी नौजवान तुम्हें नजर आएगा। वह हमारा आदमी है—मगर तुम हारवे के सामने उस हिंदुस्तानी नौजवान पर शक जाहिर करना कि वो कोई गलत आदमी है कि उसके अंदाज से लगता है कि वो किसी गलत इरादे से यहां हमारे मुल्क में आया हुआ है।"

"यह कैसी जासूसी है, पापा कि आप ही के आदमी पर दुश्मन होने का संदेह जाहिर करूं?"

"बेटी! ये शतरंजी चालें हैं। एक मुजरिम दूसरे मुजरिम में दिलचस्पी लेता है। हारवे भी हमारे इस आदमी के करीब होने की कोशिश करेगा। इसके बाद क्या होगा—यह तुम्हें धीरे-धीरे पता लगता रहेगा। तुम बस जैसा कहा जा रहा है करती जाओ।"

हिदायत दे कर्नल ने रिसीवर रख दिया।

कमल ने भी उससे जहनी सम्बन्ध तोड़ लिए।

एक दिलचस्प खेल शुरू हो रहा था और ऐसे ही खेलों का तो रसिया था—कमलकांत। वह एक अजीब-सी सनसनी महसूस करने लगा था। कर्नल से जहनी नाता तोड़ उसने अपनी सोच के तार सोनिया से जोड़े।

"हैल्लो, सोनिया! क्या कर रही हो?"

सोनिया ने कहा, "तुम्हारे बेटे को सुला रही हूं।"

"तुम इसी काबिल रह गई हो। तुम्हें एक बेटा मिल गया है और एक पुरसकून जिन्दगी बिताने को सारी सुख-सुविधाएं। लगता है अब तुम बस एक गृहस्थन बनकर रह जाओगी।"

"ऐसा मत कहो जानेमन। इंसानी फितरत एकदम नहीं बदलती और ना ही किसी की खूबियों को जंग लगता है। आराम के जो ये कुछेक दिन तकद्दीर में लिखे हैं—इनकी मस्तियां व खुशियां बटोरने में क्या हर्ज है। यकीन करो डार्लिंग—अगर कोई आजमायशी वक्त आन पड़ा तो मैं शेरनी की तरह झपट पड़ूंगी।"

कमल धीरे से हंसा, बोला, "हां, तुम ऐसा ही करोगी, इसका मुझे यकीन है। बहरहाल, तुम्हें शायद कुछ इन्तजार करना पड़े, पर मुझे एक मुद्दत के बाद जरा हाथ-पांव चलाने का मौका मिल रहा है।"

"क्या मतलब...?" सोनिया साफ-साफ चौंकी थी।

कमल ने उसे कर्नल की मौजूदा परेशानी और उसकी प्लानिंग की बाबत बताया। फिर बोला, "यह अच्छा है कि कर्नल हम पर भरोसा करता है। इसी सिलसिले में वह अब मुझसे एक अहम काम ले रहा है। मुझे कुछ दिनों के लिए होटल में रहना होगा।"

"ओह!" सोनिया ने गहरी सांस ली, आगे बोली, "तुम कहीं भी रहो मगर दो बातों का ख्याल रखना, पहली बात तो यह कि मुझसे दिमागी सम्बन्ध बनाए रखना। कभी-कभी तो मैं सोच के जरिए तुम्हें पुकारती ही रह जाती हूं। काश! मैं भी तुम्हारे दिमाग पर दस्तक देने का तरीका जानती!"

"काश! कि मैं भी तुम्हारी तरह सूंघने की ताकत रखता, सोनिया! माई लव, अब एक-दूसरे की खासियतों से ललचाने से क्या हासिल, तुम दूसरी बात करो।"

"दूसरी बात यह है कि बाहर जाकर लड़कियों के चक्कर में न पड़ना...वर्ना किसी मुसीबत में फंस जाओगे।"

"हां,...एक अनुभव तो हो रहा है।"

"अच्छा तो मैं मुसीबत हूं।"

कमल ने कहकहा लगाया।

तभी उसकी नजर दरवाजे पर पड़ी, शंगेटो दरवाजे में खड़ा उसे हैरानी से देख रहा था। हैरानी की बात ही थी। वह बेचारा कैसे सोच सकता था कि सोनिया दूसरे कमरे में होने के बावजूद कमल की सोच की नगरी में उसके पास ही बैठी हुई थी। वो तो कमल को अकेले में ही पागलों की तरह कहकहा लगाते देख हैरान हुआ था।

"हैल्लो शंगेटो! भई मुझे एक चुटकला याद आ गया था और हंसे बिना नहीं रह सका।"

उसने समझने वाले अंदाज में मुंडी हिलाई, "हां—मेरे साथ भी एकाध बार ऐसा हो चुका है। तन्हाई में किसी बात पर हंसी आ जाती है तो मैं चौंक कर आस-पास देखने लगता हूं कि कोई मुझे पागल तो नहीं समझ रहा है।"

कमल ने राहत की सांस ली।

शंगेटो यूं ही आया था। वह कमल से यह पूछ कि "किसी चीज की जरूरत तो नहीं" लौट गया।

कमल को अब कर्नल के भेजे शख्स की इन्तजार थी।

कर्नल का भेजा वह बूढ़ा फौजी अफसर दोपहर को आया। औपचारिकता निभाते उसने कमल व सोनिया की प्रशंसा करते खासा वक्त लिया व फिर अपने मतलब की बात पर आ गया और उसने वह सब बताया...जो कमल पहले से ही जानता था।

"मुझे खुशी है ऑफिसर कि हमें इतना विश्वसनीय समझा जा रहा है कि कर्नल मुझसे कोई काम लेना चाहता है। मैं उनके किसी काम आ सका तो खुद को धन्य समझूंगा।"

उस अफसर ने बताया, "होटल का कमरा नम्बर चौंतीस तुम्हारे लिए बुक है। तुम एक सूटकेस में अपने कपड़े लेकर यहां से निकलो। बाहर एक टैक्सी तुम्हारी प्रतीक्षक है। यह तुम्हारा पासपोर्ट और वीजा है। तुम अभी तीन बजे की फ्लाइट से यहां पहुंचे हो—यानी हांगकांग से आए हो।"

कमल मुस्कराते हुए बोला, "चौंतीस के तीन और चार को जमा किया जाए तो लक्की नम्बर सात बन जाता है। यह नम्बर मेरे लिए भी शुभ ही साबित होगा।"

अफसर मुस्करा दिया।

कमल पहले से ही तैयार था। कुछ देर बाद ही वह एक सूटकेस ले बंगले से निकला और इन्तजार करती टैक्सी में जा बैठा।

टैक्सी ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट की व आगे बढ़ा दी।

कुछ दूर निकल आने पर टैक्सी ड्राइवर बोला, "मिस्टर

कमलकांत! अब आप जापानी जुबान अच्छी तरह समझने लगे हैं।"

कमल चौंक कर उसे घूरने लगा कि यह ड्राइवर उसका नाम कैसे जान गया है?

ड्राइवर मुस्करा दिया बोला, "आप हैरान न हों, मैं इंटेलीजेंस का आदमी हूं, यह रहा मेरा 'आई-आर्ड'।"

उसने जेब से एक कार्ड निकालकर कमल की तरफ बढ़ा दिया। कमल ने कार्ड पर एक नजर डाल उसे लौटा दिया। कमल को वह कार्ड देखने की जरूरत ही कहां थी। कमल तो उसके दिमागी कार्ड के सच और झूठ को पढ़ सकता था।"

ड्राइवर फिर बोला, "मिस्टर कमलकांत! जब तक आप होटल में रहेंगे मैं टैक्सी ड्राइवर के रूप में होटल के बाहर टैक्सी स्टैण्ड पर उपलब्ध रहूंगा। आप इस टैक्सी का नम्बर याद रखें—क्योंकि मेरी ड्यूटी बदल जाएगी तो इस गाड़ी में मेरी जगह हमारा ही कोई दूसरा आदमी होगा। आप जरूरी रिपोर्ट इस टैक्सी के किसी भी ड्राइवर तक पहुंचा सकते हैं।"

उसने अपनी टैक्सी का नम्बर बताया जो कमल ने अपने दिमाग में सुरक्षित कर लिया। ड्राइवर के खामोश होते ही कमल उसके दिमाग को टटोलने लगा।

इस वक्त वह सोच रहा था, "अगर यह हिन्दुस्तानी नौजवान इस मिशन में कामयाब रहा तो हमारे डिपार्टमेंट में इसका बड़ा नाम होगा। देखना यह है कि यह कितनी होशियारी से काम करता है, क्योंकि हारवे एक पेशेवर घाघ एजेंट है।"

बहरहाल, टैक्सी ने कुछ ही देर में उसे होटल के प्रवेश-द्वार पर ला उतारा।

❑❑

एक बेल ब्वाय ने आगे बढ़ टैक्सी का दरवाजा खोला व कमल का सूटकेस उठा लिया। कमल उस छोकरे के पीछे-पीछे रिसेप्शन तक पहुंचा।

कमल ने अपना नाम बताया तो उसका मीठी-व्यवसायिक मुस्कान के साथ स्वागत किया गया। रजिस्टर की खाना-पूरी के बाद वही बेल-ब्वाय कमल को दूसरी मंजिल पर उसके लिए बुक कमरे में लेकर आया।

रूम नंबर चौंतीस में आकर कमल ने कॉफी का आर्डर दिया।

पूर्ण एकान्त मिलते ही कमल हारवे के बारे में सोचने लगा। पहली सोच यही थी कि इस विदेशी एजेंट से सम्बन्ध किस तरह बढ़ाने चाहिए। एक बार हारवे के दिमाग तक पहुंचने के बाद यह कमल

के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था, पर अब यह तभी मुमकिन था जब कर्नल की बेटी सोजुको ने हारवे से मिलने आना था।

कॉफी चुस्कते हुए उसे सोजुको याद आने लगी। जाने वो यहां किस वक्त पहुंचने वाली थी। कमल हौले-हौले टेलीपैथी की दहलीज से रेंगता हुआ सोजुको के दिमाग के आंगन में पहुंच गया। बड़ा ही फूलों भरा आंगन था। एक मन-मस्तिष्क को महका देने वाली खुशबू उसके बदन से उठ रही थी और उसके जहन में जापानी संगीत लहरियां गूंज रही थीं। वो अपने बन्द कमरे में इस नशीली संगीत लहरी के सुर-ताल पर थिरक रही थी। ऐसी उम्र में अंगड़ाइयां लेकर बदन तोड़ने को जी चाहता है और अगर नाचने का मौका मिल जाए तो थिरकने के बहाने अंग-अंग से अंगड़ाई का गुब्बार निकलता रहता है।

कमल अपने जहन की स्क्रीन पर सोजुको को जैसे साक्षात देख पा रहा था।

एक तरफ रिकॉर्ड-प्लेयर से संगीत उभर रहा था और दूसरी तरफ सोजुको आदमकद आईने के सामने अपने ही लचकीले बदन के विभिन्न कोण बनाते हुए अपने आप को देख रही थी और कमल उसके दिमाग के आईने में उसे फलों भरी शराब की तरह लचकते, बलखाते और मस्ती में झूमते देख रहा था। सोजुको के अहसास एक स्वर बन कमल के जहन में गूंज रहे थे।

सोजुको को उसकी इस उन्मुक्ता में देखना ही कमल का खून गर्मा गया था।

कॉफी खत्म हो गई। लेकिन कमल फिर भी अपने आप से बहुत दूर इस जापानी गुड़िया की रंगों भरी दुनिया में गुम था।

सोजुको जब थककर बिस्तर पर गिर पड़ी तो कमल उसके हांफते हुए वजूद की नजाकत को अहसासों की उंगलियों से महसूस करता रहा।

ऐसे में ही कमल को अपने बहकने का अहसास हुआ। किसी कुंवारी को उसके एकांत में यूं चोरी-चोरी देखना गंदी बात थी। कमल ने इस जापानी गुड़िया को अपने जहन से झटक दिया।

अपनी जगह से उठकर उसने अपना सूटकेस खोला और अपना लिबास बदलने लगा। बेहतरीन सूट पहनने के बाद वो कमरे से निकल आया।

वह लिफ्ट द्वारा नीचे पहुंचा और फिर स्वीमिंग पूल के लॉन में आकर छतरी तले की एक मेज पर बैठ गया। यहां जापानी अधिक नजर आ रहे थे—मगर विदेशी भी काफी संख्या में थे। विभिन्न

रंगों व नस्लों की नवयौवनाएं स्वीमिंग के संक्षिप्त से लिबास में नजर आ रही थीं। पूल के स्वच्छ निर्मल पानी में जल परियों की तरह तैर रही थीं।

कमल कुछेक देर तक पानी में आग लगाती इन नवयौवनाओं को निहारता रहा और फिर उधर से नजरें हटाकर आस-पास की मेजों की तरफ देखने लगा। हर मेज पर रंगीनी थी। कमल के आर्डर पर ही वेटर उसके सामने भी एक डबल पैग रख गया था। यह संयोग ही था कि आस-पास की मेजों पर अंग्रेज नजर आ रहे थे। एक मेज पर अंग्रेज के साथ अमेरीकन लड़की नजर आ रही थी और दूसरी मेज पर अंग्रेज के साथ एक जापानी नवयौवना।

कमल ने सोचा—अगर हारवे यहां आया है तो वो अकेला ही होगा। उसके साथ कोई लड़की नहीं होगी। जाहिर है जब वो सोजुको के साथ घनिष्टता बढ़ा रहा है तो सतर्कतावश भी किसी दूसरी लड़की के साथ फ्लर्ट नहीं करेगा।

बहरहाल, समय बिताना ही था, कमल करीब के लोगों में दिलचस्पी लेने लगा और फिर वो सोच के जरिए इस जापानी लड़की की बातें सुनने लगा जो अपने अंग्रेज साथी के साथ बैठी शराब चुस्क रही थी और कह रही थी—

"जापान दुनिया का सबसे उन्नत देश है। यहां की एक-एक जगह देखने लायक है। जब तुम अपना मिशन पूरा कर लोगे तो मैं तुम्हें पूरे देश की सैर कराऊंगी।"

उसकी बात सुनते ही कमल सम्भलकर बैठ गया, क्योंकि वो किसी मिशन की बात कर रही थी।

नौजवान शोख लहजे में बोला, "मैंने मुल्क-मुल्क की सैर की है। सच पूछो तो मैं तुम्हारा दीवाना हूं। सिर्फ तुम्हारी सैर करना चाहता हूं।"

युवती दिल-ही-दिल में मुस्कराई लेकिन ऊपरी दिल से तनिक सख्त लहजे में बोली—

"मैं इश्को-मुहब्बत की बातें करने नहीं आई हूं। अगर तुम मुझे इतना ही चाहते हो तो पहले अपना काम निपटा लो। बाद में हो सकता है कि मैं तुम्हें इनाम के तौर पर मिल जाऊं। चलो, अब काम की बातें करो। मुझे रिपोर्ट पहुंचानी है कि सोजुको के मामले में तुम कहां तक पहुंच सके हो।"

सोजुको का नाम आया तो कमल ने खुश होकर शराब का एक तगड़ा-सा घूंट लिया, उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि सामने बैठा शख्स और कोई नहीं उसका शिकार हारवे है। पर अब हारवे

की जोड़ीदार वो जापानी लड़की कमल को हारवे से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण लग रही थी। क्योंकि वो हारवे से रिपोर्ट मांग रही थी। जाहिर है कि रिपोर्ट वो किसी दूसरी जगह पहुंचाने वाली थी।

इसलिए कमल फिलहाल उसी के दिमाग से चिपका रहा। वह उसी के दिमाग से हारवे की बातें भी सुनता जा रहा था। हारवे सोजुको के बारे में कह रहा था—

"उससे बेतकल्लुफी सिर्फ बातों की हद तक ही बढ़ी है। कभी-कभी वो हाथ पकड़ने की इजाजत दे देती है। एक बार मैंने उसे बांहों में लेने की कोशिश की है—लेकिन वो दूर हट गई।"

जापानी लड़की शुष्कता के साथ बोली, "प्लीज, मिस्टर हारवे! हमें इससे कोई दिलचस्पी नहीं है कि तुम उसे बाजुओं में लेना चाहते थे। जब बातों की हद तक बेतकल्लुफी बढ़ चुकी है तो तुम्हें अपनी प्लानिंग अनुसार जापानी खानों व जापानी तर्ज के घरेलू माहौल के प्रति अपनी जिज्ञासा दिखानी चाहिए थी। यह सुनकर वो तुम्हें अपने घर चलने की दावत जरूर देगी और एक बार तुम्हें वहां मेहमान की हैसियत से दाखिल होने की इजाजत मिल गई तो फिर तुम अपने मकसद में कामयाब हो जाओगे।"

हारवे ने धीरे-धीरे दो घूंट लिए, फिर उस युवती की आंखों में झांकते बोला, "मिस मोनिका—आप लोगों की ही दी गई जानकारी है यह कि कर्नल जोशोहो अपने ऑफिस में आकर कुछ खाता-पीता नहीं है, यहां तक कि अपना पसन्दीदा सिगार भी नहीं पीता कि अगर घर में मेहमान आएं तो वो उनके साथ भी खाने में शामिल नहीं होता। ऐसे सतर्क सावधान शख्स को आखिर जहर दिया भी कैसे जा सकता है।"

मोनिका ने पैग उठा, लम्बा घूंट ले खाली किया व उसे मेज पर टिकाते बोली—

"यही मुश्किल तो हमारे आड़े आ रही है कि वो बूढ़ा बहुत अलर्ट रहने का आदी है। अगर ऐसा न होता तो हममें से ही कोई उसे जहर दे सकता था। तुम्हें इस काम के लिए इसलिए चुना गया है कि तुम बहुत ही खूबसूरत और स्मार्ट हो। तुम सोजुको के ब्वाय-फ्रैंड बनकर उसके घर में आ-जा सकते हो। अगर प्रायः आना-जाना रहेगा तो कर्नल के किसी भी खाने-पीने की चीज में जहर मिलाने का मौका तुम्हें मिल सकता है। तुम्हें यह काम बहुत इत्मीनान से और सावधानी से करना होगा। हम बहुत धीरे-धीरे ही यहां की सीक्रेट सर्विस के अन्दर तब्दीली लाना चाहते हैं। वो बूढ़ा कर्नल मर जाएगा तो उसके औहदे पर हमारी पसन्द का और हमारे काम का आदमी

आ जाएगा।"

ये रहस्योद्घाटन सनसनाहट पैदा करने वाले थे, कमल का दिमाग घूम चला था। कितनी गहरी साजिश हो रही थी। कोई बड़ी ताकत यहां की सीक्रेट सर्विस में अपने हितों के लिए अपने आदमी फिट करने की कोशिश कर रही थी।

कमल कनखियों से उस मेज की तरफ देखने लगा।

मोनिका नाम की वह युवती अपना पर्स खोल रही थी। फिर उसने पर्स में से क़ाले रंग का एक पैन निकालते हुए कहा—"मिस्टर हारवे। देखने में यह एक खूबसूरत पैन है। लेकिन इसके अन्दर स्याही की जगह जहर है। इस कलम की निब की बनावट ऐसी है कि तुम इसके जरिए किसी भी खाने-पीने की चीज में जहर इंजेक्ट कर सकते हो। यह कलम तुम्हारी जेब में लगा रहेगा तो किसी के फरिश्तों को भी शक नहीं होगा कि तुम एक घातक और तेज जहर लिए फिर रहे हो।"

और फिर मोनिका उसे हौले-हौले बताने लगी कि इस कलम को किस तरह आपरेट करना है। हारवे बड़े ध्यान से उसकी बात सुनता रहा था।

हारवे ने पैन अपनी कमीज की जेब में लगाते हुए पूछा, "अच्छा तो फिर तुमसे कब मुलाकात होगी?"

मोनिका बोली, "मैंने अपना मकान बदल लिया है, मैं अब लोकोहामा स्ट्रीट के चार सौ बारह नम्बर मकान में शिफ्ट कर गई हूं। मेरा फोन नम्बर नोट कर लो। फोन पर ही मुलाकात की जगह और वक्त फिक्स कर लेना। मैं ठीक वक्त पर उसी जगह पहुंच जाऊंगी।"

मोनिका फोन नम्बर बताने लगी।

हालात यूं साजगार हो जाएंगे इसकी तो कल्पना ही कमल ने नहीं की थी। कर्नल यह जानने को हलकान था कि हारवे आखिर है किस चक्कर में? और देवयोग से यह सब कुछ कमल को बैठे-बिठाये ही मालूम हो गया था। इसके साथ ही इस जेम्स हारवे के लोकल कॉनटेक्ट्स में से एक मोनिका भी सामने आ चुकी थी। ऐसे में साजिश की तह तक पहुंचने के रास्ते खुल गए थे और कमल मोनिका के जहन के जरिए ही और आगे तक पहुंच सकता था।

कमल पैग पी चुका था। उसने वेटर को इशारे से बुलाया और बिल पर हस्ताक्षर करते हुए उठ गया।

अब उसका रुख होटल से बाहर जाने वाले रास्ते की तरफ था।

कमल ने पहले तो कर्नल को होटल ही से फोन करने का सोचा

था, मगर फिर उसने कोई भी रिस्क लेना उचित नहीं समझा और होटल कम्पाउन्ड से निकलकर करीबी टैक्सी-स्टैण्ड की तरफ बढ़ गया।

वही टैक्सी उसे अपनी प्रतीक्षक मिली। गाड़ी में वही ड्राइवर मौजूद था जो कमल को यहां तक लाया था। उसने कमल को देखते ही टैक्सी ड्राइवरों के खास अंदाज में टैक्सी का पिछला दरवाजा खोल दिया। कमल जब टैक्सी में बैठ गया तो वो दरवाजा बंद करते हुए दबी जुबान में बोला—

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि आप इतनी जल्दी रिपोर्ट देने आएंगे।" वो स्टेयरिंग पर जा बैठा और उसने गाड़ी स्टार्ट कर आगे बढ़ाते हुए पूछा, "क्या उस विदेशी से सामना हुआ था?"

कमल ने सीट की पुश्त से सिर टिकाया और इत्मीनान से बोला, "तुम्हें सुनाने के लिए मेरे पास कोई रिपोर्ट नहीं है। मैं कर्नल से मिलना चाहता हूं।"

ड्राइवर के माथे पर सिलवटें उभरी—उसने गाड़ी की रफ्तार को कुछ सुस्त करते हुए पूछा, "क्या मतलब? तुम कर्नल से क्यों मिलना चाहते हो? तुम्हें पता होना चाहिए कि वो सीधे किसी से मुलाकात नहीं करते। तुम्हें जो कुछ कहना है मुझसे कहो।" वो 'आप' से 'तुम' पर आ गया था।

"सॉरी मिस्टर।" कमल बदस्तूर शालीनता से बोला, "तुम्हारी ड्यूटी सिर्फ इतनी है कि मेरा यह अनुरोध कर्नल तक पहुंचा दो।"

उसने ग़ाड़ी किनारे करके रोक दी और फिर चेहरा घुमा कमल को घूरते हुए बोला, "मैं अपनी ड्यूटी, तुमसे ज्यादा समझता हूं। कर्नल तक सिर्फ काम की बातें पहुंचाई जाएंगी। अगर तुम्हारी कोई निजी प्रॉब्लम है तो उसे हम हल करेंगे।"

"तो फिर हल करो।" कमल मुस्करा दिया, "मेरी निजी प्रॉब्लम है कि मैं कर्नल तक पहुंचना चाहता हूं।"

"तुम अजीब आदमी हो।" वह उलझकर रह गया और इसके बाद जाने क्या-क्या बड़बड़ाता रहा।

कमल उसकी बड़बड़ाहट के पीछे उसकी दबी-दबी सोच को पढ़ने लगा।

वह सोच रहा था, "इसके पास जरूर कोई ऐसी रिपोर्ट है जिसे यह खुद कर्नल के सामने पेश करना चाहता है। मुझे इससे अकड़ना नहीं चाहिए था। मुझे दोस्ताना अंदाज में ही इससे इसके मन की बात उगलवानी होगी। पता नहीं कमबख्त ने इतनी-सी देर में ऐसी कौन-सी जानकारी हासिल की है। सुना है यह और इसकी बीवी

दोनों ही बेहद चालाक हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि इसने मोनिका और हारवे को बातें करते सुन लिया हो। मैंने खुद देखा है अभी आधा घंटा [illegible] ही मोनिका हारवे से मिलने होटल में गई थी।"

कमल चौंका। उसके जहन में घंटियां-सी बजने लगीं।

इस शख्स की सोच से जाहिर था कि वो चाहे यहां की सीक्रेट-सर्विस में था पर षड्यंत्रकारियों से मिला हुआ था। उसने अब गिरगिट की तरह रंग बदल लिया था और अब बड़े ही दोस्ताना अंदाज में कमल से बातें कर रहा था और कमल को समझा रहा था कि वह उसकी पोजीशन का ख्याल करे।

"देखो दोस्त! तुम्हारी रिपोर्ट अगर मेरे जरिए कर्नल तक पहुंचेगी तो मेरे लिए तरक्की के रास्ते खुल जाएंगे।"

उसके इस तर्क पर कमल मन-ही-मन मुस्कराया। कमल ने भी धूर्तता दिखाई और बोला, "मेरे दोस्त! अगर हारवे के बारे में कोई रिपोर्ट होती तो मैं उसूलन उसे तुम्हारे जरिए ही कर्नल तक पहुंचाता। इस कमबख्त हारवे की तो अभी मैंने शक्ल ही नहीं देखी है। मैं भला उसके बारे में क्या मालूमात हासिल कर सकता हूं। कर्नल ने मुझसे वायदा किया था कि अगर मुझे जाती तौर पर उनसे मिलना हो तो मैं एक खास फोन नम्बर पर उनसे सम्बन्ध स्थापित कर सकता हूं। लेकिन मैंने इसलिए फोन नहीं किया कि तुम होटल के बाहर उपलब्ध हो और मैं तुम्हारी टैक्सी में बैठकर उनके पास आसानी से पहुंच सकता हूं। अगर तुम मुझे नहीं पहुंचाना चाहते तो मुझे किसी टेलीफोन बूथ पर पहुंचा दो। मैं उन्हें फोन पर क्लॉनटेक्ट कर लूंगा।"

वो दुविधा में पड़ गया था। उसका दिमाग उलझकर रह गया था। वह मुस्कराते हुए बोला—"अगर तुम्हारा जाती मामला है तो कोई बात नहीं है। चलो, मैं तुम्हें कर्नल के बंगले तक पहुंचा देता हूं।" उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी और सोचने लगा, "हां, यह बात दिल को लगती है कि इतनी जल्दी हारवे से इसका सामना नहीं हुआ होगा और अगर हुआ भी होगा तो यूं आनन-फानन में कोई काम की बात मालूम नहीं हो सकती। मगर यह कर्नल के पास कौन-सी निजी प्रॉब्लम लेकर जा रहा है। वह भी कर्नल जोशोहो जैसे आदमी के सामने जो अपनी घरेलू समस्याओं से भी दिलचस्पी नहीं रखता। नहीं, कोई-न-कोई बात जरूर है।"

वो जितनी तेजी से ड्राइव कर रहा था उतनी ही तेजी से सोचता भी जा रहा था।

और अब उसकी सोचों से ही कमल ने जाना कि वो उसकी और

कमल की बातचीत को रिकार्ड करना चाहता था—वह भी इस तरह कि उसके पास एक पॉकेट ट्रांजिस्टर रेडियो था—जिस में खुफिया तौर पर एक टेप लगा हुआ था—जिसे ऑन किया जाए तो उसका रेडियो काम करता है। ऑफ करने के बाद रेडियो बन्द हो जाता था। पर ऑफ करने का जो प्वाइंट था उसके बाद ही एक जीरो प्वाइंट तक दोबारा ऑफ किया जा सकता था। इसी प्वाइंट पर रिकार्डिंग शुरू हो जाती थी।

और यह सोचने के बाद अब वो यहीं सोच रहा था कि वो यह पॉकेट ट्रांजिस्टर किस बहाने कमल को दे सकता था। सो कमल उसकी मुश्किल आसान करते हुए बोला—

"तुम्हारी टैक्सी में खामोशी देखकर मुझे अपने देश के ड्राइवर याद आ रहे हैं। वहां तो मन बहलाने के लिए टैक्सी में भी रेडियो लगे होते हैं। म्यूजिक सफर की बोरियत से निजात दिलाता है ना।"

वो खुश होते जल्दी से बोला, "ओह! तो आपको भी म्यूजिक से दिलचस्पी है?"

"हां, हम हिंदुस्तानियों के लिए तो संगीत पूजा होती है। यहां का संगीत भी बहुत प्यारा है। आइंदा मैं एक छोटा-मोटा ट्रांजिस्टर अपने पास रखा करूंगा।" कमल बोला।

और इस पर वो खुशदिली से मुस्कराकर बोला, "तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करना हमारा फर्ज है। मेरे पास एक पॉकेट ट्रांजिस्टर है, देख लो अगर पसंद हो तो इसे एक दोस्त का तोहफा समझकर अपने पास रख सकते हो।"

यह कहकर वो अपनी जेब में हाथ डालने लगा तो कमल बोल उठा, "नहीं दोस्त! यह तुम्हारे शौक की चीज है। अगर मैं इसे ले लूंगा तो तुम इससे वंचित रह जाओगे।"

"आप भी क्या बात करते हैं, मिस्टर कमलकांत! तुम इसे कबूल करोगे तो मुझे खुशी होगी।" यह कहते हुए उसने वह छोटा-सा ट्रांजिस्टर अपनी जेब से निकाला और उसे ऑन करते हुए कमल की तरफ बढ़ा दिया।

कमल उसकी सोच पढ़ ही रहा था। उसकी सोच बता रही थी कि कर्नल के बंगले तक वो रेडियो ऑन रखना चाहता है और वहां पहुंचकर वह कमल को रेडियो ऑफ करने का तरीका बताते हुए उसे जीरो प्वाइंट पर ऑफ कर देगा ताकि उसी क्षण से रिकार्डिंग शुरू हो जाए।

कमल उसकी इच्छानुसार प्रकट में बेवकूफ बनता रहा और रेडियो से प्रसारित होने वाला संगीत सुनता रहा।

कर्नल के बंगले पर पहुंचते ही वो बोला, "अब इसे ऑफ करके अपनी जेब में रख लो। कर्नल ऐसी चीजों को पसन्द नहीं करते।"

कमल ने रेडियो ऑफ किया तो उसने कहा, "ऐसे नहीं, अगर इसे 'जीरो प्वाइंट" पर ऑफ करोगे तो इसकी बेटरी खुद-ब-खुद चार्ज होती रहेगी।"

"यह तो और भी बढ़िया है।" कहते हुए कमल ने उसे 'जीरो प्वाइंट' पर ऑफ किया व एक जिज्ञासु ब्रन पूछा, "यह देखो क्या इसी तरह बेटरी खुद-ब-खुद चार्ज होती रहेगी?"

"हां—बिल्कुल ठीक। अब तुम इसे अपनी जेब में रख लो।"

कमल ने उसे अपनी जेब में रख लिया। वो तो खुद भी यही चाहता था क्योंकि उसे इस ड्राइवर की आवाज भी तो रिकार्ड करनी थी। उसने टैक्सी मेन-गेट के पास लाकर रोकी थी और वहां तैनात सशस्त्र फौजी से अपने आने का मकसद कहा।

वह फौजी गेट के पास बने केबिन में गया व इन्टरकॉम पर शायद कर्नल को ही इनके आने की इत्तला दे रहा था।

और फिर उसने कमल के लिए गेट का छोटा दरवाजा खोल दिया।

❑❑

कमल टैक्सी से उतरकर इस दरवाजे से अन्दर आहते में आ गया। बंगले पर काफी सख्त पहरा था। कमल जब बरामदे में पहुंचा तो एक फौजी उसे पास वाले कमरे में ले गया। यहां कमल की तलाशी ली गई, यहां हर आम-खास और विश्वसनीय लोगों तक की भी तलाशी ली जाती थी। कमल की जेब में रुमाल, पर्स और सिगरेट के पैकेट के अलावा वह ट्रांजिस्टर भी था।

तलाशी लेने वाले ने कहा, "मिस्टर कमलकांत। कर्नल के सामने स्मोकिंग की इजाजत नहीं है। हम सिरेट का पैकेट और यह ट्रांजिस्टर यहां रख रहे हैं। वापसी पर आपकी यह अंमानत आपको मिल जाएगी। अब आप मेरे साथ आएं।"

कमल उस फौजी के साथ एक खूबसूरत सजे हुए ड्राइंगरूम में आया। कमल सोफे पर बैठकर कर्नल की खबर लेने लगा कि इस वक्त वह क्या कर रहा है? कर्नल से जहनी सम्बन्ध स्थापित होते ही कमल ने जाना कि वो अपने बेडरूम में है और अपनी बेटी सोजुको से बातें कर रहा है।

"बेटी! अभी तुम हारवे से मिलने के लिए न जाओ, पता नहीं कमलकांत मुझसे मिलने के लिए क्यों आया है? पहले मैं उससे मिल लूं, फिर तुम्हें अगला प्रोग्राम बताऊंगा।"

कमल को कर्नल के दिमाग से उसकी बेटी की आवाज सुनाई

दी—"पापा, यह कमलकांत कौन है।"

"वही हिन्दुस्तानी नौजवान है। तुम होटल में हारवे के सामने इसी को संदिग्ध जाहिर करने वाली थी।"

"ओहो तो फिर मैं उसे जरूर देखूंगी।"

"सॉरी! अभी नहीं। इस बात का ख्याल रखो कि ड्राइंगरूम की तरफ कोई न आए।"

यह आदेश देकर कर्नल तेजी से चलता हुआ ड्राईंगरूम की एक खिड़की के पास आकर रुक गया। चूंकि खिड़की पर पर्दा पड़ा हुआ था इसलिए कमल पर्दे के दूसरी तरफ उसे नहीं देख सकता था। पर कमल तो उससे अपने जहनी तार जोड़े हुए था। वह तो उसे फौलादी दीवारों के पीछे और खुद से हजारों मील दूर होते हुए अपने सामने साफ स्पष्ट देख सकता था।

कर्नल की सोचों से ही कमल ने जाना कि इस क्षण कर्नल पर्दे के पीछे चुपचाप खड़ा—पर्दा सरका उसे ही गहरी नजरों से देख रहा है। कुछ देर बाद वो खिड़की के पास से आगे बढ़कर दरवाजे पर आया, फिर ड्राईंगरूम में दाखिल होते अफसराना अंदाज में बोला—"क्या मुझसे मिलना बहुत जरूरी था?"

कमल उसके सम्मान में उठ खड़ा हुआ था—"जी हां, मैं जो रिपोर्ट देने आया हूं—वह आप ही तक रहनी चाहिए।"

उसने एक गहरी नजर कमल पर डाली। फिर सोफे पर बैठते हुए बोला—"लगता है तुमने कोई कारनामा अंजाम दिया है, बैठ जाओ।"

कमल अपनी जगह पर बैठते हुए बोला, "मैंने उस होटल में सिर्फ ढाई घंटे गुजारे हैं। अब इसे संयोग कहिए या हमारी खुशनसीबी कि मैं इतनी देर में दुश्मनों के साजिशी मंसूबों को खंगाल कर आ गया हूं।"

"क्या?" कर्नल चौंका।

"जी हां।" कमल संजीदगी से बोला, "वो अपने हितों के लिए यहां की सीक्रेट सर्विस में बदलाव लाना चाहते हैं।"

कर्नल के शरीर में तनाव पैदा हुआ। वह चकित-सा ही आंखें फाड़े कमल को देख रहा था और उसका दिमाग कह रहा था—"यह तो मैं एक मुद्दत से समझ रहा हूं कि हमारे डिपार्टमेंट में कहीं गड़बड़ हो रही है। मगर यह गड़बड़ क्या है और इसमें किसका हाथ है...इसी का सुराग नहीं लग सका है। अब यह हीरो हिंदुस्तानी भी यही कह रहा है। मगर...मगर यह नामुमकिन है कि यह इन ढाई घंटों में ही इतनी बड़ी साजिश को समझ गया हो।"

वो कुछेक क्षण इन्हीं उलझनों में उलझा रहा—फिर अविश्वास भरे लहजे में ही बोला—"तुम जो कुछ कह रहे हो—अगर वह सच है तो फिर तुम जादू-मंत्र जानते हो। मुझे फौरन बताओ कि तुम्हें इस साजिश का इल्म कैसे हुआ है?"

कमल ने उसे संक्षेप में बताया कि कैसे वो वक्त गुजारने को स्वीमिंग पूल के किनारे जा बैठा था और वहां संयोग से ही उसने अपने निकट की मेज पर बैठे मोनिका और हारवे के बीच होने वाली बातें सुन ली थीं।

कर्नल ने उसकी बात लपकते कहा, "ठहरो—ऐसी बातें सिर्फ जासूसी नॉवलों में पढ़ने को मिलती हैं कि एक जासूस दूसरी मेजों पर बैठे मुजरिमों की बातचीत सुन लेता है। जबकि ऐसे साजिशी मुजरिम पब्लिक प्लेस में अपने मंसूबों की चर्चा नहीं करते और अगर करते भी हैं तो बहुत होशियारी से और सरगोशियों में कि कोई सुन न ले। फिर लॉन में जो मेजें होती हैं उनके बीच अच्छा-खासा फासला होता है। तुम किसी जासूसी नॉवल के हीरो नहीं हो कि इतनी दूर से उनके बीच होने वाली बातचीत सुन सको। फिर यह कैसे मुमकिन हुआ है, मिस्टर कमलकांत?"

कर्नल ठीक कह रहा था। इतनी दूर से किसी की सरगोशी को सुनने का दावा हिमाकत थी और कमल उसे यह बताना नहीं चाहता था कि यह सब टेलीपैथी का कमाल है। कमल ने बात बनाई—

"सर! मेरी सुनने की ताकत बहुत तेज है। मैं फासले पर होने वाली बातचीत सुन लेता हूं।"

"फिर भी डेढ़-दो मीटर का फासला कम नहीं होता।"

"मेरे लिए कम ही है।" कमल नर्म लहजे में मगर अपने शब्दों पर जोर देते बोला, "इसे आप कुदरत की देन ही समझ सकते हैं कि दस मीटर के फासले पर होने वाली सरगोशियों का एक-एक शब्द साफ और स्पष्ट सुन सकता हूं।"

"क्या?" कर्नल हैरत से आंखें फाड़ते कमल को घूरने लगा, "क्या तुम यहां मुझसे मजाक करने आए हो?"

"जी नहीं, मैं अपनी सच्चाई अभी साबित कर सकता हूं।"

कर्नल उसे कुछ क्षण घूरता रहा, फिर बोला, "मैं यहां आने से पहले अपनी बेटी सोजुको से बातें कर रहा था...इसी कमरे के बाहर—तुमसे लगभग पांच मीटर का फासला था—और हम सरगोशियों में नहीं सामान्य आवाज में बातें करते रहे थे। बताओ—मैंने अपनी बेटी से क्या बातें की थी?"

कमल वह बातें सुन चुका था। लेकिन कोई भी यह नहीं चाहता

कि अपने घर में होने वाली बातों को बाहर का कोई आदमी सुने। कमल अगर उसे वह बातें बता देता तो जाहिर है वह घाघ बूढ़ा उसे खतरनाक आदमी समझने लगता। सो उसने फिर बात बनाई—

"सर! मैं सिर्फ वो बातें सुन सकता हूं जो खुली हवा में होती हैं। अगर मेरे और बातें करने वालों के बीच दीवार रुकावट बन जाए तो उनकी आवाजें गड़मड़ हो जाती हैं। मैंने आपको अपनी बेटी से बातें करते नहीं सुना है।"

कमल की बातों ने उसे सन्तुष्ट कर दिया। वह अपनी जगह से उठते हुए बोला—"अच्छी बात है। मैं इस कमरे के उस कोने में जाता हूं और तुम उधर जाकर खड़े हो जाओ। मैं तुम्हारा इम्तहान लूंगा कि तुम मेरी बड़बड़ाहट सुन सकते हो या नहीं?"

वह ड्राइंगरूम के एक कोने में चला गया, कमल को जो जगह बताई गई थी, वो वहां जाकर खड़ा हो गया। अब उनके बीच करीब सात गज का फासला हो गया था, इतने फासले से किसी की बड़बड़ाहट को अक्षरशः सुन लेना बिल्कुल ही नामुमकिन था। लेकिन कमल का इल्म उसे सुना रहा था।

कर्नल ने जब बड़बड़ाने के बाद पलटकर कमल की तरफ देखा तो कमल कान के पास हाथ रखे यूं खड़ा था जैसे अब तक उसकी आवाज़ को कैच करता रहा हो।

कमल बोला—"आप बहुत ही धीमी बड़बड़ाहट में फर्मा रहे थे—'यह नामुमकिन है कि इतने फासले से कमलकांत मेरी बातें लफ्ज-ब-लफ्ज सुन ले और अगर सुन ले तो फिर यह मानना पड़ेगा कि हमारी दुनिया में कुछ लोग अविश्वसनीय गुणों के मालिक होते हैं।' यही बड़बड़ा रहे थे ना आप?"

कर्नल ने खुद को सम्भाला व अंततः बोला, "तुम दोनों मियां-बीवी आखिर क्या बला हो। एक के पास सूंघने की और दूसरे के पास सुनने की आश्चर्यजनक ताकतें हैं।"

"यह सब प्रभू की देन है।"

"कमाल है। अगर मैं तुम दोनों के बारे में किसी किताब में पढ़ता तो कभी यकीन न आता। वैसे अब भी तुम्हें आजमा लेने के बाद भी मैं यकीन नहीं कर पा रहा कि तुम दूर होने वाली बातचीत सुन लेते हो। भई कमाल है। वैसे तुमने अपनी इस खासियत को हमसे क्यों छिपाया था?" उसने संजीदा होते पूछा।

"बस यूं ही। मैं अपनी इस बेहूदा खासियत की पब्लिसिटी नहीं चाहता।" कमल बोला, "है तो यह तमाशा बनने वाली खासियत ही ना। यह और बात है कि आज यह खासियत खूब काम आई

है। बहरहाल आप से भी यह अनुरोध है कि इस भेद को आप अपने तक ही रखिएगा।"

"बेशक! लेकिन मेरा भी एक आग्रह है।"

"आप तो हुक्म दे सकते हैं।"

"हां, अब तक मैं हुक्म ही देता आया हूं। मेरा ओहदा ही ऐसा है मेरे मातहत एक से बढ़कर एक हुनरी हैं। लेकिन तुम मियां-बीवी की खासियतें बड़ी अजीब हैं। मैं अब तुम दोनों को मातहत समझ कर हुक्म नहीं दूंगा—बल्कि दरख्वास्त करूंगा कि अब मुझे छोड़कर कहीं न जाना। यकीन करो अब मैं तुम दोनों को अपने दो बाजू समझने लगा हूं।"

"कद्रदानी है यह आपकी।" कमल मुस्कराते हुए बोला, "मैं आपसे वायदा करता हूं कि जब तक हम दोनों की कद्र होती रहेगी—हम आपको छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे। बहरहाल, काम की बात रह गई है। आपने पूरी रिपोर्ट नहीं सुनी है कि वो किस तरह आपके डिपार्टमेंट को कमजोर बनाना चाहते हैं।"

"हां।" कर्नल संजीदा होते व लाइन पर लौटते बोला, "मैं एक अर्से से महसूस कर रहा हूं कि हमारी सीक्रेट सर्विस के अन्दर कुछ गड़बड़ पैदा हो गई है। अगर ऐसा न होता तो हमारा वह 'राज' सुपर मास्टर जैसे बदनाम ब्लैकमेलर तक न पहुंचता। यह भी तुम्हारा अहसान है कि तुम वो दस्तावेज वापिस ले आए और अब तुम हारवे को बेनकाब कर रहे हो कि वो किस फेर में है। बहरहाल, तुम कह रहे थे कि मोनिका नाम की एक जापानी लड़की इस साजिश में एक महत्त्वपूर्ण रोल अदा कर रही है और वो हारवे की रिपोर्ट आगे कहीं पहुंचाती है।"

"जी हां। हारवे मोनिका से कह रहा था कि आज रात आठ बजे वो आपकी बेटी से मिलेगा और...।"

कमल ने कहा व फिर उसने उनके बीच होने वाली बातचीत और जो तब हुआ था सब कर्नल को कह सुनाया, फिर बोला, "आपकी बेटी से मिलना-जुलना बढ़ने के बाद उसका इरादा इस घर में आते-जाते रहने का है और यूं वह किसी दिन मौका पाकर आपके खाने-पीने की किसी चीज में जहर मिला देगा।"

कमल की यह बात कर्नल के लिए धमाका साबित हुई, वो एकदम से उछलकर सीधा बैठ गया।

"क्या कहा तुमने? वो...वो मुझे क्यों मारना चाहते हैं?"

"वो आपकी कुर्सी पर अपने काम का आदमी लाना चाहते हैं।" कमल ने बताया।

"मेरी पोस्ट पर तो कोई जापानी वाशिन्दा ही आ सकता है। इसका...इसका तो मतलब यह है कि इस विदेशी साजिश में हमारी अपनी भी कुछ महत्त्वपूर्ण हस्तियां शामिल हैं। कोई आस्तीन का सांप है जो यह खेल खेल रहा है। कौन हो सकता है वो?" उसने जैसे अपने आप से पूछा था।

"वो जो कोई भी है।" कमल शांति से बोला—"आज नहीं तो कल मैं उस गद्दार को बेनकाब कर दूंगा। आप यह बताएं कि आप अपने खाने-पीने के सिलसिले में कब से सतर्क रहने लगे हैं?"

"यह सतर्कता तो मेरी फितरत में है। इसे तुम उस ओहदे की देन कह सकते हो।" कर्नल बोला, "बरसों से यही रूटीन बन गया है कि खाना पहले मेरी बीवी चखती है उसके बाद ही मैं उस खाने को हाथ लगाता हूं। बहरहाल, अब मैं इस साजिश की बारीकी समझ रहा हूं। मोनिका ने यह प्लानिंग बनाने में बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया है। हारवे हमारे यहां मेहमान बनकर आता और अपने मकसद में कामयाब हो जाता। हम जापानी कुछ ज्यादा ही मेहमाननवाज होते हैं। हारवे की मेहमाननवाजी बहुत महंगी पड़ती। हारवे अगर किसी खाने की चीज में जहर मिलाता तो मेरी हिफाजत करने वाली बीवी बलि चढ़ जाती। कमलकांत, तुम जो अहसान हम पर कर रहे हो, मैं उन्हें भूलूंगा नहीं।"

और अब कमल ने दिल की बात कही, "हारवे तो अब अपने इस मकसद में कामयाब होने से रहा। लेकिन सर, हारवे के कैसे भी अंजाम के बाद दुश्मन तो चुप बैठने वाले नहीं। हारवे नाम का मोहरा पिट जाने के बाद भी खेल खत्म नहीं होना है और वो दुश्मन दूसरी चालें चल सकते हैं और फिर कोई जरूरी तो नहीं कि खाने की हर चीज आप की बीवी चखती हो। कोई ऐसी भी चीज हो सकती है जिसे वह चखना पसंद न करती हो।"

"हां, सिर्फ सिगार एक ऐसी चीज है जिसे सीधे मैं ही इस्तेमाल करता हूं। मगर हारवे जैसे खिलाड़ी सिगार के तम्बाकू में किस तरह जहर मिला सकते हैं।"

"सिगार में जहर बड़ी आसानी से इंजेक्ट किया जा सकता है।"

"वह कैसे?" कर्नल उसे घूरने लगा।

और अब कमल ने उसे उस पैन के बारे में बताया जो इस मकसद के लिए मोनिका ने हारवे को दिया था।

"वह कलम अब हमेशा उसकी जेब में रहेगा। यहां आने वालों की तलाशी ली जाती है, लेकिन एक पैन ऐसी चीज है जिस पर एतराज नहीं किया जाता। देखने में यह एक पैन है लेकिन उसके

अन्दर स्याही की जगह एक बहुत ही घातक जहर है। इस पैन के जरिए सिगार में भी जहर बड़ी आसानी से इन्जेक्ट किया जा सकता है।"

कर्नल बोला, "कमलकांत यहां आओ। यहां मेरे पास बैठो।"

कमल अपनी जगह से उठकर उसके सोफे पर आ बैठा। कर्नल थोड़ा-सा खिसक कर कमल के करीब आ गया और उसका हाथ थामते बोला—

"तुम मेरे बेटे हो। क्या मेरा बेटा बनना पसन्द करोगे?"

"यह मेरे लिए खुशी और गर्व की बात है कि आप मुझे अपना बेटा बना रहे हैं।"

"मैं चाहता हूं कि तुम एक मातहत बनकर नहीं, बल्कि मेरे बेटे बनकर मेरी हिफाजत करो। तुम देख रहे हो कि इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद हारवे जिस तरह जहरीला कलम लेकर यहां पहुंचने वाला है। माना कि घर के बाहर सशस्त्र गार्ड मेरी हिफाजत कर सकते हैं, लेकिन घर के अंदर सिर्फ तुम्हारे जैसे बेटे पर ही भरोसा किया जा सकता है। अब वायदा करो कि तुम आइन्दा मुझसे कोई बात नहीं छुपाओगे।"

"मैंने आपको सारी बातें बता दी हैं।"

"नहीं, बेटे! तुमने अपनी सुनने वाली इस अनूठी खासियत को हम से छिपाकर रखा था। तुमने अपने बारे में जो कुछ भी बताया है उसमें किसी और गलत-ब्यानी से काम लिया है तो वह भी मुझे बता दो, ऐसे छुपाव ही प्रायः गलतफहमियों को जन्म देते हैं और भ्रम पैदा करते हैं।" कर्नल अब उसकी आंखों में झांक रहा था।

बूढ़े की सोच से पता चला कि वो कमल के बारे में एक और अंदाज से ही सोच रहा था। यानी उसे कमल व सोनिया के सम्बन्धों पर शुब्हा था। अब कमल को याद आया कि उसने सोनिया को अपनी बीवी जाहिर करके भी तो गलतब्यानी से काम लिया है। कमल अपने इसी ब्यान पर टिका रह सकता था, लेकिन जब उसने देखा कि कर्नल उसे इतने अपनत्व और सच्चे दिल से बेटा बना रहा है तो उसने फौरन कह दिया—"जी हां, मैंने एक और गलत बयान दिया है। सोनिया मेरी दोस्त है, बीवी नहीं है।"

कर्नल ने उसका कंधा थपथपाते हुए कहा, "शाबाश! तुमने मेरे जहन का एक बोझ हल्का कर दिया, अब मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊंगा। मैंने तुम्हारे बेडरूम में माइक्रोफोन फिट करवाया हुआ है और उसी के जरिए हमें मालूम हो गया कि सोनिया तुम्हारी बीवी नहीं है। वह तुमसे प्रायः यह शिकायत करती रहती है कि तुम उससे

शादी क्यों नहीं कर लेते।"

बूढ़ा सही कह रहा था।

एकान्त के महकते क्षणों में सोनिया की यह ख्वाहिश उसके होंठों पर आ ही जाती थी। उसे बोलते न देख कर्नल ने पूछा, "तुम क्या सोच रहे हो?"

"कुछ खास नहीं।" कमल ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं यह सोच रहा था कि अब जबकि हमारे बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत हो गया है तो क्या मैं उम्मीद करूं कि आप हमारे बेडरूम से वह माइक्रोफोन हटवा लेंगे।"

"बेशक! तुम कहां पहुंचोगे तो वह तुम्हारे सामने वहां से हटा दिया जाएगा।"

कमल को अपने नौकर शंगेटो का ख्याल आया। कर्नल ने छिपे माइक्रोफोन के बारे में तो बता दिया था लेकिन यह नहीं बताया था कि शंगेटो भी सीक्रेट सर्विस का एक जासूस है और अपने क्वार्टर से बकायदा ट्रांसमीटर पर रिपोर्ट देता है, पर कमल ने इसकी चर्चा नहीं की।

कर्नल बोला था, "बेटे! अब मैं तुम्हारी मालूमात से फायदा उठाऊंगा, हारवे को इस घर में आने का मौका दूंगा। फिर मेरे सिक्योरिटी गार्ड उसकी जेब में रखे हुए पैन को खोलकर देखेंगे और यहां जहर लाने के इल्जाम में उसे गिरफ्तार कर लेंगे।"

"हां, हमारे पास मोनिका का वर्तमान पता मालूम है।" कमल सहमति जताता बोला, "मैं हारवे के बाद मोनिका के पीछे लग जाऊंगा। वैसे एक बात और है आपका जो टैक्सी ड्राइवर मेरी मदद करने और मेरी रिपोर्ट लेने के लिए तैनात किया गया है—मुझे उस पर शक है कि वो भी हमारे बीच दुश्मनों का एजेंट है।"

"अच्छा...वह क्यों?"

कमल ने उसे ड्राइवर के रवैये के बारे में बताया, यह बताया कि वो कमल को यहां लाना नहीं चाहता था और चाहता था कि कमल अपनी रिपोर्ट उसे दे। कमल की जिद्द पर उसे यहां लाना पड़ा था। इसके साथ ही उसने दोस्ती के बहाने एक ट्रांजिस्टर दिया और कहा कि कमल इसे अपनी जेब में छिपा कर रखे।

"मेरा शक है कि यह ट्रांजिस्टर यकीनन टेपरिकार्डर का काम करता है।" कमल ने बताया।

कर्नल ने हाथ आगे बढ़ाया, "लाओ वह ट्रांजिस्टर मुझे दो।"

कमल ने बताया, "वह ट्रांजिस्टर आपकी सिक्योरिटी वालों ने गेट पर रख लिया है।"

कर्नल कमल के पास से, उठकर पिछली दीवार की तरफ गया और दरवाजे के पास लगे हुए एक लाल बटन को दबाया, जवाब में एक स्टेनगनधारी गार्ड फौरन भीतर आया। कर्नल ने उससे कहा—"मिस्टर कमलकांत की जेब से जो ट्रांजिस्टर मिला है उसे फौरन चैक करो।"

गार्ड आदेश पालन के लिए पलट गया। करीब पंद्रह मिनट बाद दो गार्ड ड्राइंगरूम में आए। एक के हाथ में खुला हुआ ट्रांजिस्टर था। उसने ही कर्नल को बताया कि इसमें खुफिया टेपरिकार्डर फिट है।

इस गुप्त टेपरिकार्डर को कर्नल के सामने ऑपरेट किया गया। रिकार्डर ऑन होते ही उसमें से पहले कमल की आवाज सुनाई दी—"यह देखो—क्या इसी तरह बैटरी खुद-ब-खुद चार्ज होती रहेगी?"

"हां, बिल्कुल ठीक। अब तुम इसे अपनी जेब में रख लो।"

इसके बाद रिकार्डर से टैक्सी रुकने और दरवाजा खुलने और बन्द होने की आवाजें और कदमों की चाप सुनाई देती रहीं।

फिर उसमें से कमल की तलाशी लेने वाले गार्ड की आवाज सुनाई दी, "मिस्टर कमलकांत। कर्नल के सामने स्मोकिंग की इजाजत नहीं है, हम सिगरेट का पैकेट और यह ट्रांजिस्टर यहां रख रहे हैं। वापसी पर आपकी यह अमानत आपको मिल जाएंगी। अब आप मेरे साथ आएं।"

इसके बाद खामोशी छा गई। रिकार्डर ऑफ कर दिया गया।

कर्नल ने गुर्राकर हुक्म दिया कि टैक्सी ड्राइवर बने एजेंट को गिरफ्तार कर लिया जाए।

कमल ने कर्नल से पूछा, "अब मेरे लिए क्या आदेश है। क्या मुझे होटल वापिस जाना होगा?"

कर्नल ने कुछ सोचते हुए कहा, "मेरा ख्याल है कि अब तुम हारवे का पीछा छोड़ दो और मोनिका की निगरानी करो। देखो कि वो कहां जाती है और किन लोगों से मिलती है। होटल में जो तुम्हारा सामान है वह वापिस तुम्हारे बंगले पर पहुंचा दिया जाएगा। अब तुम जा सकते हो। तुम अब अपनी रिपोर्ट सीधे मुझे दोगे। यू आर आलवेज वेलकम हेयर।"

कमल बाहर आया तो उसे उसके बंगले तक पहुंचाने के लिए दूसरी गाड़ी का इंतजाम हो चुका था।

□□

गाड़ी में अपने बंगले की तरफ जाते हुए कमल सोच रहा था।

...एक दिलचस्प मगर खतरनाक खेल शुरू हो चुका है। अब उसे उन सबकी खबर लेते रहनी पड़ेगी जो उसके दोस्त और दुश्मन बन गए थे। दोस्तों व दुश्मनों की लिस्ट में कर्नल जोशोहो, मिस सोजुको, टैक्सी ड्राइवर, मोनिका और हारवे के नाम थे।

कमल ने सबसे पहले कर्नल के जहन में झांक कर देखा कि यह शख्स उसे बेटा बनाकर उसे अपनत्व से ही रुखस्त करने के बाद उसके बारे में क्या सोच रहा है।

कमल को विदा करने के बाद थोड़ी देर तक ड्राइंगरूम में बैठा वह जाने क्या-क्या सोचता रहा, क्योंकि इस बीच कमल उससे अपने जहनी तार नहीं जोड़े हुए था, पर अब जब कमल ने उसके जहन में झांक कर देखा तो वो अपनी जगह से उठते हुए अपने किसी मातहत से कह रहा था—"मोनिका नाम की एक लड़की लोकोहामा स्ट्रीट के मकान नम्बर चार सौ बारह में रहती है। उसके बारे में जितनी जल्दी हो सके ज्यादा-से-ज्यादा मालूमात हासिल करो और वह मालूमात मिस्टर कमलकांत तक पहुंचा दो।"

अपने मातहत को हुक्म देने के बाद—अपने ड्राइंगरूम की तरफ जाते हुए भी वो कमल ही के बारे में सोच रहा था।

"...इस अजूबे को किस तरह अपनी गिरफ्त में रखा जाए। इसकी हिस्ट्री शीट बताती है कि यह कहीं एक जगह नहीं ठहरता—वक्त की तरह तेजी से गुजरता चला जाता है। यह जो सुपर मास्टर के अभेद्य किले को तोड़कर आया है किसी दिन हमें भी चकमा देकर यहां से भाग जाएगा। मुझे कोई ऐसी तदबीर करनी चाहिए कि यह हमेशा के लिए हमारे हित के लिए काम करता रहे।"

कमल मन-ही-मन मुस्कराते हुए उसकी सोच को पढ़ रहा था।

कर्नल अब अपने शयन-कक्ष में पहुंच चुका था व सोच रहा था—"इसीलिए मैंने उसे अपना बेटा बनाया है कि वो अपनत्व की डोर से बंध जाए और अब...अब यहां उसके लिए ऐसी दिलचस्पियां पैदा कर दी जाएं कि वो यहीं का होकर रह जाए। अपने मुल्क, अपने लोगों को भूल ही जाए, मगर वो आखिर किस चीज में दिलचस्पी लेगा? ऐसी क्या चीज है जो उसे बांध ले?"

कर्नल इस बाबत सोच रहा था कि तभी उसकी बेटी सोजुको ने कमरे में कदम रखा। कर्नल एक ईजी चेयर पर बैठा हुआ था, सोजुको अपने बाप के करीब कुर्सी के हत्थे पर बैठती हुई बोली—"पापा! आपका वो हीरो हिंदुस्तानी आपसे रुखस्त होकर

जा रहा था तो मैंने उसे बाहर जाते हुए देखा है। मुझे तो उसमें कोई खास बात नजर नहीं आई। आपने खामखां ही उसे महत्त्व देते मुझे ड्राइंगरूम में आने से मना कर दिया था।"

"बुरा लगा है शायद मेरी बेटी को?" कर्नल मुस्कराते बोला, "बाप की नजर में बेटी की अहमियत कैसे कम हो सकती है। तुम तो मेरी जान हो और वो मेरे डिपार्टमेंट की जान बनता जा रहा है। बहरहाल, तुम अपनी आज की ड्यूटी को समझ लो।"

और अब कर्नल ने उसे बताया कि आज जब हारवे उससे मिलेगा तो वो जापानी संस्कृति व रहन-सहन की प्रशंसा करेगा तो ऐसे में सोजूको उसे अपने घर खाने की दावत देगी।

सोजुको हैरान नजर आने लगी थी। वो चकित-सी ही बोली, "पापा, यह...यह आप कैसे कह सकते हैं कि वो मुझसे ऐसी बातें करेगा।"

कर्नल मुस्करा दिया, "बेटी! ऐसे सवाल मत किया करो। अब तुम सीक्रेट सर्विस की एजेंट हो, तुम्हें सिर्फ निर्देशों का पालन करना है।"

"नहीं, पापा।" सोजुको जिद्द करने लगी, "सिर्फ इस सवाल का जवाब दे दीजिए। फिर मैं कभी कुछ नहीं पूछूंगी।"

"भई यह समझ लो कि यह उस हीरो हिंदुस्तानी की भविष्यवाणी है। हमारे घर तक पहुंचने के लिए हारवे तुमसे ऐसा ही कहेगा।"

"अच्छा।" उसकी हैरानी बढ़ी ही थी, "तो क्या यह कमलकांत भविष्यवक्ता भी है।"

"हां।" कर्नल ने जिद्दी बेटी से पीछा छुड़ाने के लिए हां कह दी और इसी क्षण कमल ने इस जापानी गुड़िया के दिमाग की तरफ छलांग लगा दी।

सोजुको सोच रही थी—"ऊंह! बड़ा आया नजूमी कहीं का। हारवे को घेर मैं रही हूं—क्रेडिट मुझे मिलना चाहिए। मगर वो मुझसे नम्बर ले जाना चाहता है। देख लूंगी इसे भी।".

"लो अब एक और ईर्ष्यालु गले पड़ गई।" कमल ने सोचा व इस गुड़िया के दिमाग से निकल आया और तेज़रफ्तारी से चलती हुई गाड़ी की खिड़की से बाहर देखने लगा।

गाड़ी में उसके साथ दो फौजी गार्ड थे। उनमें से ही एक गाड़ी ड्राइव कर रहा था।

कमल ने उनके दिमागों को टटोलकर देख लिया।

वे दोनों ही उस टैक्सी ड्राइवर की तरह गद्दार नहीं थे।

टैक्सी ड्राइवर का ख्याल आया तो कमल ने खुद को एकाग्र कर

उसके दिमाग में झांका और उसकी सोचों को पढ़ने लगा।

वह टैक्सी ड्राइवर इस घड़ी फौलादी सलाखों के पीछे एक अर्द्ध प्रकाशमान कोठरी में बैठा हुआ था। उस पर घबराहट व्याप्त थी। उसने गिरफ्तार करने वालों से पूछा था कि उसे किस जुर्म में गिरफ्तार किया जा रहा है—मगर उसे कोई जवाब नहीं मिला था। वैसे वो अपने तौर पर समझ गया था ट्रांजिस्टर का भेद खुल गया है और अब उसे असहनीय यातनायें दी जाएंगी और उससे बलात उगलवाया जाएगा कि वो किसके लिए काम कर रहा है।

"क्या मैं यातनायें बर्दाश्त कर सकूंगा?" इसका जवाब उसकी सोच ने दिया, "नहीं। यहां ऐसी सजाएं दी जाती हैं कि इंसान मौत मांगने लगता है।" अब कमल ने उसकी सोच में उसी की सोच बन कर कहा, "ये यातनाएं मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा। मैं यातनाओं की नौबत ही नहीं आने दूंगा। मैं उन्हें बता दूंगा कि मैं किसके लिए काम कर रहा हूं। किसके लिए...?"

कमल ने उसके जहन में एक सवाल छोड़ दिया। वो जरा हिचकिचाया। फिर सोचने लगा, "मगर...मैं मेजर थामागोची का नाम अपनी जुबान पर कैसे ला सकता हूं? मेरे कहे का कोई यकीन नहीं करेगा। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि सीक्रेट सर्विस का ही जहीन, सख्त मिजाज, आदरणीय और देशप्रेमी मेजर थामागोची एक गद्दार है और कर्नल जोशोहो के ओहदे पर कब्जा करने के लिए बहुत बड़ी ताकत के इशारे पर नाच रहा है...।"

कमल ने इत्मीनान की एक गहरी सांस ली।

वह बैठे-बैठे ही इस साजिश के पीछे के मास्टर-ब्रेन का नाम जान गया था। साफ हो गया था कि मेजर थामागोची नाम का एक बेदाग-ओ-साफ प्रतिष्ठित अफसर संगठन को भीतर से खोखला कर रहा था और जिस पर कोई संदेह भी नहीं कर सकता था और शायद कर्नल जैसा अफसर भी किसी सबूत के बिना इस हस्ती के खिलाफ कोई कदम नहीं उठा सकता था।

यानी कि अब इस मेजर थामागोची के खिलाफ सबूत इकट्ठा करने का मसला दर पेश था।

समस्या यह भी तो थी कि किसी उचित तर्क के बिना कमल भी कर्नल को यह नहीं बता सकता था कि असली मुजरिम उसके सामने बेनकाब हो चुका है।

कमल ने इस बाबत सोचा और वह इसी फैसले पर पहुंचा कि वो फिलहाल मुनासिब वक्त की इन्तजार करे, उम्मीद थी कि जब इस ड्राइवर को यातनायें पहुंचाई जाएंगी और वह थामागोची का

नाम लेगा तो तव कर्नल कमल को जरूर तलब करेगा।

गाड़ी बंगले पर पहुंच गई।

ड्राइवर ने गाड़ी आहते के अंदर ला कर रोकी थी—जहां खूबसूरत से बगीचे में सोनिया रंग-बिरंगे महकते फूलों के बीच खड़ी हुई थी। कमल को गाड़ी से नीचे उतरते देखकर वो उसकी तरफ बढ़ आई व बोली—

"बड़ी जल्दी वापिस आ गए। खैरियत तो है?"

"खैरियत ही खैरियत है। आओ, हम अपने कमरे में चलें।" कमल उसकी कमर में हाथ डाल कर भीतर को जाने लगा।

सोनिया मीठी नाराजगी दर्शाते बोली, "बाहर से आ कर पहले तुम्हें अपने बेटे के बारे में तो कुछ प्यार से पूछना चाहिए।"

"डार्लिंग मैं बाहर ऐसी प्रॉब्लम्स में उलझा रहता हूं कि घर आ कर बाप बनने की रिहर्सल नहीं कर सकता।"

"यह कह कर तुम मेरा दिल तोड़ देते हो। मैं अच्छी तरह समझ गई हूं—जब तुम मेरे शौहर नहीं बनना चाहते तो मेरे बच्चे के बाप कैसे बनोगे?"

वे अब अपने बेडरूम के सामने पहुंच गए थे, कमल कुछ कहने को ही था कि तभी उनका जापानी नौकर शंगेटो बेडरूम से बाहर आता नजर आया। इन्हें देखते ही वो मुस्कराया और फिर अपने हाथ में पकड़े एक यंत्र को दिखाते हुए बोला—

"कमलकान्त साब (साहब), यह माइक्रोफोन आपके बेडरूम में छिपा कर रखा गया था। कर्नल के आदेश पर मैं इसे निकाल कर ले जा रहा हूं।"

कमल ने मुस्कराते हुए उसका शुक्रिया अदा किया। शंगेटो चला गया। सोनिया ने बेडरूम में दाखिल होते पूछा—

"यह क्या चक्कर है?"

कमल ने मुंह से न बोल कर सोच के जरिए जवाब दिया, "यह भी एक ड्रामा है। हम पर जाहिर किया जा रहा है कि अब ये लोग हम पर पूरा-पूरा विश्वास करने लगे हैं। मगर कर्नल ने अभी तक यह नहीं दर्शाया है कि यह शंगेटो एक नौकर की हैसियत में हकीकतन उसी का एक जासूस है।" फिर कमल प्रकट में बोला, "हां, सोनिया! कर्नल ने मुझे बेटा बनाया है। हम भी हमेशा की तरह उनका विश्वास बना रहने देंगे। वैसे कर्नल को यह मालूम हो गया है कि हम कानूनी तौर से मियां-बीवी नहीं हैं। एकान्त के महकते क्षणों में तुम मुझसे शादी के लिए जिद कर रही थी। तुम्हारा यह बचपना माइक्रोफोन द्वारा उनके पास टेप हो गया था। खुदा के लिए आइन्दा बीवी बनने

की बात न करना।"

सोनिया बुरा मान गई। हर औरत बुरा मान जाती है—जब वो महबूबा की हैसियत से इस्तेमाल होती रहे और बीवी बनने की मंजिल तक न पहुंचे। पर जाने क्यों सोनिया ने इस बाबत बात नहीं की। कमल ने उसके जहन में भी ऐसी कोई सोच महसूस नहीं की थी।

क़मल बेडरूम में आ कर बिस्तर पर लेट गया।

सोनिया बहुत देर तक कमल के बोलने का इंतजार करती रही, पर जब कमल बरोबर अपनी ही सोच में डूबा रहा तो वह कमल पर झुकते हुए बोली—

"कमल! माई लव! मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तुम इस वक्त मेरे दिमाग में झांक रहे हो। तुम मेरे ख्वाब और जज्बात को अच्छी तरह समझ रहे हो कि मैं किस तरह तुम्हारी जीवन संगिनी बनने के लिए तड़प रही हूं।"

उसकी भावनाएं कमल को दहला गई। उसे झूठ का ही सहारा लेना पड़ा, वह समझाने वाले अंदाज में बोला, "सोनिया! तुम्हें मेरी फितरत को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि अगर कोई एक कच्चा-सा धागा भी मेरे गिर्द बांध दे—ऐसा धागा जिसे मैं आसानी से तोड़ सकता हूं—फिर भी मैं इस कच्चे धागे की बन्दिश को बर्दाशत नहीं करूंगा। क्योंकि मेरी फितरत में ही आजादी और उनमुक्तता भरी हुई है। इसलिए मैं तुम्हें समझाता हूं कि सिर्फ महबूबा बन कर रहो। अगर बीवी बनने के ख्वाब देखती रहोगी और जिद करती रहोगी तो एक न एक दिन हमारे बीच खाई पैदा हो जाएगी।"

सोनिया एकदम ही घबरा कर कमल से लिपट गई।

"नहीं।" वह तड़प कर बोली, "मैं अपने और तुम्हारे बीच कोई खाई तो क्या एक मामूली सी कच्चे धागे की दीवार भी पसंद नहीं करूंगी। मैं नहीं चाहती कि तुम मुझसे छिन जाओ।"

कमल इस पगली की भावनाओं को समझ रहा था। कमल मुंह से कुछ न बोला और उसे अपनी बांहों में भर अपने होंठ उसके होंठों पर रख दिए। होंठों का यह मिलन ही जज्बातों के रंग बदल गया। दोनों ही जैसे बाकी सब कुछ भूल गए थे। सांसें गर्माने लगी और ख्वाहिशों के नाग फन उठाने लगे पर तभी बच्चे के रोने की आवाज इस उफनती ख्वाहिशों पर ओस बन कर गिरी।

दीपक साथ वाले कमरे में रो रहा था।

सोनिया तड़प कर कमल की बांहों से निकली और हवा के तेज झोंके की तरह बेडरूम से बाहर निकल गई।

कमल ने एक गहरी सांस ली, "पगली!" उसके होंठों से निकला और वह बेअख्तयार ही मुस्करा दिया।

खुद पर काबू पाने को कमल को सिगरेट का सहारा लेना पड़ा था।

और अब जब कमल कुछ और सोच पाने के योग्य हुआ तो उसे याद आया कि यह वक्त तो हारवे और सोजुको के मिलने का वक्त है। यह ख्याल आते ही उसने कर्नल की बेटी के जहन में झांक कर देखा।

सोजुको इस वक्त हारवे के साथ क्लब के एक केबिन में बैठी हुई थी और हारवे उससे बड़ी लगावट की बातें कर रहा था।

"मिस सोजुको! सच यही है कि मैं तुमसे मिल कर सारी दुनिया को भूल गया हूं। जापानी लड़कियां एक तो बेहद हसीन होती हैं—दूसरे यह कि अपनी प्यार भरी अदाओं से दिल जीत लेने की कला भी जानती हैं। और तुम तो इतनी हसीन हो कि मैं तुम्हारे सामने खुद को हार गया हूं।"

सोजुको बड़ी ही दिल लुभा लेने वाली अदा से शर्मा रही थी और मुस्करा रही थी—मानो हारवे की प्यार भरी बातों से मंत्र-मुग्ध हो रही हो। मगर दिल ही दिल में कह रही थी—

"उल्लू का पट्ठा—मुझे मोम की गुड़िया समझ रहा है कि मैं इसकी बातों की हरारत से पिघल जाऊंगी। मुझसे घनिष्टता नहीं बढ़ा रहा है—अपनी मौत का सामान कर रहा है यह।"

और अब हारवे अपने मतलब की बात कहने लगा—"मुझे तुम्हारे जापान से मुहब्बत हो गई है। मुझे यहां के लोगों का रहन-सहन और घरेलू खाने बहुत पसंद हैं। यहां का रहन-सहन तो मैं देख रहा हूं—लेकिन खानों के बारे में सिर्फ किताबों में ही पढ़ा है या फिर दूसरों से इनकी प्रशंसा सुनी है। मगर किसी जापानी के यहां मेहमान बनने का मौका नहीं मिला है।"

उसकी इन बातों पर सोजुको बुरी तरह चौंकी थी। वो सोचने लगी—"कमाल है—कमलकांत तो वाकई नजूमी है। जाने कैसा इल्म है यह कि उसने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि हारवे ऐसी बातें करने वाला है। और यह कमबख्त यही बातें कर रहा है।"

हारवे ने उसे सोच में गुम पा पूछा, "क्या सोच रही हो?"

"आं...कुछ नहीं।" वो संभलते हुए बोली, "बस तुम्हारी बातें सुन रही हूं।"

"और शायद घबरा भी रही हो कहीं मुझे अपना मेहमान न बनाना पड़ जाए।" हारवे मुस्कराते हुए बोला।

"नहीं। यह तुम्हारा ख्याल है। हम जापानी मेहमाननवाज होते हैं, मेरे घर चलोगे तो पापा तुमसे मिल कर बहुत खुश होंगे।"

"क्या वो हमारी दोस्ती पर एतराज नहीं करेंगे।"

"एतराज़ क्यों करेंगे। मेरे घर वाले बड़े आजाद ख्याल हैं। अगर तुम अभी चलना पसंद करो तो मैं मम्मी को फोन कर देती हूं कि मैं अपने एक फ्रैण्ड को साथ ला रही हूं।"

"ओह, माई स्वीट सोजुको! यह मेरे लिए बड़े सम्मान की बात होगी। मैं अभी तुम्हारे साथ चलूंगा।"

सोजुको वहां से उठ कर फोन करने चली गई।

यह तो कमल जानता ही था कि वो कर्नल से क्या बात करेगी। इसलिए वह हारवे की सोच को टटोलने लगा।

हारवे को अचानक ही कामयाबी नसीब हुई थी—इसलिए वो मारे खुशी के भीतर से बहुत बेचैन हो रहा था। बेचैनी की एक वजह यह भी थी कि सोजुको ने आशा के विपरीत इसी वक्त घर चलने के लिए कह दिया था। वह अब सोच रहा था कि इस कामयाबी की इत्तला मोनिका तक कैसे पहुंचाए। वह अपनी जगह से उठ गया। वह भी अब मोनिका को फोन करने जा रहा था।

क्लब में एक ही फोन था। जब सोजुको फोन करके लौटी तो हारवे से उसका सामना हो गया।

"तुम चलो।" हारवे मुस्कराते हुए बोला, "मुझे भी एक जरूरी फोन करना है। मैं अभी आता हूं।"

सोजुको मुस्कराती हुई मेज की तरफ चली गई।

हारवे ने फोन के पास आ कर रिसीवर उठाया व मोनिका का नंबर लगाया। जब उन दोनों के बीच संबंध स्थापित हो गया तो कमल ने फौरन मोनिका के जहन की तरफ छलांग लगाई।

वह कह रही थी, "ओह, हारवे! इस वक्त तो तुम्हें कर्नल की बेटी के साथ क्लब में होना चाहिए था। तुम कहां हो?"

"मैं क्लब से ही बोल रहा हूं। आशा विपरीत कामयाबी मिल गई है। सोजुको मुझे अभी अपने साथ घर ले जा रही है।"

"वैरी गुड! यह तो कमाल हो गया। अब सोजुको के मां-बाप से घनिष्टता बढ़ाना तुम्हारा काम है। जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। पूरे इत्मीनान के साथ काम करो। हमारे आदमी तुम्हारी हिफाजत के लिए आसपास मौजूद रहेंगे। तुम फिक्र न करना।"

हारवे ने रिसीवर रख दिया।

कमल बदस्तूर मोनिका के दिमाग से चिपका रहा।

मोनिका रिसीवर रखने के बाद बड़ी तेजी से सोच रही थी—

"कर्नल के रिश्तेदार भी पहले से वक्त तय किए बिना कर्नल के घर नहीं जा सकते, फिर सोजुको पहले से ही वक्त निश्चित किए बिना हारवे को इस वक्त कैसे ले जा रही है। मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है।"

यह सोचते ही उसने फिर रिसीवर उठाया और नंबर डायल करने लगी। संबंध स्थापित होते ही वह बोली—"हैलो! मैं मोनिका हूं, मेजर से बात करना चाहती हूं।"

यह कह कर वह इंतजार करने लगी। उसकी सोच बता रही थी कि वो मेजर थामागोची से बात करना चाहती है, थोड़ी देर बाद मेजर की आवाज़ सुनाई दी—"हैलो, मोनी! क्या बात है?"

मोनिका ने उसे बताया कि हारवे इस वक्त सोजुको के साथ उसके घर जा रहा है तो मेजर थामागोची ने एक दम चौंक कर कहा—"क्या मतलब? सोजुको उसे यूं आनन-फानन में ही अपने घर ले जाने के लिए राजी हो गई। ओह! मुझे अपना खेल बिगड़ गया नजर आ रहा है डार्लिंग! हमारा जो आदमी टैक्सी ड्राइवर के रूप में काम कर रहा था—उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। उसे एक घंटे के लिए लॉकअप में रखा गया है। और अब उसका मुंह खुलवाने के लिए उसे उस टॉर्चर-केबिन में ले जाया जा रहा था—जिसमें पहुंच कर अच्छों-अच्छों का आत्मविश्वास खाक में मिल जाता है और वो सारा राज उगल देते हैं। इसलिए मैंने उसे 'चेम्बर' तक पहुंचने नहीं दिया। हमारे एक आदमी ने उसे रास्ते में ही गोली मार दी। अभी उसकी तरफ से इत्मीनान हुआ है तो हारवे वहां फंसने जा रहा है। मेरा ख्याल है कि वो अभी क्लब से नहीं निकले होंगे, तुम फौरन ही उसे दोबारा कांटेक्ट करो और उसे सोजुको के साथ जाने से रोक दो।"

यह आदेश दे थामागोची ने रिसीवर रख दिया। कमल थामागोची की सोच पढ़ रहा था। उसकी आवाज व लहजे के माध्यम से ही कमल उसके दिमाग तक पहुंचने में सफल हो गया था। वह सोच रहा था कि किसी तरह भी हारवे को कर्नल के घर तक पहुंचने से रोका जाना चाहिए। अगर मोनिका उससे क्लब में संबंध स्थापित नहीं कर सकी तो यकीनन बहुत बुरा होगा।

यह सोच उसने रिसीवर उठाया और कोई नंबर लगाने लगा, लाइन मिलते ही उसने कहा—"हैलो! मंजीहारा! फौरन अपने आदमियों को लेकर निकलो। गोल्डन नाइट क्लब से सोजुको हारवे को लेकर अपने घर जा रही है। उन्हें रास्ते में ही रोक लो। अगर कोई हस्तक्षेप करने वाला न हो और मौका मिल रहा हो तो सोजुको को उठा कर किले में पहुंचा दो। हरी अप।"

यह कह कर उसने रिसीवर रख दिया और सोचने लगा—

"हां—मैंने सही फैसला किया है, अब सोजुको को गायब करके बूढ़े कर्नल को ब्लैकमेल करना होगा। यह सारी गड़बड़ यकीनन उस हिंदुस्तानी नौजवान की वजह से हो रही है। कर्नल उस पर बहुत ज्यादा विश्वास करने लगा है विश्वास की बात ही है कि वो आज दोपहर हारवे की निगरानी के लिए होटल गया था, और पता नहीं उसने दो-ढाई घंटों में ही कैसी जानकारियां हासिल कर ली कि वो फौरन कर्नल के यहां पहुंचा तो टैक्सी ड्राइवर गिरफ्तार कर लिया गया। अच्छा हुआ कि हमने उसे हमेशा के लिए खत्म कर दिया। वर्ना मेरा नाम संदिग्ध व्यक्तियों की लिस्ट में आ जाता। अब यह सोजुको अचानक ही हारवे को अपने यहां ले जा रही है—उससे साफ जाहिर होता है कि कमलकान्त ने ही हारवे और उसके मंसूबे के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी कर्नल को दी है।"

कमल पूरी तवज्जो से उसकी सोच पढ़ता रहा।

मेजर थामागोची अब सिगार निकाल उसके सिरे को दांतों से काट रहा था। उसने सिगार सुलगाया। सिगार सुलगाने के दौरान वह सोच रहा था—

"जब सोजुको गायब हो जाएगी, तब कर्नल यकीनन उस हिंदुस्तानी कमलकान्त को ही उसकी तलाश में भेजेगा और सोनिया तो यकीनन उसके साथ होगी—क्योंकि वो कुतिया की तरह सूंघना जानती है। सोनिया की बू पर वह हमारे पीछे दौड़ेगी। और हमें इस तरह दोनों मियां-बीवी को ट्रेप करने का मौका मिल जाएगा।"

□□

कमल के होंठों पर मुस्कान नाच गई थी।

वह इत्मीनान से अपने बिस्तर पर लेटा थामागोची की सोच पढ़ रहा था। एक तेज रफ्तार थ्रिलिंग फिल्म थी जिसे वो जैसे दिमाग की स्क्रीन पर देख रहा था। हालांकि यह इत्मीनान का वक्त नहीं था। उसे फौरन—बल्कि फौरन से भी पेश्तर एक्शन में आ जाना चाहिए था। इससे पहले कि मंजीहारा अपने आदमियों के साथ

सोजुको को किडनैप करके ले जाते—कमल को कर्नल के आदमियों के साथ वहां पहुंच जाना चाहिए था। और उनकी प्लानिंग को नाकाम बना देना चाहिए था।

मगर कैसे? चाहते हुए कमल ऐसा कैसे कर सकता था? आखिर वो कर्नल को क्या कहता कि उसे सोजुको के अपहरण के मंसूबे का पता कैसे लगा है। अपनी सम्मोहन व टेलीपैथी की ताकत को वो किसी तौर पर भी जाहिर नहीं करना चाहता था। कमल की ऐसी किसी महारत के बारे में जानने के बाद कर्नल उससे खौफजदा भी हो सकता था। इस रहस्योदघाटन के बाद तो हालात और भी बिगड़ सकते थे।

तो—बेहतर यही था कि कमल यूं ही इत्मीनान से बिस्तर पर लेटा रहे। जैसा कि मेजर थामागोची सोच रहा था कि सोनिया—सोजुको की बू सूंघती हुई उसके पीछे दौड़ेगी तो फिर उनके मंसूबे के अनुसार ही यह खेल आगे बढ़ना चाहिए। कमल सोच रहा था कि अब वो खुद दौड़ने की बजाए सोनिया को दौड़ाएगा।

कमल ने थामागोची से अपने जहनी तार तोड़े नहीं थे।

थामागोची की सोच पढ़ने के दौरान कमल को उसके दिमाग से फोन की घंटी सुनाई दी और जब उसने रिसीवर उठाया तो मोनिका की आवाज सुनाई दी—

"मेजर! मैं हारवे को सचेत नहीं कर सकी हूं। वह क्लब से जा चुका है।"

मेजर थामागोची ने 'नैवर माइंड' कह कर रिसीवर रख दिया।

कमल ने भी मेजर को छोड़ दिया। आगे के हालात जानने के लिए मोहरा बदलना जरूरी था। कमल सोच के जरिए रेंगता हुआ सोजुको तक पहुंच गया।

पर उसे वहां तक पहुंचने में देर हो चुकी थी।

इस वक्त तक मंजीहारा अपने मकसद में कामयाब हो चुका था। उसके आदमियों ने सोजुको को रिवॉल्वरों के निशाने पर लेकर उसे कार की पिछली सीट पर बैठा लिया था और उसके खूबसूरत कुंवारे होंठों पर टेप लगा दिया था। कार की खिड़कियों पर ऐसे कलर्ड शीशे लगे हुए थे कि जिन के आरपार बाहर का दृश्य तो दिखाई देता था—मगर बाहर से अंदर बैठे हुए लोग नजर नहीं आते थे।

कार मंजीहारा खुद ड्राइवर कर रहा था।

पिछली सीट पर सोजुको और हारवे एक जापानी के साथ बैठे

हुए थे—जिसके हाथ में एक रिवॉल्वर था।

सोजुको के होंठ बंद थे और आंखें दहशत से फैली हुई थीं। और वो अपनी तसल्ली के लिए सोच रही थी कि पापा के आदमी जरूर उसकी निगरानी कर रहे होंगे। पर यह सोच भी उसे तसल्ली नहीं दे पा रही थी। क्योंकि सीक्रेट सर्विस का कोई भी आदमी उसकी मदद के लिए नहीं पहुंच रहा था।

ऐसा सोचते हुए वह कभी खिड़की व कभी विण्डस्क्रीन के पार देखती जा रही थी। यानी कि उसका दिमाग यह भी जाहिर करता जा रहा था कि वो कहां से गुजर रही है।

कमल उसके जहन से ही इन रास्तों को समझता जा रहा था।

करीब आधे घंटे तक सोजुको के दिमाग में रहने के बाद कमल ने उसका साथ छोड़ दिया और कर्नल जोशोहो की खबर लेने लगा।

कर्नल बेचैनी से अपनी बेटी का इंतजार कर रहा था—जो हारवे को वहां लाने वाली थी।

हारवे को फांसने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। पर कर्नल इस बात से बेखबर था कि मेजर थामागोची उस से ज्यादा तेजी दिखा चुका है। कमल ने सोचा कि कर्नल की सोच के जरिए ही उसे चिंतित करे कि सोजुको अभी तक क्यों नहीं आई है—पर तभी फोन की घंटी बजने लगी। कर्नल ने रिसीवर उठाया और दूसरी तरफ से आवाज आई—"हैलो कर्नल! हमारा जो आदमी सोजुको की निगरानी कर रहा था उसकी कार में अचानक खराबी पैदा हो गई। उसने हमें इन्फार्म किया कि हम मिस सोजुको की कार का पीछा करें। और हम पीछा कर रहे थे कि अचानक ही हमारी कार का भी टायर ब्रस्ट हो गया। किसी ने पहिये पर फायर किया था। खुदा आपकी बेटी को सलामत रखे। हमारा ख्याल है कि वो सकुशल आपके पास पहुंच चुकी होगी?"

कर्नल गुस्से से दहाड़ने लगा।

सोजुको नहीं पहुंची थी और ये मिलने वाली रिपोर्टें गड़बड़ का सबूत थी। कर्नल अपने निजी चेम्बर में पहुंचा। वह तो जैसे पागल हो रहा था। उसने ट्रांसमीटर के जरिए यह इत्तला जाने कहां-कहां पहुंचा दी कि उसकी बेटी को किडनैप कर लिया गया है और शहर की जिस गाड़ी पर शुबहा हो उसे फौरन रोक कर चैक किया जाए।

यह खबर उसने कमल के जापानी नौकर शंगेटो तक भी पहुंचाई और उसके जरिए कमल को तलब किया। पर तभी कर्नल को

अहसास हुआ कि उसने शंगेटो को एक नौकर की हैसियत से कमल के बंगले पर निगहबानी के लिए रखा हुआ है और उसके जरिए कमल को ऐसी कोई इत्तला भिजवाना गलत होगा। यह ख्याल आते ही उसने शंगेटो को रोक दिया और फिर खुद अपने चेम्बर से निकल कर फोन के पास आया। अपनी लाडली बेटी की गुमशुदगी का जान उस पर बदहवासी व्याप्त थी। अब वह फोन पर खुद ही कमल से संबंध स्थापित कर रहा था।

कमल यह सब देख-सुन रहा था। उसकी निगाहें फोन की तरफ उठ गईं।

कुछ ही क्षणों बाद फोन घनघना उठा। कमल मुस्कराता हुआ फोन के पास आया। उसने रिसीवर उठाया तो उधर से कर्नल की आवाज सुनाई दी—"हैलो, कमलकान्त! क्या तुम हो?"

"जी हां। फरमाइये।"

कर्नल बताने लगा। उसने यही सब बताया जो कमल पहले से ही जानता था। कर्नल अपनी बात पूरी करते हुए बोला—

"तुम फौरन अपनी गाड़ी में यहां आ जाओ। अपहरणकर्ताओं के गिर्द जाल फैला दिया गया है। कहीं से भी इन्फारमेशन मिलते ही तुम सोजुको के लिए जाओगे।"

कमल तुरंत बोला, "आप रिसीवर न रखें—पहले मेरी बात सुन लें। बेटी की गुमशुदगी ने आपको परेशान कर दिया है, परेशानी में आप यह भी भूल गए हैं कि आपकी बेटी बड़ी आसानी से लाई जा सकती है।"

"वह कैसे?" कर्नल चीखता सा बोला, "जल्दी बताओ।"

कमल बोला, "आपकी बेटी ने क्लब जाने से पहले कपड़े बदले होंगे। अपना जो लिबास वह घर में उतार कर गई है—उसे हिफाजत से रखिए। सोनिया उसे सूंघ कर सोजुको तक पहुंच जाएगी।"

कर्नल खुशी से चीखता हुआ बोला, "अरे हां। खुदा की कसम तुम और सोनिया दोनों ही लाजवाब हो। मैं तो घबराहट में भूल ही गया था। तुम सोनिया को फौरन लेकर आओ।"

कमल रिसीवर रख कर सोनिया के पास पहुंचा। वह अपने दीपू को सुला चुकी थी।

"सोनिया! फौरन तैयार हो जाओ। कर्नल की बेटी सोजुको किडनैप कर ली गई है। तुम्हें अब उसकी बू के पीछे दौड़ना है। अपने दीपू को आया संभाल लेगी।"

उसने अलमारी खोल कर कपड़े निकाले और बाथरूम में जा घुसी। कुछ ही देर में वो काली चुस्त पैंट और खुले गले की गुलाबी टी शर्ट पहन कर आ गई। दोस्त तो दोस्त—दुश्मनों पर भी बिजली गिराने के लिए यह लिबास काफी था।

गाड़ी में कर्नल के बंगले की तरफ जाते हुए, रास्ते में कमल ने कहा, "मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं कि वो जापानी गुड़िया कहां है। मैं सोच के जरिए तुम्हें गाइड करता रहूंगा। तुम आसानी से ही वहां पहुंच जाओगी। मगर यह मुझ पर बड़ा जुल्म है कि सारे काम मैं करूंगा और क्रेडिट तुम्हें मिलेगा।"

"जी नहीं, मैं तुम्हारी मोहताज नहीं हूं। तुम मुझे गाइड नहीं करोगे—तब भी मैं सोजुको तक पहुंच जाऊंगी। मुझे भी अपने सामर्थ्य पर नाज है।"

"अच्छा।" कमल ने चैलेंज के अंदाज में कहा, "शर्त लगाओगी।"

"हो जाए...बोलो क्या हारोगे?"

"सोनिया—मैंने हारना नहीं सीखा।"

"अच्छा तो इसका मतलब है कि तुम टेलीपैथी के जरिए मुझे रास्ते से भटका दोगे। देखो—यह बदमाशी नहीं चलेगी।"

"अरे, सारी बदमाशियां तो तुमसे हो चुकी हैं। इस बार अपने बेटे दीपू की कसम खा कर कहता हूं कि तुम्हें टेलीपैथी के जरिए नहीं भटकाऊंगा।"

कमल ने 'अपना बेटा दीपू' कहा था, इसलिए सोनिया खुश होकर कमल के बाजुओं से लिपट गई।

"हाऊ स्वीट यू आर! तुमने दीपू को अपना बेटा कह कर मेरा दिल खुश कर दिया है। अब मैं तुम पर विश्वास करूंगी कि तुम सोच के जरिए मुझे 'मिसगाइड' नहीं करोगे। हां—मगर शर्त क्या होगी यह तय कर लो, देखो अगर मैं जीत जाऊंगी और सोजुको को अपने सामर्थ्य के बल पर वापिस ले आऊंगी तो तुम रोजाना एक घंटा दीपू को अपनी गोद में खिलाया करोगे।"

"अच्छी बात है।" कमल शरारत से मुस्कराया, "और अगर तुम हार जाओगी तो आइन्दा कभी शादी का लफ्ज जुबान पर नहीं लाओगी।"

"आं।" वह परेशान होकर कमल का मुंह तकने लगी। कुछ क्षणों तक सोचने के बाद वह दृढ़ लहजे में बोली, "तुम समझते क्या हो, तुम्हारी तरह मैंने भी हारना नहीं सीखा है। मैं जीतने के लिए जान

की बाजी लगा दूंगी, सोजुको मेरे हाथों वापिस आएगी।"

हकीकत यह भी थी कि कमल अब कर्नल के और अपने देश के खिलाफ साजिश करने वाले मेजर थामागोची के बारे में जान चुका था और वो उससे जहनी संबंध स्थापित करके उसके पास पहुंच सकता था और जैसा कि मुजरिमों के साथ कमल का जैसा स्टाइल रहा है—इस मेजर को भी दिमागी खलल का शिकार बना कर उससे अपने जुर्म का इकबाल करा सकता था। लेकिन बात सिर्फ थामागोची तक ही सीमित नहीं थी। क्योंकि वो तो अपने हित के लिए कर्नल का ओहदा पाने को किसी विदेशी गुप्त संस्था के हाथों खिलौना बना हुआ था। कमल अगर फौरन ही मेजर के गिरेबान पर हाथ डाल देता तो फिर उस 'गुप्त संगठन' के अंदर तक पहुंचने के रास्ते कठिन हो जाते। जबकि कमल उस 'संस्था' को पहचानना चाहता था जो यह घिनौना खेल, खेल रहे थे।

मेजर का फिलहाल सोजुको को जहनी या शारीरिक नुकसान पहुंचाने का भी कोई इरादा नहीं था। वो एक बेटी को उसके बाप के खिलाफ मोहरा बनाने जा रहा था।

बहरहाल, ऐसी ही चुहलबाजियां करते वो कर्नल के बंगले पर पहुंचे तो इस बार उनकी तलाशी नहीं ली गई। उन्हें फौरन ही कर्नल के पास पहुंचा दिया गया। कर्नल अपनी बेटी का लिबास लिए ड्राईंगरूम में इनका प्रतीक्षक था।

वह लिबास सोनिया की तरफ बढ़ाते हुए बोला—"सोनिया, तुम भी मेरी बेटी हो, भगवान के लिए अपनी बहन सोजुको को फौरन ट्रेस करो, मैंने अभी तक उसकी मां को उसकी गुमशुदगी की खबर नहीं दी है। वो जानेगी तो बेटी के लिए रो-रो कर बुरा हाल कर लेगी।"

सोनिया सोजुको के लिबास को सूंघने लगी।

सामने मेज पर दो रिवॉल्वर, दो पॉकेट साईज ट्रांसमीटर और कारतूस की पेटियां रखी हुई थीं।

कर्नल कमल से बोला, "तुम्हें और सोनिया को इन चीजों की जरूरत है इन्हें रख लो, मुझे ट्रांसमीटर के जरिए एक-एक पल की खबर पहुंचाते रहो।"

"मेरा और सोनिया का एक साथ जाना मुनासिब नहीं है।" कमल संजीदा होते बोला, "आपकी सीक्रेट सर्विस में जो आपके दुश्मन हैं वो सोनिया की खासियतों को अच्छी तरह समझते हैं और वो

यकीनन यह पहले से ही जानते होंगे कि सोजुको तक पहुंचने के लिए सोनिया से काम लिया जाएगा। इसलिए वो सोनिया को घेरने या नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे, अगर आप ठीक समझें तो सोनिया को अपने चंद विश्वसनीय फौजी जवानों के साथ रवाना करें। मैं अपनी गाड़ी में उनके पीछे-पीछे रहूंगा।"

कर्नल कुछ कहने को हुआ पर तभी सोनिया बोल उठी, "मुझे सोजुको की बू मिल रही है—आप अपने आदमियों को फौरन मेरे साथ कर दें।"

कर्नल सब कुछ भूल कर उनके साथ तेजी से चलता हुआ बाहर आया, उसके आदेश पर फौरन ही एक जीप कार गैराज से निकाली गई। सोनिया उसमें चार सशस्त्र फौजियों के साथ बैठ कर रवाना हो गई।

कमल ने भी अपनी कार उनके पीछे लगा दी थी।

एक्शन शुरू हो गया था।

कुछ दूर जाने के बाद कमल ने सोजुको से अपने जहनी तार जोड़े और उसके जहन में झांकने लगा।

सोजुको इस वक्त एक बंद कमरे में एक आईने के सामने बैठी हुई थी। एक व्यक्ति उसके बाएं तरफ रिवॉल्वर लिए खड़ा था और दूसरा शख्स उसके चेहरे पर मास्क चढ़ाने के बाद मेकअप का आखिरी टच दे रहा था। फिर वो एक विग के जरिए उसका हेयर स्टाइल बदलने लगा।

अब सोजुको खुद भी खुद को नहीं पहचान रही थी, उसका चेहरा पूर्णतयः बदल गया था। अब उसके मां-बाप भी उसे नहीं पहचान सकते थे।

लेकिन कमल उसे पहचान सकता था। मेकअप और गेटअप से चेहरा बदल सकता है—दिमाग और उसकी सोच नहीं बदल सकती। कमल ने सोजुको की सोच बन उसकी सोच में ही पूछा—

"मैं कहां हूं? यह कौन-सी जगह है?"

सोजुको अपनी सोच की रौ में ही सोचने लगी, "पता नहीं ये लोग मुझे कहां ले आए हैं, यहां पहुंचने से पहले इन शैतानों ने मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी थी, इस कमरे में पहुंचने के बाद ही पट्टी खोली गई है।"

सोजुको की सोच पढ़ कर कमल को मायूसी ही हुई थी—क्योंकि अब वो लोग जब तक उसे वहां से बाहर किसी दूसरी जगह न ले

जाते—तब तक कमल उसके दिमाग के जरिए उस जगह को नहीं समझ सकता था। यानी कि फिलहाल सोनिया ही बाजी ले जा रही थी। जाहिर था—सोजुको का चेहरा बदल दिया गया था पर उसके बदन की विशिष्ट बू तो वही थी और उसकी 'बू' की कशिश पर ही सोनिया आगे बढ़ती जा रही थी।

"क्या वो जीत जाएगी? क्या मैं हार जाऊंगा?" यह ख्याल ही कमल को बेताब कर गया और इसी बेताबी में वह सोनिया के दिमाग में झांकने लगा।

वह जिस गाड़ी में बैठी हुई थी—उसके ड्राइवर को निर्देश दे रही थी। कभी दाएं-बाएं मुड़ने को कहती थी तो कभी सीधे चलने का मशविरा देती थी। फिर उसने ट्रांसमीटर के जरिए कर्नल को बताया कि वह सोजुको के करीब पहुंचती जा रही है।

और फिर एक छः मंजिला इमारत के निकट पहुंच कर सोनिया ने गाड़ी रोकने के लिए कहा। यानी वो अपनी मंजिल पर पहुंच गई थी। सोजुको इसी इमारत के किसी कमरे से बरामद की जा सकती थी।

कमल ने सोनिया को छोड़ा और सोजुको के जहन में झांक कर देखा। वो ड्रेसिंग टेबल के आईने के सामने खड़ी हुई थी। मेकअप मैन उसके गिर्द घूम कर उसका जायजा ले रहा था।

फिर वो संतुष्ट हो बोला, "एकदम परफैक्ट। अब तो तुम्हारा बाप भी तुम्हें नहीं पहचान सकेगा।"

यह कह कर उसने आईने के सामने से सैंट की बोतल उठाई व सोजुको के लिबास पर खुशबू स्प्रे करने लगा।

कमल की आंखों में चमक भर आई। ऐसी ही खुशबू की मदद से कमल खुद सोनिया की सूंघने की शक्ति से बचता रहा था। वो फौरन सोनिया के जहन में पहुंचा। सोनिया एकदम ठिठक कर खड़ी हो गई थी। सोजुको के बदन की खुशबू—तेज सेंट की खुशबू में गुम हो गई थी और अब उसे पता नहीं चल रहा था कि सोजुको किस दिशा में पाई जा सकती है।

सोनिया जीती बाजी हारने वाली थी। उसे अपनी मजबूरी का अहसास हो चला था। उसने मुट्ठियां भींच ली थीं व सोच रही थी—

"नहीं मैं हारना नहीं जानती—शिकस्त कमल की ही होगी।"

□□

बाजी एकदम ही पलट कर रह गई थी।

कमल सोनिया से अपने जहनी तार जोड़े रहा।

सोनिया उस छः मंजिला इमारत के अंदर सीढ़ियों के निचले सिरे पर खड़ी हुई थी। यहां तक वो बड़ी कामयाबी से सोजुको की बू सूंघती हुई पहुंची थी। सोजुको यकीनन इसी इमारत के किसी कमरे में थी। लेकिन सीढ़ियों तक पहुंचते-पहुंचते ही सोनिया को अपनी जीत हार में बदलती नजर आई।

सोनिया अब सोजुको की बू नहीं पा रही थी।

पाती भी कैसे सोजुको कीमती परफ्यूम की तेज खुशबू में नहा गई थी और उसके बदन की उसकी अपनी खास 'बू' गुम हो गई थी जो सोनिया को खींच कर इस तरफ ला रही थी।

सोनिया परेशान खड़ी सोचती रही। एक फौजी नौजवान ने उससे पूछा—"क्या बात है मादाम? क्या आप गलत जगह पर आ गई हैं?"

"नहीं, सोजुको इसी इमारत में कहीं मौजूद है। मगर दुश्मन बहुत ज्यादा चालाक है। लगता है कि उन्होंने उसे किसी दूसरी किस्म की खुशबू में छिपा दिया हैं और अब मैं ठीक उस कमरे में नहीं पहुंच सकती जहां वो है।" सोनिया ने अपनी मजबूरी बताई।

दूसरे फौजी ने लिफ्ट की तरफ देखते हुए कहा—"कोई बात नहीं। हम पूरी इमारत की तलाशी लेंगे। आप दो जनों के साथ सीढ़ियों से ऊपर जाएं—और हम लिफ्ट से जा रहे हैं। हम यहां की हर मंजिल को चैक करते हुए ऊपर जाएंगे।"

कमल इनके पीछे ही था। उसने अपनी गाड़ी इस इमारत से जरा दूर रोक दी थी और स्टेयरिंग व्हील पर बैठा अपने दिमाग की स्क्रीन पर सोनिया और सोजुको का तमाशा देख रहा था।

और फिर कुछ सोच उसने सोनिया के दिमाग पर दस्तक देते हुए कहा—"सोनिया डार्लिंग मान जाओ। इस वक्त तुम्हें मेरी जरूरत है। हार मान लो वर्ना कर्नल की बेटी हाथ से निकल जाएगी। बहुत खतरनाक ड्रामा खेला जा रहा है।"

सोनिया ने सीढ़ियां चढ़ते सोच के जरिए जवाब दिया, "मैं हार नहीं मानूंगी, तुम मुझे नर्वस न करो। मैं देखूंगी कि वो लोग सोजुको को कब तक छिपा कर रखते हैं। इंसान के बदन की खुशबू उसकी आखिरी सांस तक उसके साथ रहती है। बाकी खुशबुएं आनी जानी हैं। कर्नल की बेटी जिस खुशबू में छिपी हुई है वह थोड़ी देर बाद खत्म हो जाएगी, फिर मैं उस तक पहुंच जाऊंगी।"

सोनिया अब इमारत की पहली मंजिल पर पहुंच गई थी।

कमल ने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया और सोजुको की तरफ ध्यान देने लगा। यह कमल भी नहीं जानता था कि वो इस इमारत की किस मंजिल पर और किस कमरे में थी। मगर वो जिस कमरे में भी थी अब उसके पास मंजीहारा खड़ा हुआ था।

मंजीहारा के दोनों हाथ उसके कोट की जेबों में थे और वो सोजुको से कह रहा था—"देखो, मेरी दाईं जेब में पिस्तौल है। मैं तुम्हारे बाएं तरफ तुम्हारे साथ-साथ चलता रहूंगा। अगर तुम जिंदा रहना चाहती हो तो इस इमारत से बाहर निकलते वक्त शोर न मचाना और ना ही किसी को इशारों से अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करना। यह हुस्न, यह जवानी यह जिंदगी बहुत कीमती है। इसकी कद्र करो और चुपचाप चलती रहो।"

वो दोनों उस कमरे से निकल कर कॉरीडोर में आ गए और कंधे से कंधा मिला कर चलते हुए लिफ्ट की तरफ जाने लगे। लिफ्ट के सामने पहुंच कर सोजुको ने लिफ्ट के दरवाजे पर नजर की तो उसके जरिए कमल को पता चला कि वो तीसरी मंजिल पर है। वहां दो लिफ्ट थी। एक लिफ्ट से नीचे के लोग ऊपर आ रहे थे और दूसरी ऊपर से नीचे जा रही थी।

दोनों लिफ्टें एक साथ आकर तीसरी मंजिल पर रुकीं।

दोनों के दरवाजे एक वक्त खुले। नीचे से आने वाले दो फौजी, लिफ्ट से बाहर आए। उन्हें देखते ही सोजुको की आंखों में आशा की चमक पैदा हुई। वो एकदम से उड़ कर उनकी पनाह में पहुंच जाना चाहती थी। तभी मंजीहारा की दाईं जेब सोजुको की बाईं पसली पर आई। सोजुको पिस्तौल की नाल महसूस कर रही थी और मंजीहारा की चुभती हुई सरगोशी सुन रही थी—

"मेरी उंगली ट्रेगर पर है। खामोशी से लिफ्ट के अंदर चलो।"

दोनों फौजी सोजुको पर एक सरसरी सी नजर डाल कर गुजर गए थे। इस मेकअप में उन्होंने सोजुको को कहां पहचानना था। सोजुको डूबते हुए दिल के साथ लिफ्ट में समा गई। लिफ्ट का दरवाजा बंद हो गया। दरवाजे पर लिखे हुए नंबर बता रहे थे कि लिफ्ट नीचे जा रही है।

सोनिया सीढ़ी चढ़ती हुई ऊपर पहुंच गई।

मंजीहारा सोजुको को लेकर इमारत से बाहर आ गया था। मेकअप मैन द्वारा सेंट का इस्तेमाल का संयोग उसके हक में रहा था और वो सोजुको को इस इमारत से बाहर निकाल लाया था।

इमारत से दूर अपनी गाड़ी में बैठा कमल उन्हें देख रहा था।

सोजुको को उसने भी उसकी सोच द्वारा ही पहचाना था। हर इंसान की तरह सोजुको की हरकतें भी उसके दिमाग के नियंत्रण में थी और कमल चूंकि उसके दिमाग पर कब्जा किए हुआ था—इसलिए उसे यह अनुमान लगाने में देर नहीं लगी थी कि इमारत से बाहर एक नौज़वान के साथ आने वाली युवती और कोई नहीं सोजुको ही है।

कमल की निगाहें अब उन दोनों पर टिक गई थीं।

वो दोनों फुटपाथ पर चल रहे थे, सड़क के किनारे दूर तक कारें खड़ी थीं। वो एक कार के निकट पहुंच कर रुक गए।

कमल को उनके निकट जाने की जरूरत नहीं थी। वह जहां था वहीं से उन्हें देख सकता था और सुन सकता था। मंजीहारा सोजुको को आदेश दे रहा था—

"चलो, पिछला दरवाजा खोल कर बैठ जाओ।"

सोजुको आदेश मानने को मजबूर थी। वह दरवाजा खोल कर पिछली सीट पर बैठ गई। मंजीहारा भी उसकी बगल में बैठ गया। जब कार आगे बढ़ गई तो कमल ने भी अपनी कार को आगे बढ़ाते हुए थोड़ी देर के लिए उनसे अपने ज़हनी संबंध तोड़ लिए और सोनिया का हाल मालूम करने लगा।

चूंकि तीसरी मंजिल से सेंट की जोरदार खुशबू गुजर चुकी थी इसलिए सोनिया अब फिर सोजुको की बू महसूस कर रही थी। उसने राहदारी की तरफ बढ़ते हुए अपने साथ के फौजी से कहा—

"जल्दी आओ—मैंने उसे फिर ढूंढ लिया है।"

वह जल्दी से चलती हुई कोरीडोर के अंतिम सिरे पर एक दरवाजे के सामने पहुंच कर रुक गई। फिर वह धीरे से बोली—

"कर्नल की बेटी इस कमरे में है—जरा होशियारी से जाओ।"

वो सब दरवाजे के आसपास दीवार से लग कर खड़े हो गए। एक ने रिवॉल्वर निकाल कर दरवाजे पर दस्तक दी। दस्तक देते ही दरवाजा स्वयं ही खुलता चला गया। अंदर कोई नहीं था। कमरा बिल्कुल खाली था।

एक जवान ने अंदर दाखिल होते हुए कहा, "यहां तो कोई नहीं है। मादाम आप हमें खामखां भटका रही हैं।"

सोनिया कुछ नहीं बोली। वह बदस्तूर सूंघती हुई और आगे बढ़ती हुई बाथरूम का दरवाजा खोलकर अंदर चली गई। वहां सोजुको

का वह लिबास रखा हुआ था जिसे वह उतार कर गई थी। सोजुको के चेहरे के साथ-साथ उसका लिबास भी बदल दिया गया था। सोनिया वह लिबास उठा कर बाहर आई और उस जवान से बोली—"अभी तुमने कहा था कि मैं तुम लोगों को भटका रही हूं। यह देखो यह सोजुको का लिबास है। अगर इसे तुम नहीं पहचानते तो कर्नल से जा कर पूछो।" उसने लिबास गुस्से से फौजी के मुंह पर फेंक दिया, "वो लोग सोजुको को यहां लाए थे और अभी यहां से ले गए हैं।"

अब फौजी कमरे की एक-एक चीज को उठा कर देखने लगे थे। मेकअप का सामान और सिर के बालों के कुछ टुकड़े इस बात का सबूत थे कि सोजुको का गेटअप तब्दील किया गया है ताकि पीछा करने वाले उसे पहचान न सकें।

सोनिया ट्रांसमीटर ऑन करके कर्नल से बातें कर रही थी।

उसने अब तक की रिपोर्ट पेश करने के बाद कहा, "सर! दुश्मनों को यह मालूम है कि मैं अपने सूंघने की शक्ति के बल पर उनका पीछा कर रही हूं, इसलिए वो आपकी बेटी को किसी तेज खुशबू में छिपा कर मेरा रास्ता काट रहे हैं। लेकिन मैं बेबस और मजबूर नहीं हूं। वह खुशबू खत्म होते ही मैं फिर सोजुको की बू पा लूंगी।"

उनकी बातें खत्म हो गईं तो अब कमल ने ट्रांसमीटर पर कर्नल से संबंध स्थापित किए और अपनी रिपोर्ट दी—"सर! मैं सोनिया का पीछा करते हुए एक इमारत के सामने पहुंच गया हूं। सोनिया अंदर गई थी—लेकिन अभी तक वापिस नहीं आई है। अगर आप आदेश दें तो मैं भी इमारत के अंदर जाऊं...ओवर।"

"नहीं, कमलकान्त! तुम वहीं ठहरो, अगर कोई भी किसी लड़की को लेकर बाहर निकले तो तुम उन्हें फौरन चैक करो। सोनिया की रिपोर्ट है कि सोजुको का गेट-अप बदल दिया गया है।"

और जवाब में कमल ने कर्नल को बताया कि उसने अभी एक नौजवान को एक जापानी हसीना के साथ बिल्डिंग से निकलते देखा है। वो दोनों एक कार में बैठ कर साउथ की तरफ गए हैं। कमल ने संदेह व्यक्त किया तो कर्नल ने उसे फौरन ही उनका पीछा करने को कहा।

कमल यही चाहता था—क्योंकि वह तो पहले से ही उनका पीछा कर रहा था। कर्नल ने उससे उनकी गाड़ी का रंग पूछा था। वो सोजुको को ब्लू रंग की सिडान में ले गए थे। लेकिन कमल ने कर्नल को

सफेद रंग की टोयटा बताया। क्योंकि कमल सोजुको को वहां जरूर पहुंचाना चाहता था—जहां मेजर थामागोची के आदेश पर मंजीहारा उसे लेकर जा रहा था।

उनका पीछा करते हुए कमल ने थामागोची की खबर ली।

कमल को वो अपने दिमाग की स्क्रीन पर टोकियो इंटरनेशनल एअरपोर्ट की बिल्डिंग में नजर आ रहा था। थोड़ी देर बाद ही कमल ने उसे एक 'टायलेट' में पाया। कमल ने उससे जहनी तार तोड़ लेने चाहे—क्योंकि किसी को 'टायलेट' में देखना बेहूदगी ही थी। पर तभी कमल पर इस गद्दार का इरादा जाहिर हो गया। वह अपनी जेब से एक छोटा सा ट्रांसमीटर निकाल उसे ऑन कर अपने मुंह से लगा धीमी आवाज में कहने लगा—

"हैलो...फर्स्टमैन कालिंग...हैलो फर्स्टमैन कालिंग...ओवर।"

वह अपना नाम नहीं ले रहा था। शायद इसी अंदेशे से कि उसकी आवाज कर्नल के ट्रांसमीटर पर भी पकड़ी जा सकती है। 'हाईकमांड' शायद उसका कोड नेम था। दूसरी तरफ से जवाब मिलते ही उसने आगे कहा—

"माल डिलीवर कर दिया गया है। माल ले जाने वाले को जो भी रास्ता साफ मिलेगा वो उसी रास्ते से वहां पहुंच जाएगा। मैं दो घंटे बाद की फ्लाइट से पहुंच रहा हूं। ओवर एण्ड आल।"

उसने यह नहीं बताया था कि वो कहां पहुंच रहा है। कमल कुछ देर तक उसके जहन को कुरेदता रहा तो मालूम हुआ कि वो जापान के चौथे बड़े टापू 'कोइशो' की तरफ जा रहा है और उसकी मंजिल 'फोकाको' नाम का शहर है।

कमल ने थामागोची का पीछा छोड़ दिया—ताकि दो घंटे बाद जब वह 'फोकाको' पहुंच जाए तो फिर उसकी खबर ले।

इस बीच मंजीहारा की कार टोकियो शहर से निकल गई थी।

कमल की कार भी अब हाइवे पर थी, कमल इतने फासले से जा रहा था कि न तो वो कमल को देख सकते थे ना कमल उन्हें देख सकता था। कमल सोच की लहरों के सहारे उनका पीछा कर रहा था।

कमल ने मंजीहारा के दिमाग को कुरेदा तो पता चला कि वो 'ओसाका' नाम के शहर की तरफ जा रहा है—जो बंदरगाह भी है और वो वहां से लांच के जरिए 'कोयोशे जाएगा फिर ट्रेन द्वारा 'फोकाको' पहुंचेगा।

कमल ने गाड़ी सड़क के किनारे करके रोक दी व फिर ट्रांसमीटर पर कर्नल से संबंध स्थापित करते हुए बोला—

"सर! मैं सफेद रंग की उस टोयोटा को तलाश करता हुआ हाइवे तक पहुंच गया हूं—मगर वह गाड़ी नजर नहीं आई। अगर सोनिया ने ट्रेस आउट किया हो तो बताएं।"

कमल सब दिखावे का काम कर रहा था। वह सोनिया से उसकी सोच के जरिए भी मालूम कर सकता था मगर कर्नल को अपनी गतिविधियों से आगाह करना था—इसी बहाने वो इस बारे में कर्नल से पूछ रहा था।

कर्नल ने बताया, "सोनिया अभी तक बू का इंतजार कर रही है, उसका कहना है कि वो लोग जिस गाड़ी में सोजुको को लेकर गए हैं उस गाड़ी के तमाम शीशे शायद चढ़ा दिए गए हैं—वर्ना तेज रफ्तारी से भागने वाली कार की खिड़कियां खुली हों तो शरीर पर लगाई गई खुशबू जल्दी ही उड़ जाती है और बदन की विशिष्ट खुशबू उजागर हो जाती है। मगर ऐसा नहीं हो रहा है। दुश्मन सोनिया की तरफ से बहुत ज्यादा सावधान है। मेरा ख्याल है अगर सोनिया हथियारबंद जवानों के साथ न होती तो शायद उसी इमारत में मार दी जाती। वह इस वक्त उसी इमारत के सामने अपनी गाड़ी में बैठी हुई है, क्या तुम उसके पास वापिस जाओगे। ओवर।"

"सर! मेरा एक सुझाव है। वह यह कि आप सोनिया को अकेला छोड़ दें और अपने जवानों को वापिस बुला लें। अब आपकी बेटी की वापसी की यही सूरत है कि दुश्मन सोनिया को अकेला समझ कर उसे घेरने की कोशिश करें। सोनिया अकेली ही दो-चार पर भारी है। फिर यह कि मैं उसकी निगरानी करता रहूंगा। इस तरह दुश्मन के आदमी मेरी नजर में आ जाएंगे। इस वक्त जरूरत इस बात की है कि हम दुश्मन के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को पहचान सकें। ओवर।"

"तुमने मेरे दिल की बात कही है, कमलकान्त! यह आइडिया मेरे दिमाग में भी आया था। लेकिन मैंने सोनिया को इसलिए अकेला नहीं छोड़ा कि वह तुम्हारी 'मुहब्बत' है, मैं ऐसा करता तो तुम मुझे खुदगर्ज समझने लगते। बहरहाल, अब तुम कह रहे हो तो मैं जवानों को वापिस बुला लेता हूं, अब वह अकेली रहेगी। अब तुम दूर से उसकी निगरानी करो। ओवर एण्ड आल।"

कमल ने ट्रांसमीटर को पास वाली सीट पर रख दिया।

और अब उसने सोनिया से अपने जहनी तार जोड़े।

सोनिया इस वक्त कर्नल से ट्रांसमीटर पर बातचीत कर रही थी। कर्नल ने उसे कमल के सुझाव के अनुसार ही आदेश दिए थे। कर्नल के इस आदेश पर सोनिया भी खुश हुई थी। उसने फौजी जवानों को कर्नल का आदेश दिया और कहा कि वो वापिस चले जाएं। और फौजी जवानों के रुखसत हो जाने के बाद सोनिया ने अपनी सोच के जरिए कमल को पुकारा—

"कमल! माई लव! तुम कहां हो? अगर तुम मेरे दिमाग में मौजूद हो तो मुझे बताओ। मैं तुमसे जरूरी बातें करना चाहती हूं।"

कमल ने उसको किसी प्रकार का जवाब नहीं दिया। सोनिया की 'जरूरी बातें' तो वह उसकी सोच के जरिए भी पढ़ सकता था। कमल चुपचाप यही जानना चाहता था कि सोनिया अब खुद क्या प्लानिंग करती है।

सोनिया फिर सोच के जरिए बोली, "देखो, जानेमन! अगर तुम मेरे अंदर छिपे हुए हो तो बता दो, मुझे परेशान न करो। हमारे बीच जो शर्त लगी है मैं उसी सिलसिले में बात करना चाहती हूं। समझ लो कि तुमसे हार मानने वाली हूं।"

वह कमल को भड़का रही थी कि कमल अपनी जीत की खुशी में बरबस ही उससे बातें करने लगे। मगर कमल बदस्तूर खामोश रहा।

और अब सोनिया निश्चिंत होकर सोचने लगी—

"कमल इस वक्त मेरे दिमाग में नहीं झांक रहा है, इस वक्त वो जरूर किसी और से अपने दिमागी तार जोड़े हुए होगा, उफ! कैसे आदमी से पाला पड़ा है। उससे छिप-छिप कर बहुत संभल-संभल कर सोचना पड़ता है। अभी कर्नल ने बताया था कि कमल के सुझाव पर ही मुझे अकेला छोड़ा जा रहा है। इस सुझाव के पीछे कमल का अपना कोई मकसद जरूर होगा। काश! कि मैं जान पाती कि वो चाहता क्या है? बहरहाल, यह बात तो यकीनी है कि वो मेरा पीछा करेगा। पता नहीं कर्नल की यह बेटी कहां मर गई है। कम से कम उसकी बू ही मिल जाती तो मैं कमल से बहुत आगे निकल जाती, अब तो बस हवा में सूंघना ही मुकद्दर रह गया है।"

कमल को उसकी बड़बड़ाती सोच पर हंसी आ गई।

कमल का दिमाग अब तेजी से काम कर रहा था। वह कोई ऐसी तदबीर सोच रहा था—जिससे कर्नल व सोनिया इत्यादि से पीछा

छूट जाए। वह हाइवे के किनारे खड़ी कार में बैठा था और तेज रफ्तार गाड़ियां सांय-सांय करती उसके निकट से गुजर रही थीं। लेकिन कमल की सोच अब सिर्फ अपने तक सीमित होकर रह गई थी कि वो आजाद है और वो हमेशा आजादी से आगे बढ़ते रहने का आदी है।

सोचते-सोचते कुछ सूझा...और जो युक्ति समझ में आई थी उसने उस पर दोबारा गौर किया। और फिर इत्मीनान होने के बाद ट्रांसमीटर को उठा कर सीट के नीचे डाल दिया। रिवॉल्वर निकाल कर उसके दस्ते से कार-रेडियो के डायल को तोड़ दिया। कार के अंदर इसी तरह की अव्यवस्था फैला दी और फिर खुद कार का दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

हाइवे पर दो गाड़ियां दूर जाती नजर आ रही थीं, जब वे नजरों से ओझल हो गईं और सड़क वीरान दिखने लगी तो कमल ने कार के अगले टायर पर फायर करके उसे बेकार कर दिया।

यूं अब कमल के अगवा हो चुके होने के हालात नजर आने लगे थे।

देर-सबेर इस कार के हाइवे पर खड़ी मिलने की इत्तला कर्नल को मिल ही जानी थी और तब पहला ख्याल जो उस बूढ़े के जहन में आना था वह यही होना था कि कमलकान्त उर्फ हीरो हिंदुस्तानी का अपहरण हो गया है।

कमल के होंठों पर मुस्कान नाच गई।

❑❑

कमल ने मुस्कराते हुए एक सिगरेट निकाल कर सुलगाई।

और फिर वो पैदल ही टोकियो शहर की तरफ बढ़ चला।

करीब एक मील का फासला तय करने के बाद उसने टोकियो की तरफ जाने वाली गाड़ियों से लिफ्ट लेने की कोशिश जारी कर दी। आखिर एक ट्रक वाले ने लिफ्ट दे दी। उसने कमल को सोकोमा के चौराहे पर छोड़ दिया।

यहां कमल ने एक कॉफी हाउस में बीस मिनट गुजारे। उसके सामने सबसे बड़ी प्राब्लम अब खुद को छिपाने की थी। अपनी तदबीर से उसने फिलहाल कर्नल और सोनिया दोनों से मुक्ति पा ली थी। जाहिर है कार की बरामदगी के बाद कर्नल ने यही समझना था कि कमल दुश्मनों के हत्थे चढ़ गया है और दुश्मन जबरन ही उसे कहीं ले गए हैं। हां—ऐसे में सोनिया ने यही सोचना था कि किडनैप हो जाने के बावजूद भी कमल सोच के जरिए उससे जहनी संबंध स्थापित

कर सकता है। पर जब कमल की तरफ से ऐसी कोशिश भी नहीं होगी तो सोनिया भी यह सोचने पर मजबूर हो जाएगी कि दुश्मनों ने कमल की खोपड़ी पर सितम ढाया है और वो लंबी बेहोशी की गिरफ्त में है।

और यही कमल चाहता भी था।

फिलहाल उन लोगों से नाता तोड़े रखने को इतना ही काफी था। लेकिन इन लोगों से खुद को छिपा फोकाको तक पहुंचाना भी जरूरी थी।

और खुद को छिपाने का एक ही तरीका था कि सोजुको की तरह कमल भी अपना गेटअप बदल देता।

कमल ने ऐसा ही किया। मेकअप द्वारा चौखटा बदल लेने का आर्ट वो जानता ही था और टोकियो शहर में मेकअप के लिए जरूरी सामान पाना कोई मुश्किल काम नहीं था। एक दो मंजिला डिपार्टमेंटल स्टोर से ही कमल को अपनी जरूरत का सामान मिल गया। एक नई अटैची में यह सारा सामान भर उसने एक टैक्सी ली और स्टेशन की तरफ रवाना हो गया।

रेलवे स्टेशन पर जाकर पता चला कि एक ट्रेन वहां से एक घंटे बाद जाएगी।

कमल ने यह घंटा रेलवे प्लेटफार्म पर ही गुजारा। वह अपना प्रोग्राम सैट कर चुका था। ट्रेन आने के बाद वो फौरन ही अपने कम्पार्टमेंट के बाथरूम में घुस गया। अपना बहरूप बदलने के लिए इससे बढ़िया कोई और जगह नहीं मिल सकती थी।

प्रायः जब तक ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी रहती है उस वक्त तक कोई टायलेट में नहीं घुसता है। सो कमल को इत्मीनान था कि ट्रेन चलने तक कोई दरवाजे पर दस्तक नहीं देगा। इसी निश्चिंतता के साथ उसने अपना मेकअप करना शुरू कर दिया।

पंद्रह मिनट बाद ट्रेन चल पड़ी।

कमल अब बार-बार दरवाजे की तरफ देख रहा था।

मगर तकदीर साथ दे रही थी। आधे घंटे तक किसी ने दरवाजे पर दस्तक नहीं दी और कमल जब अटैची लेकर टायलेट से बाहर निकला तो उसका लिबास और उसका चेहरा बदल चुका था।

अब उसे वहां की सीक्रेट सर्विस वाले तो क्या उसकी सांसों के करीब रहने वाली सोनिया भी उसे नहीं पहचान सकती थी। यह और बात थी कि उसके बदन की 'बू' से सोनिया उसकी हकीकत

जान लेती।

यात्री अपनी सुरक्षित सीटों पर बैठे हुए थे। एक बूढ़े जापानी के पास कमल की सुरक्षित सीट खाली पड़ी हुई थी। कमल उस पर आ बैठा। कुछ ही देर बाद कमल ने दो जापानियों को बीच की राहदारी से गुजरते देखा। वो दोनों दाएं-बाएं बैठे लोगों को गौर से देखते जा रहे थे—जैसे किसी की तलाश में हों। इन दोनों में से एक अधेड़ उम्र का था और दूसरा नौजवान चेहरे से ही बदमाश नजर आ रहा था।

कमल के दिल में जिज्ञासा उभरी तो उसने इस नौजवान को जरा गौर से देखा। इस क्षण वो भी कमल की सीट के निकट पहुंच चुका था। वह कमल पर नजरें डालता हुआ गुजर गया। उसके दिमाग तक पहुंचने को इतनी देर काफी थी। कमल अब उसके जहन में झांक रहा था।

वह बदमाश सोच रहा था, "ताज्जुब है। वह कहां जा सकता है। उसे इसी कम्पार्टमेंट में होना चाहिए।"

और फिर वो अपने अधेड़ उम्र साथी से संबोधित हुआ—"जोजफ! मेरा ख्याल है तुम्हें धोखा हुआ है। यूं भी तुम्हारी आंखें कमजोर हैं। तुमने दूर से पहचानने में गलती की है। मेरा मशविरा है कि तुम्हें अब चश्मा लगा लेना चाहिए।"

"तुम मुझ पर व्यंग्य न कसो। मैंने उसे साफ-साफ देखा है। वो इसी कम्पार्टमेंट में आया है।"

"तब तो यह कहना पड़ेगा कि तुम कमलकान्त की सूरत नहीं पहचानते। तुम्हें किसी और हिंदुस्तानी पर शक हुआ होगा।"

अधेड़ उम्र ने मुंह बनाते कहा, "हाईकमांड ने हम सबको कमलकान्त की तस्वीरें भेजी हैं। मैं उस चेहरे को अच्छी तरह पहचानता हूं। जब वो इस कम्पार्टमेंट में दाखिल हो रहा था तो मैं भाग कर टेलीफोन बूथ की तरफ चला गया था। पहले मैंने फर्स्टमैन को फोन किया—पता चला वो टोकियो से बाहर है, उसके बाद मैंने तुम्हें बुलाया है, अगर तुम मुझे अंधा समझ रहे हो तो मेरे पास ये दो बड़ी-बड़ी आंखें हैं।"

"आंखें तो उल्लू की भी बड़ी होती हैं—मगर दिन के वक्त उसे भी नजर नहीं आता।" नौजवान ने मुंह बनाया।

"मैं तुमसे बात करना भी पसंद नहीं करता। जाओ तुम उसे तलाश करते रहो। मैं अपनी टीम में वापिस जा रहा हूं।"

वो गुस्से से झल्लाता हुआ कम्पार्टमेंट के आखिरी सिरे की तरफ जाने लगा।

नौजवान उसे घूरते हुए सोच रहा था, "उल्लू का पट्ठा, खामखां मुझे फोन करके बुला लिया। अब मैं अगले स्टेशन पर उतर जाऊंगा।"

कमल का माथा ठनका।

नजर आ रहा था कि उसके और सोनिया के लिए बड़ी दूर तक जाल फैलाया गया था। मेजर थामागोची ने अपने आदमियों में कमल का फोटो बंटवा दिया था। ऐसा ही कुछ सोनिया के सिलसिले में भी किया गया होगा।

हालात गंभीर थे। लेकिन कमल फिलहाल निश्चिंत था। वक्त रहते अपना हुलिया बदल उसने अपने बचाव की तदबीर कर ली थी। लेकिन सोनिया की खैर नहीं थी।

इन हालात में कमल सोनिया को नजरअंदाज नहीं कर सकता था। वह सोनिया की खबर लेने लगा।

सोनिया उसका इंतजार करने के बाद कर्नल के पास वापिस चली गई थी। और अब वो दोनों ही इस बात से परेशान थे कि कमल दो घंटों से कहां गायब है। वो ट्रांसमीटर द्वारा भी कमल से संबंध स्थापित करने की कोशिश करते रहे थे। पर कमल अपना ट्रांसमीटर कार के अंदर फेंक कर चला आया था। जाहिर है उन्हें कमल की तरफ से जवाब नहीं मिलना था।

"क्या मुसीबत है—सोजुको के साथ कमल भी लापता हो गया है। आखिरी बार उसने हाइवे से ट्रांसमीटर पर बात की थी। मुझे वहां फौरन अपने आदमी भेजने चाहिए।" कर्नल सोनिया से कह रहा था।

कमल मुस्करा दिया।

अब वो कमल की तलाश में निकलने वाले थे और उन्हें वही सब देखने को मिलना था जो कमल उन्हें दिखाने का इंतजाम कर आया था।

कमल ने उनसे अपने जहनी तार तोड़े व उस अधेड़ उम्र जापानी के जहन में झांकने लगा, जिसने इस कम्पार्टमेंट में चढ़ते देखा था और उस नौजवान को खबर कर दी थी। जो बदमाश अगले स्टेशन पर उतरने का फैसला कर चुका था—उससे कमल को दिलचस्पी नहीं थी। यही मालूम करना जरूरी था कि वो अधेड़ जापानी अपनी

किस टीम के साथ कहां जा रहा है।

वह अधेड़ जापानी कम्पार्टमेंट के आखिरी सिरे पर परेशान बैठा हुआ था और उसकी टीम के आदमी उसके आसपास मौजूद थे।

कमल इस अधेड़ जापानी की 'दिमागी आंखों' से उसके साथियों को देखने लगा।

उसके सामने एक बेहद खूबसूरत अंग्रेज नवयौवना बैठी हुई थी। उसने स्याह चारखाने वाला पिंक कलर का स्कर्ट और काला ब्लाउज पहन रखा था। उसके सुनहरी बाल उसके कंधों पर बिखरे हुए थे। स्कार्फ की गुलाबी रंगत से उसका चेहरा गुलाबी-गुलाबी हो रहा था। स्कार्फ की गिरह सांसों की उठान पर आहिस्ता-आहिस्ता कांप रही थी। वह खिड़की के बाहर देखती हुई अपने दाएं हाथ के अंगूठे को बेख्याली में चूस रही थी। उसकी यह अदा कमल को बहुत भाई थी। भरपूर जवान थी लेकिन नन्ही सी बच्ची की सी हरकत कर रही थी। शायद उसे अहसास नहीं था कि वो क्या कर रही है। लेकिन देखने वालों के लिए उसकी इस मासूम अदा में एक महकती सी सेक्सी-कशिश थी। यही लगता था जैसे वो बचपन व यौवन के संगम पर आ कर खड़ी हो गई हो।

कमल इतनी दूर से उसका बारीकी से जायजा नहीं ले सकता था—क्योंकि वो अधेड़ जापानी उसे ईर्ष्यापूर्ण नजरों से देख रहा था और अपने दिमाग की बंद कोठरी में एक चोर की तरह बैठा सोच रहा था और उसकी इन 'चोर सोचों' से ही उस हसीना को समझ रहा था।

अधेड़ जापानी इस सेक्स बम में ऐसा उलझा हुआ था और ऐसी-ऐसी बातें सोच रहा था कि कमल की दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी। इस बात से अनजान की कोई उसकी सोचें चुरा रहा है वो अधेड़ जापानी सब कुछ भूल इस अंग्रेज युवती के बारे में सोच रहा था और उसका दिमाग बहुत दूर तक की प्लानिंग करता गया था।

कमल एक वहशतनाक दास्तान के कलाइमेक्स की बू सूंघ पा रहा था। यह अधेड़ उम्र का जापानी अपनी नई सोचों व प्लानिंग के साथ कमल के सामने था।

अंग्रेज युवती के बारे में ही अपनी प्लानिंग को अंतिम रूप देते अधेड़ जापानी होंठों ही होंठों में मुस्कराया था और फिर वो एक एलबम उस युवती की तरफ बढ़ाते बोला था—

"मिस रैनी! हमारी फिल्म का एक सीन जो तुम देख चुकी हो—ये उसी सीन की तस्वीरें हैं।"

रैनी ने चौंक कर अपने दाएं हाथ के अंगूठे को अपने रसभरे गुलाबी होंठों के दायरे से निकाल लिया।

जापानी अपनी बत्तीसी दिखाते हुए बोला—"कोई बात नहीं मिस रैनी। अक्सर बचपन की आदतें आसानी से नहीं जाती, फिर तुम तो यूं अंगूठा चूसते हुए बड़ी प्यारी लगती हो।"

युवती ऐलबम लेते झेंपते हुए बोली, "मैं तो बहुत कोशिश करती हूं पर अनचाहे ही ऐसा हो जाता है।"

वो एलबम खोल कर देखने लगी।

पहले पेज पर एक बहुत ही पुराने पैकोडा टाइप किले की तस्वीर थी, इस तस्वीर में एक तूफानी रात का मंजर था। बिजली चमक रही थी और इस चमक की क्षणिक रोशनी में वह किला एक काले भुजंग कद्दावर देव की तरह नजर आ रहा था।

इसे देखते ही रैनी की सोच फिल्म के उस सीन की तरफ चली गई जिसे वो एक प्रोजेक्शन रूम में देख कर आई थी। यह तस्वीर उसी शूटिंग का एक स्टिल फोटोग्राफ था। अब उसके दिमाग के स्क्रीन पर वह फिल्म चल रही थी और कमल भी उसकी सोच के माध्यम से उसे देख रहा था।

किले का एक वीरान व उजड़ा हुआ सा कमरा था। पूरे कमरे में नीम अंधेरा व्याप्त था। बाहर तूफान का शोर था और अंदर एक हसीन नवयौवना सफेद नाईटी पहने खड़ी हुई थी। रूप, लावण्य व यौवन का ठाठें मारता यह सागर अंधेरे में स्पष्टतया नजर नहीं आ रही थी। लेकिन जिस क्षण बिजली जोर से कड़कने लगती थी तो उसकी कौंध में युवती का हसीन चेहरा नजर आ जाता था।

युवती के चेहरे से वहशत उजागर थी और उसकी सहमी-सहमी आंखें जैसे किसी को मदद के लिए पुकार रही थी। लेकिन इस प्रेत-ग्रस्त किले में कोई उसकी मदद के लिए पहुंचने वाला नहीं था। बाहर आंधी का शोर था और कमरे में मौत का सन्नाटा। फिर इस आतंकित वहशतजदा युवती ने अदृश्य पर्दों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी।

मौत शायद फड़फड़ाते हुए भी आती है।

युवती कांप-कांप गई। कांपते हुए हाथों को अपने सीने पर रख लिया। उसके चेहरे पर बिजली की चमक कभी-कभी जल रही थी, कभी बुझ रही थी। कभी उम्मीद की रोशनी थी, कभी मौत का अंधेरा

था। इसी क्षण खुली हुई खिड़की के सामने एक बहुत बड़ी चमगादड़ अपने पैरों को फड़फड़ाने लगी। इस हसीना ने एक बार फिर पलक झपक कर देखा तो खिड़की के अंदर काला लबादा पहने एक देवकाय व्यक्ति खड़ा हुआ था। उसके दोनों हाथ दाएं-बाएं फैले हुए थे। उसके कलाइयों तक लबादे की आस्तीन इतनी चौड़ी थी कि चमगादड़ के परों की तरह फैल गई थी और खिड़की से आने वाली हवाओं की जद में फड़फड़ा रही थी।

फड़ फड़...फड़फड़...ही ही ही ही। काली आस्तीन भयानक हंसी की तरह फड़फड़ाती जा रही थी। अचानक ही नमूदार होने वाले इस कद्दावर शख्स की आंखें अंदर को धंसी हुई थीं...गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं और दांत...दो नोकीले दांत बंद होंठों के बाहर नजर आ रहे थे।

ड्रैकुला!

रैनी सोचने के दौरान कांप सी गई।

कमल की जिज्ञासा बढ़ी। रैनी नाम की यह युवती ड्रैकुला जैसे घिसे-पिटे विषय पर फिल्माए गए इस सीन के बारे में सोच रही थी।

कमल रैनी के दिमाग से चिपका रहा। रैनी अब फिर उस सीन में खोई हुई थी।

और अब उसने रैनी के दिमाग की स्क्रीन पर देखा। वह ड्रैकुला उस हसीना की तरफ बढ़ता हुआ कह रहा था—

"मेरी जान! तुमने मुझे पुकारा—मैं चला आया। आओ मेरे गले लग जाओ।"

"नहीं।" हसीना सहम कर बोली, "तुम...फ्रैंक—यह तुम हो। नहीं...मेरा महबूब...मेरा फ्रैंक मर चुका है। कौन हो तुम?"

"मेरी जान! मैं तुम्हारा फ्रैंक हूं। मैं मर कर भी जिंदा हूं। तुम मेरी आगोश में आ जाओ। तुम्हें भी अमरत्व मिल जाएगा। फिर हम हर रात चमगादड़ों की तरह इस वीराने में फड़फड़ाते हुए परों के नग्मे सुनते-सुनाते रहेंगे, आओ...आ जाओ।"

वह आगे बढ़ा। युवती पलट कर भाग जाना चाहती थी। मगर फ्रैंक के हाथ बहुत लंबे थे। मौत की तरह दूर-दूर तक पहुंच सकते थे। उसने अपनी प्रेयसी के बाजू को पकड़ कर खींच लिया और उसे अपने बाजुओं में जकड़ लिया। और फिर...

उस हसीना के नंगे कंधे पर उसका चेहरा झुक गया। अगले ही

क्षण उसके दोनों नोकीले दांत अपनी महबूबा की गर्दन में पेवस्त हो गए। वीरान किले में एक नारी कंठ से निकली चीख...चमगादड़ के परों की तरह फड़फड़ाती हुई दूर तक गई। और फिर...वही रहस्यमय सन्नाटा छा गया।

फिल्म का दृश्य खत्म हो गया था।

मगर रैनी की सोच खत्म नहीं हुई, अब वह फिर बेख्याली में अपना अंगूठा चूसने लगी थी। कमल उससे जहनी तार जोड़े हुए था और यूं वो इस शोला बदन के बारे में बहुत कुछ जान गया।

रैनी हालीवुड की एक जानीमानी सिने तारिका थी, और उसके सामने जो अधेड़ उम्र जापानी बैठा हुआ था वह एक फिल्म प्रोड्यूसर था। उसका नाम मोचेसो मोटो था। रैनी एक मोटी पेमेंट पर उसकी फिल्म में काम करने आई थी। फिल्म का नाम 'ब्लड हंटर' था। और फिल्म की कहानी के अनुसार फ्रैंक नाम का शख्स हीरो था। उसने एक के बाद दूसरी तीन लड़कियों से मुहब्बत की। पहली प्रेमिका ने बेवफाई की तो दूसरी की तरफ आकर्षित हो गया। जब दूसरी ने भी उसे छोड़ कर किसी अन्य से शादी करं ली तो वह भटकता हुआ एक तीसरी हसीना की आगोश में पहुंच गया। तीसरी महबूबा ने उससे शादी तो की लेकिन कुछेक दिनों के बाद ही उसकी दौलत हथियाने को उस औरत ने उसे जहर देकर मार डाला। अब वही फ्रैंक फिल्म का हीरो इंतकाम के लिए भटक रहा था।

इसी कहानी के अनुसार वह सीन फिल्माया जा चुका था कि फ्रैंक ने मरने के बाद उस वीरान किले में पहुंचकर अपनी पहली महबूबा से इंतकाम लिया। अब यह हालीवुड की नायिका—फिल्म में दूसरी हीरोइन का रोल अदा करने आई थी। प्रोड्यूसर से उसका अनुबंध पांच लाख डालर में हुआ था कि वो जापान आ कर फ्रैंक उर्फ ड्रैकुला की दूसरी प्रेमिका का रोल अदा करेगी फिर ड्रैकुला के हाथों से (बल्कि दांतों से) 'फिल्मी मौत' मरने के बाद—हालीवुड वापिस लौट जाएगी।

रैनी की साथ वाली सीट पर उसका एक नौजवान सैक्रेटरी हेरीसन बैठा हुआ था। और उसकी बगल में फिल्म का कैमरामैन बैठा अपनी ही सोच में गुम था। सामने वाली सीट पर वही अधेड़ उम्र का जापानी मोचेसो मोटो, फिल्म प्रोड्यूसर मौजूद था और उसके साथ की दो सीटों पर राइटर और डायरेक्टर थे।

तो यह थी टीम इस जापानी की, जिसने उस बदमाश को कमल के ट्रेन में होने की इत्तला दी थी और उसके साथ कमल को खोजता

भी रहा था।

तभी रैनी का सैक्रेटरी हेरीसन बोला, "मिस्टर मोचेसो मोटो! क्या चार दिन में मिस रैनी का काम पूरा हो जाएगा।"

"बिल्कुल हो जाएगा।" मोचेसो मोटो अपनी बत्तीसी दिखाते बोला, "हम पांचवे दिन आपको और मिस रैनी को टोकियो एअर-पोर्ट पर विदा कह रहे होंगे।"

हेरीसन बोला, "मगर इतनी जल्दी शूटिंग कैसे पूरी होगी। आप कैमरा इत्यादि साथ लेकर नहीं आए हैं।"

"यह हमारा सिर दर्द है मिस्टर हेरीसन! शूटिंग शेडयूल तय है। अब बस इतना जान लें कि हम कल शाम को फोकाको की आबादी से दूर उस वीरान किले में पहुंच जाएंगे। हमारे स्टोरी राइटर, कैमरामैन और डायरेक्टर शहर के एक होटल में ठहरेंगे। मैं, आप और मिस रैनी किले में रात गुजारेंगे। अगली सुबह पूरी यूनिट साजो सामान के साथ पहुंच जाएगी और शूटिंग शुरू हो जाएगी।"

□□

कमल अपनी सीट पर खामोश बैठा उनकी बातें सुन रहा था।

हालात की इस करवट ने उसे कुछ सोचने पर विवश कर दिया था।

कमल अब तक इस देश की सीक्रेट सर्विस के मामलों में उलझा हुआ था। अब इस कड़ी में इन फिल्म वालों की शिरकत हो रही थी। कहां सीक्रेट सर्विस और कहां फिल्मसाजी। दोनों का यह गठजोड़ यकीनन किसी दिलचस्प ड्रामे की बुनियाद था। यकीनन कोई खास ही ड्रामा होने वाला था। कमल के दिल में बेअख्तयार ही इस ड्रामे का एक 'चरित्र' बनने की ख्वाहिश उभरी। क्योंकि इन फिल्मी हस्तियों की मंजिल भी फोकाको थी। मेजर थामागोची भी वहां गया था। थामागोची के गुर्गे भी सोजुको को वहीं ले जाने वाले थे।

कमल अब यही सोच रहा था कि वो किस तिकड़म से इस टोली में शामिल होकर इनके साथ ही फोकाको पहुंचे।

कमल उनसे अपने जहनी तार जोड़े रहा और उनकी बातें व उनके प्रोग्राम से अवगत होता रहा। करीब आधे घंटे बाद वे सब उठ कर डायनिंग कार की तरफ जाने लगे। रैनी अपनी सीट छोड़ने से पहले अपना पर्स खोल कर उसके आईने में देखती हुई अपना मेकअप ठीक कर रही थी। उसकी खूबसूरत गर्दन में एक हीरे का लॉकेट पड़ा हुआ था।

कमल को एक शरारत भरी तरकीब सूझी थी।

मेकअप संवारने के दौरान रैनी के हाथ अपनी गर्दन के पीछे गए तो कमल ने उसके जहन को क्षणिक झटका दिया। और रैनी को यह महसूस तक नहीं हुआ कि उसके हाथ की उंगलियां दिमागी हुक्म से वशीभूत लॉकेट का हुक खोल चुकी हैं। लॉकेट रैनी की रेशमी गर्दन से फिसल कर पहले उसकी रान पर आया व फिर वहां से फिसल कर सीट पर आ रहा।

कमल ने रैनी के जहन को इतनी फुर्सत ही नहीं दी कि वो लॉकेट की तरफ ध्यान देती।

रैनी उठी और अपने सैक्रेटरी का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ गई। यह भी कमल ही की शरारत थी कि हेरीसन ने तुरंत अपना हाथ आगे बढ़ा कर उसे चलने की पेशकश की थी। कमल भी अपनी जगह से उठा और उनकी तरफ बढ़ आया। वे सब आगे जा चुके थे। इस कम्पार्टमेंट से निकल कर दूसरे कम्पार्टमेंट में पहुंच गए थे।

कमल रैनी वाली सीट के पास ठिठका। यह इत्मीनान कर लेने के बाद कि किसी का भी ध्यान उसकी तरफ नहीं है—उसने झुक कर लॉकेट उठाकर अपनी जेब के हवाले किया और आगे डायनिंग कार की तरफ बढ़ गया।

डायनिंग कार आगे दो डिब्बों के बाद थी।

यहां फैमिली केबिनों की शक्ल में यात्रियों को प्राइवेसी भी प्राप्त थी। जापानी मोचेसो मोटो अपनी फिल्मी टीम के साथ एक बड़े से केबिन में जाकर बैठ गया था। रैनी अपने सेक्रेटरी के साथ एक छोटे से केबिन में थी। कमल ने उनकी उपस्थिति के बारे में उनके दिमाग से ही जाना था और फिर सीधे उस केबिन पर दस्तक दी थी जिसमें रैनी थी।

"कम इन।" हेरीसन का ख्याल था कि बेयरा आर्डर लेने आया है। पर जब कमल पर्दा हटा कर अंदर पहुंचा तो वो दोनों ही कमल को देखकर चौंके थे।

रैनी की नजरें कमल पर उठी तो कमल की निगाहों ने उसे जकड़ लिया और कमल ने उसके दिमाग में अपने प्रति पसंदगी के भाव रोप दिए।

"ओह! कितना स्मार्ट और हैंडसम नौजवान है। यह मेरा दिल क्यों धड़क रहा है।" कमल ने उसी वक्त लॉकेट निकाल कर उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा—"मुझे अफसोस है कि मैंने आपके एकांत में दखल दिया है। शायद यह लॉकेट आपका है?"

रैनी का हाथ फौरन अपने गले पर गया, फिर कृतज्ञ सी बोली,

"ओह, थैंक्स ए लाट! यह आपके पास कहां से आया?"

कमल बदस्तूर शालीनता से बोला, "मैं भी आप ही वाले कम्पार्टमेंट में सफर कर रहा हूं। जब मैं यहां आने के लिए आपकी सीट के पास से गुजरा तो इस लॉकेट को आपकी सीट पर पड़े देखा।" यह कहने के साथ ही कमल ने उसकी सोच में कहा—

"मुझे इस नौजवान को बैठने के लिए कहना चाहिए।

रैनी दोबारा शुक्रिया अदा करते हुए बोली, "अगर तुम्हारे साथ कोई और न हो तो यहां बैठो। क्या तुम मेरे साथ डिनर में शामिल होना पसंद करोगे?"

कमल ने मुग्ध कर देने वाली हंसी के साथ कहा, "मैं आपकी इस दावत को सहर्ष कबूल कर लेता। लेकिन इस छोटे से केबिन में तीसरे के लिए गुंजाइश नहीं है।"

इस पर रैनी ने हिचकिचाते हुए हेरीसन की तरफ देखा, बोली, "प्लीज, मिस्टर हेरीसन! अगर तुम माइंड न करो तो दूसरे केबिन में चले जाओ।"

हेरीसन उसका सेक्रेटरी था। एक सेक्रेटरी भला इंकार कैसे कर सकता था। उसने अपनी सीट से उठते हुए कमल को अप्रिय नजरों से देखा—और चुपचाप केबिन से बाहर निकल गया। कमल उसकी जगह बैठता हुआ बोला—

"मेरा ख्याल है कि तुमने अपने साथी को नाराज कर दिया है।"

कमल आप से तुम पर आ गया था, "बहरहाल, आई एम आनरड..मिस।"

"मेरा नाम रैनी पोकर है।" मंद मंद मुस्कराते उसने अपना परिचय दिया, "मैं एक फिल्म आर्टिस्ट हूं।"

"ओह!" कमल ने हैरत दर्शाई, "तभी मुझे तुम्हारी सूरत जानी-पहचानी सी लगी थी। मैंने मैग्जीन्स में तुम्हारे फोटो देखे हैं। और...और।"

"और क्या?" वो अदा से मुस्कराई, "आप हिचक क्यों रहे हैं। कहिए न क्या कहना चाहते हैं।"

"जी मैं यह कहना चाह रहा था कि अगर मैं गलती पर नहीं हूं तो तुम्हें सेक्स का एटम बम कहा जाता है।"

पश्चिमी औरतों की यह सबसे बड़ी खूबी है कि ऐसी बातें सुन कर वो शर्माती नहीं हैं। उसकी मुस्कान और भी खिल गई और मोतियों से दांत चमकने लगे, वह बोली—"तुमने अपने बारे में कुछ

नहीं बताया। मेरा ख्याल है तुम्हारा ताल्लुक ईस्ट एशिया से है?" वो भी बेतकल्लुफ हो उठी थी।

"तुम्हारा अंदाजा सही है।" कमल ने बताया, "मैं बर्मा का रहने वाला हूं और मेरा नाम जोथन सू है।"

तभी बेयरा आ गया। रैनी ने कमल की पसंद से ही आर्डर प्लेस किया और फिर बेयरे के पलट जाने के बाद एक दूसरे को मुस्करा कर देखने लगे। रैनी का दिमाग कमल के नियंत्रण में था और वो रैनी की ही सोच बन उसके मन में अपने प्रति प्रशंसा मिली चाहत के भाव पैदा करता रहा।

हकीकत यह भी थी कि कमल खुद भी इस सेक्स-बम के बारे में कुछ 'गर्म-गर्म' सोचने लगा था। बहरहाल, वह भी उसे चाहत की नजरों से देख रहा था और यही दर्शा रहा था कि उसकी ख्वाहिश पर उसका दोस्त बन सकता है। कुछ क्षण यूं ही एक दूसरे को निहारते गुजरे और फिर रैनी उससे उसके बारे में सवाल करने लगी।

कमल ने जवाब दिया, "मैं एक धनाढ्य बाप का बेटा हूं और यहां घूमने फिरने के लिए आया हुआ हूं। मैं अब कोइशो टापू की तरफ जा रहा हूं।"

"हम भी शूटिंग के लिए कोइशो के शहर फोकाको जा रहे हैं।"

"अच्छा।" कमल ने दिलचस्पी दिखाई, "मैंने कभी फिल्म की शूटिंग नहीं देखी है। काश कि तुम्हारे प्रोड्यूसर मुझे शूटिंग देखने की इजाजत दे देते।"

वह हंस दी और अपनी नशीली आवाज में बोली, "यह कौन सी बड़ी बात है। तुम मेरे मेहमान बन कर मेरे साथ चल सकते हो। मैं फिल्म की हीरोइन हूं। तुम मेरे साथ रहोगे तो कोई एतराज की जुर्रत नहीं करेगा।"

तभी बेयरा खाना ले आया।

खाने के दौरान वो यूं घुलमिल कर बातें करते रहे मानो बरसों पुरानी जान पहचान हो। खाने के बाद रैनी ने कॉफी मंगवा ली थी ताकि ज्यादा वक्त एक साथ बीत सके। आखिर उसके सेक्रेटरी से सब्र नहीं हो सका। उसने केबिन में आकर कहा—

"मिस्टर मोचेसो मोटो आपकी इंतजार कर रहे हैं। अब हमें कम्पार्टमेंट में चलना चाहिए।"

"ओह, श्योर!" रैनी उठ खड़ी हुई।

बाहर आकर रैनी ने जापानी प्रोड्यूसर से कमल का परिचय कराया, "यह मिस्टर जोथन सू हैं। यह हमारे साथ ही उस वीरान

किले में चल रहे हैं, यह शूटिंग देखना चाहते हैं और मैंने इनको इसकी इजाजत दे दी है।"

अधेड़ उम्र जापानी परेशान होकर कमल की तरफ देखने लगा। वह नहीं चाहता था कि कोई अजनबी उनके साथ उस वीरान किले तक जाए। लेकिन इस वक्त वह एतराज नहीं कर सका—जबरन मुस्करा कर रह गया।

कम्पार्टमेंट में वापिस आकर वे सब अपनी-अपनी सीटों पर चले गए। कमल रैनी से अपने जहनी तार जोड़े हुए थे। उसके दूर होते ही मोचेसो मोटो ने रैनी से कहा—

"मिस रैनी...मैं शूटिंग के दौरान गैर जरूरी लोगों को पसंद नहीं करता। फिर तुम्हारे साथ होने वाले कांट्रेक्ट के मुताबिक हम सिर्फ तुम्हारे और तुम्हारे सेक्रेटरी के ही खर्चे वहन करेंगे। मेरा अनुरोध है कि तुम इस अजनबी जोथन सू को अपना गेस्ट न बनाओ।"

रैनी को उसका अनुरोध नागवार गुजरा। वह तनिक सख्त लहजे में बोली, "यह मेरा पर्सनल मामला है। मैं किसी से दोस्ती करूं आप उस पर एतराज़ नहीं कर सकते। रह गई खर्चे की बात तो मैं कोई एकस्ट्रा नहीं हूं एक हीरोइन हूं। सारी उम्र जोथन सू के खर्चे बर्दाश्त कर सकती हूं।"

"मगर यह जोथन सू है कौन? बड़ा अजीब सा नाम है, ऐसा नाम तो मैंने पहले कभी नहीं सुना। मिस रैनी आप समझने की कोशिश करें—एक अजनबी को उस किले में ले जाना मुनासिब नहीं है।"

"मिस्टर मोचेसो मोटो। तुम ऐसे एतराज कर रहे हो जैसे हम उस किले में शूटिंग के लिए नहीं, किसी क्रिमिनल साजिश के लिए जा रहे हैं। या हम सब वहां कोई जुर्म करने वाले हैं। ऐसे ही किसी चक्कर में एक अजनबी को दूर रखा जाता है।"

"आं! यह...यह तुम क्या कह रही हो।" मोचेसो मोटो गड़बड़ा गया, चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात थी। उसने खुद को संभालते हुए कहा, "मिस रैनी मैं तुम्हारे जाती मामलात में कुछ नहीं बोलूंगा। प्रॉब्लम दरअसल यह है कि उस प्राचीन वीरान खण्डहरनुमा किले का सिर्फ थोड़ा सा हिस्सा ही रहने योग्य है। वहां ज्यादा लोगों के लिए गुंजाइश नहीं है। हमने तुम्हारे सेक्रेटरी के लिए बड़ी मुश्किल से गुंजाइश निकाली है।"

रैनी ने अपने सेक्रेटरी की तरफ इशारा करते लापरवाही से कहा, "नो प्रॉब्लम मिस्टर हेरीसन यूनिट के दूसरे लोगों के साथ होटल

में ठहर जाएंगे, और किले का जो कमरा तुमने हेरीसन के लिए सुरक्षित रखा है वहां जोथन सू रहेंगे।"

अब आगे एतराज की कोई गुंजाइश नहीं थी।

मोचेसो मोटो परेशान सा ही कमल के बारे में सोचने लगा।

"है कौन यह कमबख्त जोथन सू। कहां से रैनी को फांसने आ गया है। कहीं कोई जासूस तो नहीं। मगर नहीं। यहां के इंटेलीजेंस के हर व्यक्ति को मैं अच्छी तरह पहचानता हूं। मगर सिवाय मेजर थामागोची के मुझे कोई नहीं पहचानता। फिल्म बनाने का बडराग फैला रखा है मैंने कि कोई मुझ पर शक न कर सके और यह खूबसूरत जोथन सू भी जासूस नहीं हो सकता, क्योंकि इसका संबंध हमारे देश से नहीं है ठीक है अगर यह अकेला है और रैनी को अपने जाल में फांसने के फिराक में है तो फिर उससे लौट कर कभी बाहर नहीं जा सकेगा।"

कमल ने मुस्कराते हुए सिगरेट सुलगाई।

कर्नल की बेटी के अपहरण का मामला गहराता जा रहा था।

कमल के तो मुकद्दर में ही हंगामे लिखे थे। उसने मोचेसो मोटो से जहनी संबंध तोड़े और रैनी के दिमाग में झांकने लगा।

रैनी दूर बैठी उसी के लिए बेचैन थी। वो अपनी जगह बैठी बार-बार कमल ही को देखने की कोशिश कर रही थी लेकिन कमल उसे नजर नहीं आ रहा था। उसके दिल में अपने प्रति यह बेचैनी खुद कमल ने ही पैदा की थी। प्रयत्नोपरान्त भी रैनी को कमल नजर नहीं आया तो वह खिड़की से बाहर देखने लगी।

कमल को शरारत सूझी। उसने रैनी के दिमाग में चुपके से कहा, "अंगूठा।"

और रैनी बेअख्तयार ही अपना अंगूठा चूसने लगी, उसके मन के ख्यालों को कमल ही समझ सकता था। अपना अंगूठा चूसते वक्त वो कमल के अंगूठे के बारे में सोचने लगी। कमल ने उसे भी थोड़ी देर के लिए उसकी सोचों के भंवर में छोड़ दिया और मेजर थामागोची की खबर लेने लगा।

थामागोची फोकाको पहुंच चुका था और इस घड़ी वो एक कार में शहर से दूर सागर तट की तरफ जा रहा था। उसकी मंजिल वही वीरान किला थी। शहर से किले तक का फासला लगभग दो घंटे का था। और कमल यह दो घंटे उसकी खोपड़ी में बैठ कर नहीं गुजार सकता था जबकि रैनी जैसी शोलाबदन हसीना अपनी सोच के बुलावे दे रही थी। लेकिन उसकी तरफ आकर्षित होने से पहले

कमल ने सोजुको और सोनिया की बारी-बारी से खबर ली।

मंजीहारा—सोजुको को कैदी बना कर एक लांच के जरिए ले जा रहा था। उसकी यह लांच सुबह होने से पहले हिरोशीमा शहर के निकट 'अशजी मा' के टापू तक पहुंचने वाली थी।

इस वक्त रात के ग्यारह बज रहे थे। सोजुको सोने के लिए केबिन में लेट गई थी। मगर उसकी आंखें लगने से पहले ही दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी। सोजुको ने बिस्तर से उठ कर दरवाजा खोला तो वहां एक बूढ़ी जापानी औरत हाथ में सेंट की शीशी लिए खड़ी थी।

वह बोली, "बेटी, घबराने की कोई बात नहीं है, तुम बिस्तर पर लेट, जाओ मैं तुम पर यह सेंट छिड़क कर चली जाऊंगी।"

सोजुको बिफरी सी बोली, "क्या मुसीबत है। यह तुम बार-बार मुझ पर खुशबू क्यों छिड़कते रहते हो। क्या अब सोते वक्त भी यह जरूरी है?"

"हां। बेहद जरूरी है।" बुढ़िया ने शांत भाव से जवाब दिया।

कमल यह सब सोजुको के दिमाग के जरिए सोच समझ रहा था। यह बात साफ छिपाई थी कि मंजीहारा सोजुको को सेंट की तेज खुशबू के आवरण में इसलिए छिपा कर रख रहा था कि सोनिया उसकी असली बू न पा सके। और यह महज संयोग ही नहीं था कि मेकअप मैन ने मेकअप के बाद उस पर सेंट स्प्रे किया था।

सोजुको गुस्से से पांव पटकती हुई बिस्तर पर जाकर लेट गई।

कमल ने उसी वक्त सोनिया के दिमाग की तरफ छलांग लगाई।

और उसने यह तत्परता इसीलिए दिखाई थी कि सोजुको के शरीर से पहले वाली खुशबू के उड़ने व उस पर दोबारा सेंट छिड़कने के बीच के अंतराल में सोजुको की बू पाने को आतुर सोनिया ने उसकी बू पा ली होगी।

कमल का यह ख्याल ठीक ही निकला था। उसने सोनिया की सोचों से जाना कि—इस बीच सोनिया को दो बार सोजुको की 'बू' सूंघने का मौका मिला था। एक बार उस वक्त जब मंजीराहा सोजुको को कार से उतार कर 'ओसाका' की बंदरगाह पर लाया था। खुली हवा में सेंट की खुशबू उड़ गई थी। और सोनिया ने चौंक कर ही कर्नल को इत्तला दी थी कि सोजुको को जापान के उत्तरी इलाके में ले जाया जा रहा है।

तब कर्नल ने फौरन हुक्म दिया था, सोनिया को हैलीकॉप्टर में

ले जाओ।

लेकिन 'बू' किसी भी प्रकार की हो उसके उड़ान की ऊंचाई सीमित होती है। सोनिया हैलीकॉप्टर में बैठ कर अधिक ऊंचाई से बू का पीछा नहीं कर सकती थी। इसलिए उसने महज अनुमान से ही हैलीकॉप्टर को ओसाका में ही लैण्ड करने को कहा। ताकि वो दोबारा बू सूंघ कर सही दिशा का यकीन कर सके। मगर उस वक्त तक सोजुको पर फिर खुशबू छिड़क दी गई थी और उसे लांच के एक केबिन में कैद कर दिया गया था।

दूसरी बार सोजुको ग्यारह बजे सोने के लिए बिस्तर पर गई थी—तो उस वक्त सोनिया ने फिर उसे पा लिया था। उसने हैलीकॉप्टर के पायलेट को उत्तर-दक्षिण में उड़ान भरने को कहा था। सोनिया अपनी सूंघने की इस अद्‌भुत शक्ति को पूरी क्षमता के साथ आजमा रही थी और निसन्देह ही अपने शिकार का पीछा कामयाबी के साथ कर रही थी।

लेकिन अब फिर रुकावट पैदा हो गई थी।

उधर सोनिया को लेकर हैलीकॉप्टर आकाश में ऊंचा उठा था और इधर वह बुढ़िया केबिन में आकर सोजुको को फिर 'सेंट' की खुशबू में कैद करने लगी थी।

कमल सोनिया की बेबसी पर मुस्कराता रहा और उसके दिमाग से उसकी मनोस्थिति का अंदाजा लगाता रहा।

सोनिया ने शोडी टापू पर कॉप्टर को उतरवा लिया था और एक बार फिर झल्लाई सी ही सोजुको की बू को सूंघने की कोशिश करने लगी थी। ऐसे वक्त वो कमल को भी याद करती रही और परेशान हो कर सोचती रही कि दुश्मनों ने कहीं उसके कमल को ठिकाने न लगा दिया हो। ऐसे में उसका विश्वास—उसका दिमाग उसे यही समझाने लगा था कि उसका कमल इतनी आसानी से मौत कबूल नहीं करेगा। मरेगा तो भगवान की मर्जी से ही मरेगा। दुश्मनों की साजिशें उसे नहीं मार सकतीं।

कमल ने मौजूदा हालात से संतुष्ट हो कर गहरी सांस ली।

उसने सिगरेट निकाल कर सुलगाई और दिमाग से हर सोच को झटक दिया, सिर्फ रैनी के बारे में सोचते हुए धूम्रपान का आनन्द लेने लगा।

जाहिर था कि अब सोचने को और कुछ ज्यादा था ही नहीं—उसने फोकाको के किसी वीरान किले में जा रही इस फिल्म यूनिट के साथ जाने का जुगाड़ बना लिया था। सोनिया, रुकावटों

के बावजूद सोजुको की बू सूंघती हुई उसके पीछे लगी हुई थी और उसने भी अंतत फोकाको और वहां के उसी प्राचीन किले में पहुंचना था। हाईकमांड—थामागोची की मंजिल भी वही किला था।

यानी कि वह किला ही अब आगामी हंगामों का केंद्र बिंदु बनने वाला था और ये हंगामें ही तो अपने कमल की जान थे।

पर काश उसे मालूम होता कि जिन हंगामों की कशिश में बंधा वो फोकाको के जिस किले में पहुंचने को बेताब हो रहा है—वह एक ऐसा अंधा कुआं है—जहां मौत के अट्टहासों के सिवाय कुछ भी नहीं।

□□□

चमत्कारी कमलकान्त
का आगामी नवीनतम
कारनामा

हाईकमांड

करिश्मासाज लेखक

सुरेन्द्र भारती

की कलम से निकली एक और सनसनीखेज़ हौलनाक गाथा—अपने भयावह अंजाम के साथ

दुनिया में चार चीजें
फसाद की जड़ हैं
जर-जोरू-जमीन
और
"इन्द्रजीत"
पंगेबाज 'इन्द्रजीत' का
उलटी गिनती
के बाद
नवीनतम कारनामा

मशाल

लफ्ज-लफ्ज धड़कनें बेतरतीब...
पंक्ति-पंक्ति रंग बदलते तेवर...
मौत की सरसराती आहटें-
कागज के सीने पर लफ्जों के रूप में

करिश्मासाज लेखक

राजभारती

की कलम से निकला
एक अनूठा शाहकार
शीघ्र प्रकाश्य महाविशेषांक

मनोज पब्लिकेशन्स